आलय सब संपत्तियों के दाता देव रूप को पराभक्ति से नमस्कार करता हूं वेद भी उस जगदात्मा के स्वरूप को इस प्रकार कहता है ५,६

अभि त्रि पृष्ठं वृषणं वयोधा मङ्गोषिणो अवाव शन्त वाणीः वना वसानो वरुणो न सिन्धुर्वि रत्नधा दयते वार्याणि ॥७

भूमि अन्तरिक्ष स्वर्ग नाम पृष्ठ वाले वृष्टि कर्ता अन्नधारक विराट् देह में वसने वाले पुरुष को वेद वाणी चाहती हैं वह रत्नधारक पुरुष काम्य धनों को स्तोताओं के लिये देता है जैसे वरुण और समुद्र जलों को धारण करते रत्नों को देते हैं ७

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विवः ८॥

पहिले सृष्टि की आदि में प्रादुर्भूत सूर्य रूप ब्रह्म ने ब्रह्माण्ड के मध्य इन शोभन लोकों को अपने प्रकाश से विवृत किया वह कामनीय मेधावी सूर्य अवकाश वान और इस जगत की विविधि रूप दिशाओं को तथा मूर्त्त घट पट आदि और अमूर्त्त वायु आदि के प्रभव ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करता है ८

महा नारायणो देवो भूतानां रक्षणाय वै ब्रह्म विष्णु महेशानां रूपैः प्रादुर्बभूव ह ९

महानारायण देवता प्राणियों की रक्षा के लिये ब्रह्मा विष्णु महेश रूप से प्रकट हुआ ९ -

हिरण्य गर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक

आसीन् सदो धार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवा
यहविषा विधेम १०

प्रपंच की उत्पत्ति से पूर्व ब्रह्म ज्योति रूप गर्भ वाले ब्रह्मा जी उत्पन्न हुए अकेले उत्पन्न होते ही सब जगत के स्वामी हुए वे इस पृथ्वी स्वर्ग को धारण करते हैं उस प्रजापति देवता के लिये हम हवि देते हैं ११

विष्णोः कर्म्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे
इन्द्रस्य युज्यः सखा ११

श्री विष्णु के सृष्टि पालन संहार आदि चरितों को देखो जिस कारण यजमान के संयोग योग्य सखा ने यज्ञ कर्मों को भक्तों की मोक्ष के लिये निर्माण किया १२

याते रुद्र शिवा तनूर घोरा पापकाशिनी तयान
स्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि १२

हे कैलास वासी रुद्र जो आपकी मंगल रूप सौम्य पुण्य फलदाता शक्ति है उस परमानन्द रूप देहाकार के द्वारा हमको देखो १२

उत्पत्तिं पालनं नाशं कर्त्तारो जगत स्त्रये तेषां
पादरजं स्पृष्ट्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः १३

जो त्रिदेव जगत की उत्पत्ति पालन नाश को करते हैं उनकी पाद रज को स्पर्श करके वारम्वार नमस्कार करता हूं १४

वैवस्वतस्य नौकायः समुद्रे समधारयत् वेदोद्धा
रञ्च कृतवान्तस्मै मत्स्यात्मने नमः २४

जिसने वैवस्वत मनु की नाव को समुद्र में धारण किया और वेदों का उद्धार किया उस मत्स्य रूप के लिये नमस्कार १४

म्मिमतेन गावः परीणसड्गुणेतिग्म श्टङ्गोदि-
वा हारिद्रर्दशेनर्क्तमृज्रः ॥२०॥

वह वाराह जी विष्णु की गति को अपनी देह में युक्त करते हैं इन्द्रियां उस माया रूपसे क्रीडा करने वाले को नहीं जान सकतीं वह तीक्ष्ण श्टंग वाला पृथिवी को वहु पदार्थवती करता है दिव अर्थात् देवसंचार काल में विष्णु रूप दीखता है और रात्रि अर्थात् असुर संचार काल में वराह रूप दीखता है ॥ २० ॥

रक्षाञ्चकार भक्तस्य प्रह्लादस्य स्वरूपतः हि
रण्यकाशिपुं हत्वा तस्मै नृहरयेनमः २१

अपने रूपसे हिरण्य काशिपु को मार कर प्रहलाद भक्त की रक्षा की उस नृसिंह जी के लिये नमस्कार ॥ २१ ॥

ओत्वो सोमेस्यै गल्दैयौ सदौ यौचन्नैहंज्ज्या।
भूर्णीम्मृगन्नसवनेपुचुक्रुधे कईशानेनेया
चिषत २२

हे परमेश्वर वराह और नृसिंह रूप तुमको योग यज्ञों में आत्म प्रतिविंव सम्वंधी महावाक के द्वारा सदा याचना करता में क्रोधित हुआ जिस कारण क्षय शील वुद्धि से युक्त कामने तुझ ईश्वर को याचना नहीं किया ॥२२॥

वामनं रूप मास्थाय त्रैलोक्यं विक्रमैः स्वकैः वले
र्गृहीतंतंवध्वा तस्मै ब्रह्मात्मने नमः २३

वामन रूप होकर वलि को वांधकर अपने तीन पैंड से तीनों लोक लिये उस ब्राह्मण रूप के लिये नमस्कार ॥ २३ ॥

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् समूढमस्य पांसुले २४

अमरेश त्रिविक्रमावतार वामन जी इस विश्व को उलंघन करते हैं तीन पग रखते हैं एक भूमि पर दूसरा अन्तरिक्ष में तीसरा स्वर्ग में इसका चरन चतुर्दश भुवन मय ब्रह्मांड में सम्यक् अन्तर्भूत होना है २४

सहस्त्र वाहुं हत्वा यो देवाहूतो महावलः वीर्यं प्रकाश यामासतस्मै रामात्मने नमः २५

देवताओं से वुलाये हुए जिस महावली ने सहस्त्रा वाहु को मारकर अपने वलको प्रकाशित किया उस परशुराम रूप के लिये नमस्कार

अपिबत् कद्रुवः सुतमिन्द्रः सहस्त्रबाह्वे तत्रादिदिष्ट पौंस्यम् २५

परशुराम रूप परमेश्वर ने सहस्त्रा वाहु के लिये क्रोध को धारण किया उस समय उनका पराक्रम प्रदीप्त हुआ २६-

भद्रया सहितो भद्रो रावणं लोकरावणम्। सवलं घातयामास तस्मै रात्मने नमः २७

श्री सीता सहित रामचन्द्र जी ने लोक के रुलाने वाले रावण को सैना सहित मारा उन श्री रामचन्द्र जी के लिये नमस्कार २७

भद्रो भद्रया सचमान आगात्स्वसारं जारो अभ्येति पश्चात् सुप्रकेतैर्द्युभिरग्निर्वितिष्ठन्नुशद्भिर्वर्णैरभिराममस्थात् २८

श्री रामचन्द्र जी श्री सीता जी के साथ प्रकट होते हैं तब रावण ऋषियों के रुधिर से उत्पन्न होने के कारण अपनी वहन सीता को हर

नाहैं फिर अनन्त काल पर क्रोध से प्रज्वलित रावण सन्मुख होकर कुंभकरण आदि के युद्ध ज्ञानी जीवात्माओं के साथ श्री राम की सामिप्य को प्राप्त करता है ॥ २८ ॥

भूभारहरणायैव प्रादुर्भूतो महाप्रभुः । देवारीन्नाशयामास तस्मै कृष्णात्मने नमः २९॰

महाप्रभु ने भूभार हरण के लिये असुरों का नाश किया उस कृष्ण रूप के लिये नमस्कार २९॰

इन्नो राजन्नरतिः समिद्धो रौद्रो दक्षाय सुषुमाँ अदर्शि । चिकिद्वि भाति भासा बृहतासिक्नीमेति रुशतीमपाजन् ३०

हे दीप्यमान ब्रह्माग्ने तुम अवतार लेते राग शून्य ईश्वर कृष्ण रूप होते हो वह आपका रूप कंस आदि का भयंकर और ज्ञानी पिता के लिये सुन्दर दीखता है सर्वज्ञ तुम वैष्णव तेज से प्रकाश करते हो फिर वैष्णव तेज को अन्तर्धान करने कृष्ण रूप को प्राप्त करते हो ३०

कृष्णां यदेनीमभि वर्पसा भूज्जनयन्योषां बृहतः पितुर्ज्जाम् । ऊर्द्ध्वम्भानुꣳ सूर्यस्य स्तभायन्दिवो वसुभिररतिर्विभाति ३१

जब महानारायण की शक्ति महामाया को नन्द गृह में प्रगट करते और जन्मशील गमन स्वभाव कृष्णवर्ण देह रूप प्रकृति को अपने तेज से प्राप्त करते हो तब मानस सूर्य के आत्मा को ऊंचा धारण करते अर्थात् योग निष्ठ होते धन देहाभिमान से शून्य होते नाना रूप से प्रकाश करते हो अर्थात् भक्तों पर अनुग्रह दृष्टि से और शत्रुओं पर क्रोध दृष्टि से ३१

योमानुरुपदेशाय कापिलं रूपमास्थितः शास्त्रं
प्रवर्त्तयामासतस्मै योगात्मने नमः ३२

जिसने माता के उपदेशार्थ कापिल रूप धारण किया और शास्त्र बना। याउस कापिल रूप के लिये नमस्कार ३२

दशानामेकं कापिलं समानं तंहिन्वंति क्रतवे
पार्य्याय गर्भं माता सुधितं वक्षणास्ववेनंतं
तुषयन्ती विभर्ति ३३

दशावतारों के समान अद्वैत कापिल जी को परिसमाप्ति योग्य ब्रह्मयज्ञ के लिये प्रेरणा करते हैं और माता जी प्रजापति द्वारा गर्भ में स्थापित निवास चाहने वाले बाल को अपना उपदेशक जान कर प्रसन्न होती धारण करती हैं॥ ३२॥

अशक्तान्वेदज्ञाने नान्मत्वा देवहितायवै देवा
रीन्वञ्चयामासतस्मै बुद्धात्मने नमः ३४

असुरों को वेदज्ञान में असमर्थ जान कर देवताओं के हितार्थ उन असुरों को ठगा उस बुद्ध रूप के लिये नमस्कार ३४

नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो नमः
यजुः ३५

असुरों के वंचक दैत्याश भूत मनुष्यों के वंचक बुध रूप के लिये नमस्कार देवता पितरों को न देकर स्वयं भक्षण करने वाले जो मनुष्य हैं उनके स्वामी को नमस्कार॥ ३५॥

युगान्ते कलुषाकारे देवारीणां भवे सति आगमि
ष्यति भूभुजे तस्मै कल्क्यात्मने नमः ३६

कलुषं रूप युगान्त में असुरों का जन्म होने पर भूशुद्धि के लिये आवेगा उसं काल्कि रूप के लिये नमस्कार ३६

निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो नमः यजुः ३७

खड्ग धारी महद्रूप और युगान्त पर स्तेन भाव प्राप्त भक्तों के स्वामी निष्कलंक रूप के लिये नमस्कार ३७

या विद्या सर्व विद्यानां महा निद्रा च देहिनाम्।
या स्वयं मुख पद्मेन वेदे कथयती दृशम् ३८

सब विद्याओं में जो विद्या रूप है और देह धारियों में महा निद्रा रूप है और जो आप वेद में कमल मुख से ऐसा कहती है ३८

अहमेव स्वय मिदं वदामि जुष्टं देवेभि रुत मानुषेभिः यं कामये तंतमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम ३९

मैं ही देवता मनुष्यों से सेवित वेद को स्वयं कहती हूं जिसको चाहती हूं उस २ को सब से अधिक करती हूं उस को ब्रह्मा करती हूं उस को ऋषि करती हूं उस को श्रेष्ठ बुद्धि वाला करती हूं ३९

अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा परो दिवा पर एना पृथिव्यै तावती महिना संबभूव ४०

सब भुवनों को उत्पन्न करती मैं ही वायु के समान चलती हूं स्वर्ग से परे और इस पृथिवी से परे जो महा पुरुष है उतनी ही और उस से संयुक्त मैं महिमा से नाना रूप वाली हुई हूं ४०

सर्वाधारां सर्व वीजां सर्व कारण कारणाम् प्राज्ञ

लिः शुद्धभावेनतांदेवींप्रणतोस्म्यहम् ४१
बद्धांजली में शुद्धभाव से उस सर्वाधार सर्व वीज सर्व कारणों की कारणादेवी को नमस्कार करता हूं ४१

शिवं भृगुञ्च च्यवनं भार्गवं राम मेवच पञ्चमीं
कुलदेवीञ्च सद्भक्त्याप्रण माम्यहम् ४२
मेंसद्भक्ति सहित शिव भृगुच्यवन परशुराम और पांचवीं कुल देवी को प्रणाम करता हूं ४२

द्वावर्थौब्रह्मणः ख्यातौब्राह्मणेषु पृथक पृथक्
आध्यात्मञ्चाधि दैवञ्च भोग मोक्षप्रदायकौ४३
ब्राह्मणोंमें पृथक २ अध्यात्म और अधिदैव नामदो अर्थ कहे हैं जो कि भोग मोक्ष के दाता हैं ४३॥

यजुर्वेदस्यद्वावर्थौब्रह्म भाष्ये कृतौ मया अधुना साम वेदस्यद्वावर्थौकथयाम्य हम् ४४
मैंने ब्रह्म भाष्य में यजुर्वेद के दोनों अर्थ किये अब मैं साम वेद के दोनों अर्थ कहता हूं ॥ ४४ ॥

नास्ति विद्या न बुद्धिर्मे समर्था भाष्य कर्म्मणि
देवेनैवोपादिष्टोहं लिखामि प्रीति पूर्वकम् ४५
मेरी विद्या और बुद्धि भाष्य कर्म में समर्थ नहीं है में देवता से उपदेश किया हुआ प्रीति पूर्वक लिखता हूं ४५

येविप्रा गुण सम्पन्ना ब्रह्म विद्यापरायणाः तेक्ष
मन्त्व पराधं मे यो भवेदत्र लेखने ४६
जोब्राह्मण गुण सम्पन्न और ब्रह्म विद्या के परायण हैं वेमेरे उस अप-

ग्रंथ को क्षमा करो जो यहां लिखने में होवै॥ ४६॥

अथ विनियोगसिद्धान्तः

ये महात्माभिर्मन्त्रार्थाज्ञाता यद्वा मंत्रजपेन सिद्धिर्लब्धा तएव तेषां मंत्राणा मृषय आसन्। ऋते गुरोपदेशान्मन्त्र सिद्धिर्न लभ्यते विनियोगे त्वृषितर्पणेन तत्सिद्धिः सुलभा तस्मात् विनियोगे गुरुतर्पणा यर्षिसंयोगः। पाठे जपे वा यच्छब्दोच्चारण मशुद्धं ज्ञातं तद्दोष परिहारायैव छन्दो देवस्य तर्पण मावश्यकम्। पाठे जपे वा मनो स्वेष्टदेवध्यानादन्यत्र गच्छति तद्दोष शान्तये देवतर्पण मावश्यकम्। तस्मादेव विनियोगः कर्त्तव्यः। येषु मन्त्रेष्वाध्यात्मिकोऽर्थः कथ्यते तेषु जपपाठ फलस्याभावात्केवल मनन प्रधानत्वाच्च विनियोगस्य प्रयोजनं नास्तीति॥

अथ विनियोग सिद्धान्तः

जिन महात्माओं ने मन्त्रार्थ को जाना अथवा मंत्रजप से सिद्धि प्राप्ति की वेही उन मंत्रों के ऋषि हुए बिना गुरु उपदेश के मंत्र सिद्धि प्राप्त नहीं होती है विनियोग में ऋषितर्पण से वह सिद्धि सुलभ है उस कारण विनियोग में गुरु तर्पण के लिये ऋषि का संयोग है। पाठ वा जप में जो शब्दोच्चारण अशुद्ध हुआ उस दोष के निवारणार्थ छन्द देवता का तर्पण आवश्यक है। पाठ वा जप में मन अपने इष्टदेव के ध्यान से अन्यत्र जाता है उस दोष की शान्ति के लिये देवतर्पण आवश्यक है उसी कारण विनियोग कर्त्तव्य है। जिन मंत्रों में आध्यात्मिक अर्थ कहा जाता है उनमें जप

पाठ के अभाव और केवल मननप्रधानता से विनियोग का प्रयोजन नहीं है॥

अथ स्वरसिद्धान्तः

स्वरयोगैर्नानार्थाः सम्भवन्ति किञ्च पाठे जपे वा स्वरस्याशुद्ध्याऽर्थस्याप्यशुद्धिर्जायते तस्मादाधिदैव यज्ञे जपे वा फलाप्तये स्वरशुद्ध्या मन्त्रोच्चारणं कर्त्तव्यम् येषु मंत्रेषु श्रुतिप्रमाणेनाध्यात्मिकार्थाः कथ्यन्ते तेषु क्वचित् स्वरा आधिदैवार्थपाठाद्विलक्षणा भवन्ति तत्र जप पाठ फलाभावात्केवलं मननप्रधानत्वं ज्ञातव्यं न पाठफलमिति सर्वसिद्धान्तः॥

अथ स्वरसिद्धान्तः

स्वरों के योग से नाना प्रकार के अर्थ होते हैं और पाठ वा जप में स्वर की अशुद्धि से अर्थ की भी अशुद्धि होती है उस कारण आधिदैव यज्ञ वा जप में फल प्राप्ति के अर्थ स्वर शुद्धि के साथ मंत्रोच्चारण करना चाहिये। जिन मंत्रों मे श्रुति प्रमाण से अध्यात्म अर्थ कहे जाते हैं उन में स्वर कहीं आधिदैवार्थ पाठ से विलक्षण होते हैं वहां जप पाठ फल के अभाव से केवल मनन की प्रधानता जाननी चाहिये न पाठ फल यह सर्व सिद्धांत है

अथोभयार्थयोः सिद्धांतः

यथा मनसि महाविष्णोर्ध्यानं तथैवाध्यात्मम् यथा पाषाणादेर्मूर्त्तीनां पूजनं तथैवाधिदैवम्। आधिदैवयज्ञे मन्त्रपठनमेवोचितं नार्थकरणं पाठे हि सिद्धिलाभत्वात्। न मंत्रार्थकरणे सिद्धिस्तस्यासम्भवत्वात्। यथेन्द्रसोमयोरर्थाः श्रुतिकथिताः सोमो वै राजाय

न्त्रः प्रजापतिः । तस्यैतास्तन्वो या एता देवताः श० २२।
६।२।१ इन्द्रो वै सर्वे देवाः श० १३।७।२।४ सर्वं हि सोमः
श० ५।५।४।१० प्राणः सोमः श० ७।२।४।२ ज्योतिः
सोमः श० ५।१।५।२८ तथाग्रिम मंत्रेषु परमेश्वरस्यैवा
र्थः सम्भवतेन सो मेन्द्रयोः

सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनि
ता पृथिव्याः जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्र
स्य जनितोत विष्णोः ॥ ५ ॥

अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्मञ्जनयन्प्रजा भुवन
स्य गोपाः । वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत्सो
मो वावृधे स्वानो अद्रिः ॥ ७ ॥

यद्द्याव इन्द्र ते शतं शतं भूमीरुत स्युः । न त्वा व
ज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी ॥ ६ ॥

भयो रोरिक्ष ओजसा दिवः सदोभ्यस्परि न त्वा वि
व्याच रज इन्द्र पार्थिवमति विश्वं ववक्षिथ ।१०

एवमेवान्यदेवानां मन्त्रेष्वपि परमेश्वरस्यैवार्थो घटते ।
आधिदैव सम्बन्धि मंत्रेष्वर्थ करणमनुचितं निष्फलञ्च
यथा श्रुतिः देवाः परोक्षमर्थं मन्यन्ते परोक्षकामा हि दे
वास्तथापि पूर्वाचार्याणामिव मयाद्वावर्थौ काथितौ य
त्राध्यात्म सम्बन्ध्येके वार्थो वर्त्तते न च पदे द्वितीयोर्थोऽ
पि ज्ञातुं सुलभ इति विद्वद्भिर्ज्ञातव्यम् । सर्वे मन्त्राः परमे
श्वरमेव स्तुवन्ति । देवाऽपि परमेश्वरस्याशास्तस्मान्म

न्त्राः कल्पवृक्ष वद्बह्वर्थसंयुक्ताः सन्तो देवानां स्तुता वपिपठ्यन्ते ॥

दोनों अर्थ का सिद्धान्त

जैसे मनमें महाविष्णु का ध्यान है वैसाही अध्यात्म है और जैसे पाषाणादि मूर्त्तियों का पूजन है वैसाही आधिदैव है आधिदैव यज्ञमें मंत्र पठ नही उचित है-नकि अर्थ का करना क्योंकि पाठ मेंही सिद्धि होती है मंत्रार्थ करने में सिद्धि नही है किन्तु असंभव है श्रुतिप्रमाण से सोमका अर्थ ईश्वर ब्रह्म के सिवाय सवप्राण और ज्योति है इन्द्र का अर्थ परमेश्वर और सबदेवताओं में घटता है किन्तु पूर्वोक्त मंत्रों में केवल परमेश्वर का अर्थही घटता है नकि सोम औरइन्द्र का इन मंत्रों का अर्थ आगे आवेगा इस कारण यहां नहीं लिखा गया-

इसी प्रकार अन्य देवताओं के मंत्रों मेंभी ईश्वर काही अर्थ घटता है आधिदैव सम्बंधी मंत्रों में अर्थ करना अनुचित और निष्फल हैजैसा श्रुति कहती है देवता परोक्ष अर्थ को मानते हैं क्योंकि देवता परोक्ष कामा हैं तौभी मैंने पूर्वाचार्यों की समान दोनों अर्थ कहे जहां अध्यात्म सम्बंधी एकही अर्थ है वहां पदों से दूसरा अर्थ जानना भी सुलभ है यह विद्वानों से ज्ञातव्य है सब मंत्र परमेश्वरही की स्तुति करते हैं देवता भी परमेश्वर के अंश हैं उस कारण मंत्र कल्पवृक्ष की समान बहुत अर्थ से संयुक्त होनेदेवताओं की स्तुति मेंभी पढ़े जाते हैं ॥

अथ मंत्रब्राह्मणयोःसिद्धान्तः

ब्राह्मणैः सहवेदा वस्त्रवदादिमध्यान्त भून्याः स्तुत्या

रम्भेसाकार ब्रह्मणोपदिष्टाः श्रुतिनामधेया भवन्ति। मध्येब्राह्मणेष्वाचार्याणां मन्त्रोत्तर वाक्य विशेषाः प्रयुज्यंति यथा व्यास प्रणीत महाभारते सूत शौनक वैशंपायनादीनां वाक्यानि– तेषां वाक्यानां दर्शनादवहुश्रुताः शङ्कां कुर्वन्ति– ये ब्राह्मणेष्वितिहासा वर्त्तन्ते तेषामर्थो गूढः परोक्षश्च यथा शतपथ ब्राह्मणे वृत्रासुर व्याख्याने– एष एव वृत्रो यच्चन्द्रमाः श० १।६।४।२३ कद्रू विनतयो रितिहासेच– वागेव विनता+ वेदिर्वैसलिलं ऋषिर्वा अश्वः श्वेतः ३।६।२ एवमेव सर्वत्र विचारः कर्त्तव्यः। यः परमेश्वरस्त्रिकालज्ञः सयदिस्व वाक्ये भविष्य वार्त्तां प्रब्रूयात्तत्र किमाश्चर्यं मनुष्येष्वेवेदृश वाक्यान्य सम्भवानि। परमेश्वरोऽनाद्यस्तर्हितस्य वचन मप्यनाद्यं। तस्यानादित्वे ब्राह्मणोक्त यज्ञ विधेरप्यनादित्वं। पूर्वकल्पेषु यज्ञ विधे वर्त्तमानत्वा त्स्टष्टेरनादित्वाच्चतस्यानादित्वं सर्वथा सिद्धमेव। वहुश्रुता विद्वांस एवतज्ज्ञानन्ति नान्ये वालतराजनाः। श्रुतेः प्रमाणमपि विद्यते– यथर्क्थाब्राह्मणं श० १२।५।२।४–

मन्त्र ब्राह्मण का सिद्धान्त

ब्राह्मण सहित वेद ब्रह्म की समान आदि मध्य अन्त से शून्य हैं स्टष्टि के आरम्भ पर साकार ब्रह्म से उपदिष्ट श्रुति नाम होते हैं मध्यकाल में ब्राह्मणों के मध्य आचार्यों के मन्त्रोत्तर वाक्य विशेष संयुक्त होजाते हैं जैसे व्यास प्रणीत महाभारत में सूत शौनक वैशंपायन आदि के वाक्य–

उन वाक्यों के दर्शन से अबहु श्रुत मनुष्य शंका करते हैं —
ब्राह्मणों में जो इतिहास हैं उनका अर्थ गूढ़ और परोक्ष है जैसा पूर्वोक्त श्रुति का — इसी प्रकार सर्वत्र विचार कर्त्तव्य है — जो परमेश्वर त्रिकालज्ञ है वह यदि अपने वाक्य में भविष्य वार्त्ता को कहे उसमें क्या आश्चर्य है मनुष्यों में ही ऐसे वाक्य असम्भव होते हैं परमेश्वर अनादि है तो उसका वचन भी अनादि है उसके अनादि होने में ब्राह्मणोक्त विधि भी अनादि है पूर्व कल्पों में यज्ञ विधि के वर्त्तमान होने और सृष्टि के अनादि होने से उसका अनादि होना सर्वथा सिद्ध ही है। बहुश्रुत विद्वान ही उसको जानते हैं न कि दूसरे बाल तर मनुष्य श्रुति का प्रमाण भी विद्यमान है जैसी ऋचा तैसा ब्राह्मण श० १२।५।२।४।

सूचना।

सामवेदे ब्रह्म महा पुरुष पुरुषजीवात्म भक्ति योग ज्ञान बन्धमोक्षाणां सिद्धान्तं यथावत्कथितं तस्मा दत्र तस्य कथन मावश्यकं नास्ति यदाऽनन्य भक्त योगी समस्तं वेदार्थ मनु भविष्यति तदैव कृत कृत्यो भविते ति॥

सूचना।

साम वेद में ब्रह्म महा पुरुष पुरुषजीवात्मा भक्ति योग ज्ञान बंधन मोक्षों का सिद्धान्त यथावत् कहा है उस कारण यहां उसका कहना आवश्यक नहीं है जब अनन्य भक्त योगी समस्त वेदार्थ को अनुभव करेगा तभी कृत कृत्य होगा॥

सामवेदसंहिता

छन्द आर्च्चिकः

अथ प्रथम प्रपाठके प्रथमार्द्धः

हरिः ओम

ओं अग्न आयाहीत्यस्य भरद्वाजऋषि गायत्री
छन्दो वैश्वानरो ऽग्निर्देवता
अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्य दातये नि
होता सत्सि बर्हिषि ॥ १ ॥ अत्र बहवो ऽग्नयः यथा श्रुतयः
आत्मै वाग्निः श० ६।७।१।२० ब्रह्म वा ऽअग्निः श० ५।३।५
३२ प्राणो ऽग्निः श० १०।२।६।१८ असौ वा ऽआदित्य एषो
ऽग्निः ६।४।१।८ सर्वेषामग्नि ष्वेव ह्वयते हवित्तस्मा द्येऽर्थो यत्र
संभविष्यति तमेव कथिष्याम इति

(अग्ने) हे देवमुखाग्ने (गृणानः) यज्ञो भविष्यतीति शब्दं कु
र्वाणस्त्वं। गृशब्दे (वीतये) हविषां चरु पुरोडाशादीनां भ
क्षणाय (हव्यदातये) देवेभ्यो हविः प्रदानाय च (आयाहि)
अस्मद्युक्तं प्रत्यागच्छ यस्मात् (होता) देवानामाह्वाता स
न् (बर्हिषि) आस्तीर्णे दर्भे (निषत्सि) निषीदसि तत्कर्मत
वैवास्तीत्यर्थः अग्ने कर्म होतृत्वं दूतत्वञ्च नत्र गृणान इति
शब्दाद् दूतत्वं होतृ शब्दाच्च होतृत्वं सिध्यति १॥

यहां बहुत अग्नि हैं श्रुति कहती हैं कि आत्मा ब्रह्म प्राण सूर्य्य सब अग्नि
ही हैं इस कारण जहां पर जो अर्थ संभव होगा उसको कहेंगे॥

मंत्रार्थः १हेदेव मुख रूप अग्ने २ यज्ञ होगा यह शब्द करते तुम ३ चरु पुरोडाश आदि हवि के भक्षण ४ और देवताओं को हवि दान के लिये ५ हमारे यज्ञ में आओ जिस कारण ६ देवताओं के आव्हान कर्त्ता तुम ७ कुशासन पर ८ बैठते हौ ॥१॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (गृणानः) योग यज्ञो भविष्यतीति देवेषु शब्दं कुर्वाणस्त्वं (वीतये) (व) वातः प्राणः (इ) चन्द्रो मनस्तयोः प्राप्तये। इगतौ (हव्यदातये) महापुरुष पुरुषेभ्यो हविः प्रदानाय (आयाहि) अनुभव गोचरो भव यस्मात् (होता) देवानामाह्वातासन् (बर्हिषि) दीप्ति युक्ते हार्दाकाशे। बर्हदीप्तौ इसुन् (निषत्सि) निषण्णो भवसि १

१ हे आत्माग्ने २ योग यज्ञ होगा यह शब्द करते तुम ३ प्राण मन की प्राप्ति ४ और महा पुरुष पुरुषों को हवि दान के लिये ५ अनुभव गोचर हूजिये जिस कारण ६ देवताओं के आह्वान कर्त्ता होते ७ दीप्ति युक्त हार्दाकाश में ८ विराजमान होते हो ॥१॥

ऋष्याद्याः पूर्ववत्

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः देवेभिर्मानुषे जने २

हे (अग्ने) (विश्वेषां) सर्वेषाम् (यज्ञानाम्) अग्निष्टोमात्यग्निष्टोमादीनां मध्ये (होता) होमनिष्पादन शीलः (जुहोतेस्तृ) च्छील्यिकस्तृन् यद्वा सर्वेषां देवानामाह्वाता (त्वम्) (मानुषे) (जने) मनोरपत्य भूते यजमान समूहे (देवेभिः)

देवैः (छान्दसोभिस ऐस भावः) विद्वाद्भिर्ऋत्विग्भिः (हितः) निहितः गार्हपत्यादि रूपे संस्थापितोभवांसि ॥ २॥
१ हे अग्ने २,३ अग्निष्टोम आदि सब यज्ञों के मध्य ४ होम निष्पादनशील ५ तुम ६ मानव यजमान समूह में ८ विद्वान ऋत्विजों से ९ गार्हपत्य आदि रूपसे स्थापित किये जाते हो॥ २॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (विश्वेषां) (यज्ञानाम्) योग यज्ञानां मध्ये (होता) होम निष्पादन शीलः यद्वा महापुरुष पुरुषाणा माह्वाता (त्वम्) (मानुषे) (जने) मनुष्य सम्बंध्यात्ममति विंवे (देवेभिः) महापुरुष पुरुषैः (हितः) स्थापितो ऽसि ॥ २॥
१ हे आत्मग्ने २,३ सब योग यज्ञों के मध्य ४ होम निष्पादन शील ५ तुम ६ ७ मनुष्य सम्बंधी आत्म मति विंव में ८ महापुरुष पुरुषों के द्वारा ९ स्थापित हो ॥ २॥

कण्व पुत्र मेधातिथिर्ऋषिश्छंदो देवते पूर्ववत्
अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् अस्य
यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ ३॥

(दूतम्) देवानां दौत्ये विनियुक्तं (होतारम्) देवानामाह्वातारं (विश्ववेदसम्) विश्वं सर्वं वेदो धनं यस्यतं सर्वधनवन्तं (बहुव्रीहौ विश्वं संज्ञायाम् (६, २, १०६) इतिपूर्वपदान्तोदात्तत्वम्) (अस्य) प्रवर्त्तमानस्य (यज्ञस्य) (सुक्रतुम्) निष्पादकत्वेन शोभन कर्माणं (अग्निम्)

देवं (वृणीमहे) स्तुतिभिर्हविर्भिः सम्भजामहे ॥३॥

१देवताओंके दूत २देवाह्वानकर्त्ता ३ सर्वधनवन्त ४इस ५यज्ञके ६निष्पादन करने से शोभन कर्मा ७ अग्नि देवता को ८ स्तुति हवि द्वारा हम भजने हैं ॥३॥

अथाध्यात्मम्

(दूतम्) (होतारम्) (विश्ववेदसम्) विश्वानि वेत्तीति विश्ववेदाः तं सर्वज्ञं। वेत्तेरसुन् विदज्ञाने (अस्य) (यज्ञस्य) योगयज्ञस्य (सुक्रतुम्) शोभनप्रज्ञं नि० ३।३।१५ (अग्निम्) आत्माग्निं (वृणीमहे) ॥३॥

१देवताओंके दूत २होता ३ सर्वज्ञ ४,५इस योग यज्ञके ६श्रेष्ठ बुद्धिमान ७ आत्माग्नि को ८हम भजने हैं॥३॥

भरद्वाजऋषिः छन्दोदेवते पूर्ववत्

अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया। समिद्धः शुक्र आहुतः ॥४॥

(समिद्धः) समिदादिभिर्हविर्भिः सम्यग्दीपितः (शुक्रः) दीप्यमानः(आहुतः) हविर्भिराहुतः (अग्निः) (विपन्यया) स्तुत्या नि० ३।१४ (द्रविणस्युः) स्तोतॄणां धनमिच्छन् छन्दसि परेच्छायां क्यच। प्रातिपदिकेभ्यः इच्छायां क्यचि सुगागमः (वृत्राणि) आवरकानि शत्रुकुलानि रक्षः प्रभृतीनि (जङ्घनत्) भृशं हन्तु [हन्तेर्यङ्लुगन्तात् लिङर्थे लेट् (३,४,७)] ॥४॥

अथाध्यात्मम्

(समिद्धः) प्राणैः सम्यग्दीपितः (शुक्रः) मानस सूर्यरूपः एषवै शुक्रो यएषतपति श० ४।३।१।२६ (आहुतः) इन्द्रिय रूपहविर्भिराहुतः (अग्निः) आत्माग्निः (विपन्यया) स्तुत्या (द्रविणस्युः) योगिनो योग धन मिच्छन् (वृत्राणि) पापानि पाप्मावै वृत्रः श० ६।४।२।३ (जङ्घनत्) ४

१ समिद् आदि हवि से संदीप्त २ दीप्यमान ३ हवि से आहुत ४ अग्नि ५ स्तुति द्वारा ६ स्तोताओं के धन को चाहता ७ शत्रुकुल वा राक्षस आदि को ८ नाश करो ॥ ४ ॥

१ प्राणों से संदीप्त २ मानस सूर्यरूप ३ इन्द्रिय रूप हवि से आहुत ४ आत्माग्नि ५ स्तुति द्वारा ६ योगियों के योग धन को चाहता ७ पापों को ८ नाश करो ॥ ४ ॥

उशना ऋषिश्छन्दो देवते पूर्ववत्

प्रेष्ठं वो अतिथिꣳ स्तुषे मित्रमिव प्रियम् अग्ने रथं न वेद्यम् ॥ ५ ॥

हे (अग्ने) (वः) आह्वावल युक्तो हे वीज को (प्रेष्ठं) स्तोतॄणामस्मा कं धन दानेन प्रियतमं (अतिथिं) सर्वैरतिथिवत्पूज्यं (मित्रं) (इव) (प्रियं) (रथम्) (न) इव (वेद्यम्) स्वर्ग सुखानुभव हेतुम्। विद् सुखाद्यनुभवे लाभे च यथा रथेनाभीष्टं देशं लभते तद्वदनेन स्वर्गं लभते तादृशं स्वर्गलाभ कारणं त्वां (स्तुषे) स्तौमि ॥ ५ ॥

१ हे अग्ने २ आह्वावल से युक्त मैं ३ स्तोताओं को धन देने से प्रियतम ४ अतिथि समान सबके पूज्य ५,६,७ मित्र की समान प्रिय ८,९,१० रथकी

समान स्वर्ग सुखानुभवके कारण तुमको ११ स्तुत करता हूं ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (वः) निवृत्तात्मा ऽ हं। वीजकोषः (प्रेष्ठं) योगिनां प्रियतमं (अतिथिं) अतिथिवत्पूज्यं (मित्रं) (इव) (प्रियं) (रथं) (न) इव (वेद्यम्) महानारायण लोकप्राप्ति हेतुं त्वां (स्तुषे) ॥ ५ ॥

१ हे आत्माग्ने २ निवृत्तात्मा में ३ योगियों के प्रियतम ४ अतिथि की समान पूज्य ५,६,७ मित्र की समान प्रिय ८,९,१० महानारायण लोक की प्राप्ति के कारण तुमको ११ स्तुत करता हूं ॥ ५ ॥

सुधीति पुरुमीढा हृषी छन्दो देवते पूर्ववत्

त्वंनो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः
उतद्विषो मर्त्यस्य ६

हे (अग्ने) (त्वं) (नः) अस्मान् (महोभिः) पूजाभिः महद्भिर्धनैर्वा (विश्वस्याः) सर्वस्याः (अरातेः) शत्रुजातेः सकाशात् (उत) अपिच (मर्त्यस्य) (द्विषः) द्वेषात् (पाहि) रक्ष ६

१ हे अग्ने २ तुम ३ हमको ४ पूजा वा महाधनों के द्वारा ५ सब ६ शत्रु ७ और ८ मनुष्य जाति के ९ द्वेषसे १० रक्षा करो ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (त्वं) (नः) अस्मान् (महोभिः) पूजाभिः महद्भिर्योगैश्वर्यैर्वा (विश्वस्याः) सर्वस्याः (अरातेः) कामिनिजातेः सकाशात् (उत) अपिच (मर्त्यस्य) मरणशीलस्य मनसः (द्विषः) द्वेषात् (पाहि) ॥ ६ ॥

६ हे आत्माग्ने २ तुम ३ हमको ४ पूजा वा महा योगे ष्वर्यों के द्वारा ५ सब ६ कामजानि ७ और ८ मरण शील मनके ९ द्वेष से १० रक्षा करो॥ ६

भरद्वाज ऋषिश्छन्दो देवते पूर्ववत्।
ऐह्यू षु ब्रवाणि ते ऽग्न इत्थेतरा गिरः। एभिर्वर्द्धास इन्दुभिः ७

(उ) हे शिवरूप (अग्ने) (एहि) आगच्छ (ते) तुभ्यं त्वदर्थं (इत्थाः) पूर्वोक्ताः (उ) च (इतराः) अग्रोक्ताः (गिरः) स्तुतीः (सु) सुष्ठु। सुत्रः ८, ३, १३६ इति मूर्द्धण्ये रूपम् (ब्रवाणि) (एभिः) (इन्दुभिः) सोम रूप साम मन्त्रैः। सोमाहुतयो हवा ऽ एता देवानां यत्सामानि श० ११।५।६।६ (वर्द्धसि) ॥ ७॥

भाषार्थः–१ हे शिव रूप २ अग्ने ३ आओ ४ तेरे लिये ५ पूर्वोक्त ६ और ७ अग्रोक्त ८ स्तुति ९, १० भले प्रकार उच्चारण करूं ११ इन १२ सोमरूप साम मंत्रों के द्वारा १३ वृद्धि पाते हो॥ ७॥

अथाध्यात्मम्– (उ) हे विष्णु रूप (अग्ने) आत्माग्ने (एहि) अनुभव गोचरो भव (ते) त्वदर्थं (इत्थाः) पूर्वोक्ताः (उ) च (इतराः) अग्रोक्ताः (गिरः) मन्त्राः (सु) (ब्रवाणि) (एभिः) (इन्दुभिः) साम मन्त्रैः (वर्द्धसि) ॥ ७॥

भाषार्थः–१ हे विष्णु रूप २ आत्माग्ने ३ अनुभव गोचर हूजिये ४ तेरे लिये ५ पूर्वोक्त ६ और ७ अग्रोक्त ८ मन्त्र ९, १० भले प्रकार उच्चारण करूं ११ इन १२ साम मंत्रों के द्वारा १३ वृद्धि पाते हो॥ ७॥

काण्व गोची वत्स ऋषिश्छन्दो देवते पूर्ववत्।

आतेवत्सोमनोयमत्परमाच्चित्सधस्थात् अग्नेत्वांकामयेगिरा ८

हे (अग्ने) (वत्सः) प्राणः (मनः) (चित्) अपि (ते) तव (परमात्) उत्कृष्टात् (सधस्थात्) सहस्थानाद्ब्रह्मलोकात् प्रादुर्भूत्वा (आयमत्) दीर्घमभवत्तस्मात् (त्वाम्) (गिरा) स्तुत्या (कामये) ॥८॥

भाषार्थः-१ हे अग्ने २ प्राण ३ मन ४ भी ५ तेरे ६ उत्कृष्ट ७ सहस्थान ब्रह्मलोक से प्रकट होकर ८ समष्टि भाव को प्राप्त हुआ उस कारण ९ तुमको १० स्तुतिद्वारा ११ चाहता हूं॥८॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (वत्सः) प्राणः। अयमेव वत्सोयोऽयं पवते श॰ ४।२।११।१२ (मनः) (चित्) अपि (ते) तव (परमात्) उत्कृष्टात् (सधस्थात्) सह स्थानादात्मलोकात् प्रादुर्भूत्वा (आयमत्) समष्टिरूपमभवत्। तस्मात् (त्वाम्) (गिरा) महावाचा (कामये) ॥८॥

भाषार्थः-१ हे आत्माग्ने २ प्राण ३ मन ४ भी ५ तेरे ६ उत्कृष्ट ७ आत्मलोक से प्रकट होकर समष्टि भाव को प्राप्त हुआ उस कारण ९ तुम को १० महावाक् द्वारा ११ चाहता हूं॥८॥

भरद्वाज ऋषिश्छन्दो देवते पूर्ववत्

त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः॥९॥

हे (अग्ने) (अथर्वा) समष्टिप्राणः प्राणोवाऽअथर्वाः श॰ ६।

४।२।१(पुष्करादधि) ब्रह्माण्डालयपुष्करमध्ये (विश्वस्य) सर्वस्य (वाघतः) वाहकात् (मूर्द्धः) सूर्यात् विष्णोः शिरः पपात तत्पातित्वा सावा दित्योऽभवत् श० १४।१।१।१०(त्वाम्)(निरमन्थत) अजनयत् ॥९॥

भाषार्थः–१हे अग्ने २ समष्टि प्राणने ३ ब्रह्माण्डालयकमलके मध्य ४५ ६ सबके वाहक सूर्यसे ७ तुमको ८ मथनकर प्रकट किया ॥९॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (अथर्वा) प्राणः (पुष्करादधि) मानस कमल मध्ये (विश्वस्य) विश्वाख्यशरीरस्य (वाघतः) वाहकात् (मूर्द्धः) मानस सूर्यात् (त्वाम्) (निरमन्थत) ९

भाषार्थः–१हे आत्माग्ने २ प्राणने ३ मानस कमल के मध्य ४,५,६ विश्व नाम शरीरके वाहक मानस सूर्य से ७ तुमको ८ मथकर प्रकट किया ॥९॥ वृध्य्रश्वव्नऋषिरनूपोवा-गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता

अग्ने विवस्वदाभरास्मभ्यमूतये महे देवो ह्यसिनो दृशे ॥१०॥

हे (अग्ने) त्वं (अस्मभ्यम्) अस्माकं षष्ठ्यर्थे चतुर्थी (महे) महते (ऊतये) रक्षणाय अवरक्षणे (विवस्वत्) तमोरूप रक्षसां विवासन करं ज्योतिः (आभर) आहर (हि) यस्मात् त्वं (नः) अस्माकं (दृशे) दर्शनार्थं (देवः) द्योतमानः (असि) इन्द्रादयो नास्माभिर्दृश्यन्ते त्वं तु गार्हपत्यादिदेशे ऽनिधा त्मानः प्रत्यक्षेण दृश्यसे तस्मात्त्वां विशेषेण प्रार्थयामहे-इत्यभिप्रायः ॥१०॥

भाषार्थः- १ हे अग्ने तुम २ हमारी ३,४ महारक्षा के लिये ५ तमो रूप राक्षसों के नाशक ज्योति को ६ प्रकट करो ७ जिस कारण तुम ८ हमारे ९ दर्शन के लिये १० द्योतमान ११ हो ॥१०॥

अथाध्यात्मम

(अग्ने) हे आत्माग्ने त्वं (अस्मभ्यम्) अस्माकं (महे) (ऊतये) संसाराद्रक्षणाय (विवस्वत्) विशेषेण निवासहेतुं ब्रह्म (आभर) आहर (हि) यस्मात्त्वं (नः) अस्माकं (दृशे) ज्ञानलाभाय (देवः) ज्ञान प्रकाशकः (असि) ॥१०॥

भाषार्थः-१ हे आत्माग्ने तुम २,३,४ संसार से हमारी महारक्षा के लिये ५ सर्वालय ब्रह्म को ६ अनुभव गोचर करो ७ जिस कारण ८ हमारे ९ ज्ञानलाभार्थ १० ज्ञान प्रकाशक ११ हो ॥१०॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म कृते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने प्रथमाध्यायस्य प्रथमः खण्डः

अथ द्वितीयः खण्डः

आयुङ्क्ष्वाहिर्ऋषि गायत्री छन्दो ग्निर्देवता
नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः। अमै
रमित्र मर्दय॥११॥

हे (देव) (अग्ने) (कृष्टयः) मनुष्याः यजमानाः नि० २।३।८ (ओजसे) बलाय (ते) तुभ्यं षष्ठी चतुर्थ्यर्थे (नमः) नमस्कारशब्दं (गृणन्ति) उच्चारयन्ति त्वं (अमैः) बलैः (अमित्रम्) शत्रुं (अर्दय) नाशय॥१ ॥

भाषार्थः - १,२ हे अग्नि देवता ३ यजमान ४ बल के लिये ५ तेरे अर्थ

६नमस्कार शब्द को ७ उच्चारण करते हैं तुम ८ बलों के द्वारा ९ शत्रु को १० नाश करो ॥ १ ॥

अथाध्यात्मम्

हे (देव) मायाक्रीडनकैः क्रीडन शील (अग्ने) आत्माग्ने (ऋष्टयः) विद्वांसः (ओजसे) योग बलाय (ते) तुभ्यं (नमः गृणन्ति) त्वं (अमैः) योगबलैः (अमित्रम्) कामं (अर्दय) १

भावार्थः – १, २ हे माया के खिलौनों से क्रीडन शील आत्माग्ने ३ विद्वान ४ योग बल के लिये ५ तेरे अर्थ ६ नमस्कार शब्द को ७ उच्चारण करते हैं ८ तुम योग बलों से ९ काम को १० पीड़ित करो ॥ १ ॥

वामदेव ऋषि र्गायत्री छन्दो वैश्वानरोऽग्निर्देवता दूतं वो विश्ववेदसꣳ हव्यवाहममर्त्यम्। यजिष्ठमृञ्जसे गिरा ॥ २ ॥

मन्त्रो यजमानं प्रशंसति हे यजमान त्वं (वः) युष्माकं (हव्यवाहम्) देवेभ्यो हविषां वोढारं (दूतम्) देवानां दूतं (अमर्त्यम्) अमरण धर्माणं (विश्ववेदसम्) विश्वं समस्तं वेदो धनं यस्यासौ विश्ववेदाः तम् (यजिष्ठम्) अतिशयेन यष्टारमग्निं (गिरा) वेदवाचा (ऋञ्जसे) प्रसाधयसि वर्द्धयसि ऋञ्जतिः प्रसाधन कर्मा नि० ६।२।४ यजमानोऽग्निः श० ६।३।४।१२ यजमानोऽग्नि पूजने नाग्निभावं प्राप्नोति तस्मादग्निकाण्डे तस्य प्रशंसा युक्तैव ॥ २ ॥

भावार्थः – मन्त्र यजमान की प्रशंसा करता है हे यजमान तुम १ अपने २ देवताओं के लिये हवि धारक ३ देवताओं के दूत ४ अमरण ध-

र्मा ५ सर्व धनवत्त ६ महा यज्ञकर्त्ता अग्नि को ७ वेदवाणी द्वारा ८ प्रसा
धनकरते हो ॥ २ ॥

अथाध्यात्मम्

हे योगिनत्वं (वः) युष्माकं (हव्यवाहम्) (दूतम्) (अमर्त्यम्) अविनाशिनं (विश्ववेदसम्) सर्व विदं (यजिष्ठम्) उत्कृष्ट यष्टारमात्माग्निं (गिरा) महा वाचा (ऋञ्जसे) वर्द्धयसि तस्मान्मोक्षार्होसीत्यर्थः ॥ २ ॥

भाषार्थः – हे योगिन तुम १ अपने २ हविधारक ३ दूत ४ अविनाशी ५ सर्वज्ञ ६ उत्कृष्टयष्टा आत्माग्नि को ७ महावाक् द्वारा ८ बढ़ाते हैं उस कारण मोक्ष योग्य हो यह अभिप्राय है ॥ २ ॥

प्रयोग ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता ।

उपत्वा जामयो गिरो देदेशतीर्हविष्कृतः ।
वायोरनीके अस्थिरन् ३ । २३

हे अग्ने आत्माग्नेवा (जामयः) तवस्वस्वरूपाः प्रजापतिना दूयोरुत्पन्नत्वात् (हविष्कृतः) हविः संस्कारं कुर्वन्त्यः (गिरः) स्तुतयः (त्वा) त्वां (उप) उपतिष्ठन्ते (देदेशतीः) तव गुणान् दिशन्त्यः (वायोः) प्राणस्य (अनीके) मुखे (अस्थिरन्) अतिष्ठंश्च ॥ ३ ॥

भाषार्थः – हे अग्ने वा आत्माग्ने १ तेरी भगिनीरूप २ हवि संस्कार करने वाली ३ स्तुतियां ४ तेरे ५ समीप स्थित होती हैं ६ तेरे गुणों को कहती ७ प्राण के ८ मुख में ९ स्थित हुई ॥ ३ ॥

मधुच्छन्द ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता ।

उपत्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धिया वयम् । न
मो भरन्त एमसि ४ । २४

हे (दोषा वस्तः) दोषायां रात्रौ स्वकीयेन ज्योतिषा तमसा माच्छादयितः (अग्ने) (वयम्) अनुष्ठातारः (दिवे) (दिवे) प्रति दिनं (धिया) बुद्ध्या (नमः) नमस्कारं हविर्वा (भरन्तः) सम्पादयन्तः (उप) समीपे (त्वा) त्वां (एमसि) आगच्छामः ॥ ४ ॥

भावार्थः – १ अपनी ज्योतिसे रात्रि के अंधकार को नाश करने वाले २ हे अग्ने ३ अनुष्ठान कर्त्ता हमलोग ४,५ प्रतिदिन ६ बुद्धि द्वारा ७ नमस्कार वा हवि को ८ सम्पादन करते ९ समीप में १० तुमको ११ प्राप्त होते हैं ॥ ४ ॥

अथाध्यात्मम्

हे (दोषा वस्तः) रात्रेः पितृयान मार्गस्याच्छादयितः लोपयितः (अग्ने) आत्माग्ने (वयम्) वागाद्यृत्विजः (दिवे) (दिवे) प्रतिदिनं (धिया) योग बुद्ध्या (नमः) इन्द्रिय रूपान्नं (भरन्तः) समर्पयन्तः (उप) समीपे (त्वा) त्वां (एमसि) आगच्छामः ॥ ४ ॥

भावार्थः – १ हे पितृयान मार्ग के आच्छादक २ आत्माग्ने ३ हम वागादि ऋत्विज ४.५ प्रति दिनं ६ योग बुद्धि द्वारा ७ इन्द्रिय रूप हवि को ८ समर्पण करते ९ समीप में १० तुमको ११ प्राप्त करते हैं ४

शुनःशेप ऋषि र्गायत्री छन्दोऽग्नि र्देवता ॥
जराबोध तद्विविड्ढि विशे विशे यज्ञियाय ।

स्तोमं रुद्राय दृशीकम् ॥ ५ ॥ १५

हे (जरावोध) जरया स्तुत्या वोध्यमानाग्ने (विशे) (विशे) प्रत्येक यजमानस्यानुग्रहार्थं (यज्ञियाय) यज्ञसम्बंध्यनुष्ठानसिद्ध्यर्थं (तनं) देवयजनं (विविड्ढि) प्रविश। यजमानोऽपि (रुद्राय) रुद्ररूपायतुभ्यं (दृशीकं) दर्शनीयं समीचीनं (स्तोमम्) स्तोत्रं करोतीति शेषः ॥ ५ ॥

भावार्थः - १ हे स्तुति से वोध्यमान अग्ने २,३ प्रत्येक यजमान के अनुग्रह ४ तथा यज्ञसम्बंधी अनुष्ठान की सिद्धि के लिये ५ उस देवयजनस्थान में ६ प्रवेश करो यजमान भी ७ तुम रुद्ररूप के लिये ८ दर्शनीय वा समीचन ९ स्तोत्र को उच्चारण करता है ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम्

हे (जरावोध) देहाभिमानत्याग एव जरा तस्यां वोधो यस्य स जरावोधस्तद्गुणविशिष्टात्माग्ने (विशे) (विशे) प्रत्येक प्राण स्यानुग्रहार्थं। विशो वै मरुतः श॰ ५।१।३।३ (यज्ञियाय) योगयज्ञानुष्ठानसिद्ध्यर्थं (तनं) हृदयं (विविड्ढि) प्रविश (दृशीकं) दर्शनीयमाधिदेवं (स्तोमम्) स्तोत्रं (रुद्राय) ईश्वराय भवति तस्य स्तोत्रस्याधिदेवानुष्ठान सम्बन्धत्वात्। विविड्ढि विश प्रवेशने लोटो हिः (३,४,८,७) वहुलं छंदसि (२,४,७६) इति शपः श्लुः अभ्यासहलादिशेषो (६,१ ४,७,४,६०) हुझलभ्यो हेर्धिः (६,४,८७) इति हेर्धिरादेशः षत्वष्टुत्वे (८,२,३६,८,४,४१) यद्वा विजृञ्व्याप्ता वित्यस्य लोण मध्यमैकवचने अभ्यासस्य गुणाभावः ॥ ५ ॥

भाषार्थः – १ देहाभिमानत्यागरूपजरामें जिसका बोधहोय तादृश हे आत्माग्ने २,३ प्रत्येक प्राणके अनुग्रह ४ तथा योग यज्ञानुष्ठान की सिद्धि के लिये ५ उसहृदयमें ६ प्रवेश करो ७ दर्शनीयज्ञाधिदेव ८ स्तोत्र ९ ईश्वरके लिये होता है क्योंकि उसका सम्बन्ध उसीसेहै ॥ ५॥

मेधातिथिर्ऋषिः गायत्री छन्दोऽग्नि मरुतो देवते

प्रतित्यञ्चारुमध्वरं गोपीथाय प्रहूयसे। मरुद्भिरग्न आगहि ६

हे (अग्ने) (तम्) (यम्) आग्नेयं बीजकोषः (चारुम्) मनोहरं (अध्वरम्) यज्ञं (प्रति) प्रतिलक्ष्य (गोपीथाय) सोमपानाय (प्रहूयसे) प्रकर्षेण हूयसे तस्मात्त्वं (मरुद्भिः) सह (आगहि) आगच्छ ॥ ६ ॥

भाषार्थः – १ हे अग्ने २ उस ३ अग्नि सम्बंधी ४ मनोहर ५ यज्ञको ६ देखकर ७ सोमपान के लिये ८ आह्वान किये जाते हो उस कारण तुम ९ मरुद्गणों के साथ १० आओ ॥ ६॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (तम्) (चारुम्) मनोहरं (यम्) योग सम्बंधिनं (अध्वरं) यज्ञं (प्रति) प्रतिलक्ष्य (गोपीथाय) आत्म प्रतिबिंब पानाय सर्वेहि सोमः श० ५।५।४।१० (मरुद्भिः) प्राणैः (प्रहूयसे) (आगहि) आगच्छ। ६

भाषार्थः – १ हे आत्माग्ने २ उस ३ मनोहर ४ योग सम्बंधी ५ यज्ञको ६ देखकर ७ आत्म प्रतिबिंब के पानार्थ ८ प्राणों के द्वारा ९ आव्हान

कियेजानेहो १९ आश्रो ॥६॥

शुनःशेपऋषि गायत्रीछन्दो वैश्वानरोग्निर्दे०
अश्वंनत्वावारवन्तंवन्दध्याअग्निन्नमोभिः स
म्राजन्तमध्वराणाम् ७॥ १७

(तम्) (अध्वराणाम्) यज्ञानां (सम्राजं) सम्राट्स्वरूपं स्वामिनं (अग्निं) (त्वाम्) (नमोभिः) स्तुतिभिः (वन्दध्यै) वन्दितुं।नुमर्थेध्यै। प्रवृत्ता इतिशेषः (न) यथा (वारवन्तं जलसंघयुक्तं (अश्वम्) सूर्यं। असौवा आदित्यएषोऽश्वः श० ६।३।१।२९—॥७॥

भाषार्थः –१ उस २ यज्ञोंके ३ स्वामी ४ अग्निनाम ५ तुमको ६ स्तुतिद्वारा ७ वन्दन करने को हम प्रवृत्त हुए ८ जैसे ९ जल समूह युक्त १० सूर्यको ॥७॥

अथाध्यात्मम्

(तम्) (अध्वराणां) योगयज्ञानां (सम्राजं) स्वामिनं (अग्निं) आत्माग्निं (त्वाम्) (नमोभिः) स्तुतिभिः (वन्दध्यै) वन्दितुमिच्छाम इति (न) यथा (वारवन्तं) जलसंघयुक्तं (अश्वम्) सूर्यं॥७॥

भाषार्थः – १ उस २ योगयज्ञों के ३ स्वामी ४ आत्माग्नि नाम ५ तुमको ६ स्तुतिद्वारा ७ वन्दना करना चाहते हैं ८ जैसे ९ जलसमूह युक्त १० सूर्यको ॥७॥

प्रयोगऋषिर्गायत्रीछन्दो वैश्वानरोग्निर्देवता·
औवंभृगुवच्छुचिमप्नवानवदाहुवेअग्निं

समुद्रवासस म् ८ ॥ १८

(समुद्रवाससं) अन्तरिक्षे वैद्युतात्मना समुद्रे वाडवात्मना वा निवासो यस्य तं । समुद्र इत्यन्तरिक्ष नाम नि० १, ३ १५ (शुचिं) शुद्धं (अग्निम्) (और्व भृगुवत्) (अप्नवानवत्) यथा और्व भृगुः । अप्नवानश्च तथा (आहुवे) अहमाह्वयामि ॥ ८ ॥

भावार्थः - १ अन्तरिक्ष में बिजली रूप से वा समुद्र में वड़वानलरूप से निवास शील २ शुद्ध ३ अग्नि को ४, ५ और्वभृगु अप्नवान भार्गव ऋषियों की समान ६ आव्हान करता हूं ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम

(समुद्रवाससं) मनोवर्तिनं । मनोवै समुद्रः श० ७ । ५ । २ । ५२ (शुचिं) पवित्रं (अग्निम्) आत्माग्निं (और्वभृगुवत्) (अप्नवानवत्) (आहुवे) ॥ ८ ॥

भावार्थः - १ मनोवर्त्ती २ पवित्र ३ आत्माग्नि को ४, ५ और्वभृगु अप्नवान् भार्गव ऋषियों की समान ६, ७ आव्हान करता हूं ॥ ८ ॥

प्रयोग ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्नि र्देवता-

अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः ।
अग्नि मिन्धे विवस्वभिः ॥ ९ ॥ १९

(मर्त्यः) मनुष्यः (अग्निं) (इन्धानः) काष्ठैः प्रज्वलयन् (मनसा) (धियं) कर्म (सचेत) भजेत यस्मात् मन्त्रोऽहं (विवस्वभिः) तमसां विवासयितृभिर् रश्मिभिः (अग्निम्) (इन्धे) प्रज्वालितं करोमि ॥ ९ ॥

भाषार्थः - १ मनुष्य २ अग्नि को ३ काष्ठों से प्रज्वालित करता ४ मनसे ५ कर्म को ६ सेवन करै जिस कारण मंत्र में ७ तम नाशक किरणों के साथ ८ अग्नि को ९ प्रज्वालित करता हूं ॥ ९॥

अथाध्यात्मम्

(मर्त्यः) देहाभिमानी मनुष्यः (अग्निम्) आत्माग्निं (इंधेनः) प्राणैः प्रज्वलयन (मनसा) (धियं) प्रज्ञां (सचेत) भजेन यस्मान्मन्त्रोऽहं (विवस्वभिः) इन्द्रियरश्मिभिः (अग्निं) आत्माग्निं (इन्धे) प्रज्वालितं करोमि ॥ ९॥

भाषार्थः - १ देहाभिमानी मनुष्य २ आत्माग्नि को ३ प्राण द्वारा प्रज्वालित करता ४ मन सहित ५ प्रज्ञा को ६ सेवन करै जिस कारण मंत्र में इन्द्रिय रूप किरणों सहित ८ आत्माग्नि को ९ प्रज्वलित करता हूं ॥ ९॥

वत्सऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता-

आदित्प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिः पश्यन्ति वासरम्। परो यदिध्यते दिवि ॥ १०॥ २०

(यत्) यदा (परः) वैश्वानरोऽग्निः (दिवि) द्युलोकस्योपरि (इध्यते) दीप्यते (आदित्) अनन्तरमेव (प्रत्नस्य) चिरन्तनस्य (रेतसः) जगद्वीर्यस्य सूर्यस्य (वासरम्) (ज्योतिः) दैननंतेजः (पश्यन्ति) सर्वेजनाः ॥ १०॥

भाषार्थः - १ जब २ वैश्वानर अग्नि ३ स्वर्गलोक में ४ प्रज्वालित होता है ५ अनन्तरही ६ चिरन्तन ७ जगत वीर्य रूप सूर्य के ८, ९ दिन संबंधी तेज को १० देखते हैं ॥ १०॥

अथाध्यात्मम्

(यत्) यदा (परः) आत्माग्निः (दिवि) भृकुट्यां (इध्यते) दीप्यते (आदित्) अनन्तरमेव (प्रत्नस्य) चिरन्तनस्य (रेतसः) देहबीजस्यात्मप्रति विंवस्य। रेतो वै सोमः श०२।५।१।९ सोमो वैभ्राट् श० ३।२।४।९ (वासरम्) वृ-माणस्तेनात्मनि गतिमन्तं सर्तेर्गत्यर्थस्य रूपम् (ज्योतिः) (पश्यन्ति) योगिजनाः ॥१०॥

भाषार्थः –१जब २आत्माग्नि ३भृकुटि में ४प्रज्वालित होता है ५अनन्तरही ६चिरन्तन ७देह बीज आत्मप्रति विंव के ८,९उसज्योति को जोकि प्राणद्वारा आत्मा में गतिमान हो १० योगीजन देखते हैं॥१०॥ इति द्वितीयादशति

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनुज्वालाप्रसादशर्म्मकृते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्य द्वितीयः खण्डः॥२॥

अथतृतीयःखण्डः

प्रयोग ऋषि र्गायत्री छन्दोग्नि र्देवता-

अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां पुरूतमम्। अच्छा नप्त्रे सहस्वते॥१॥ २१

हेऋत्विजः (वः) युष्माकं (अध्वराणां) यज्ञानां (वृधन्तं) वर्द्धयन्तं (पुरूतमं) समाष्टिरूपं (अग्निं) (अच्छा) आभिगच्छत (नप्त्रे) महापुरुषस्यपुत्रः प्रजापतिस्तस्य पुत्रोऽग्निस्तस्मै (सहस्वते) बलवते हविः समर्पयतेति शेषः। य

द्वावलपते पौत्राया भि गच्छत ॥ १॥

भाषार्थः – हे ऋत्विजो १ तुम्हारे २ यज्ञों के ३ वृद्धि कर्त्ता ४ समष्टि रूप ५ अग्निको ६ प्राप्त करो ७ महा पुरुष के पौत्र ८ वलवान अग्नि के लिये हवि समर्पण करो ॥ १॥

अथाध्यात्मम्

हे वागाद्यृत्विजः (वः) युष्माकं (अध्वराणां) योग यज्ञानां (वृधन्तं) वर्द्धयन्तं (पुरुतमं) महान्तं (अग्निं) आत्माग्निं (अच्छो) अभि गच्छत (नप्त्रे) महा पुरुषस्य पुत्रो विष्णुस्तस्य पुत्र आत्माग्निस्तस्मै (सहस्वते) ज्योतिष्मते प्रति विंव रूपहविः समर्पयत ॥ १॥

भाषार्थः – हे वागादि ऋत्विजो १ तुम्हारे २ योग यज्ञों के ३ वृद्धि कर्त्ता ४ महान्त ५ आत्माग्नि को ६ प्राप्त करो ७ महा पुरुष के पौत्र ८ ज्योतिष्मान आत्माग्नि के लिये प्रति विंव रूप हवि को समर्पण करो ॥ १॥

भरद्वाज ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता-

अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यꣳसद्विश्वं न्यत्रिणम् अग्निर्नो वꣳसते रयिम् ॥ २ ॥ ३२

(अयम्) (अग्निः) (तिग्मेन) तीक्ष्णेन (शोचिषा) तेजसा (विश्वम्) सर्वं (अत्रिणम्) अत्तारं राक्षसादिकं (नियंसत्) निहन्तु । यच्छतेर्लेटि रूपम् (अग्निः) (नः) अस्मभ्यं (रयिम्) धनं (वंसते) ददातु ॥ २॥

भाषार्थः – १ यह २ अग्नि ३ तीक्ष्ण ४ तेज के द्वारा ५ सव ६ राक्षस

आदिकों ७ नाश करो ८ अग्नि ९ हमारे लिये १० धनको ११ दो ॥२॥

अथाध्यात्मम्

(अयेम्) (अग्निः) आत्माग्निः (तिग्मेन) (शोचिषा) तेजसा (विश्वं) सर्व (अत्रिणं) अन्तारं कामादिकं (नियंसत्) निहन्तु (अग्निः) आत्माग्निः (नः) अस्मभ्यं (रयिम्) योगधनं (वंसते) ददातु ॥२॥

भाषार्थः—१ यह २ आत्माग्नि ३ तीक्ष्ण ४ तेज के द्वारा ५ सब ६ भक्षक काम आदि को ७ मारो ८ आत्माग्नि ९ हमारे लिये १० योगधनको ११ दो ॥२॥

वामदेवऋषि गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता

अग्ने मृड महाँ असि य ईमा देवयुं जनम्।
इयेथ बर्हिरासदम् ॥३॥ १३॥

हे (अग्ने) त्वं (महान्) (असि) (अयः) (यः) योग स्तेन रहितः साकारो भूत्वा (बर्हि रासदम्) आसीदन्ति यस्मिन्तदा सद्मासनं कुशासनं (आइयेथ) आगच्छसि सत्वं (देवयुम्) देवानां कामयितारं। देवान् यष्टुमिच्छतीति क्यचि क्याच्छन्दसि (३,२,१७) इतिउः (जनम्) यजमानं (मृड) सुखय ॥३॥

भाषार्थः—१ हे अग्ने तुम २ महान् ३ हो ४ योगरहित अर्थात् साकार होकर ५ कुशासन को ६ प्राप्त करते हो ७ देवकामा ८ यजमानको ९ सुखी करो ॥३॥

अथाध्यात्मम्

हे (अग्ने) आत्माग्नेत्वं (महान्) (असि) (अयः) आत्माग्निस्त्वं (बर्हिरासदम्) दीप्तियुक्तहार्दासनं। बर्ह दीप्तौ। (आइयेथ) प्राप्नोषि सत्वं (देवयुम्) देवस्य महापुरुषस्य कामयितारं (जनम्) भक्तं (मृड) सुखय ॥ ३॥

भाषार्थः – १ हे आत्माग्नेतुम २ महान ३ हो ४ आत्माग्नितुम ५ दीप्तियुक्त हार्दासन को ६ प्राप्त करते हो ७ महापुरुष के चाहने वाले ८ भक्त को ९ सुखी करो ॥ ३॥

वसिष्ठऋषि गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता-

अग्ने रक्षाणो अंहसः प्रतिस्म देव रीषतः तपिष्ठै रजरोदह ॥ ४॥ २४

(अ) हे सर्वव्यापिन् (देव) द्योतमान (अग्ने) (नः) अस्मान् (अंहसः) पापान् (रक्ष) (अजरः) जरारहितस्त्वं (रीषतः) हिंसतः शत्रून् (तपिष्ठैः) अतिशयेन तापकै स्तेजोभिः (प्रतिदह) भस्मीकुरु ॥ ४॥

भाषार्थः – १ हे सर्वव्यापिन् २ द्योतमान ३ अग्ने ४ हमको ५ पापसे ६ रक्षा करो ७ जरारहित तुम ८ हिंसक शत्रुओं को ९ अतिशय तापक तेजों से १० भस्म करो ॥ ४॥

अथाध्यात्मम्

(अ) हे सर्वव्यापिन् (देव) (अग्ने) आत्माग्ने (नः) अस्मान् योगिजनान् (अंहसः) पापान् (रक्ष) (अजरः) निर्विकारस्त्वं (रीषतः) हिंसतः कामादीन् (तपिष्ठैः) अतिशयेन तापकै स्तेजोभिः (प्रतिदह) भस्मीकुरु ॥ ४॥

भाषार्थः –१हे सर्वव्यापिन् २विद्वन् ३आत्माग्ने ४हम योगियोंको ५पापसे ६रक्षा करो ७निर्विकार तुम ८हिंसक काम आदि को ९अतिशयतापकतेजों से १०भस्म करो॥ ४॥

भरद्वाजऋषि गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता·

अग्ने युङ्क्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः।
अरं वहन्त्याशवः॥५॥२५

हे(अग्ने) सर्वव्यापिन् (देव) द्योतमान (अग्ने) (ये) (तव) त्वदीयाः(साधवः) सुशीलाः(आशवः) क्षिप्रगामिनः(अश्वासः) अश्वाः आज्जसेरसुक् (७।१।५०) इत्यसुकिरूपम् (अरम्) अलंपर्याप्तंत्वदीयं रथं (वहन्ति) तान्(हि) (युङ्क्ष्व) आत्मीयेरथेयोजय॥५॥

भाषार्थः –१हे सर्वव्यापिन् २द्योतमान ३अग्ने ४जो ५तेरे ६सुशील ७क्षिप्रगामी ८घोड़े ९तेरे पर्याप्तरथको १०ले चलते हैं ११उनको ही १२अपने रथमें जोड़ो॥५॥

अथाध्यात्मम् (अग्ने) हे सर्वव्यापिन् (देव) (अग्ने) आत्माग्ने (ये) (तव) त्वदीयाः(साधवः) योगानुष्ठानशीलाः(आशवः) निरालसाः (अश्वासः) मानससूर्याः। असौवाऽआदित्य एषोऽश्वः श० ६।३।१।२९ (अरम्) र–आत्माग्निस्तद्व्यतिरिक्तं देहं (वहन्ति) तान्(हि) (युङ्क्ष्व) स्वात्मनि योजय॥५॥

भाषार्थः –१हे सर्वव्यापिन् २विद्वन् ३आत्माग्ने ४जो ५तेरे ६योगानुष्ठानशील ७निरालस ८मानससूर्य ९आत्माग्निसे व्यतिरिक्त देह को १०धारण करते हैं ११उनको ही १२अपने आत्मा में युक्त करो॥५॥

वशिष्ठ ऋषि गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता-

नित्वा नक्ष्य विश्पते द्युमन्तं धीमहे वयम्।
सुवीरमग्न आहुत ॥ ६ ॥ २६

(नक्ष्य) हे उपगन्तव्य। नक्षतिर्व्याप्तिकर्मा। नि० २।१८ (विश्पते) यजमानानां स्वामिन् नि० २।३ (आहुत) सर्वैर्यजमानैरभिहुत (अग्ने) (द्युमन्तं) दीप्तिमन्तं (सुवीरं) ऋत्विगाख्यैः सुवीरैः समृद्धं (त्वा) त्वां (वयम्) (निधीमहे) निहितवन्तः ६

भावार्थः - १ हे उपगन्तव्य २ यजमानों के स्वामी ३ सब यजमानों से अभिहुत ४ अग्ने ५ दीप्तिमान ६ ऋत्विक् नाम श्रेष्ठ वीरों से समृद्ध ७ तुमको ८ हमने ९ स्थापित किया ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम् - (नक्ष्य) हे सर्वव्यापिन् (विश्पते) योगिनां स्वामिन् (आहुत) योगिजनैरभिहुत (अग्ने) आत्माग्ने (द्युमन्तं) दीप्तिमन्तं (सुवीरं) वागाद्यृत्विग्भिः सम्बद्धं (त्वा) त्वां (वयम्) योगिनः (निधीमहे) हार्दाकाशे निहितवन्तः ६

भावार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ योगिजनेश्वर ३ योगियों से अभिहुत ४ आत्माग्ने ५ दीप्तिमान ६ वागाद्यृत्विजों से सम्बद्ध ७ तुमको ८ हम योगियों ने ९ हार्दाकाश में स्थापन किया ॥ ६ ॥

विरूप ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता-

अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्।
अपाथ्ंरेताथ्ंसि जिन्वति ॥ ७ ॥ २७

(अयम्) (दिवः) द्युलोकस्य (मूर्द्धा) सूर्यरूपः श० १४।१।१।२० (पृथिव्याः) (अपाम्) अन्तरिक्षाणां मध्ये नि० १।३

८(ककुत्पतिः) ककुदाकाराणां गोलानां स्वामी (अग्निः)
अग्नि रात्माग्निर्वा (रेतांसि) आपः नि० १।१२।२६ यद्वा वीर्य
विकार भूतानि स्थावरजङ्गमात्म कानि (जिन्वति) प्रीण
यति। अग्निर्वा इतो वृष्टिं समीरयतीति श्रुतेः ॥७॥

भाषार्थः – १ यह २ स्वर्गलोक का ३ सूर्यरूस ४ पृथिवी ५ और अन्त
रिक्षों के मध्य ६ ककुदाकार गोलों का स्वामी ७ अग्नि वा आत्माग्नि ८
जलों वा वीर्यविकार रूपचराचर जीवों को ९ प्रेरणा करता है ॥७॥

शुनःशेप ऋषिः गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता·

इमेमूषुत्वमस्माकंᳪंसनिंगायत्रंनव्याᳪंस
म्।अग्नेदेवेषुप्रवोचः॥८॥ २८

हे (अग्ने) अग्ने आत्माग्नेवा (त्वम्) (अस्माकम्) (इमम्)
(नव्यासम्) संस्कृतं (सनिं) दानं (गायत्रं) स्तुति रूपं
वचोऽपि (ऊषु) विष्णु शिवादिषु (देवेषु) इन्द्रादिषु च (प्र
वोचः) प्रब्रूहि ॥८॥

भाषार्थः – १ हे अग्ने वा आत्माग्ने २ तुम ३ हमारे ४ इस ५ संस्कृत ६ दा
न ७ और स्तुति रूप वचन को भी ८ विष्णु शिवादि ९ और इन्द्र आदि देव
ताओं के मध्य भी १० उच्चारण करो ॥८॥

गोपवन ऋषिः गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता·

तंत्वागोपवनोगिराजनिष्ठदग्नेअङ्गिरः।
सपावकश्रुधीहवम्॥९॥ २९

हे (अग्ने) अग्ने आत्माग्नेवा (गोपवनः) व्यष्टि समष्टीन्द्रिया
णां शोधकः पृशोधे (अङ्गिरः) व्यष्टि समष्टि प्राणाः प्राणो

वा॰आङ्गिरा शा॰ ६।१।२।२८(गिरा) वेदवचसा(तम्)त्वां
त्वां(जनिष्टते) संस्करोति हे(पावक) शोधक(स)त्वं(ह
वम्) आह्वानं(श्रुधी) शृणु ॥ ९ ॥

भावार्थः – १ हे अग्नेवा आत्माग्ने २ व्यष्टि समष्टि इन्द्रियों का शोध
क ३ व्यष्टि समष्टि प्राण ४ वेद वचन से ५ उस ६ तुमको ७ संस्कार करता
है ८ हे शोधक ९ वह तुम १० आह्वान को ११ सुनो ॥ ९ ॥

वामदेवऋषि र्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता-

परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्।
दधद्रत्नानि दाशुषे ॥१०॥ ३०

(वाजपतिः) अन्नानां पालकः(कविः) मेधावी (अग्निः)
अग्निरात्माग्निर्वा (दाशुषे) हविर्दत्तवते यजमानाय(रत्ना
नि) रत्नभूतानि धनानि योग धनानि वा (दधत्) प्रयच्छ
न्(हव्यानि) आधिदेवाध्यात्म सम्बन्धीनि(पर्यक्रमीत्)
देवान्प्रति नीतवान् ॥ १० ॥

भावार्थः – १ अन्न पालक २ मेधावी ३ अग्नि वा आत्माग्नि ने ४ हवि-
दाता यजमान के लिये ५ रत्न रूप धन वा योग धनों को ६ देते हुए ७ आधि
देवाध्यात्म सम्बंधी हविश्यों को ८ देवताओं के पास पहुंचाया ॥ १० ॥

कण्वऋषि र्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता-

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे
विश्वाय सूर्यम् ॥११॥ ३१

(केतवः) वैश्वानरस्याग्नेरात्माग्नेर्वा केतवो रश्मयः(उ)
एव(तम्)(यम्) सर्वस्य प्राण रूपं(जातवेदसं) सर्वज्ञं-

(देवम्) द्योतमानं (सूर्यं) (विश्वाय) (दृशे) सर्वदर्शनाय (उद्वहन्ति) ऊर्ध्वं वहन्ति ॥११॥

भाषार्थः – १ वैश्वानर अग्नि वा आत्माग्नि की किरणें २ ही ३ उस ४ सबके प्राणरूप ५ सर्वज्ञ ६ द्योतमान ७ सूर्य को ८, ९ सर्वदर्शन के लिये १० ऊंचा धारण करती हैं ॥११॥

मेधातिथिर्ऋषि गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता

कविमग्निमुपस्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे।
देवममीवचातनम् ॥१२॥ ३२॥

हे स्तोत्र समूह योगिन् वा (अध्वरे) यज्ञे योग यज्ञे वा (कविम्) मेधाविनं (सत्यधर्माणं) सत्यस्य ब्रह्मणो धारकं (देवम्) द्योतमानं (अमीवचातनं) अमीवानां हिंसकानां शत्रूणां कामादीनां वा घातकं (अग्निम्) अग्निमात्माग्निं वा (उपस्तुहि) उपेत्य स्तुतिं कुरु ॥१२॥

भाषार्थः – हे स्तोत्र समूह वा योगिन् १ यज्ञ वा योग यज्ञ में २ मेधावी ३ ब्रह्म के धारक ४ द्योतमान ५ हिंसक शत्रु वा काम आदि के घातक ६ अग्नि वा आत्माग्नि को ७ सन्मुख होकर स्तुत कर ॥१२॥

सिन्धुद्वीप आम्बरीषोऽत्रन आप्तोवा ऋषि गायत्री छन्द आपो दे०

शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं
योरभिस्रवन्तु नः ॥१३॥ ३३

(देवीः) देव्यः आपः (नः) अस्माकं (अभिष्टये) (अ) अन्नं (भ) तेजोरूपं घृतं तस्येष्टये (शम्) सुखरूपा भवन्तु (नः) (पीतये) पानाय (शम्) सुखरूपा भवन्तु (नः) अस्माकं

(शंयोः) शंयुः शुभान्वितो यजमानस्तस्य (अभिस्रवन्तु) सन्मुखे प्राप्ता भवन्तु ॥ १३ ॥ ३३

भाषार्थः–१ प्रकाशमान जल २ हमारे ३ अन्न रत्न की इष्टि के लिये ४ सुख रूप हों ५ हमारे ६ पान के लिये ७ सुख रूप हों ८ हमारे ९ यजमान के १० सन्मुख प्राप्त हों ॥ १३ ॥

अथाध्यात्मम्- हे (देवीः) आपो ज्योती रसोमृतमिति श्रुतावुक्ता आपः (नः) अस्माकं वागाद्यृत्विजां (अभिष्टये) (अभ) प्रकाशहीना माया विकारो देहस्तस्येष्टये प्रकृतौ होमाय (शम्) आनन्दरूपा भवन्तु (नः) अस्माकं (पीतये) पानाय (शम्) आ० (नः) अस्माकं (शंयोः) यजमानस्य (अभिस्रवन्तु) सन्मुखे प्राप्ता भवन्तु ॥ १३ ॥

भाषार्थः–१ हे ब्रह्मांभु रूप जलो २ हम वागाद्यृत्विजों की ३ देह को प्रकृति में होम करने के लिये ४ आनन्द रूप हूजिये ५ हमारे ६ पान के लिये ७ आनन्द रूप हूजिये ८ हमारे ९ यजमान के १० सन्मुख प्राप्त हूजिये ॥ १३ ॥ उशना ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता

कस्य नूनं परीणसि धियो जिन्वसि सत्पते
गोषाता यस्य ते गिरः ॥ १४ ॥ ३४

हे (सत्पते) सतां पतेऽग्ने। आत्माग्ने ब्रह्माग्ने वा (नूनम्) निश्चयेन त्वं (कस्य) कामस्य (परीणसि) न सकौटिल्ये व्याप्तौ च परितः कुटिले व्याप्ते वा देहे (धियः) कर्माणि मनोऽहङ्कारचित्तवृत्तीर्वा (जिन्वसि) प्रीणयसि (यस्य) (ते) तव सम्बन्धिन्यः (गिरः) स्तुतयः (गोषाताः) गवां महावाचां

दाच्यः विदुषां निश्चयेतु सर्वाणि कर्माणि कामस्यैव नात्मन इत्यर्थः ॥१४॥

भाषार्थः – १ हे सत्पुरुषों के स्वामी अग्ने वा आत्माग्ने २ निश्चयतुम ३ कामदेव के ४ देह में ५ कर्मों वा मन अहंकार चित्त वृत्तियों को ६ प्रेरित करते हो ७ जिस ८ तुम्हारी ९ स्तुतियां १० महा वाक्यों की दाता हैं ज्ञानियों के निश्चय में सब कर्म काम केही हैं न आत्मा के यह अभिप्राय है॥१४॥

इति तृतीया दशतिः

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म कृते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने प्रथमाध्यायस्य तृतीयः खंडः

अथ चतुर्थः खण्डः

शंयुर्ऋषिर्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता –

यज्ञा यज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे। प्रप्र
वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम् १॥ ३५

हे स्तोतारः (वः) युष्माकं (यज्ञा) हविर्यज्ञाः (यज्ञाः) योगयज्ञाः (वयम्) वयंवेदा अपि (गिरा) आधिदैव सम्बन्धिन्या वाचा (गिरा) अध्यात्म सम्बंधिन्या वाचा (दक्षसे) प्रवृद्धाय वलरूपाय वा (अग्नये) अग्नये आत्माग्नये ब्रह्माग्नये वाभुवन्ति (च) अहं वेदोऽपि तं (अमृतम्) अविनाशिनं (जातवेदसं) जातानां वेदितारं (मित्रं) (न) इव (प्रियम्) (प्रशंसिषम्) आधिदैव सम्बन्धिन्या स्तुत्या (प्रशंसिषम्) अध्यात्म सम्बन्धिन्या स्तुत्या ॥१॥

भाषार्थः – १ हे स्तोताओ १ तुम्हारे २ हविर्यज्ञ ३ योग यज्ञ ४ और हम

वेदभी ५ आधिदैवसम्बंधी वाक् ६ और अध्यात्म सम्बंधी वाक द्वारा ७ प्रवृद्ध बल रूप ८ अग्नि आत्माग्नि वा ब्रह्माग्नि के लिये होते हैं ९ और मैं वेदभी १० अविनाशी ११ सर्वज्ञ १२, १३, १४ मित्र की समान प्रिय को १५ आधिदैव सम्बंधी स्तुति के द्वारा प्रशंसा करता हूं तथा १६ अध्यात्म संबंधी स्तुति के द्वारा प्रशंसा करता हूं ॥१॥

भर्गऋषिर्बृहतीछन्दोऽग्निर्देवता-

पाहि नो अग्न एकया पाह्युत द्वितीयया। पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जाम्पते पाहि चतसृभिर्वसो २॥ ३६

हे (अग्ने) अग्ने आत्माग्ने ब्रह्माग्ने वा (नः) अस्मान् (एकया) अद्वैतलक्षणया गिरा (पाहि) सन्यासाश्रमे रक्ष (उत) अपि च (द्वितीयया) (उ) मायाब्रह्म साधक या गिरा वानप्रस्थाश्रमे (पाहि) (ऊर्जाम्पते) हे अन्नानां बलानां वा स्वामिन् (तिसृभिः) जीवेश माया साधिकाभिः (गीर्भिः) (पाहि) गृहस्थाश्रमे रक्ष (वसो) हे वस्त्रांशो (चतसृभिः) ब्रह्मजीवेश माया साधिकाभिर्गीर्भिः (पाहि) ब्रह्मचर्याश्रमे रक्ष ब्रह्मचर्याश्रमे ब्रह्म माया जीवेशानां सिद्धान्तं ज्ञात्वा गृहस्थाश्रमे माया विकारान्नादिभिर्जीवेशयोस्तृप्तिं कृत्वा वानप्रस्थाश्रमे सर्वं ब्रह्म मयं ज्ञात्वा चतुर्थाश्रमे वासुदेवः सर्वमिति वाचा परमां गतिं प्राप्नोति ॥ २॥

भावार्थः १ हे अग्ने आत्माग्ने वा ब्रह्माग्ने २ हमको ३ अद्वैतलक्षणा वाणी द्वारा ४ सन्यास आश्रम में रक्षा करो ५ और ६, ७ माया ब्रह्म साधक वा

णी द्वारा ९ वानप्रस्थ आश्रम में रक्षा करो हे अन्न वालों के स्वामी १०,११ जीव ईश माया साधक वाणी के द्वारा १२ गृहस्थाश्रम में रक्षा करो १३ हे ब्रह्मांशो १४ ब्रह्म जीव ईश माया साधक वाणी के द्वारा १५ ब्रह्मचर्याश्रम में रक्षा करो अर्थात् ब्रह्मचर्याश्रम में ब्रह्म माया जीव ईश्वर के सिद्धान्त को जानकर गृहस्थाश्रम में माया विकार अन्न आदि के द्वारा जीव ईश्वर की तृप्ति को करके वानप्रस्थ आश्रम में सबको ब्रह्म रूप जानकर चतुर्थ आश्रम में वासुदेवः सर्वं इस वचन के द्वारा परम गति को पाता है ॥२॥

शंयुऋषिर्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता

वृहद्भिरग्ने अर्चिभिः शुक्रेण देव शोचिषा। भ
रद्वाजे समिधानो यविष्ठ रेवत्पावक दीदिहि २ ३७

हे (देव) दानादि गुण युक्त (यविष्ठ) युवतम (पावक) शोधक (अग्ने) (शुक्रेण) निर्म्मलेन (शोचिषा) तेजसा (भरद्वाजे) वाजमन्नं हविर्लक्षणं भरतीति भरद्वाजमग्नि कुण्ड तस्मिन् (समिधानः) समिध्यमानस्त्वं (बृहद्भिः) महद्भिः (अर्चिभिः) (नः) अस्मदर्थं (रेवत्) धनयुक्तं यथा भवति तथा (दीदिहि) दीप्यस्व ॥३॥

भावार्थः – १ हे दान आदि गुण से युक्त २ युवतम ३ शोधक ४ अग्ने ५ निर्मल ६ तेज के द्वारा ७ अग्नि कुण्ड में ८ प्रज्वलित तुम ९,१० बड़े तेजों के साथ ११ हमारे लिये १२ जैसे धनयुक्त होने से ही १३ प्रदीप्त हूजिये ३

अथाध्यात्मम् – हे (देव) दीप्त (यविष्ठ) निर्जरामर (पावक) देहस्य शोधक (अग्ने) आत्माग्ने (शोचिषा) स्वकीयते

जोरूपेण (भुक्रेण) मानससूर्येण। एषवै भुक्रोय एषतप-
तिश० ४।३।१।२६ (भरद्वाजे) मनसि। मनोवैभरद्वाजऋषि
श० ८।१।२।९ (समिधानः) समिध्यमानस्त्वं (बृहद्भिः) महद्भिः (अर्चिभिः) तेजोभिः (नः) अस्मद्याग धृत्विजा मर्थे (रेवत्) योगैश्वर्ययुक्तं यथा भवति तथा (दीदिहि) दीप्यस्व ३

भाषार्थः १ हेदीप्त २ निर्जरामर ३ देह केशोधक ४ आत्माग्ने ५ अपनेतेजरूप ६ मानससूर्यके साथ ७ मनमें ८ प्रज्वलिततुम ९,१० बड़े तेजों के साथ ११ हमारे लिये १२ जैसे योगैश्वर्ययुक्त हो तैसेही १३ प्रदीप्त हूजिये॥३॥　वसिष्ठऋषिर्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता

त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः। यन्तारो ये मघवानो जनानामूर्वं दयन्त गोनाम॥४।३८

हे (स्वाहुत) सुष्ठुभिर्यजमानैराहुत (अग्ने) अग्ने आत्माग्ने वा (जनानां) मध्ये (ये) (यन्तारः) संयमयुक्ताः (मघवानः) धनवन्तः योगैश्वर्यसम्पन्नावा (गोनाम्) गवां। गोपदान्ते (७,१,५७) इति नुकिरूपम्। इन्द्रियाणाम्वा। (ऊर्वं) समूहं (दयन्त) प्रयच्छन्ति (त्वे) ते उ नएव (सूरयः) स्तोतारः नि० ३,१६ तव (प्रियासः) प्रियाः। आज्जसेरसुक् (७,१,५०) इत्यसुकिरूपम (सन्तु) ॥४॥

भाषार्थः — १ हे श्रेष्ठ यजमानों से आहुत २ अग्ने वा आत्माग्ने ३ मनुष्यों के मध्य ४ जो ५ संयम युक्त ६ धनवान वा योगैश्वर्य सम्पन्न ७ गौ वा इन्द्रियों के समूह को ९ दान करते हैं १० वेही ११ स्तोता १२ तेरे प्रिय १३ होवें॥४॥

भरद्वाजऋषिर्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता

अग्ने जरितर्विश्पतिस्तपानो देव रक्षसः। अप्रोषिवान् गृहपते महाँ असि दिवस्पायुर्दुरोणयुः॥५॥ ३९

हे (जरितः) स्तोतः (देव) (गृहपते) यजमान गृहस्य पालक (अग्ने) (विश्पतिः) प्रजानां पालकः (रक्षसः) राक्षसानां (तपानः) सन्तापकः (अप्रोषिवान्) यजमान गृहस्य अत्यागी (दिवस्पायुः) द्युलोकस्य पाता (दुरोणयुः) यजमान गृहस्य मिश्रयिता सर्वदा वर्त्तमानस्त्वं (महान्) अतिशयेन पूज्यः (असि)॥५॥

भाषार्थः–१ हे स्तोता २ देव ३ यजमान के गृह के पालक ४ अग्ने ५ प्रजा पालक ६ राक्षसों के ७ सन्तापक ८ यजमान के गृह को न त्यागने वाले ९ स्वर्गलोक के रक्षक १० यजमान के गृह में सदा वर्त्तमान तुम ११ अतिशय पूज्य १२ हो॥५॥

अथाध्यात्मम्–हे (जरितः) वेदवाचा स्वकीय रूपस्य स्तोतः (देव) (गृहपते) देहस्य पालक (अग्ने) आत्माग्ने (विश्पतिः) प्राणानां स्वामी (रक्षसः) कामादीनां (तपानः) सन्तापकः (अप्रोषिवान्) देहस्य अत्यागी (दिवस्पायुः) भृकुटेः पाता (दुरोणयुः) देहे सर्वदा वर्त्तमानस्त्वं (महान्) (असि)॥५॥

भाषार्थः–१ हे वेदवाक् से अपने रूप के स्तोता २ विद्वान ३ देह पालक ४ आत्माग्ने ५ प्राणों के स्वामी ६ काम आदि के ७ सन्तापक ८

देह के अत्यागी ९ भृकुटि के रक्षक १० देह में सदा वर्त्तमान तुम ११ महान १२ हो ॥ ५ ॥

मस्कृएवत्रृषिर्वृहती छन्दोग्निर्देवता·

अग्ने विवस्वदुषसश्चित्रं राधो अमर्त्यः। आ दाशुषे जात वेदो वहा त्वमद्या देवां उषर्बुधः॥ ६॥

हे (अमर्त्य) अमर देव (जातवेदः) ज्ञानानां वेदितः (अग्ने) त्वं (उषसः) उषोदेवतायाः सकाशात् (विवस्वत्) विशिष्ट निवासो येनं (चित्रम्) नाना विधं (राधः) धनं (दाशुषे) हविर्दत्तवते यजमानाय (आवह) आनीय प्रापय (अद्य) अस्मिन्दिने (त्वम्) (उषर्बुधः) उषः काले प्रबुद्धान्देवान् (आ) आवह ॥ ६ ॥

भावार्थः – १ हे अमर २ सर्वज्ञ ३ अग्ने तुम ४ उषा देवता के सकाश से ५ विशिष्ट निवास से युक्त ६ नाना प्रकार के ७ धन को ८ हविदाता यजमान के लिये ९ प्राप्त कराओ १० अब ११ तुम १२ उषाकाल पर जागे हुए देवताओं को १४ लाओ ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम् – हे (अमर्त्य) अविनाशिन् (जातवेदः) सर्वज्ञ (अग्ने) आत्माग्ने त्वं (उषसः) जपसमाधि सम्बन्धि कालात् (विवस्वत्) तमसामज्ञानानां विवासन करं (चित्रम्) अद्भुतं (राधः) योगधनं (दाशुषे) आत्म समर्पकाय योगिने (आवह) प्रापय (अद्य) (त्वम्) (उषर्बुधः) उषःकाले योगानुष्ठातॄन् (आ) आवह समन्तात् ब्रह्माणि प्रापय ॥ ६ ॥

भाषार्थः—१ हे अविनाशी २ सर्वज्ञ ३ आत्माग्नेतुम ४ जपसमाधि सम्बंधीकाल से ५ ज्ञानान्धकार नाशक ६ अद्भुत ७ योगधन को ८ आत्म समर्पण कर्त्ता योगी के लिये ९ मासक राओ १० अवश्य तुम १२ उषाकाल पर योग निष्ठों को १३ ब्रह्म में प्राप्त करो ॥ ६ ॥

त्वण पाणि ऋषि र्बृहती छन्दो ग्नि र्देवता

त्वन्नो अग्ने चित्र ऊत्या वसो राधांसि चोदय। अस्य रायस्त्वमग्ने रथीरसि विदा गाधन्तुचे तुनः ॥ ७ ॥ ४२

हे (वसो) ब्रह्मांशुरूप (अग्ने) अग्ने। आत्माग्ने वा (चित्रः) दर्शनीय स्त्वं (ऊत्या) रक्षयासह (राधांसि) धनानि योग धनानि वा (नः) अस्मभ्यं (चोदय) प्रेरय (अस्य) (राधः) पूर्वोक्त धनस्यत्वं (रथीः) प्रेरयिता। रंहति र्गति कर्मा नि० २।१४ (असि) (नः) अस्माकं (तुचे) पुत्रायनि० २।२।१। (गाधं) प्रतिष्ठां (तु) क्षिप्रं (विदाः) लम्भय ॥ ७ ॥

भाषार्थः—१ हे ब्रह्मांशु रूप २ अग्ने वा आत्माग्ने ३ दर्शनीय तुम ४ रक्षा के साथ ५ धनों वा योग धनों को ६ हमारे लिये ७ प्रेरणा करो ८ इस ९ पूर्वोक्त धन के तुम १० प्रेरक ११ हो १२ हमारे १३ पुत्र के लिये १४ प्रतिष्ठा को १५ शीघ्र १६ प्राप्त कराओ ॥ ७ ॥

विरूप ऋषि र्बृहती छन्दो ग्नि र्देवता

त्वामित्सप्रथो अस्यग्ने नानृत्र्दनः कविः। त्वां विप्रासः समिधा नदीदिव आविवासन्ति वेधसः ॥ ८ ॥ ४२

हे (समिधान) समिध्यमान (दीदिवः) दीप्त (ऋतेः) रक्षक (अग्ने) अग्ने आत्माग्नेवा (ऋतः) सत्यः (कविः) सर्वज्ञः (त्वम्) (दूतः) त्वमेव (सप्रथाः) सुविस्तीर्णः (असि) (त्वाम्) (विप्रासः) विप्राः मेधाविनः (आविवासन्ति) परिचरन्ति ८

भाषार्थः – १ हे भलेप्रकार प्रज्वलित २ दीप्त ३ रक्षक ४ अग्नेवा आत्माग्ने ५ सत्य ६ सर्वज्ञ ७,८ तुमही ९ सुविस्तीर्ण १० हो ११ तुमको १२ मेधावी पुरुष १३ सेवन करते हैं॥ ८॥

शुनःशेप ऋषि र्बृहती छन्दोऽग्नि र्देवता-

आ नो अग्ने वयो वृधꣳ रयिम्पावक शꣳस्यम्। रास्वा च न उपमाते पुरुस्पृहꣳ सुनीती सुयशस्तरम्॥ ९॥ ४३॥

हे (पावक) शोधक (आ) सर्वव्यापिन् (अग्ने) अग्ने आत्माग्नेवा (नः) अस्मभ्यं (वयोवृधम्) अभीष्टावस्थाया वर्द्धकं (शंस्यम्) स्तुत्यं हे (रयिम्) धनं योग धनं वा (रास्व) देहि रातिर्दान कर्मा नि० ३।२० हे (उपमाते) धातः (नः) अस्मभ्यं (सुनीती+आ) सुनीत्या सुमार्गेण (पुरुस्पृहम्) बहुभिः स्पृहणीयं (सुयशस्तरम्) महा कीर्त्ति धनं (च) देहि ९

भाषार्थः – १ हे सर्वव्यापिन् २ शोधक ३ अग्नेवा आत्माग्ने ४ हमारे लिये ५ अभीष्ट अवस्था के बढाने वाले ६ स्तुति योग्य ७ धन वा योगधन को दीजिये ८ हे धाता १० हमारे लिये ११ सुमार्ग से १२ बहुस्पृहणीय १४ महा कीर्त्ति धन को १४ दीजिये॥ ९॥

सोभरि ऋषि र्बृहती छन्दोऽग्नि र्देवता-

योविश्वादयते वसुहोता मन्द्रो जनानाम् मधोर्न पात्रा प्रथमान्यस्मै प्रस्तोमायन्त्वग्नये॥१०॥ ५४

(होता) देवानामाह्वाता (मन्द्रः) स्तुत्योग्निः। मादि स्तुतौ (जनानाम्) यजमानानां (विश्वा) विश्वानि सर्वाणि (वसु) वसूनि धनानि (दयते) प्रयच्छति (अस्मै) (अग्नये) (मधोः) सोमस्य (प्रथमानि) मुख्यानि (पात्रा) पात्राणि (न) च (स्तोमाः) स्तोत्राणि (प्रयन्ति) गच्छन्ति॥१०॥

भाषार्थः - १ देवताओं का आव्हान करने वाला २ यजमानों का ३ स्तुत्य अग्नि ४ सब ५ धनों को ६ देता है ७ इस ८ अग्नि के लिये ९ सोम के १० मुख्य ११ पात्र १२ और १३ स्तोत्रों को १४ यजमान प्राप्त करते हैं॥१०॥

अथाध्यात्मम्

(होता) महापुरुष पुरुषाणामाह्वाता (जनानाम्) योगिनां (मन्द्रः) स्तुत्य आत्माग्निः (विश्वा) सर्वाणि (वसु) योग धनानि (दयते) प्रयच्छति (अस्मै) (अग्नये) आत्माग्नये (मधोः) आत्म प्रति बिंबस्य। इदं मानुषं सर्वेषां भूतानां मधु+अय मात्मा सर्वेषां भूतानां मधु श० १४।५।५।१२-१३ (प्रथमानि) मुख्यानि (पात्रा) पात्राणि ज्ञानेन्द्रियाणि (नः) च (स्तोमाः) प्राणाश्च। प्राणा वै स्तोमाः श० ८।४।१।८ (प्रयन्ति) योग मार्गेण गच्छन्ति॥१०॥ ५५

भाषार्थः - १ महापुरुष पुरुषों का आव्हाता २ योगीयों का ३ स्तुत्य आत्माग्नि ४ सब ५ योग धनों को ६ देता है ७ इस ८ आत्माग्नि के लिये

९ आत्म प्रति दिवके १० मुख्य ११ पात्र ज्ञानेन्द्रियां १२ और १३ प्राण १४ योग मार्ग से जाते हैं ॥ १० ॥ ४४

इति चतुर्थी दशति

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्मकृते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने प्रथमाध्यायस्य चतुर्थः खण्डः

अथ पञ्चमः खण्डः

वामदेव ऋषिर्बृहती छन्दोग्निर्देवता-

एनावो अग्निन्नमसोर्जो नपातमाहुवे । प्रियं चेतिष्ठ मरतिं ᳪ स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम् १-४५

हे स्तोतारः (ऊर्जः) (नपातम्) ब्रह्मांशोः पुत्रः प्रजापतिस्तस्य पुत्रोऽग्निः (प्रियम्) (चेतिष्ठम्) प्रज्ञातारं। नि० ३।९ अथ वाचिनी संज्ञाने त्वचितुम्छन्दसि (५।३।९९) इतीष्ठनि रूपम् (अरतिम्) स्वामिनं (स्वध्वरम्) सुयज्ञं (दूतम्) यजमानस्य दूतं (अमृतम्) अविनाशिनं (अग्निम्) (एना) एनेन। सुपां सुलुगित्यादिना तृतीयाया आत्वे रूपम् (नमसे) हविषा स्तोत्रेण वा (वः) युष्मदर्थं (आहुवे) आह्वयामि। सम्प्रसारणं वाहुलकात् ६।१।३४-॥ १॥

भाषार्थः - हे स्तोताओ १,२ ब्रह्मांशु का पौत्र अग्नि ३ प्रिय ४ प्रज्ञाता ५ स्वामी ६ सुयज्ञ ७ यजमान के दूत ८ अविनाशी ९ अग्नि को १० इस ११ हवि वा स्तोत्र के द्वारा १२ तुम्हारे लिये १३ आह्वान करता हूं १

अथाध्यात्मम् - हे वाग्यादृत्विजः (ऊर्जः) (नपातम्) ब्रह्मांशोः पुत्रो नारायणस्तस्य पुत्र आत्माग्निः (प्रियम्)

सर्वात्मत्वात्प्रियं (चेनिष्ठम्) ज्ञान स्वरूपम् (अरतिम्) अन्तर्यामि रूपेण स्वामिनं (स्वध्वरम्) अध्यात्म यज्ञवन्त (दूतम्) महापुरुष पुरुषाणां माह्वानेदूतं (अमृतम्) अविनाशिनं (अग्निम्) आत्माग्निं (एना) एनेन (नमसा) आत्मप्रति बिंब रूपान्नेन निमित्तेन (वः) युष्मदर्थं (आहुवे) १

भावार्थः – हे वागादृत्विजो १,२ अग्निप्रभु के पौत्र ३ प्रिय ४ ज्ञानस्वरूप ५ अन्तर्यामी रूपसे स्वामी ६ अध्यात्म यज्ञवन्त ७ महा पुरुष पुरुषोंके आव्हान में दूत ८ अविनाशी ९ आत्माग्नि को १० इस ११ आत्मप्रति बिंब रूप अन्न के निमित्त १२ तुम्हारे लिये १३ आव्हान करता हूं।१

भर्गऋषि र्बृहती छन्दोग्निर्देवता-

शेषे वनेषु मातृषु सन्त्वा मर्तास इन्धते। अतन्द्रो हव्यं वहसि हविष्कृत आदिद्देवेषु राजसि ॥२॥ ४६

हे (अग्ने) त्वं (वनेषु) वड़वानल रूपेणोदकेषु नि०१।१२(मातृषु) अरणि काष्ठसु ओषधयोवैदेवानां पत्न्यः श०६।५।४।४ (शेषे) स्वापिषि वर्त्तसे (त्वा) त्वां (मर्तासः) अध्वर्यादयो मनुष्याः मन्थनेनोत्पाद्य (समिन्धते) (अतन्द्रः) अनलसस्त्वं (हविष्कृतः) यजमानस्य (हव्यम्) हविः (वहसि) देवान्प्रति (आदित्) अनन्तरमेव (देवेषु) मध्ये (राजसि) दीप्यसे ॥२॥

भावार्थः – १ हे अग्ने तुम २ वड़वानल रूपसे जलों में ३ तथा अरणी काष्ठों में ४ शयन करते हो ५ तुमको ६ अध्वर्यु आदि मनुष्य मन्थन

से प्रकट कर ७ प्रज्वलित करते हैं ८ अनालसी तुम ९ यजमान के १० हवि को ११ देवताओं के पास पहुंचाते हो १२ तदनन्तर ही १३ देवताओं के मध्य १४ शोभित होते हो ॥ २॥

अथाध्यात्मम् – (अग्ने) हे आत्माग्ने त्वं (वनेषु) वीर्य परिणाम स्थूल सूक्ष्म कारणदेहेषु (मातृषु) इन्द्रियेषु (शेषे) स्वपिषि (त्वा) त्वां (मर्त्तासः) मनुष्याः योगानुष्ठानेन (समिन्धते) (अतन्द्रः) अनालसस्त्वं (हविष्कृतः) यजमानस्य (हव्यम्) आत्मप्रतिविंबं महापुरुषपुरुषेषु (वहसि) (आदित्) अनन्तरमेव (देवेषु) विद्वत्सु योगिषु मध्ये (राजसि) दीप्यसे ॥ २॥

भाषार्थः – १ हे आत्माग्ने तुम २ वीर्य परिणाम स्थूल सूक्ष्म कारण शरीर में ३ तथा इन्द्रियों में ४ शयन करते हो ५ तुमको ६ मनुष्य योगानुष्ठान द्वारा ७ भले प्रकार प्रदीप्त करते हैं ८ अनालसी तुम ९ यजमान के १० आत्म प्रति विंबको महापुरुषपुरुषों में ११ प्राप्त करते हो १२ तदनन्तर ही १३ विद्वान योगियों के मध्य १४ प्रकाश करते हो ॥ २॥

सोभरिर्ऋषिर्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता

अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन्व्रतान्यादधुः।
उपो षु जातमार्यस्य वर्द्धनमग्निं नक्षन्तु नो गिरः ॥३॥ ४७

(यस्मिन्) अग्नावात्माग्नौ वा (व्रतानि) कर्म्माणि योगकर्म्माणि वा (आदधुः) आहितवन्तः स (गातुवित्तमः) यत्न भूमेर्योगभूमेर्वाऽतिशयेन ज्ञाता। गातुरिति पृथिवी नाम नि०

१,१(अदर्शि) प्रादुरभूत् किञ्च (सुजातम्) सम्यक् प्रादुर्भूतं (आर्यस्य) यजमानस्य (वर्द्धनम्) वर्द्धयितारं (अग्निम्) अग्निमात्माग्निम्वा (नः) अस्माकं (गिरः) स्तुतिरूपा वाचः (उपो) समीपएव (नक्षन्तु) गच्छन्तु नि० २,१८ ॥३॥

भाषार्थः—१ जिस अग्निवा आत्माग्निमें २ कर्मवायोगकर्मों को ३ स्थापन किया वह ४ यज्ञभूमिवायोगभूमि का अतिशयज्ञाता ५ प्रकट हुआ ६ उसप्रादुर्भूत ७,८ यजमान की वृद्धि करने वाले ९ अग्निवा आत्माग्निको १० हमारी ११ स्तुतिरूपवाणी १२ समीपही १३ प्राप्तकरो ॥३॥

मनुर्ऋषिर्बृहती छन्दोग्निर्देवता-

अग्निरुक्थे पुरोहितो ग्रावाणो बर्हिरध्वरे। ऋचा यामि मरुतो ब्रह्मणस्पते देवा अवो वरेण्यम्॥

(उक्थे) स्तोत्रशस्त्रात्मके (अध्वरे) यज्ञे (पुरोहितः) देवानांपुरोहितः (अग्निः) (ग्रावाणः) सोमाभिषवपाषाणाः (बर्हिः) चवर्तन्ते एवं सामग्र्यां सत्यां हे (ब्रह्मणस्पते) हे (देवाः) हे (मरुतः) अहं (ऋचा) सूक्तरूपया स्तुत्या युष्मकं (वरेण्यम्) वरणीयंभजनीयं (अवः) रक्षणं (यामि) याचामि यामीति याञ्चाकर्मा नि० ३,१९ ॥४॥

भाषार्थः—१ स्तोत्रशस्त्रात्मक २ यज्ञमें ३ देवताओं का पुरोहित ४ अग्नि ५ सोमाभिषवपाषाण ६ और कुशा वर्त्तमान हैं ऐसी सामग्री होनेपर ७ हे ब्रह्मणस्पति ८ हे देवताओ ९ हे मरुद्गणों में १० सूक्तरूप स्तुति के द्वारा ११ तुम्हारे १२ भजनीय १३ रक्षण को १४ मांग-

नाहं॥४॥ **अथाध्यात्मम्**
(उक्थे)(अध्वरे) प्राण सम्बन्धियोग यज्ञे। प्राणोवा उ
क्थं श॰ १४।८।१४।२(पुरोहितः) पुरस्ताद्धितः हितकरः
(अग्निः) आत्माग्निः (ग्रावाणः) प्राणाः। प्राणावै ग्रावाण
श॰ १४।२।२।३३ (बर्हिः) सुषुम्णाचवर्त्तते हे (ब्रह्मणस्प
ते) प्राण। प्राणोहि ब्रह्मणस्पतिः श॰ १४।४।१।२३ हे
(देवाः) ज्ञानेन्द्रियाणि हे (मरुतः) शेषाःप्राणाः। अहं यो
गी (वः) युष्माकं (अवः) संसाराद्रक्षणं (वरेण्यम्) वरणी
यं (ऋचो) (यामि) याचामि॥४॥

भावार्थः – १,२ प्राण सम्बंधी योगयज्ञमे ३ आगे हितकर्त्ता ४ आत्मा
ग्नि ५ प्राण ६ और सुषुम्णा वर्त्तमान हैं हे ७ प्राण ८ हे ज्ञानेन्द्रियो ९ हे शे
षप्राणो योगी में १० तुम्हारे ११ वरणीय १२ संसार से रक्षण को मंत्रद्वा
रा १४ मांगता हूं॥४॥

सुदीतिपुरुमीढौवावाप्कम्भ ऋषिर्बृहती छन्दोग्निर्देवता

अग्निमीडिष्वावसे गाथाभिः शीरशोचिषम्। अ
ग्निंᳪ राये पुरुमीढ श्रुतन्नरोग्निः सुदीतये छर्दिः॥५॥४९

हे (पुरुमीढ) पुरुभिर्बह्वीभिः कामादिभिः परिसिक्तस्त्वं। मिहसे
चने (शीरशोचिषं) शयन स्वभावादीप्तिर्यस्य तं। शीङ् शयने
(अग्निम्) विषाख्यं (अवसे) संसाराद्रक्षणाय (गाथाभिः)
मन्त्र रूपाभिर्वाग्भिः (ईडिष्व) स्तुहि (श्रुतम्) विख्यातं (अ
ग्निम्) शिवाख्यं (राये) धनाय योग धनाय वास्तुहि (नरः)
(अग्निः) (सुदीतये) शोभन दानाय (छर्दिः) गृहरूपः। जीवा

त्मनो नरस्यां शत्वान् ॥५॥

भाषार्थः १ हे काम आदि से परिसिक्त यजमान तुम २ शयन स्वभाव दीप्ति वाले ३ विष्णु नाम अग्नि को ४ संसार से रक्षा के लिये ५ मंत्र रूप वचनों के द्वारा ६ स्तुत करो ७, ८ विख्यात शिव नाम अग्नि को ९ धन वा योग धन के लिये स्तुत करो १०, ११ नररूप अग्नि १२ शुभदान के लिये १३ गृह रूप है ॥५॥

प्रस्काण्वऋषिर्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता-

श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिर्देवैरग्ने सयावभिः। आसीदतु बर्हिषि मित्रो अर्यमा प्रातर्यावभिरध्वरे ॥६॥५०

हे (श्रुत्कर्ण) श्रवणसमर्थाभ्यां कर्णाभ्यां युत (अग्ने) आहवनीयाग्ने (श्रुधि) शृणु (मित्रः) देवः (अर्यमा) देवः (प्रातर्यावभिः) प्रातःकाले देवयजने गच्छद्भिः (सयावभिः) समानगतिभिः (वह्निभिः) वोढृभिः (देवैः) सह (अध्वरे) यज्ञमध्ये (बर्हिषि) दर्भे (आसीदतु) उपविशतु ॥६॥

भाषार्थः-१ हे श्रवण समर्थ कान वाले २ आहवनीयाग्नि ३ सुनो ४ मित्र ५ अर्यमा देवता ६ प्रातःकाल देवयजन स्थान में जाने वाले ७, ८ हवि वोढा ९ देवताओं के साथ १० यज्ञ के मध्य ११ कुशासन पर १२ बैठो ॥६॥

अथाध्यात्मम्- हे (श्रुत्कर्ण) श्रवणसमर्थाभ्यां कर्णाभ्यां युत (अग्ने) महापुरुष (श्रुधि) शृणु (मित्रः) मानससूर्यः (अर्यमा) मनश्च। मनः पितरः श० १४।४।३।१३ (प्रातर्यावभिः) प्रातः समाधिकालेऽन्तर्गमनशीलैः (सयावभिः) समानगतिभिः (वह्निभिः) देहस्य वोढृभिः दीप्तैर्वा वह दीप्तौ (देवैः) प्राणैः सह प्राणा देवाः श० ६।३।१।१५ (अध्वरे) योगयज्ञे (बर्हिषि) सुषुम्णा

यं (आसीदत्) ॥६॥

भापार्थः १हे श्रवणसमर्थकर्णोवाले २ महापुरुष ३ सुनो ४ मानस सूर्य ५ और मन ६ समाधिकालपर्यन्तगमनशील ७ समान गति ८ देहधारक ९ प्राणोंके साथ १० योगयज्ञके मध्य ११ सुषुम्णापर बैठो ॥६॥

सौभरिऋषिर्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता-

प्र दैवोदासो अग्निर्देव इन्द्रो न मज्मना। अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते तस्थौ नाकस्य शर्मणि ७ ॥ ५१

(देवः) द्योतमानः (इन्द्रः) परमैश्वर्ययुक्तः। इदिपरमैश्वर्ये तस्मादौणादिके रन्प्रत्यये रूपम् (न) च (दैवोदासः) दिवोदासो जीवस्तत्सम्बन्धी (अग्निः) (मातरं) (पृथिवीं) (अनु) विशेषेणानुलक्ष्य (मज्मना) बलेन (नाकस्य) स्वर्गरूपयज्ञस्य (वावृते) (व) वायुस्तेनावृते (शर्मणि) गृहे अग्निकुण्डे (प्रतस्थौ) प्रतिष्ठत ७

भापार्थः - १ द्योतमान २ परमैश्वर्ययुक्त ३ और ४ जीवसम्बंधी ५ अग्नि ६, ७ पृथिवी माताको ८ देखकर ९ बलसे १० स्वर्गरूपयज्ञके ११ वायुसे आवृत्त १२ गृह अग्निकुंड मे १३ प्रतिष्ठत हुआ ॥७॥

अथाध्यात्मम्- (देवः) मायाक्रीडणकैः क्रीडनशीलः (इन्द्रः) परमैश्वर्यसम्पन्नः (न) च (दैवोदासः) जीवात्मसम्बंधी (अग्निः) आत्माग्निः (मातरम्) (पृथिवीम्) योगभूमिं (व्यनु) विशेषेणानुलक्ष्य (मज्मना) योगबलेन (नाकस्य) भृकुटेः (वावृते) (व) प्राणस्तेनावृते (शर्मणि) गृहे भृकुटिचक्रे (प्रतस्थौ) प्रतिष्ठते ७

भापार्थः - १ मायाके खिलोनोंसे क्रीडनशील २ परमैश्वर्यसम्पन्न ३ और ४ जीवात्मसम्बंधी ५ आत्माग्नि ६, ७ योगभूमिको ८ विशेषदेखकर ९ यो

गवलसे १० भृकुटिके ११ प्राणरूप भृकुटिचक्रपर १२ स्थित करो॥७॥

मेधातिथिर्मेध्यातिथिर्वा ऋषिः भारपीवृहती छन्दः इन्द्रो देवता

अधेज्मोअधवादिवोबृहतोरोचनादधि। अया

वर्द्धस्वतन्वागिराममाजातासुक्रतोपृण॥८॥५२

उत्थानावस्थायांहे(सुक्रतो)योगयज्ञानुष्ठातः यजमान।इन्द्रौवैयजमानः श०२।१।२।११(बृहतः) महतः(रोचनात्) दीप्यमानात् गगनमण्डलात्(अध) अधः(वा)(दिवः)भृकुटिमण्डलात्(अध)(अधः(ज्मः) मानसभूमेः(अधि)उपरि(अया)(अ) आत्मप्रतिबिंबः(य) प्राणस्तयोः समूहरूपेण(तन्वा)शरीरेण(वर्द्धस्व)(ममाजाता) ममत्वोत्पन्नया(गिरा)वाचा(पृण)तंशरीरंप्रीणय॥८॥

भाषार्थः १हेयज्ञमानउत्थानअवस्थामें २,३,४ महादीप्यमानगगनमंडलसेनीचे ५तथा ६,७ भृकुटिमंडलसेनीचे ८,९ मानसभूमिकेऊपर १० प्राणप्रतिबिंबसमूहरूप ११ शरीरकरके १२ वृद्धिपाओ १३ ममत्वसेउत्पन्न १४ वाणीकेद्वारा १५,१६ उसशरीरकोपुष्टकरो॥८॥५२

अथाधिदेवम्-हे(सुक्रतो)शोभनकर्म्मवन्निन्द्रपरमेश्वर(अध)अथ(बृहतः)महतः(रोचनात्)नक्षत्रैर्दीप्यमानात्स्वर्गात्(अधवा)अपिवा(दिवः)अन्तरिक्षात्प्रादुर्भूत्वा(ज्मः)पृथिव्याः(अधि)उपरि(अया)हिरण्मयेनज्योतिर्मयेननि० ज्योतिर्वैहिरण्यं श०६।७।१।२(तन्वा)शरीरेण(वर्द्धस्व)(मम) मदीयया(गिरा)स्तुत्या(जाता)जातानिमदीयान्यपत्यानि(पृण) अभिलषितैःफलैरापूरय॥८॥

भाषार्थः- १हेशोभनकर्मापरमेश्वर२.३.४नक्षत्रोंसेदीप्यमानस्वर्गसे ५अथवा६अन्तरिक्ष सेप्रकटहोकर७.८पृथिवीकेऊपर९.१०ज्योतिर्मयशरीरकेसाथ ११ राद्धिपाओ१२मेरी१३स्तुतिकेद्वारा१४मेरीसन्तानोंको १५अभिलषितफलोंसेपूर्णकरो॥८॥

विश्वामित्रऋषिर्बृहती छन्दोग्निर्देवता-

कायमानोवनात्वंयन्मातृरजगन्नपः।नतत्तेअग्नेप्रमृषेनिवर्तनं यद्दूरेसन्निहाभुवः॥९॥ ५३

हे(अग्ने)(यत्)यस्मात्(वना)वनान्युदकानि(कायमानः)कामयमानस्त्वंनि० ४।२।१४(मातृः)मातृभूताः(अपः)(अजगन्)अगमःगतवानासिसमुद्रेषुविद्युतेचवहुधाविद्यमानत्वात्(ते)नव(तत्)(निवर्तनम्)निवारणं(न)(प्रमृषे)नक्षमेमृषक्षमायां(यत्)यस्मात्(दूरे)(सन्)अदृश्यतयादूरेसन्(इह)अस्मिन्यज्ञे(आभुवः)प्रकटोभवसि॥९॥

भाषार्थः १हेअग्ने२जिसकारण३जलोंको४चाहतेतुमने५मातारूप६जलोंको७वडवानलऔरविजुली रूपसेप्राप्तकियाहै८तेरा९वह१०निवारण११नहीं१२सहताहूंजिसकारण १४.१५अदृश्यहोनेसेदूरहोतेतुम१६इसयज्ञमें१७प्रकटहुए॥९॥

अथाध्यात्मम्- हे(अग्ने)आत्माग्ने(यत्)यस्मात्(वना)वनानिगगनामृतोदकानि(कायमानः)कामयमानस्त्वं(मातृः)मातृभूतानि(अपः)कमलान्तरिक्षाणि(अजगन्)कमलस्थानंदेवानांरूपेण(ते)(तत्)(निवर्तनम्)वक्ररूपधारणस्यानिवारणं(न)(प्रमृषे)(यत्)यस्मादज्ञानांदृष्टौ(दूरे)(सन्)(इह)

देहे(आभुवः)नानारूपेण ॥ ९ ॥

भाषार्थः - १हेआत्माग्ने २जिसकारण ३गगनामृतरूपजलोंको ४चाहनेवालेतुमने ५,६नानारूपकमलान्तारिक्षों को ७देवनारूप संव्याप्त किया ८तेरे ९उस १०बहुरूपधारणकेनिवारणको ११नहीं १२सहना हूं १३ जिसकारणअज्ञानियोंकीदृष्टिमें १४,१५दूरहोनेहुए १६इसदेहमें १७नानारूपसेप्रकटहोनेहो ॥ ९ ॥

कण्वऋषिः बृहती छन्दोऽग्निर्देवता-

त्वामग्ने मनुर्दधे ज्योतिर्जनाय शश्वते। दीदेथ कण्व ऋतजात उक्षितो यं नमस्यन्ति कृष्टयः ॥ १० ॥ ५४

हे(अग्ने)(मनुः)प्रजापतिः(ज्योतिः)ज्योतिस्वरूपं(त्वाम्)(शश्वते)धर्मेऽन्तरभूताय(जनाय)(निदधे)देवयजनदेशेस्थापितवान्(ऋतजातः)ऋतेनेनयज्ञेन निमित्तभूतेनोत्पन्नः(उक्षितः)हविर्भिस्तर्पितस्त्वं(कण्वे)मेधाविनिनि०(दीदेथ) दीप्तवानसि(यम्)त्वां(कृष्टयः) मनुष्याः(नमस्यन्ति) नमस्कुर्वन्ति ॥ १० ॥ ५४

भाषार्थः - १हेअग्ने २प्रजापतिने ३,४ज्योतिस्वरूपतुमको ५,६धर्मिष्ठपुरुषसमूहकेलिये ७देवयजनस्थानमेंस्थापनाकिया ८यज्ञनिमित्तउत्पन्न ९हवियोंसेतर्पिततुम १०मेधावीकेसमीप ११प्रदीप्तहोनेहो १२जिसतुमको १३मनुष्य १४नमस्कारकरते हैं ॥ १० ॥ ५४

इतिपञ्चमीदशतिः

इतिश्रीभृगुवंशावतंसश्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्मकृतेसामवेदीयब्रह्मभाष्येछन्दोव्याख्यानेप्रथमस्याध्यायस्यपञ्चमः खण्डः

अथषष्ठखण्डः

वसिष्ठऋषिर्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता-

देवो वो द्रविणोदाः पूर्णां विवष्ट्वासिचम्। उद्वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वमादिद्वो देव ओहते ॥१॥ ५५

(द्रविणोदाः) धनानांदातानि० २।१०(देवः) अग्निः (वः) युष्मदीयां (पूर्णां) हविषापूर्णां (आसिचम्) आसिक्तांस्रुचं (विवष्टु) कामयताम् (उत्सिञ्चध्वंवा) ध्रुवग्रहेण होत्रचमसंपूरयत (उपपृणध्वंवा) अग्नये सोमंप्रयच्छत। वाशब्दौ समुच्चयार्थौ (आदिद्) अनन्तरमेव (देवः) अग्निः (वः) युष्मान् (ओहते) वर्द्धयति। वंहतेइत्यस्यरूपम्॥१॥

भाषार्थः- १धनदाता २अग्निदेवता ३तुम्हारे ४हविपूर्ण ५स्रुचको ६चाहो ७ध्रुवग्रह सेहोत्रचमसको पूर्णकरो ८अग्निको सोम अर्पणकरो ९तदनन्तर १०अग्निदेवता ११तुमको १२वढाता है॥१॥

अथाध्यात्मम्- हेवागाद्यृत्विजः (द्रविणोदाः) योगधनानांदाता (देवः) आत्माग्निः (वः) युष्मदीयां (पूर्णां) इन्द्रियैः पूर्णां (आसिचम्) आसिक्तामात्मप्रति विंवरूपांपराम् (विवष्टु) कामयताम् (उत्सिञ्चध्वंवा) अपानेन प्राणंपूरयत। प्राणोवैग्रहः सोऽपानेनाति ग्रहेणगृहीतःश० १४।६।२।२ (उपपृणध्वंवा) आत्माग्नयेप्रतिविंवंप्रयच्छत (आदिद्) अनन्तरमेव (देवः) आत्माग्निः (वः) युष्मान् (ओहते) ब्रह्मणिवहति। वहप्रापणे॥१॥ कावाना

भाषार्थः- हेवागाद्यृत्विजो १योगधनोंके २आत्माग्नि ३तुम्हारे ४इन्द्रि

येंसेपूर्ण ५ आत्ममनि विंवरूपपराको ६ चाहो ७ अपानसेप्राणकोपूर्णकरो ८ आत्माग्निकेलिये प्रति विंवकोअर्पणकरो ९ तदनन्तर १० आत्माग्नि ११ तुमको १२ ब्रह्ममेंप्राप्त करता है॥१॥

कण्वऋषिर्बृहती छन्दोब्रह्मणस्पत्याद्या देवताः

प्रैतुब्रह्मणस्पतिःप्रदेव्येतुसूनृता। अच्छावीरंनर्यं
पङ्क्तिराधसंदेवायज्ञंनयन्तुनः॥२॥५६

(ब्रह्मणस्पतिः) वेदस्यपालकः(प्र) महानारायणाग्निः(अच्छ) आभिमुख्ये(ऐतु) ज्ञानदृष्टिगोचरोभवतु (सूनृता) सत्यस्वरूपा (देवी) पराशक्तिः(ऐतु) ज्ञानदृष्टि गोचराभवतु किञ्च(देवाः) देवाः(नः) अस्माकं(वीरम्) शत्रूणामुन्मूलयितारं(नर्यम्) नरस्यपरमेश्वरस्यार्हं(पङ्क्तिराधसम्) हविःपंक्तिभिः समृद्धं (यज्ञम्) द्रव्ययज्ञं(नयन्तु) परमेश्वरेप्रापयन्तु॥२॥

भावार्थः—१ वेदकारक्षक २ महानारायणरूपअग्नि ३,४ ज्ञानदृष्टि-गोचरहो ५ सत्यस्वरूपा ६ पराशक्ति ७ ज्ञानदृष्टिगोचरहो ८ देवता ९ हमारे १० शत्रुनाशक ११ परमेश्वरयोग्य १२ हविपंक्तिसेसमृद्ध १३ द्रव्ययज्ञको १४ परमेश्वरमेंप्राप्तकरो॥२॥

अथाध्यात्मम्–(प्र) सर्वव्यापी(ब्रह्मणस्पतिः) प्राणः। प्राणो हिब्रह्मणस्पतिःश० १४।४।१।२३ (अच्छ) आप्तुम्(ऐतु) अस्मान्प्राप्नोतु(सूनृता) सत्यस्वरूपा(देवी) महावाक्(ऐतु)(देवाः) प्राणाः(नः) अस्माकं(वीरम्) निःशेषेणकामादीनामुन्मूलयितारं(नर्यम्) नरस्यपरमेश्वरस्यसायुज्यार्हं(पंक्तिराधसम्) इन्द्रियपंक्तिभिःसमृद्धं(यज्ञम्) जीवात्मानं। यजमानोयज्ञः श०

१३।२।१।१(नृयन्तु)परमेश्वरेप्रापयन्तु॥२॥

भाषार्थः-१ सर्वव्यापी २प्राण ३,४हमकोप्राप्तकरो ५सत्यस्वरूप ६महानाक ७हमकोप्राप्तकरो ८प्राण ९हमारे १० कामादिकेनाशक ११परमेश्वरकी सायुज्यकेयोग्य १२इन्द्रियपंक्ति सेसमृद्ध १३जीवात्माको १४परमेश्वरमें प्राप्तकरो ॥ २ ॥ कण्वऋषिर्बृहतीछन्दो यूपाग्निर्देवता

ऊर्ध्वऊषुणऊतयेतिष्ठादेवोनसविता।ऊर्ध्वोवाजे
स्यसनितायदञ्जिभिर्वाघद्भिर्विह्वयामहे॥३॥५७

हे(ऊपुऽत्र) ऊर्ध्वरेतस्त्वेन(उ) उत्पन्नोदेहऊपुत्तस्य(त्र)त्रात्म
ऊर्ध्वःहेभूतात्मन्(वाजेस्य) स्वात्मारूपहविषः (सनिता) दा-
नात्वं(नः) अस्माकंयोगिनाम्(ऊतये) रक्षणाय(ऊर्ध्वः) समा
धिस्थः (तिष्ठ)(न)यथा(सविता) सूर्यः(ऊर्ध्वः) तिष्ठति(यत्)य
स्मात्कारणात(अञ्जिभिः)तवातिलकरूपैः(वाघद्भिः) वागाघृत्व
ग्भिःसहत्वां(विह्वयामहे)विशेषेणह्वयामः॥३॥

भाषार्थः-१हेभूतात्मन् २अपनेआत्मारूपहविके ३दातातुम ४हमयोगियोंकी ५रक्षाकेलिये ६समाधिस्थ ७ठैरो ८जैसे ९सूर्य १०ऊंचास्थितहै ११जिस कारण १२तेरेतिलकरूप १३वागाद्यृत्विजोंकेसाथतुमको १४हमविशेषआह्वानकरतेहैं॥३॥

अथाधिदैवम्- हे(ऊर्ध्व) वृक्षजयूपनिष्ठाग्ने(वाजस्य)हवि
षान्नस्य(सनिता) दानात्वं(नः) अस्माकं(ऊतये) रक्षणाय
(ऊर्ध्वः)उन्नतः(तिष्ठ) (न)यथा(सविता) सूर्यदेवः(ऊर्ध्वः)
तिष्ठति(यत्) यस्मात्कारणात्(अञ्जिभिः) त्वामञ्जद्भिः(वा
घद्भिः) यज्ञंवहद्भिःऋत्विग्भिः सह(विह्वयामहे)॥३॥

भाषार्थः–१हेयूपस्थाग्ने २,३हविरूपअन्नकेदानातुम ४हमारी ५रक्षाके लिये ६ऊंचे ७ठैरो ८जैसे ९सूर्यदेवता १०ऊंचाठैरताहै ११जिसकारण १२नवगुणप्रकाशक १३यज्ञवाहक ऋत्विजोंके साथ १४हमआपकाआह्वानकरतेहै ॥३॥ सोभरिऋषिर्बृहतीछन्दोग्निर्देवता-

प्रयो राये निनीषति मर्त्तो यस्ते वसो दाशत। सवीरं धत्ते अग्न उक्थशंसिनं त्मना सहस्रपोषिणम् ४

हे(वसो) प्रशस्तधनवन् (अग्ने) (यः) (मर्त्तः) मनुष्यस्त्वां (राये) धनार्थं (प्रनिनीषति) प्रणेतुमिच्छति (ते) तुभ्यं (दाशत्) हवीषि प्रयच्छति (सः) मनुष्य (उक्थशंसिनम्) उक्थानां शस्त्राणां शंसितारं (त्मना) आत्मनैव (सहस्रपोषिणम्) बहुधनं (वीरम्) पुत्रं (धत्ते) धारयति प्राप्नोति ॥४॥

भाषार्थः–१हेप्रशस्तधनवन् २अग्ने ३जो ४मनुष्य ५धनकेलिये ६तुमको प्राप्त करनाचाहता है वह ७आपकेलिये ८हविदेताहै ९वह मनुष्य १०शास्त्रोंके वक्ता ११, १२अपने प्रयत्न से बहुधनी १३पुत्रको १४प्राप्त करता है॥४

अथाध्यात्मम्- हे(वसो) वसानुरूप (अग्ने) आत्माग्ने (यः) (मर्त्तः) मनुष्यस्त्वां (राये) योगधनार्थं (प्रनिनीषति) आत्मनि प्रणेतुमिच्छति (ते) तुभ्य (दाशत्) इन्द्रियरूप हवींषि प्रयच्छति (सः) योगी (उक्थशंसिनम्) शास्त्राणां शासितारं (सहस्रपोषिणम्) महापुरुषपूजकं (वीरम्) काम युद्धे शूरमात्मप्रतिबिंबं (त्मना) आत्मन् आत्माग्नौ (धत्ते) धारयति ॥४॥

भाषार्थः–१हेवसानुरूप २आत्माग्ने ३जो ४मनुष्य ५योगधनकेलिये ६तुमको प्राप्त करनाचाहता है ७वह आपकेलिये ८इन्द्रियरूपहविको देताहै

९वह योगी १० श्रांत्वचका ११ महापुरुषके पूजक १२ कामयुद्धमेंसूर आत्मप्रति विंवको १३ आत्माग्नि में १४ धारण करता है ॥ ४ ॥

कण्वऋषिर्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता

प्रवोयह्वंपुरूणांविशांदेवयतीनाम्। अग्निँसूक्तेभिर्वचोभिर्वृणीमहेयँसमिदन्यइन्धते॥५॥

हे ऋत्विग्यजमानाः (देवयतीनाम्) विद्वत्सुत्यागशीलानां (पुरूणाम्) बहूनां (विशाम्) प्रजारूपाणां (वः) युष्माकमनुग्रहाय (यह्वम्) महान्तं (अग्निम्) (सूक्तेभिः) सूक्तरूपैः (वचोभिः) वाक्यैः (प्रवृणीमहे) याचामहे (अन्ये) (इत्) अन्येप्यृषयः (यम्) अग्निं (समिन्धते) सम्यग्दीपयन्ति ॥ ५ ॥

भाषार्थः - हे ऋत्विक् यजमानो १ विद्वानोंके मध्य त्यागशील २ बहुत ३ प्रजारूप ४ आपलोगोंके अनुग्रहार्थ ५ महान्त ६ अग्निको ७ सूक्तरूप ८ वचनोंकेद्वारा ९ हम याचना करते हैं १०,११ दूसरे ऋषिभी १२ जिस अग्निको १३ भलेप्रकार दीप्त करते हैं ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम् - हे वागाद्यृत्विग्यजमानाः (देवयतीनाम्) महाज्ञानिषु त्यागशीलानां (पुरूणां) बहूनां (विशाम्) महापुरुषस्य प्रजारूपाणां (वः) युष्माकमनुग्रहाय (यह्वम्) महान्तं (अग्निम्) आत्माग्निं (सूक्तेभिः) (वचोभिः) महावाग्भिः (प्रवृणीमहे) वयं गुरवो याचामहे (अन्ये) (इत्) अन्येप्यृषयः (यम्) आत्माग्निं (समिन्धते) ॥ ५ ॥

भाषार्थः - हे वागाद्यृत्विज यजमानो १ महाज्ञानियोंके मध्य त्यागशील २ बहुत ३ महापुरुषके प्रजारूप ४ आपके अनुग्रहार्थ ५ महान ६ आत्मा

ग्निको७,८महावाक्द्वारा९हमगुरुजनयाचनाकरतेहैं।१०,११दूसरेऋत्विज् भी१२जिस आत्माग्निकोभलेप्रकारदीप्तकरतेहैं॥५॥

अन्कीलऋषिर्बृहतीछन्दोग्निर्देवता॰

अयमग्निः सुवीर्यस्येशे हि सौभगस्य। राय ईशे स्वपत्यस्य गोमत ईशे वृत्रहथानाम्॥६॥ ६०

(अयम्) यजनीयत्वेनाङ्गुल्या निर्दिश्यमानः (अग्निः) (हि) (सुवीर्यस्य) शोभन सामर्थ्योपेतस्य (सौभगस्य) (ईशे) ईश्वरो भवति तथा (गोमतः) गवादिपशुयुक्तस्य (स्वपत्यस्य) शोभनापत्यस्य (रायः) धनस्य (ईशे) तथा (वृत्रहथानाम्) शत्रुभूतपापविनाशनामपि (ईशे) सर्वस्वप्राप्तिःपापक्षयश्चतस्य प्रसादाद्भवतीत्यर्थः॥६॥

भाषार्थः–१यह२अग्नि३ही४शुभसामर्थ्यवान्५ऐश्वर्यका६स्वामी होताहैतथा७गौआदिपशुयुक्त८शुभसन्तानयुक्त९धनकातथा१०,११ शत्रुरूपपापविनाशोंकाभी१२स्वामीहोताहैअर्थात्सर्वस्वप्राप्तिऔरपापनाशउसकीकृपासेहोताहै॥६॥

अथाध्यात्मम्–(अयम्) (अग्निः) आत्माग्निः (हि) एव (सुवीर्यस्य) श्रेष्ठबलवतः (सौभगस्य) योगैश्वर्यस्य (ईशे) ईश्वरोभवति (गोमतः) इन्द्रियवतः (स्वपत्यस्य) निरुद्धप्राणस्य प्राणाः। प्रजा श॰१४।४।३।१४ (रायः) योगधनस्यच (ईशे) तथा (वृत्रहथानाम्) पापविनाशानां। पाप्मावैवृत्रः श॰ नपुंसकेभावेक्तः (३,३,११४) इतिक्ते. तप. तनप, तनथनाश्च (७,१,१५५) इतितस्यथनादेशोरूपम् (ईशे)॥६॥

भाषार्थः - १सह २आत्माग्नि ३ही ४श्रेष्ठबलयुक्त ५योगैश्वर्यका ६स्वामी होताहै ७इन्द्रियवान ८निरुद्धप्राणका ९और योगधनका १० स्वामी होताहै ११ पापनाशोंकाभी १२स्वामीहोताहै॥६॥

वशिष्ठऋषिर्बृहती छन्दोग्निर्देवता-

त्वमग्ने गृहपतिस्त्वꣳ होता नो अध्वरे। त्वम्पोता विश्ववार प्रचेता यक्षि वेषि च वार्यम्॥७॥ ६१

हे (विश्ववार) सर्ववरणीय (अग्ने) (प्रचेताः) प्रकृष्टमतिः (त्वम्) (नः) अस्माकं (गृहपतिः) यजमानः (त्वम्) (होता) देवानामाह्वाता (च) (त्वम्) (पोता) एतन्नामकऋत्विक् (वार्यम्) वरणीयहविः (यासि) प्राप्नोषितस्माद्देवान् (यक्षि) यजब्रह्मार्पणंब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौब्रह्मणाहुतमितिभगवद्वचनात॥७॥

भाषार्थः - १हे सबसेवरणीय २अग्ने ३श्रेष्ठबुद्धि ४तुम ५हमारे ६यजमानहो ७तुम ८होताहो ९और १० तुम ११पोतानामऋत्विजहो १२ वरणीयहविको १३प्राप्तकरतेहो उसकारण १४देवयजनकरो॥७॥

अथाध्यात्मम् - हे (विश्ववार) विश्वाख्य शरीरेणवरणीय (अग्ने) आत्माग्ने (प्रचेताः) सर्वज्ञः (त्वम्) (नः) अस्माकं वागाद्यृत्विजां (गृहपतिः) यजमानः (त्वम्) (होता) महापुरुषपुरुषाणा माह्वाता (च) (त्वम्) (पोता) असि (वार्यम्) वारिभवं मतिविंदं (यासि) प्राप्नोषितस्मात्पूर्वोक्तान्देवान् (यक्षि) यज॥७॥

भाषार्थः - १हे विश्वनामशरीरसेवरणीय २आत्माग्ने ३ सर्वज्ञ ४तुम

५हम वा गार्ह्यत्विजों के ६यजमान हो ७तुम ८महापुरुष पुरुषों के आह्वानकर्त्ता हो ९और १०तुम ११पोता हो १२प्रतिबिंब को १३मार्ग करते हो उस कारण पूर्वोक्त देवताओं का १४यजन करो ॥७॥

विश्वामित्रऋषिर्बृहतीछन्दोऽग्निर्देवता

सखायस्त्वा ववृमहे देवं मर्त्तास ऊतये। अपां
न्नपातं सुभगं सुदंससं सुप्रतूर्त्तिमनेहसम् ॥८॥ ३२

हे अग्ने आत्माग्ने वा (सखायः) मित्रभूताः (मर्त्तासः) मनुष्याः (अपाम्) (नपातम्) ब्रह्मांभूनां पौत्रं (सुभगम्) ऐश्वर्यवन्तं (सुदंससम्) सुकर्माणं नि० २।१ (सुप्रतूर्त्तिम्) प्रकर्षेण शत्रूणां कामादीनाम्वा हिंसितारं। तूर्वीतः हिंसार्थः नि० २।१० ।३२ (अनेहसम्) अक्रोधनं। एहः क्रोधनाम सु नि० २।१३ (देवम्) (त्वाम्) (ऊतये) रक्षणाय (ववृमहे) वृणीमहे। ८

भाषार्थः - हे अग्ने वा आत्माग्ने १मित्ररूप २मनुष्य ३,४ब्रह्मांशुकं पौत्र ५ऐश्वर्यवान ६सुकर्मा ७शत्रु वा काम आदि के हिंसक ८अक्रोधी ९देवता १०तुमको ११रक्षा के लिये १२हम वरते हैं ॥८॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म कृते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्य षष्ठः खण्डः

अथ सप्तमः खण्डः

श्यावाश्व वामदेवौ ऋषी त्रिष्टुप छन्दोऽग्निर्देवता

आजुहोता हविषा मर्जयध्वं निहोतारं गृहपतिं
दधिध्वम्। इडस्पदे नमसा रातहव्यं सपर्य-

२ ३ २ ३क २र
तांअजेनॆस्पर्सत्योनाम् ॥२॥ ६३

हेऋत्विजः(सं)अग्निं(आजुहोत)आह्वयत(हविषो)(मर्जयध्वं)शोधयध्वंसम्मार्गंतृपीः कुरुध्वं(इडः)इलायाः(पदे)उत्तरवेद्यां(होतारम्)देवानामाह्वातारं(गृहपतिम्)गृहपालकं(निदधिध्वम्)निःशेषेणधारयध्वम्(नमसा)नमस्कारेणहविषावायुक्तम्(रातहव्यम्)दत्तहविष्कं(पस्त्यानाम्)यज्ञगृहाणांनि॰३।४।७मध्ये(यजतम्)यजनीयंपूजनीयं(सं)अग्निं(सपर्यत)परिचरत॥२॥

भाषार्थः–हेऋत्विजो१अग्निका२आह्वानकरो३हविसे४शोधनकरो५,६उत्तरवेदीपर७देवताओंके आह्वाना८गृहपालककोॅधारणकरो१०नमस्कारवाहविसेयुक्त११दत्तहविष्क१२,१३यज्ञशालाओंमेंपूजनीय१४अग्निको१५सेवो॥२॥

अथाध्यात्मम्–हेवागाद्यृत्विजः(सं)आत्माग्निं(आजुहोत)(हविषा)इन्द्रियरूपहविषा(मर्जयध्वम्)शोधयध्वं(इडः)(पदे)उदरस्यस्थानेमनसिहृदयेवा।उदरमेवास्येडा श॰११।२।६।८(होतारम्)महापुरुषपुरुषाणामाह्वातारं(गृहपतिम्)व्यष्टिसमष्टिदेहस्यस्वामिनमात्माग्निं(निदधिध्वम्)(नमसा)नमस्कारेणसह(रातहव्यम्)दत्तहविष्कं(पस्त्यानाम्)कमलानांमध्ये(यजतम्)यजनीयं(सं)आत्माग्निं(सपर्यत)॥२॥

भाषार्थः–हेवागादिऋत्विजो१आत्माग्निका२आह्वानकरो३इन्द्रियरूपहविसे४शोधो५,६मनवाहृदयमें७महापुरुषपुरुषोंकेआ-

ज्ञाता ८ व्यष्टि समष्टि देह के स्वामी आत्माग्नि को ९ धारण करो १० नमस्कार के साथ ११ दलहविष्क १२,१३ कमलों के मध्य यजनीय १४ आत्माग्नि को १५ सेवो ॥ १ ॥ वाष्टहव्य ऋषिर्जगती छन्दोऽग्निर्देवता-

चित्र इच्छिशोस्तरुणस्य वक्षथो न यो मातरावन्वेति धातवे । अनूधा यदजीजनदधा चिदा ववक्षत्सद्यो महि दूत्यं चरन् ॥ २ ॥ ६४

(शिशोः) प्रजापतेः पुत्रस्य (तरुणस्य) अजरामरस्याग्नेः (वक्षथः) हविर्वहनं । वक्षेरौणादिको ऽथस्प्रत्ययः (चित्र इत्) आश्चर्यभूतमेव । चित्रइति पुंल्लिङ्गो व्यत्ययेनेति (३,४,९८) वोध्यम् (यः) अग्निः (मातरौ) सर्वस्य निर्मात्र्यौ सर्वस्य मातृभूते द्यावापृथिव्यौ (धातवे) स्तनपानाय धेट्पाने तुमर्थे इति (३,४,९) तवेन्प्रत्ययः (न) (अन्वेति) न गच्छति ब्रह्म रूपत्वात् (यत्) यस्मात् (अनूधाः) ऊधोरहितः प्रजापतिः (अजीजनत्) स्वमुखात् प्रादुश्चकार (अधा चित्) उत्पत्त्यनन्तरमेव (सद्यः) यज्ञे सति शीघ्रं (महि) महान्तं (दूत्यम्) दूतकर्म । कर्मणि यत्प्रत्ययः (चरन्) आचरन् (आववक्षत्) देवान्प्रति हवींष्या वहति ॥ २ ॥ ६४ ॥

भाषार्थः - १ प्रजापति के पुत्र २ अजरामर अग्नि का ३ हवि प्रापण ४ आश्चर्य रूप ही है ५ जो अग्नि ६ पृथिवी स्वर्ग को ७ स्तनपान के लिये ८,९ प्राप्त नहीं करता है ब्रह्म रूप होने से १० जिस कारण ११ स्तन रहित प्रजापति ने १२ अपने मुख से प्रकट किया १३ तदनंतर १४ यज्ञ होने पर शीघ्र १५ महान् १६ दूतकर्म को १७ करता १८ देवताओं के पास हवि को पहुंचा

नाहै ॥२॥ ६४ ॥

अथाध्यात्मम्-(शिशोः) महापुरुषपुत्रस्य (तरुणस्य) जरादिशून्यस्यात्माग्ने (वक्षथः) आत्मप्रतिविंबाख्यहविर्वहनं (चिचङ्गत्) अद्भुतमेव (यः) आत्माग्निः (मातरौ) द्यावापृथिव्यौ (धातवे) स्तनपानाय (न) (अन्वेति) निर्गुणत्वात् (यत्) यस्मात् (अनूधाः) महापुरुषएव (अजीजनत्) स्वात्मनः प्रादुष्प्रकार (अधाचित्) प्रादुर्भावानन्तरमेव (सद्यः) अध्यात्मयज्ञे सति शीघ्रमेव (महि) महान्तं (दूत्यम्) दूतकर्म (चरन्) आचरन् (आववसन्) ब्रह्म महापुरुषपुरुषान्प्रतिहवींष्यावहति ॥ २ ॥ ६४

भावार्थः-१महापुरुषकेपुत्र २अजरामरआत्माग्निका ३आत्मप्रतिविंबाख्यहविर्माण ४अद्भुनही है ५जो आत्माग्नि ६पृथिवी स्वर्गको ७स्तनपानके लिये ८,९ प्राप्तनहीं करताहै निर्गुणहोने से १० जिसकारण ११ महापुरुषनेही १२ अपने आत्मा सेप्रकटकिया १३ प्रादुर्भाव केपीछेही १४ अध्यात्मयज्ञहोनेपर शीघ्रही १५ महान् १६ दूतकर्मको १७ करता १८ प्रतिविंबआदिहवि महापुरुष पुरुषोंको प्राप्त कराता है॥२॥६४

इह दुकृथऋषिस्त्रिष्टुपछन्दोऽग्निर्देवता-

इदन्त एकम्पर ऊन एकन्तृतीयेनज्योतिषा संविशस्व। संवेशनस्तन्वे ३चारुरेधि प्रियोदेवानां परमेजनित्रे ॥ ३ ॥ ६५ ॥

हे अग्ने (ते) तव (इदम्) वैद्युताख्यं (एकम्) ज्योतिः (परः) अग्नेः (ऊ) सूर्यः (ते) (एकम्) ज्योतिः (तृतीयेन) (ज्योतिषा)

अग्न्याख्येनज्योतिषा(संविशस्व)यज्ञेप्रवेशंकुरु(परमे)(ज
निने)यज्ञे(संवेशनः)सम्यक्प्रवेष्टा(चारुः)कल्याणभूतः
(देवानाम्)(प्रियः)त्वं(तन्वे)यजमानाय(एधि)वृद्धिंमाप्नुहि३

भाषार्थः – हेअग्ने१तेरी२यहविजलीनाम३एकज्योतिहै ४,५अग्नेपूर्व ६तेरी७एकज्योतिहै८,९तीसरीअग्निनामज्योतिसे१०यज्ञमेंप्रवेशकरो ११,१२यज्ञमें१३प्रवेशकर्त्ता१४कल्याणरूप१५देवताओंके१६प्रियतुम१७यजमानकेलिये१८वृद्धिकोप्राप्तहो ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम् – हेआत्माग्ने(ते)नव(इदम्)जीवाख्यम् (एकम्)ज्योतिः(परः)(ऊ)अन्तर्यामीश्वरः(ते)नव(एकम्) ज्योतिः तृतीयेन(ज्योतिषा)महापुरुषाख्यज्योतिषा(संविशस्व)योगिनांभक्तानाम्वामनसिप्रवेशंकुरु(परमे)(जनित्रे) योगयज्ञे भक्तियज्ञेवा(संवेशनः)सम्यक्प्रवेष्टा(चारु)कल्याणरूपः(देवानाम्)विदुषांभक्तानां।विद्वांसोहिदेवाः श० ३।७ ३।१०(प्रियः)त्वं(तन्वे)पुत्ररूपायभक्ताय(एधि)वृद्धिंमाप्नुहि३

भाषार्थः – हेआत्माग्ने१तेरी२यहजीवनाम३एकज्योतिहै४,५अन्तर्यामीईश्वर६तेरी७एकज्योतिहै८,९महापुरुषनामज्योतिसे१०योगीभक्तोंकेमनमेंप्रवेशकरो११,१२योगयज्ञवाभक्तियज्ञमें१३प्रवेशकर्त्ता१४कल्याणरूप१५ज्ञानीभक्तोंके१६प्रियतुम१७पुत्ररूपभक्तकेलिये१८वृद्धिपाओ ॥ ३ ॥ कुत्सऋषिर्जगतीछन्दोग्निर्देवता·

इमᳪंस्तोममर्हतेजातवेदसेरथमिवसम्महेमा
मनीषया।भद्राहिनःप्रमतिरस्यसᳪंसद्यग्नेसे
ख्येमारिषामावयन्तव॥ ४ ॥ ६६ ॥

(अर्हते)पूज्याय(जातवेदसे)जातानामुत्पन्नानांवेदित्रेअग्न·

ये(मनीषया)बुद्ध्या(इमम्)वेदोक्तं(स्तोमम्)स्तोत्रं(रथम्)
(इव)(सम्महेम)प्रशंसयामः महपूजायां(हि)यस्मात्(अस्य)
अग्नेः(संसदि)यज्ञशालायां(नः)अस्माकं(प्रमतिः)प्रकृष्टा
बुद्धिः(भद्रा)कल्याणीतस्मात्हे(अ)सर्वव्यापिन्(अग्ने)(व
यम्)(तव)(सख्ये)सखित्वेसति(मा)(रिषाम)शत्रुभ्योहिंसि
तानभवाम॥४॥

भावार्थः-१पूज्य२सृष्टिकेज्ञाता अग्निकेलिये३बुद्धि द्वारा४इसवेदोक्त५स्तोत्रको६,७रथकीसमान८हमप्रशंसा करते हैं १०इस अग्निकी ११यज्ञशाला में १२हमारी १३श्रेष्ठबुद्धि १४कल्याणरूपाहै उसकारण हे १५ सर्वव्यापिन् १६अग्ने १७हम १८तेरी १९भक्तिमें २०,२१शत्रुओंसे हिंसितनहोवें।४

अथाध्यात्मम्-(अर्हते)प्रतिविंवद्वविषापूज्याय(जातवेदसे)सर्वज्ञात्माग्नये(मनीषया)योगबुद्ध्या(इमम्)(स्तोमम्)प्राणं।प्राणावैस्तोमाः श० ८।४।१।३(रथम्)(इव)(सम्महेम)पूजितंकुर्मः(हि)यस्मात्(अस्य)आत्माग्नेः(संसदि)योगयज्ञे(नः)अस्माकं(प्रमतिः)व्यवसायात्मिका बुद्धिः(भद्रा)कल्याणीतस्मात्हे(अ)सर्वव्यापिन्(अग्ने)आत्माग्ने(वयम्)(तव)(सख्ये)सखित्वेसति(मा)(रिषाम)संसारबंधनेनहिंसितान भवाम॥४॥

भावार्थः-१प्रतिविंवनामद्वविसेपूज्य२सर्वज्ञआत्माग्निकेलिये३योगबुद्धिद्वारा४इस५प्राणको६,७रथकीसमान८हमपूजतेहैं९जिसकारण१०इसआत्माग्निके११योगयज्ञमें१२हमारी१३व्यवसायात्मिका बुद्धि१४कल्याणी है१५हेसर्वव्यापिन्१६आत्माग्ने१७हम१८तेरी१९

भक्ति में २०२१ संसारबंधन से हिंसित न होवें ॥ ४ ॥

द्वयोर्भरद्वाजऋषिस्त्रिष्टुप छन्दो वैश्वानरोऽग्निर्देवता-

मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजा तमग्निम्। कविंꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्नः पात्रं जनयन्त देवाः ॥ ५ ॥ ६७

(देवाः) महापुरुषपुरुषाः (दिवः) स्वर्गस्य (मूर्द्धानम्) सूर्यरूपं (पृथिव्याः) (अरतिम्) पृथिवीतः हवींषि गृहीत्वा द्युलोकस्य गन्तारं (वैश्वानरम्) विश्वेषां सर्वेषां नराणां सम्बन्धिनं (ऋते) ब्रह्मणि (आजातम्) प्रादुर्भूतं (कविम्) क्रान्त दर्शिनं (सम्राजम्) सम्यग्राजमानं (जनानाम्) उत्पन्नानां (अतिथिम्) (नः) अस्माकं (पात्रम्) दानपात्रं (अग्निम्) (आसने) आसनि आस्ये ब्राह्मणानां सन्यासिनां वा मुखे (जनयन्त) उपादयन् ॥ ५ ॥

भावार्थः - १ महापुरुषपुरुषों ने २,३ सूर्यरूप ४,५ पृथिवी से हवि लेकर स्वर्ग में जाने वाले ६ सर्वजन सम्बंधी ७,८ ब्रह्म में प्रादुर्भूत ९ क्रान्तदर्शी १० भले प्रकार राजमान ११ सृष्टि के १२ अतिथि १३ हमारे १४ दानपात्र १५ अग्नि को १६ ब्राह्मणों के मुख में १७ प्रकट किया ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम् - (देवाः) योगिनः (दिवः) भृकुटेः (मूर्द्धानम्) सूर्यज्योतिस्वरूपं श० १४।१।२।१० (पृथिव्याः) मानसभूमेः (अरतिम्) इन्द्रियादीनि हवींषि गृहीत्वा भृकुटि मंडले गन्तारं (वैश्वानरम्) विश्वान्सर्वान्ब्रह्मणि नयतीति (ऋते) ब्रह्मणि (आजातम्) प्रादुर्भूतं (कविम्) मेधाविनं (सम्राजम) सम्यग्राजमानं (जनानाम्) जीवानां (अतिथिम्) (नः) अस्मा

कं वेदानां (पात्रम्) पात्रभूतं (आसम्) सर्वस्योपवेशनस्था नं (अग्निम्) आत्माग्निं (जनयन्त) स्वानुभवे ॥ ५॥

भाषार्थः - १ योगियोंने २ भृकुटिके ३ ज्योतिस्वरूप ४ मानसभूमि के ५ इन्द्रिय आदि हवि कों लेकर भृकुटि मंडल में जाने वाले ६ सबको ७ ब्रह्म में प्राप्त करने वाले ७ ब्रह्म में ८ प्रादुर्भूत ९ मेधावी १० भले प्रकार राज मान ११ जीवों के १२ अतिथि १३ हम वेदों के पात्र भूत १४ सब के उपवेशन स्थान १६ आत्माग्नि को १७ अपने अनुभव में प्रकट किया ॥ ५ ॥

भरद्वाजऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोग्निर्देवता॥

त्वद्विश्वा पो न पर्वतस्य पृष्ठादुक्थेभिः सनेजनयन्त देवाः। तन्त्वा गिरः सुष्टुतयो वाजयन्त्याजिन्नगिर्वाहो जिग्युरश्वाः ॥ ६ ॥ ६८

हे (अग्ने) (देवाः) स्तोतारः (उक्थेभिः) स्तोत्रैः यज्ञैर्हविर्भिश्च (त्वत्) त्वत् सकाशात् (व्यजनयन्त) आत्मनो विविधान्कामान् जनयन्ति (न) यथा (पर्वतस्य) मेघस्य नि० १, १०, ९ (पृष्ठात्) उपरिभागात् (आपः) उदकानि हे (गिर्वाहः) गीर्भिः स्तुति रूपाभिर्वाग्भिर्वहनीयाग्ने (तम्) प्रसिद्धं (त्वा) त्वां (सुष्टुतयः) शोभन स्तुतिरूपाः (गिरः) वाचः (वाजयन्ति) वलिनं कुर्वन्ति नि० २। ९। ३ (जिग्युः) वशीकुर्वन्ति च (न) यथा (अश्वाः) (आजिम्) संग्रामं जयन्ति ॥ ६॥

भाषार्थः - १ हे अग्ने २ स्तुति करनेवाले मनुष्य ३ स्तोत्र यज्ञ और हवि के द्वारा ४ तुझ से ५ अपनी कामानाओं को प्राप्त करते हैं ६ जैसे ७ मेघ के ८ उपरिभाग से ९ जलों को १० हे स्तुतिरूप वचनों से भजनीय अग्ने ११ उस प्र-

श्चिद्ध १२ तुमको १३ शुभस्तुतिरूप १४ वचन १५ वली करते हैं १६ और वशीक रते हैं १७ जैसे १८ घोड़े १९ संग्रामको जय करते हैं॥ ६॥

अथाध्यात्मम् - (अग्ने) हे आत्माग्ने (देवाः) विद्वांसः (उक्थेभिः) प्राणैः। प्राणो वा उक्थं प्राणो हीदꣳ सर्वमुत्थापयति श० १४।८।१४।१ (त्वत्) त्वत्सकाशात् (व्यजनुयन्त) विविधानि योगैश्वर्याणि जनयन्ति (न) यथा (पर्वतस्य) (पृष्ठात्) (आपः) हे (गिर्वाहः) महावाग्भिर्वहनीयात्माग्ने (तम्) (त्वा) त्वां (सुष्टुतयः) (गिरः) महावाचः (वाजयन्ति) वलिनं कुर्वन्ति (जिग्युः) वशीकुर्वन्ति च (न) यथा (अर्वाः) (आजिम्) संग्रामं जयन्ति॥ ६॥

भावार्थः - १ हे आत्माग्ने २ विद्वान लोग ३ प्राणद्वारा ४ तुझसे ५ बहुविधि योगैश्वर्यों को प्राप्त करते हैं ६ जैसे ७ पर्वतकी ८ पृष्ठसे ९ जलों को १० हे महावाक्यों से भजनीय ११ उस १२ तुमको १३ श्रेष्ठस्तुतिरूप १४ महावाक् १५ वली करते हैं १६ और वशी करते हैं १७ जैसे १८ घोडे १९ संग्रामको जय करते हैं॥ ६॥ वामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता·

> आवो राजानमध्वरस्य रुद्रꣳ होतारꣳ सत्ये
> यजꣳ रोदस्योः। अग्निं पुरा तनयित्नोरचित्ता
> द्धिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम्॥ ७॥ ६९

हे ऋत्विग्यजमानाः (वः) युष्माकं (तनयित्नोः) आकस्मिकाशनितुल्यात् (अचित्तात्) मरणात्। न विद्यते चित्तं यस्मिन्तस्मात्सर्वेन्द्रियोपसंहाररूपात् (पुरा) प्रागेव (अवसे) स्वरक्षणाय (अध्वरस्य) यज्ञस्य (राजानम्) अधिपतिं (होतारम्)

देवानामाह्वातारं (रुद्रं) शिवस्वरूपं (रोदस्योः) द्यावापृथिव्योर्मध्ये (सत्ययजम्) सत्यं परमेश्वरं यजन्तं (हिरण्यरूपम्) सुवर्णप्रभं ज्योतिः स्वरूपं वा। हिरण्यं ज्योतिः श० ६।७।१।२ (अग्निम्) (आकृणुध्वम्) यूयं समन्ताद्धविर्भिरग्निं भजध्वम् ॥७॥ ६६

भावार्थः – हे ऋत्विज यजमानो १ तुम्हारे २ आकस्मिक वज्रतुल्य ३ मरणसे ४ पहिलेही ५ अपनी रक्षाके लिये ६,७ यज्ञाधिपति ८ देवाह्वानकर्त्ता ९ शिव स्वरूप १० पृथिवी स्वर्गके मध्य ११ परमेश्वरका यजन करने वाले १२ सुवर्णप्रभवा ज्योति स्वरूप १३ अग्निको १४ हविद्वारा सेवन करो ॥७॥ ६६

अथाध्यात्मम् – हे योगिनः (वः) युष्माकं (तनयित्नोः) आकस्मिकाशनितुल्यात् (अचित्तात्) मरणात् (पुरा) प्रागेव (अवसे) संसाराद्रक्षणाय (अध्वरस्य) योगयज्ञस्य (राजानम्) स्वामिनं (होतारम्) महापुरुष पूरुषाणामाह्वातारं (रुद्रम्) संसार रोगस्य द्रावयितारं (रोदस्योः) मनोभृकुट्योर्मध्ये (सत्ययजम्) सत्यं यजन्तं (हिरण्यरूपम्) ज्योती रूपं (अग्निम्) आत्माग्निं (आकृणुध्वम्) यूयं समन्ताद्धविर्भिर्भजध्वम् ॥७

भावार्थः – हे योगिजनो १ तुम्हारे २ आकस्मिक वज्रतुल्य ३ मरणसे ४ पूर्वही ५ संसार सेरक्षाकेलिये ६ योग यज्ञके ७ स्वामी ८ महापुरुषपुरुषों के आह्वाता ९ संसार रोगके द्रावक १० मनभृकुटिकेमध्य ११ परमेश्वरका यजन करनेवाले १२ ज्योतिस्वरूप १३ आत्माग्निको १४ हविषों द्वारा सेवन करो ॥७॥ वसिष्ठऋषिस्त्रिष्टुपछन्दोऽग्निर्देवता-

इन्धे राजा समर्यो नमोभिर्यस्य प्रतीकमाहुतं घृतेन। नरो हव्येभिरीडते सबाध आग्निरग्रमुषसामशोचि ॥८

(राजा) दीप्तः (अर्य्यः) स्वामी हविषांप्रेरकोवा (अग्निः) (नमोभिः) स्तुतिभिः (समिन्धे) समिध्यते (यस्य) अग्नेः (प्रतीकम्) मुखं (घृतेन) (आहुतम्) भवति (सबाधः) सज्ञानबाधः (नरः) मनुष्यः (हव्येभिः) हव्यैः सार्द्धम् (ईडते) स्तुवन्ति (सः) अग्निः (उषसाम्) (अग्रम्) (आशशोचि) आदीप्यते ॥ ८ ॥

भाषार्थः – १ दीप्त २ स्वामी वा हविओं का प्रेरक ३ अग्नि ४ स्तुतिओं से ५ प्रदीप्त होता है ६ जिस अग्नि का ७ मुख ८ घृत से ९ आहुत होता है १० सबाधा ११ मनुष्य १२ हविओं के साथ १३ जिसकी स्तुति करता है १४ वह अग्नि १५ उषाकालों के १६ आरम्भ में १७ प्रदीप्त होता है ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम् – (राजा) षडैश्वर्यसम्पन्नः (अर्य्यः) सर्वस्य प्रेरकः (अग्निः) आत्माग्निः (नमोभिः) नमस्कारैः (समिन्धे) समिध्यते (यस्य) आत्माग्नेः (प्रतीकम्) मुखं (घृतेन) साममन्त्रैः। घृतः सामानि श० ११।५।७।५ (आहुतम्) भवति (सबाधः) संसाररोगग्रस्तः (नरः) मुमुक्षुः (हव्येभिः) प्राणेन्द्रियैः सार्द्धम् (ईडते) स्तुवन्ति (सः) आत्माग्निः (उषसाम्) (अग्रम्) ब्राह्ममुहूर्त्तसमाधिकालं (आशशोचि) आदीप्यते ॥ ८ ॥

भाषार्थः – १ षट् ऐश्वर्य से सम्पन्न २ सब का प्रेरक ३ आत्माग्नि ४ नमस्कारों से ५ प्रदीप्त होता है ६ जिस आत्माग्नि का मुख ८ साम मंत्रों से ९ आहुत होता है १० संसार रोग से ग्रस्त ११ मुमुक्षु १२ प्राणेन्द्रियों के साथ १३ स्तुति करता है १४ वह आत्माग्नि १५,१६ ब्राह्म मुहूर्त समाधिकाल पर १७ प्रदीप्त होता है ८

त्रिशिरास्त्वाष्ट्रऋषिः त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता।

प्रकेतुना बृहता यात्यग्निरारोदसी वृषभो रोरवीति

दिवश्चिदन्तादुपमामुदानडपामुपस्थे महिषो ववर्द्ध ९-१२
(अग्निः) (बृहता) (केतुना) प्रज्ञानेन नि० ३।९।२ (रोदसी) द्यावापृथिव्यौ (आ) समन्तात् (प्रयाति) प्रकर्षेण गच्छति व्याप्नोति (वृषभः) वृष्टिकर्त्ता मेघरूपः सन् (रोरवीति) अत्यर्थं शब्दं करोति (दिवः) स्वर्गलोकस्य (चिदन्तात्) चिदात्मनः स्वरूपात् सूर्यात् सूर्यरूपात् (उपमाम्) उपमायारूपं ब्रह्माण्डं (उदानट्) उत्कर्षेण व्याप्तवान् (अपाम्) व्यष्टिलक्षणानामुदकानां (उपस्थे) उत्सङ्गे (महिषः) विद्युद्रूपेण मह्या भूमेः (षः) शोभारूपः सन् (ववर्द्ध) वर्द्धते ॥९॥

भावार्थः–१ अग्नि २,३ ज्ञानद्वारा ४ पृथिवी स्वर्ग को ५ सब ओर से ६ व्याप्त करता है ७ मेघरूप होना ८ अत्यन्त शब्द करता है ९ स्वर्गलोक के १० सूर्यरूप से ११ ब्रह्माण्ड को १२ जिसने व्याप्त किया १३ जलों के १४ उत्संग में १५ बिजली रूप से भूमि का शोभारूप होना १६ वृद्धि पाता है ॥९॥

अथाध्यात्मम्–(अग्निः) आत्माग्निः (बृहता) (केतुना) प्रज्ञानेन सह (रोदसी) मनोभृकुटी (आ) समन्तात् (प्रयाति) (वृषभः) गगन मेघरूपः सन् (रोरवीति) अनाहतशब्दं करोति (दिवः) (चिदन्तात्) मानससूर्यरूपात् (उपमाम्) उपमायारूपं शरीरं (उदानट्) उत्कर्षेण व्याप्नोति (अपाम्) कमलान्तरिक्षाणां नि० (उपस्थे) उत्संगे (महिषः) कमस्थदेवानां रूपेण योगभूमेः शोभारूपः सन् (ववर्द्ध) वर्द्धते ॥९॥

भावार्थः–१ आत्माग्नि २,३ प्रज्ञान के साथ ४ मन भृकुटि को ५ सब ओर से ६ व्याप्त करता है ७ गगन मेघरूप होना ८ अनाहत शब्द को करता है ९,१०

मानससूर्यरूपसे११ शरीरको१२ व्याप्तकरताहै १३कमलान्तरिक्षोंके१४उ
त्संगमें१५कमलस्थदेवरूपसे योगभूमिकाशोभारूपहोना १६दृष्टिपाताहै
॥९॥ वसिष्ठऋषिर्जगती छन्दोऽग्निर्देवता-

अग्निं नरो दीधितिभिररण्योर्हस्तच्युतं जनयत प्रशस्तम्। दूरेदृशं गृहपतिमथव्युम् ॥१०॥ ७२

हे(नरः) नेतारऋत्विजः(प्रशस्तम्) प्रकर्षेण स्तुतं(दूरेदृशम्) दूरदर्शिनं(गृहपतिम्) गृहाणां पालकं(अरण्योः)(अथव्युम्) गमनवन्तं। अथर्वतिर्गत्यर्थः नि०२।१४।८७(हस्तच्युतं) अन्तर्हितं(अग्निम्)(दीधितिभिः) अङ्गुलिभिः नि०२।५।८(जनयत)१०

भाषार्थः -१हेऋत्विजो२अत्यन्तस्तुत३दूरदर्शी४गृहपालक५अरणि काष्ठके मध्य६विद्यमान७अन्तर्हित८अग्निको९अङ्गुलियोंसे१० प्रकटकरो॥१०॥

अथाध्यात्मम् - हे(नरः) नेतारोवागाद्यृत्विजः(प्रशस्तम्) प्रशंसनीयं(दूरेदृशम्) दुःखंराति ददातिदूरः संसारस्तस्मिन्दर्शनं यस्यतं(गृहपतिम्) देहानांपालकं(अरण्योः) जीवात्मप्रणवरूपारण्योर्मध्ये(अथव्युम्) गमनवन्तंप्रादुर्भवनशीलं(हस्तच्युतम्) अन्तर्हितं(अग्निम्) आत्माग्निं(दीधितिभिः) महापुरुषरश्मिभिः(जनयत) ॥१०॥

भाषार्थः -१हेवागाद्यृत्विजो२प्रशंसनीय३संसारमेंदर्शनदेनेवाले४देहपालक५जीवात्मप्रणवरूपअरणीकेमध्य६प्रादुर्भवनशील७अन्तर्हित८आत्माग्निको९महापुरुषकी किरणोंसे१० प्रकटकरो॥१०॥

इतिश्रीभृगुवंशावतंसश्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्मकृते सामवेदी

ब्रह्मभाष्येछन्दोव्याख्यानेप्रथमस्याध्यायस्यसप्तमः खण्डः॥

अथाष्टमखण्डः

बुधश्च गविष्ठिरश्चद्वावृषीत्रिष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता-

अबोध्यग्निः समिधाजनानाम् प्रतिधेनुमिवायतीमुषासम्। यह्वाइवप्रवयामुज्जिहानाःप्रभानवः सस्रतेनाकमच्छ॥१॥७३

यदा (धेनुम्) (इव) धेनुतुल्यं (आयतीम्) आगच्छन्ती (उषासम्) (प्रति) उषःकाले (अग्निः) (जनानाम्) अध्वर्य्वादीनां (समिधा) (अबोधि) प्रबुद्धोभूत्तदा (भानवः) तस्यरश्मयोज्वालाः (नाकम्) अन्तरिक्षं (अच्छ) आभिमुख्येन (प्रसस्रते) प्रसरंति (इव) यथा (वयाम्) पक्षिणां (यह्वाः) समूहाः (उज्जिहानाः) स्वाधिष्ठानंत्यजन्तोऽन्तरिक्षं गच्छन्ति ॥२॥

भाषार्थः - जब१,२धेनुतुल्य३आती४उषाके५ समय६अग्नि७अध्वर्यु आदिकी८समिधसे९प्रबुद्धहुआतब१०उसकीज्वाला११,१२अन्तरिक्षकेसन्मुख१३चलतीहैं१४जैसे१५पक्षियोंके१६समूह१७अपनेस्थानकोत्यागते अन्तरिक्षकोजातेहैं॥२॥

अथाध्यात्मम् - यदा (धेनुम्) (इव) (आयतीम्) (उषासम्) (प्रति) समाधिकाले (अग्निः) आत्माग्निः (जनानाम्) योगिनां (समिधा) प्राणेन। प्राणावै समिधः श० १।५।४।१ (अबोधि) प्रबुद्धोभूत्तदातस्य (भानवः) जीवेन्द्रियशक्तिरूपारश्मयः (नाकम्) भृकुटिमंडलं (अच्छ) आभुम (प्रसस्रते) प्रसरन्ति (इव) यथा (वयाम्) पक्षिणां (यह्वाः) समूहाः (उज्जिहा

ना॰) स्वाधिष्ठानंत्यजन्तोऽन्तरिक्षं गच्छन्ति ॥२॥

भाषार्थः – जब १,२ धेनुतुल्य ३ ज्ञानी ४ उपासों ५ के समय समाधिकाल पर ६ आत्माग्नि ७ योगियोंके ८ प्राणसे ९ प्रबुद्ध होता है तब उसकी १० जीव इन्द्रिय शक्ति रूप किरणों ११ भृकुटिमंडलकी १२ आग्निको १३ चलती हैं १४ जैसे १५ पक्षियोंके १६ समूह १७ अपने स्थान को त्यागते अन्तरिक्ष को जाते हैं ॥२॥

वत्सप्रिर्ऋषिस्त्रिष्टुपछन्दो विषावाग्निर्देवता-

प्रभूर्जयन्तंमहां विपोधां मूरैरमूरं पुरान्दर्माणम् । नयन्तङ्गीर्भिर्वनाधियंधाः हरिश्मश्रुंनवर्मणा धनर्चिम् ॥२॥ ७४

हे स्तोतः त्वं (जयन्तम्) असुर सेनानांजेतारं (महां) षोडशकलावतारं महान्तं (विपोधां) मेधाविनांभक्तानांधर्त्तारम् (मूरैः) मुरुदैत्य सेनाजनैः (पुराम्) पुराणांप्राकारादीनां (दर्माणम्) विदारकं । दृविदारे (अमूरम्) दैत्यपाशैर्निर्मुक्तं (मुखेष्टने (गीर्भिः) षोडशसहस्रकन्यानां स्तोत्रैः (वर्मणा) कवचेनच (वनाम्) तासांनिवासस्थानानां (नयन्तम्) द्वारिकायांप्रापयन्तं (न) च (धनर्चिम्) धनदानेनद्वारिकावासिनां पूजकं (हरिश्मश्रुं) विषावाख्यमग्निं (प्रभूः) स्तोतुं प्रभवसमर्थो भव (धियम्) परिचरणारूपंकर्मच (धाः) विधेहि ॥२॥

भाषार्थः – हे स्तोता तुम १ असुरसेनाके जेता २ षोडश कलावतार ३ मेधावी भक्तोंके धारक ४ मुरुदैत्यके सेनाजनोंसे ५ पूर्ण प्राकार आदि के ६ विदारक ७ दैत्य की पाशों से निर्मुक्त ८ षोडश सहस्र कन्याओं के स्तो

च ९ और क्रवचों के द्वारा १० उनके निवासस्थानों को ११ द्वारिका में पहुंचाने वाले १२ और १३ धनदान से द्वारिकावासियों के पूजक १४ विष्णु नाम अग्नि के १५ स्तुति करने को समर्थ हो १६ और सेवा रूप कर्म को १७ विधान कर॥२

भरद्वाजऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोमहापुरुषाग्निर्देवता

शुक्रन्ते अन्यद्यजतन्ते अन्यद् विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि। विश्वा हि माया अवसि स्वधावन् भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु ३॥७५

(पूषन्) हे महापुरुषरूपाग्ने। पूषरक्षौ। (ते) तव (शुक्रम्) मानससूर्यरूपं। एष वै शुक्रो य एष तपति श॰ ४।३।१।२६ (अन्यत्) (ते) तव (यजतम्) यजनीयं पूजनीयं परमात्मरूपं (अन्यत्) (अहनी) अहश्च रात्रिश्च (विषुरूपे) योगभोगादिक्रियाभिर्नानारूपे त्वं (द्यौः) (इव) (असि) यथा द्यौरादित्यः प्रकाशयिता तथा त्वं प्रकाशकोऽसि (स्वधावन्) हे पराः पराऽरूपान्नवन्॥ नि॰ २।७।२९ (हि) यस्मात् (विश्वाः) सर्वाः (मायाः) प्रज्ञाः (अवसि) रक्षसि तस्मात् (इह) अस्मिन् जन्मनि (ते) (रातिः) दानं (भद्रा) कल्याणरूपं (अस्तु) भवतु॥३॥

भाषार्थः – १ हे महापुरुषरूप अग्ने २ तेरा ३ मानस सूर्यरूप ४ अन्य है ५ तेरा ६ पूजनीय परमात्मारूप ७ अन्य है ८ दिन और रात्रि ९ योग भोग आदि क्रियाओं के द्वारा नाना रूप हैं तुम १०,११ सूर्यतुल्य प्रकाशक १२ हो १३ हे परापर रूप अन्न वाले १४ जिस कारण १५ सब १६ प्रज्ञाओं को १७ रक्षा करते हो उस कारण १८ इस जन्म में १९ तेरा २० दान २१ कल्याणरूप २२ हो॥३

विश्वामित्रऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता

इडामग्ने पुरुदंसᳫं सनिं गोः शश्वत्तमᳫं हवमानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ४ ॥ ७६

हे (अग्ने) (पुरुदंसम्) बहुकर्म्माणं (गोः) (सनिं) गवादिपशूनां सम्पादकं (इडाम्) अन्नं नि० २।७।१६ (शश्वत्तमम्) निरन्तरं (हवमानाय) यजमानाय मह्यं (साध) साधय किञ्च (नः) अस्माकं (सूनुः) पुत्रः (तनयः) कुलविस्तारकर्त्ता (स्यात्) हे (अग्ने) (ते) तव (सा) (विजावा) अवन्ध्या (सुमतिः) शोभना बुद्धिः (अस्मे) अस्मासु (भूतु) भवतु ॥ ४ ॥

भाषार्थः– १ हे अग्ने २ बहुकर्मा ३, ४ गौ आदि पशुओं के सम्पादक ५ अन्न को ६ निरन्तर ७ मुझ यजमान के लिये ८ साधन करो ९ हमारा १० पुत्र ११ कुल का विस्तार करने वाला १२ होवे १३ हे अग्ने १४ तेरी १५ वह १६ अवन्ध्या १७ शुभबुद्धि १८ हमारे मध्य १९ प्राप्त होवे ॥ ४ ॥

अथाध्यात्मम्– हे (अग्ने) आत्माग्ने (पुरुदंससम्) बहुकर्मकर्त्री (गोः) (सनिम्) महावाक् सम्पादयित्रीं वाचमेव तद्देवा धेनुमकुर्वत ९।१।२।१७ (इडाम्) श्रद्धां। श्रद्धेडा सयो ह वै श्रद्धेडेति वेदावह श्रद्धाᳫं रुन्द्धे ऽयो य त्किंच श्रद्धया जप्यᳫं सर्वᳫं हैनवज्ञ्न् यति श १४।२।१।२० (शश्वत्तमम्) निरंतरं (हवमानाय) यजमानाय (साध) साधय (नः) अस्माकं योगिनां (सूनुः) मानसरूपः (तनयः) पुत्रः पुन्नामनरकात्तारकः (स्यात्) हे (अग्ने) आत्माग्ने (ते) तव (सा) (विजावा) अवन्ध्या विविधज्ञानभक्तिविज्ञानानां जननी (सुमतिः) निश्चयात्मिका बुद्धिः (अस्मे) अस्मा

१९
सु(भूतु) भवतु ॥ ४ ॥

भाषार्थः -१ हे आत्माग्ने २ बहुत कर्म करने वाली ३,४ महा वाक्का सम्पादन करने वाली ५ श्रद्धा को ६ निरन्तर ७ यजमान के लिये ८ साधन करो ९ हम योगियों का १० मानस सूर्य ११ पुन्नामनरक से तारक १२ होवे १३ हे आत्माग्ने १४ तेरी १५ वह १६ अवन्ध्या विविध भक्ति ज्ञान की जननी १७ निश्चयात्मिका बुद्धि १८ हम में १९ प्रतिष्ठित हो ॥ ४ ॥

वत्सप्रिर्ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता-

प्रहोताजातोमहान्नभोविन् नृषद्मासीदपांविवर्ते। दधद्योधायीसुतेवयांसियन्तावसूनि विधतेतनूपाः ॥ ५ ॥ ७७

(यः)(अपाम्) अन्तरिक्षाणां नि० १।३।८ (विवर्ते) कार्यभूतवेदि समूहे (होता) यजमानानां होम निष्पादकः (महान्) पूज्यः (प्रजातः) (नभोवित्) ज्वालया अन्तरिक्षे विद्यमानः विद्भावे (नृषद्मा) ऋत्विग्यजमानेषु वसन शीलोऽग्निः (दधत्) हवींषि धारयन् (सुधायी) सुष्ठु धारकः (आसीत्) सः (विधते) परिचरते (ते) तुभ्यं (वयांसि) अन्नानि (वसूनि) धनानि (यन्ता) नियमयिता (तनूपाः) तन्वः पाता च भवत्विति शेषः ॥ ५ ॥

भाषार्थः -१ जो २ अन्तरिक्षों के ३ कार्यभूत वेदि समूह पर ४ यजमानों का होम निष्पादक ५ पूज्य ६ हुआ ७ ज्वाला से अन्तरिक्ष में विद्यमान ८ ऋत्विज यजमानों में वसन शील अग्नि ९ हविओं को धारण करता १० अच्छे धारक ११ हुआ वह १२ तुझ सेवक के लिये १४ अन्नों १५ और धनों को १६ प्राप्त कराने वाला १७ और शरीर का रक्षक हो ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम्-(यः) आत्माग्निः(अपाम्) कमलान्तरिक्षाणां(विवर्ते) विवर्ते उत्सङ्गे (महान्) कमलस्थानां देवानां रूपेण पूज्यः(मजातः)(नभोविने) मानसान्तरिक्षेविद्यमानः(नृषद्मा) जीवात्मनिस्थितः(आसीत्)(होता) होमनिष्पादकः(दधते) प्राणेन्द्रियादीनिहवींषि धारयन्(सुधार्यी) श्रेष्ठोधारकः स(विधते) परिचरते(ते) तुभ्यं (वयांसि) प्राणान्। अन्नंहि प्राणाः श०२।२।१।६(वसूनि) योगधनानि योगैश्वर्याणि(यन्ता) नियमयिता(तनूपाः) आत्मनः पाताऽस्त्वभवतु आत्मावैतनूरिति श्रुतेः॥५॥

भाषार्थः-१ जोआत्माग्नि २ कमलान्तरिक्षोंके ३ उत्संगमें ४ कमलस्थदेवरूपसेपूज्य ५ हुआ ६ मानसान्तरिक्ष में विद्यमान ७ जीवात्मामें स्थित ८ हुआ ९ होमनिष्पादक १० प्राणइन्द्रिय रूप हविको धारण करता ११ श्रेष्ठ धारक ऊपावह १२, १३ तुझ सेवक के लिये १४ प्राणों १५ और योग धन योगैश्वर्यों को १६ प्राप्त करने वाला १७ और आत्माकारक्षक हो-५।

वसिष्ठऋषिः त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता

प्रसम्राजे॑ मसु॑रस्य प्रश॑स्तिं पुं॒सः कृ॑ष्टी॒नाम॑नुमा॒द्य॑स्य इन्द्र॑स्येव॒ प्रत॒वस॑स्कृ॒तानि॒ वन्दे॑ द्वा॒रा वन्द॑माना विवष्टु॥६॥१८

(असुरस्य) असुं प्राणं रातिददातितस्य(पुंसः) पुरुषस्य सर्वव्यापिनः(कृष्टीनाम्) भक्तानां(अनुमाद्यस्य) पूजनार्हस्य स्तुत्यस्य (तवसः) बलरूपस्य(इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य। इदि परमैश्वर्ये(इव) तुल्यं(प्रशस्तम्) उत्कृष्टं(सम्राजम्)

अग्ने रात्माग्निर्वा सम्यग्राजमानं स्वरूपमस्ति तस्मात् (देवद्वारा) स्तुतिद्वाराणि स्तुतिप्रमुखानि (वन्दमाना) स्तूयमानानि (कर्त्तानि) यज्ञकर्म्माणि (प्रविविष्टु) प्रकर्षेण कामयताम् ॥ ६ ॥

भाषार्थः –१ प्राणदाता २ सर्वव्यापी ३, ४ भक्तोंके पूजनीय ५ बलरूप ६ परमेश्वरके ७ तुल्य ८ उत्कृष्ट ९ अग्निवा आत्माग्निका दीप्तिमान स्वरूप है उस कारण १० स्तुतिप्रमुख ११ स्तूयमान १२ यज्ञकर्मोंको १३ भले प्रकार चाहो ॥ ६ ॥

विश्वामित्रऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता

अरण्योर्निहितो जातवेदा गर्भइवेत्सुभृतो गर्भिणीभिः। दिवे दिवईड्यो जागृवद्भिर्हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः ॥ ७ ॥ ७९

(अयम्) (जातवेदाः) सर्वज्ञः (अग्निः) अग्निरात्माग्निर्वा (अरण्योः) अरण्योः प्राणवजीवरूपारण्योर्वा (निहितः) स्थापितः (इव) यथा (गर्भिणीभिः) (सुभृतः) सुपुष्टः (गर्भः) तथा (जागृवद्भिः) जागरूकैः समाधिस्थैर्वा (हविष्मद्भिः) (मनुष्येभिः) उभयविधयजमानैः (इत्) एव (दिवे) (दिवे) प्रत्यहं (ईड्यः) स्तोतव्यः ॥ ७ ॥

भाषार्थः –१ यह २ सर्वज्ञ ३ अग्निवा आत्माग्नि ४ अरणिकाष्ठ वा प्राणवजीवके मध्य ५ स्थापित है ६ जैसे ७ गर्भिणी स्त्रियों से ८ धारित ९ गर्भ १० तथा जागरूक वा समाधिस्थ ११ हवियुक्त १२, १३ उभयविध यजमानोंके द्वारा ही १४, १५ प्रतिदिन १६ स्तुति करने योग्य है ॥ ७ ॥

पायुर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता

सनोदेग्ने मृणसि यातुधानान् नत्वारक्षांसि पृतनासु जिग्युः अनुदह सहमूरान् कयादो मातेहेत्या मुक्ष तदैव्यायाः ॥८॥८०

हे (अग्ने) अग्ने आत्माग्नेवा त्वं (सनोत्) सदैव (कयादः) मांसभक्षकान् यद्वा (क) शान्तिः (य) कीर्त्तिर्निवृतिश्च (य) प्रभात्यागः सुखञ्च तेषां भक्षकान् (यातुधानान्) असुरान्कामादीन्वा (मृणसि) मारयसि (रक्षांसि) असुराः कामादयोवा (त्वा) त्वां (पृतनासु) संग्रामेषु (न) (जिग्युः) नजयन्तितस्मात् (सहमूरान्) सहभूतान् मूढान् यद्वा संसारबंधनदात्रृन् राक्षसान् कामादीन्वा। मूवन्धे (अनुदह) तेजसा भस्मीकुरु (ते) असुराः कामादयोवा (दैव्यायाः) दैव्यात् (हेत्याः) आयुधात् (मा) (मुक्षत) मुक्तामाभूवन् ॥८॥

भाषार्थः – १ हे अग्नेवा आत्माग्ने तुम २ सदैव ३ मांसभक्षोंकोंवा शान्ति कीर्त्तिर्निवृत्ति प्रभात्याग सुखके भक्षक ४ असुरवा काम आदिको ५ मारते हो ६ असुरवा काम आदि ७ तुमको ८ संग्रामोंमें ९,१० नहीं जीतते हैं ११ मूढ वा संसारबंधनदाता राक्षसवा काम आदिको १२ भस्मकरो १३ वे असुरवा काम आदि १४ दैव्य १५ आयुधसे १६,१७ मुक्त नहों ॥८॥

इतिश्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनुज्वालाप्रसादशर्म्मविरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्याष्टमः खण्डः

अथनवमःखण्डः

गयत्रिर्ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दोग्निर्देवता-

अग्ने ओजिष्ठमाभर द्युम्नमस्मभ्यमधिगो। प्रनो

रायेपनीयसेरत्सिवाजायपन्थाम्॥१॥८१॥

हे(अध्रिगो) अधृष्यगमन सर्वगत (अग्ने) अग्ने आत्माग्नेवात्वं (अस्मभ्यम्) (ओजिष्ठम्) वलवत्तमं (द्युम्नम्) धनंयोगधनम्वानि० २। ९(आभर) आहरत्वं (पनीयसे) स्तुतियोग्याय (राये) धनाय योगधनायवा (वाजाय) अन्नायाविराड्रूपान्नायवा (नः) अस्मान् (पन्थाम्) प्राप्तिसाधनंमार्गं (प्ररत्सि) प्रकर्षेण ददासि रादाने॥१॥८१

भावार्थः - १ हे सर्वगत २ अग्नेवाआत्माग्ने तुम ३ हमारे लिये ४ वलवत्तम ५ धनवायोगधनको ६ दीजिये ७ तुम स्तुतियोग्य ८ धनवायोगधनके लिये ९ अन्नवाविराट्रूपअन्नके लिये १० हमको ११ प्राप्तिसाधन मार्ग १२ देतेहो॥१॥८१

नौदेवते

वामदेवऋषिः भरद्वाजोवार्हस्पत्योवाऋषिरनुष्टुप्छन्दोग्निर्यजमा

यदिवीरोअनुष्यादग्निमिन्धीतमर्त्यः। आजुह्वद्धव्यमानुषक्शर्म्मभक्षीतदैव्यम्॥२॥८२

(यदि) (मर्त्यः) मनुष्यः (वीरः) कामादीनांप्रतियोद्धा (स्यात्) (अग्निम्) अग्निमात्माग्निम्वा (इन्धीत) अग्न्याधानंकुर्वीत (आनुषक्) आनुपूर्वेण (हव्यम्) हविरात्मप्रतिविम्वम्वा (आजुह्वत्) आभिमुख्येनजुहोति अपिच (दैव्यम्) देवसम्वन्धिनं विद्वत्सम्वन्धिनम्वा (शर्म्म) सुखं मोक्षानन्दम्वा (भक्षीत) सेवेत॥२॥

भावार्थः - १ जो २ मनुष्य ३ कामआदिकाप्रतियोद्धा ४ होवे ५ अग्नि वाआत्माग्निको ६ प्रज्वलित करै ७ क्रमपूर्वक ८ हविवाआत्मप्रतिविंवको

९ होमें १० देवसम्बधी वा विद्वानसम्बधी ११ सुख वा मोक्षानन्द को १२ सेवन करै ॥२॥

द्वयोर्भरद्वाजऋषिरनुष्टुप् छन्दोग्निर्देवता

त्वेषस्ते धूम ऋण्वति दिवि सञ्छुक्र आततः।
सूरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे ॥३॥ ८३

हे (पावक) शोधकाग्ने (त्वेषः) दीप्तस्य (ते) तव (शुक्रः) शुक्लो निर्मलः शुभ्रवर्णो वा (धूमः) (दिवि) अन्तरिक्षे (आततः) विस्तीर्णः (सन्) (ऋण्वति) मेघात्मना परिणतो गच्छति (हि) यस्मात्त्वं (सूरः) (न) सूर्य इव (कृपा) समर्थया (द्युता) दीप्त्या (रोचसे) प्रकाशसे ॥३॥

भाषार्थः -१ हे शोधक अग्ने २,३ तुम्हदीप्तका ४ निर्मल वा शुभ्रवर्ण ५ धूम ६ अन्तरिक्षमें विस्तीर्ण होना ८,९ मेघरूप होकर चलता है १० जिस कारण तुम ११,१२ सूर्यकी समान १३ समर्थ १४ दीप्ति से १५ प्रकाश करते हो ॥३॥

अथाध्यात्मम् हे (पावक) शोधकात्माग्ने (त्वेषे) दीप्तस्य (ते) तव (शुक्रः) मानस सूर्यः श० ४।३।१।२६ (धूमः) प्राणः श० १४।९।१।१५ (आततः) विस्तीर्णः (सन्) (दिवि) भृकुटिमण्डले (ऋण्वति) गच्छति (हि) यस्मात्त्वं (सूरः) (न) समष्टि सूर्य इव (कृपा) समर्थया (द्युता) दीप्त्या (रोचसे) प्रकाशसे ॥३॥

भाषार्थः -१ हे शोधक आत्माग्ने २,३ तुम्ह दीप्तका ४ मानस सूर्य ५ और प्राण ६,७ विस्तीर्ण होना ८ भृकुटिमडलमें ९ जाता है १० जिस कारण तुम

११,१२ समष्टि सूर्यकी समान १३ समर्थ १४ दीप्तिसे १५ प्रकाश करते हो ३

विनियोगः पूर्ववत्

त्वं हि क्षैतवद्यशोऽग्ने मित्रो न पत्यसे। त्वं विचर्षणे श्रवो वसो पुष्टिं न पुष्यसि ४॥ ८४

हे (अग्ने) (त्वम्) (हि) (क्षैतवत्) क्षितिः क्षयोऽपचयः तत्सम्बन्धि क्षैतं शुष्क काष्ठं तद्युक्तं (यशः) अन्नं नि० २,७ (पत्यसे) अभिपतासि गच्छसि (न) यथा (मित्रः) अहरभिमानी देवो विराड्रूपान्नं हे (विचर्षणे) विशेषेण सर्वस्य द्रष्टः (वसो) अग्ने (त्वम्) (श्रवः) अन्नं (न) च (पुष्टिम्) (पुष्यसि) वर्द्धयसि ४

भाषार्थः –१ हे अग्ने २ तुम ३ ही ४ शुष्क काष्ठ युक्त ५ अन्नको ६ प्राप्त करते हो ७ जैसे ८ दिवसाभिमानी देवता विराट् रूप अन्नको ९ हे सर्वद्रष्टा १० अग्ने ११ तुम १२ अन्नको १३ और १४ पुष्टिको १५ बढाते हो॥ ४॥

अथाध्यात्मम् (अग्ने) हे आत्माग्ने (त्वम्) (हि) (क्षैतवत्) क्षय इति गृहनामनि० ३,४ क्षैतो देह गृहस्थो भूतात्मा तेन युक्तम् (यशः) मानससूर्यं। आदित्यो यशः श० १४।१।१।३२ (पत्यसे) ईशिषे। पत्यतिरैश्वर्यकर्मानि० २।२१ (न) यथा (मित्रः) सूर्यो ब्रह्माण्डं हे (विचर्षणे) विशेषेण सर्वस्य द्रष्टः (वसो) ज्योतिः स्वरूपात्माग्ने (त्वम्) (श्रवः) विराड्रूपान्नं (न) च (पुष्टिम्) (पुष्यसि) (वर्द्धयसि)॥ ४॥

भाषार्थः १ हे आत्माग्ने २ तुम ३ ही ४ भूतात्मासे युक्त ५ मानससूर्यके ६ ईश्वर हो ७ जैसे ८ सूर्य ब्रह्माण्डका ९ हे सबके द्रष्टा १० ज्योतिस्वरूप आत्माग्ने ११ तुम १२ विराडरूप अन्न १३ और १४ पुष्टिको १५ बढा

तेहैं ॥४॥ सूक्तवाहाद्वितऋषिरनुष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता-

प्रातरग्निः पुरुप्रियो विशस्तवेतातिथिः । विश्वे
यस्मिन्नमर्त्ये हव्यं मर्त्तास इन्धते ॥५॥ ८५

(पुरुप्रियः) बहुप्रियः (विशः) विब्रह्मणिशेते ब्रह्मशायी (अतिथिः) अतिथिवत्पूज्यः (अग्निः) (प्रातः) (स्तवेत) स्तूयते (विश्वे) सर्वे (मर्त्तासः) मनुष्याः (यस्मिन्) (अमर्त्ये) अविनाशिनि (हव्यम्) (इन्धते) दीपयन्ति ॥५॥

भाषार्थः - १ बहुप्रिय २ ब्रह्मशायी ३ अतिथिवत्पूज्य ४ अग्नि ५ प्रातकाल पर ६ स्तुति कियाजाता है ७ सब ८ मनुष्य ९ जिस १० अविनाशी अग्नि में ११ हविको १२ होमते हैं ॥५॥

अथाध्यात्मम् (पुरुप्रियः) पुरां देहानां प्रियः (विशः) ब्रह्मशायी (अतिथिः) अतिथिवत्पूज्यः (अग्निः) आत्माग्निः (प्रातः) समाधिकाले (स्तवेत) (विश्वे) सर्वे (मर्त्तासः) अहमास्पदामनुष्याः (यस्मिन्) (अमर्त्ये) अविनाशिन्यात्माग्नौ (हव्यम्) होमार्हात्मप्रतिविंबं (इन्धते) दीपयन्ति ॥५॥

भाषार्थः - १ देहोंका प्रिय २ ब्रह्मशायी ३ अतिथि समान पूज्य ४ आत्माग्नि ५ समाधिकालपर ६ स्तुति कियाजाता है ७ सब ८ अहमास्पद मनुष्य ९ जिस १० अविनाशी आत्माग्नि में ११ होम योग्य आत्मप्रतिविंबको १२ होमते है ॥५॥

वसूयवआत्रेयाऋषयअनुष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता

यद्वाहिष्ठं तदग्नये बृहदर्च विभावसो । महिषी
वत्वद्रयिस्त्वद्वाजा उदीरते ॥६॥ ८६

(यत्) (वाहिष्ठं) वोढृतमं स्तोत्रं (तत्) (अग्नये) अग्नयेआत्माग्नये वा क्रियते हे (विभावसो) विविधप्रभाधनवन् (वृहत्) वह्नन्नं विराड्रूपान्नम्वा (अर्च्व) अस्मभ्यंप्रयच्छ यतः (त्वत्) त्वत्तः सकाशात् (महिषी) (इव) सार्वभौमलक्ष्मीरिव (रयिः) धनं योगधनंवा (उदीरते) उद्गच्छति (त्वत्) त्वत्तः (वाजाः) अन्नानि विराड्रूपान्नानि वोद्गच्छन्ति ॥ ६ ॥

भाषार्थः – १जोस्तोत्र २धारणयोग्यहै ३उसको ४ अग्निवा आत्माग्नि केलियेउच्चारण करतेहैं ५हेवहुविधप्रकाश धनवाले ६ वहुत अन्नवा विराट् रूप अन्नको ७हमेंदो ८जिसकारणतुमसे ९ १० सार्वभौमलक्ष्मी की तुल्य ११ धनवा योग धनको १२ प्राप्त करता है १३तुमसे १४अन्नवाविराड् रूपअन्नोंको पाता है –॥ ६॥

गोपवनऋषिः सप्तवध्रिर्वाऋषिरनुष्टुप् छन्दोवेदाग्निर्देवता।

विशोविशोवो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम्।
अग्निं वो दुर्यं वचः स्तुषे शूषस्य मन्मभिः ७ ॥ ८७

हे (विशः) यजमानाः (वः) युस्माकं (विशः) मनुष्याऋत्विजः (पुरुप्रियम्) वहुप्रियं (अतिथिम्) अतिथिवत्प्रियमग्निम्प्रति (वाजयन्तः) अन्नमिच्छन्तः सन्ति (वचः) वेदवागहं (वः) युष्माकं (शूषस्य) स्वर्गापवर्गसुखस्य (दुर्यम्) गृहंनि २।४।९(अग्निम्) अग्निमात्माग्निम्वा (मन्मभिः) मननीयैः स्तोत्रैः (स्तुषे) स्तौमि ॥ ७ ॥

भाषार्थः – १हेयजमानो २तुम्हारे ३ ऋत्विज ४ वहुप्रिय ५अतिथिसमप्रिय अग्नि से ६अन्नको चाहने वालेहैं ७ वेदवाक् में ८ तुम्हारे ९ स्वर्गमोक्ष

सुखके १० गृह ११ अग्निवा आत्माग्निको १२ स्तोत्रों से १३ स्तुत करता हूं॥७

पुरुरनेय ऋषिरनुष्टुप्छन्दोग्निर्देवता

बृहद्वयो हि भानवेऽर्चा देवायाग्नये। यं मित्रं न प्रशस्तये मर्तासो दधिरे पुरः॥८॥ ८८

(भानवे) दीप्तिमते (देवाय) द्योतमानाय (अग्नये) (बृहत्) महत् (वयः) हवीरूपमन्नं नि० २.७ (अर्च) प्रयच्छ (मर्त्तासः) मनुष्याः (यम्) अग्निं (मित्रम्) (न) सखायमिव (प्रशस्तये) प्रकृष्टस्तुतये (अस्मदर्थं देवानाग्निस्तौत्विति (पुरः) (दधिरे) पुरस्कुर्वन्ति यद्वा पूर्वस्यां दिशि धारयन्ति आहवनीयात्मनेति॥८॥

भावार्थः– १ दीप्तिमान २ द्योतमान ३ अग्नि के लिये ४.५ हविरूप महा अन्न को ६ अर्पण करो ७ मनुष्य ८ जिस अग्नि को ९,१० सखा की तुल्य ११ प्रकृष्टदेवस्तुति के लिये १२,१३ आगे करते हैं अथवा पूर्वदिशा में धारण करते हैं आहवनीय रूपसे॥८॥

अथाध्यात्मम् (भानवे) सूर्यरूपाय (देवाय) व्यष्टिसमष्टिदेहैः क्रीडणशीलाय (अग्नये) आत्माग्नये (बृहत्) महत् (वयः) विराड्रूपान्नं (अर्च) प्रयच्छ (मर्त्तासः) देहाभिमानिनः (यम्) (मित्रम्) (न) मानसं सूर्यरूपं मानससूर्यव्याप्तमात्माग्निं (प्रशस्तये) क्षेमाय (पुरः) पूर्वस्यां दिशि भृकुटौ (दधिरे) धारयन्ति॥८॥

भावार्थः– १ सूर्यरूप २ व्यष्टिसमष्टिदेहों से क्रीडनशील ३ आत्माग्नि के लिये ४,५ विराट्रूप अन्न को ६ अर्पण करो ७ देहाभिमानी ८ जिस ९,१०

मानससूर्य्यमेंव्याप्त आत्माग्निको ११ क्षेमकेलिये १२ भृकुटिमें १३ धारणाकरतेहैं ॥८॥ गोपवनऋषिरनुष्टुप्छन्दोग्निर्देवता-

अगन्म वृत्रहन्तमं ज्येष्ठमग्निमानवम्। यः स्मश्रुतर्वन्नार्क्षे बृहदनीक इध्यते ॥ ९ ॥ ८९

वयंयजमानाः (वृत्रहन्तमं) पापानामतिशयेन हन्तारं (ज्येष्ठम्) देवानांज्येष्ठं (आनवम्) मनुष्यसम्बन्धिनंतेषांहितकारिणम्वा नि० २,३,२० (अग्निम्) (अगन्म) (यः) अग्निः (बृहदनीके) ग्रहाणांमहति सेनावति (श्रुतर्वन्नार्क्षे) श्रुतः विख्यातः ऋद्रुद्रः तद्रूपे आर्क्षेऋक्षमेषादिराशीनांपतौ सूर्ये (इध्यतेस्म) प्रवृद्धोभवत् ॥९॥

भाषार्थः – हमयजमान १ पापनाशक २ देवताओंमेंवडे ३ मनुष्यसम्बंधीवाउनकेहितकारी ४ अग्निको ५ प्राप्तकरें ६ जोअग्नि ७ ग्रहोंकीवडीसेनावाले ८ रुद्ररूपसूर्यमें ९ वड़ीवृद्धिकोप्राप्तहुआ ॥ ९ ॥

अथाध्यात्मम् – वयंयोगिनः (वृत्रहन्तमं) पापानामतिशयेनहन्तारं (ज्येष्ठम्) (आनवम्) अजरामरं (अग्निम्) आत्माग्निं (अगन्म) (यः) आत्माग्निः शेषं पूर्ववत् ॥ ९ ॥

भाषार्थः –हमयोगीजन १ पापनाशक २ ज्येष्ठ ३ अजरामर ४ आत्माग्निको ५ प्राप्तकरें ६ जोआत्माग्नि ७ ग्रहोंकीवड़ीसेनावाले ८ रुद्ररूपसूर्यमें ९ वड़ीवृद्धिकोप्राप्तहुआ – ॥ ९ ॥

वामदेवः कश्यपोवा मारीचोमनुर्वावैवस्वतउभौवाऋषयअनुष्टुप्छन्दोग्निर्देवता–

जातः परेण धर्मणा यत्सवृद्भिः सहाभुवः। पिता

यत् कश्यपस्याग्निः श्रद्धा माता मनुः कविः ॥१०॥

हे अग्ने (यत्) यस्मात्त्वं (परेणे) (धर्मणा) यज्ञेन निमित्तेन निरु० ३,१७ (जातः) प्रादुर्भूतः तस्मात् (सवृद्भिः) यज्ञे सह वर्त्तन्ते इति सवृतः ऋत्विग्यजमानास्तैः (सह) (अभुवः) अभूवः (यत्) यस्मात् (अग्निः) (कश्यपस्य) कश्यं मद्यं पिबतीति कश्यपो मायामद्यस्य पाता जीवस्तस्य (पिता) तस्मात् (श्रद्धा) तस्य (माता) (मनुः) मन्त्रः (कविः) गुरुः ॥१०॥

भाषार्थः – हे अग्ने १ जिस कारण तुम २,३ यज्ञ निमित्त ४ प्रकट हुए उस कारण ५ ऋत्विजों के ६ साथ ७ प्राप्त हुए ८ जिस कारण ९ अग्नि १० जीवात्मा का ११ पिता है उस कारण १२ श्रद्धा उसकी १३ माता है १४ मन्त्र १५ गुरु है ॥ १० ॥

अथाध्यात्मम् हे आत्माग्ने (यत्) यस्मात्त्वं (परेणे) (धर्मणा) योगयज्ञेन (जातः) प्रादुर्भूतस्तस्मात् (सवृद्भिः) वागाद्यृत्विग्जीवात्मभिः (सह) (अभुवः) अभूवः (यत्) यस्मात् (अग्निः) आत्माग्निस्त्वं (कश्यपस्य) मायामद्यपजीवात्मन (पिता) तस्मात् (श्रद्धा) तस्य (माता) (मनुः) महावाक् (कविः) गुरुः ॥१०॥

भाषार्थः – हे आत्माग्ने १ जिस कारण तुम २,३ योगयज्ञ के निमित्त ४ प्रकट हुए उस कारण ५ वागाद्यृत्विजों के ६ साथ ७ प्राप्त हुए ८ जिस कारण ९ आत्माग्नि तुम १० जीवात्मा के ११ पिता हो उस कारण १२ श्रद्धा उसकी माता है १४ महावाक् १५ गुरु है ॥ १० ॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनु ज्वालाप्रसादशर्म्मविरचिते

सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्यानेप्रथमस्याध्यायस्यनवमः खण्डः

अथ दशमः खण्डः

अग्निस्तापसऋषिरनुष्टुपछन्दोदेवादेवता:

सोमं राजानं वरुणमग्निमन्वारभामहे। आदित्यं विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणंच बृहस्पतिम्॥१॥९१

(राजानम्) राजमानमीश्वरं (सोमम्) उमामहेश्वरं। सोमो वैराजा यज्ञः प्रजापतिः श० १२। ६।१।१ (वरुणम्) (अग्निम्) (आदित्यम्) अदितेः पराशक्तेः पुत्रं (विष्णुं) (सूर्यम्) (ब्रह्माणम्) (च) (बृहस्पतिम्) बृहतांवेदमंत्राणां स्वामिनं महानारायणं (अन्वारभामहे) आश्रयामः॥१॥

भाषार्थः–१ राजमानईश्वर २ उमामहेश्वर ३ वरुण ४ अग्नि ५ परशक्तिकेपुत्र ६ विष्णु ७ सूर्य ८ ब्रह्मा ९ और १० वेदमंत्रोंकेस्वामी महानारायणको ११ हमआश्रयकरतेहैं॥१॥

अथाध्यात्मम् (राजानम्) राजमानं (सोमम्) जीवात्मानं। सोमो वै भ्राट् श० ३।२।४।९ (वरुणम्) अपानं। अपानो वरुणः श० १२।९।२।१२ (अग्निम्) वाचं। वाग्वाऽग्निः श० ६।१।२।२८ (आदित्यम्) चक्षुः। चक्षुरादित्यः श० १४।४।१।१५ (विष्णुम्) परमात्मानं (सूर्यम्) अन्तर्यामिनं (ब्रह्माणं) (च) (बृहस्पतिम्) प्राणं। प्राणोहि बृहस्पतिः श० १४।४।१।२२ (अन्वारभामहे) वयं योगिनः स्पृशामः॥१॥

भाषार्थः–१ राजमान २ जीवात्मा ३ अपान ४ वाक ५ चक्षु ६ परमात्मा ७ अन्तर्यामी ८ और ९ प्राणको १० हम योगी स्पर्श करते हैं॥१॥

वामदेवऋषिरनुष्टुप्छन्दोयजमानोदेवता

इतेएतउदारुहन्दिवः पृष्ठान्यारुहन्। प्रभूर्जयोयथापथोद्यामङ्गिरसोययुः॥२॥ ९२

हे यजमानाः (यथा) (आङ्गिरसः) ऋषयः (भूर्जया) यज्ञभूमौजयवता (पथा) (उ) समष्टि मूर्त्तेः प्रतिष्ठा पूजनात्मकेन मार्गेणैव य० अ० ११-१८ (उते) (उ) ऊर्ध्वमेव (प्रारुहन्) (दिवः) (पृष्ठानि) ब्रह्म विष्णु महेशलोक रूपाणि (आरुहन्) पुनः (द्याम्) महा नारायणलोकं (ययुः) तथैव यूयमपि (इतः) भूमेः सकाशात् (एत) ऊर्ध्वंगच्छत॥२॥

भाषार्थः - हे यजमानो १ जैसे २ अंगिरा वंशी ऋषि ३ यज्ञभूमिमें ४,५ समष्टि मूर्त्तिकी प्रतिष्ठापूजन रूपमार्ग सेही ६,७ ऊपरकोही ८ चढ़े ९,१० स्वर्गपृष्ठ अर्थात् ब्रह्मा विष्णु महेशकेलोकोंको ११ चढ़े १२ फिर महानारायणलोक को १३ गये १४ उसीप्रकार तुमभी इसभूमिसे १५ ऊपरकोचलो २

अथाध्यात्मम् हेवागाद्यृत्विग्यजमानाः (यथा) (आङ्गिरसः) प्राणाः। प्राणोवाऽअङ्गिराश० ६।१।२।२८ (भूर्जया) योगभूमिजयवता (पथा) (उ) योगमार्गेणैव (उते) (उ) ऊर्ध्वमेव (आरुहन्) (दिवः) (पृष्ठानि) कमलानि (आरुहन्) पुनः (द्याम्) गगनमण्डलं (ययुः) तथैवयूयमपि (एत) ऊर्ध्वंगच्छत॥२॥

भाषार्थः - हेवागादिऋत्विज यजमानो १ जैसे २ प्राण ३ योगभूमिकेजेता ४,५ योग मार्गसेही ६,७ ऊपरकोही ८ चढ़े ९ १० स्वर्गपृष्ठ अर्थात् कमलोंको ११ चढ़े १२ फिरगगनमंडलको १३ गये उसीप्रकार तुमभी १४ ऊपरकोचलो॥२॥

कश्यपोऽसितोदेवलोवाऋषिरनुष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता

रा॒ये अ॑ग्ने म॒हे त्वा॑ दा॒नाय॑ स॒मिधी॑महि। ईडि॑ष्वा॒ हि म॒हे वृ॑ष॒न्द्यावा॒ होत्रा॑य पृथि॒वी ॥३॥ ९३

(अग्ने)हे सर्व व्यापिन्(अग्ने)(त्वा)त्वां(महे)महते(राये) धनाय धनलाभाय(दानाय)हविषांदानाय(समिधीमहि) वयंसम्यग्दीपयामहे(वृषन्)हेकामानांवर्षितस्त्वं(महे)महते(होत्राय)होत्रंहोमद्रव्यंतस्यलाभाय(द्यावापृथिवी)(ईडिष्व) स्तुहि ॥३॥

भाषार्थः-१ हेसर्वव्यापिन् २अग्ने ३तुमको ४.५ महद्धनलाभ ६और हविदानकेलिये ७हमप्रज्वलितकरतेहैं ८हे कामनाओंकीवृष्टिकरनेवालेतुम ९.१० महाहोमद्रव्यकेलाभार्थ ११ पृथिवीस्वर्गको १२ स्तुतकरो॥३॥

अथाध्यात्मम्-(अग्ने)हे सर्वव्यापिन्(अग्ने) आत्माग्ने(त्वा) त्वां(महे)महते(राये)योगैश्वर्याय(दानाय)प्रतिविवादीनांदानाय(समिधीमहि)(वृषन्) हेअमृतस्यवर्षितस्त्वं(महे) महते(होत्राय)योगयज्ञाय(द्यावापृथिवी)ब्रह्माण्डं (ईडिष्व)॥३॥

भाषार्थः-१ हेसर्वव्यापिन् २आत्माग्ने ३तुमको ४.५ योगैश्वर्य ६और प्रतिविवके केदानार्थ ७हमप्रज्वलितकरतेहैं ८हेअमृतवर्षानेवालेतुम ९.१० योगयज्ञकेलिये ११ ब्रह्माण्डको १२ स्तुतकरो॥३॥

भार्गद्युतिः सोमोवाऋषिरनुष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता-

दधन्वे वा यदीमनु वोचद्ब्रह्मेति वेरु तत्। परि विश्वानि काव्या नेमिश्चक्रमिवाभुवत् ॥४॥-९४

अध्वर्युः (ईमे) अग्निं (अनु) अनुलक्ष्य (वो) निवृत्तात्मनासह (यं न) हविः (दधन्वे) अग्नौ धारयति (वा) (ब्रह्म) मन्त्रं (अनुवोचत्) अनुवक्ति होत्रादिः (तत्) सर्वंत्वं (वेरु) वेरेव जानास्येव हे यजमान। अयमग्निः (विश्वानि) सर्वाणि (काव्या) काव्यानि श्रुति वचांसि हव्यानि वा (पर्यभुवत्) परिभवति स्वायत्तानि करोति व्याप्नोतीत्यर्थः (इव) यथा (नेमिः) वहिर्वेष्टनवलयः (चक्रम्) रथाङ्गम् ॥ ४ ॥

भावार्थः – अध्वर्यु १ अग्निको २ अनुलक्षणकर ३ निवृत्तात्माके साथ ४ जिसहविको ५ अग्निमें धारण करताहै ६ अथवा ७ मंत्रको ८ उच्चारण करता है ९ उससबकोतुम १० जान्नेहीहो ११ यह अग्नि सब १२ श्रुतवचनों वा हवियोंको १३ व्याप्त करताहै १४ जैसे १५ वहिर्वेष्टनवलय १६ रथचक्रको – ॥ ४ ॥

अथाध्यात्मम् – ज्ञानचक्षुः। चक्षुर्वै यज्ञस्याध्वर्युः श० १४।६।१।६ मनोवाऽध्वर्युः श० १।५।१।२१ प्राणोदानौ वाऽअध्वर्यू ५।५।१।११ (ईमे) आत्माग्निं (अनु) अनुलक्ष्य (वो) निवृत्तात्मनासह (यत्) प्रतिबिंबरूपं हविः (दधन्वे) आत्माग्नौ धारयति (वा) (ब्रह्म) महावाक्य (अनुवोचत्) होतानुवक्ति वाग्वै वज्ञस्य होता श० १२।८।२।२३ हे योगिन् (तत्) सर्वंत्वं (वेरु) जानास्येव। अयमात्माग्निः (विश्वानि) सर्वाणि (काव्या) काव्यानि पूर्वोक्तवचांसि हव्यानि वा (पर्यभुवत्) व्याप्नोति (इव) यथा (नेमिः) (चक्रम्) ॥ ४ ॥

भावार्थः – ज्ञानचक्षु १ आत्माग्निको २ अनुलक्षणकर ३ निवृत्तात्माके साथ ४ जिसप्रतिबिंबरूपहविको ५ आत्माग्निमें धारण करताहै ६

अथवा७ महावाक्को ८ वाक्उच्चारण करताहै हे योगिन् ९० उससबको १० जान्नेहीहो यह आत्माग्नि ११ सब १२ पूर्वोक्त वचनोंवाह्यविषयोंको १३ व्याप्तकरताहै १४ जैसे १५ नेमि १६ रथचक्रको —॥ ४ ॥

पायुर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दोग्निर्देवता

प्रत्यग्नेहरसोहरः शृणीहि विश्वतस्परि । यातु
धानस्य रक्षसोवलन्न्युब्जवीर्यम् ॥ ५ ॥ ९५

हे अग्ने (हरः) रुद्ररूपस्त्वं (हरसा) तेजसाक्रोधेनवा (यातुधानस्य) (वलम्) (विश्वतः) सर्वतः (प्रतिशृणीहि) नाशय (रक्षसः) (वीर्यम्) (परिन्युब्ज) समन्तादवनतानंकुरु ॥ ५ ॥

भाषार्थः — १ हे अग्ने २ रुद्ररूपतुम ३ तेजवाक्रोधसे ४ यातुधानकी ५ सेनाको ६ सबओरसे ७ नाशकरो ८ राक्षसके ९ बलको १० तोडो ॥ ५

अथाध्यात्मन् — (अग्ने) हे आत्माग्ने (हरः) रुद्ररूपस्त्वं (हरसा) तेजसा (यातुधानस्य) कामस्य (वलम्) (विश्वतः) सर्वतः (प्रतिशृणाहि) नाशय (रक्षसः) क्रोधस्य (वीर्यम्) (परिन्युब्ज) समन्तादवनतानंकुरु ॥ ५ ॥

भाषार्थः — १ हे आत्माग्ने २ रुद्ररूपतुम ३ तेजसे ४ कामकी ५ सेनाको ६ सबओरसे ७ नाशकरो ८ क्रोधके ९ बलको १० तोडो ॥ ५ ॥

प्रस्कण्वऋषिरनुष्टुप्छन्दोग्निर्देवता

त्वमग्नेवसूꣳरिहरुद्राꣳआदित्याꣳउत । यजा
स्वध्वरञ्जनंमनुजातंघृतप्रुषम् ॥ ६ ॥ ९६

(अग्ने) हे सर्वव्यापिन् (अग्ने) (त्वम्) (इह) यज्ञे (रुद्रान्) (वसून्) (आदित्यान्) (यज) (उत) अपिच (मनुजातम्) मनुना प्रजाप

तिनाउत्पादितं (घृतप्रुषम्) घृतस्य सेक्तारं (जनमे) यजमानं (स्वध्वरम्) शोभनयागयुक्तं कुर्विति शेषः॥ ६॥

भावार्थः – १ हे सर्वव्यापिन् २ अग्ने ३ तुम ४ इस यज्ञमें ५ रुद्रों ६ वसुओं ७ आदित्यों को ८ पूजन करो ९ और १० मनुप्रजापति से उत्पादित ११ घृत के सींचने वाले १२ यजमान को १३ शुभयज्ञवाला करो –॥ ६॥

अथाध्यात्मम् – (अग्ने) हे आत्माग्ने (त्वम्) (इह) योगयज्ञे (रुद्रान्) (वसून्) (आदित्यान्) (यज) प्राणेन्द्रियाणां होमेन यज (उत) अपि च (मनुजातम्) वेदमंत्रैः संस्कृतं (घृतप्रुषम्) इन्द्रियशक्तिभिः सहात्मप्रतिबिंबेन सेक्तारं (जनमे) योगिनं (स्वध्वरम्) सुयोगयज्ञवन्तं कुर्विति शेषः। ६

भावार्थः – १,२ हे आत्माग्ने ३ तुम ४ इस योग यज्ञमें ५.६.७ रुद्र वसु आदित्यों को ८ प्राण इन्द्रिय के होम से पूजो ९ और १० वेदमंत्रों से संस्कृत ११ इन्द्रियशक्ति सहित आत्मप्रति बिंब से सींचने वाले १२ योगी को १३ श्रेष्ठ योगयज्ञवाला करो –॥ ६॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्य दशमः खंडः

इति प्रथमः प्रपाठकः

अथैकादशः खण्डः द्वितीयः प्रपाठकः

दीर्घतमा ऋषिः उष्णिक् छन्दोऽग्निर्देवता-

पुरु त्वा दाशिवाङ् वोचेऽरिरग्ने तव स्विदा। तोदस्येव शरण आ महस्य ॥ १॥ –९७

हे (अग्ने) अग्ने आत्माग्ने वा (तव) (अरिः) अर्त्ता सेवकोऽहं (त्वा)

त्वां (स्विदा) अर्चनप्रकारेण स्वदतिरर्चतिकर्मा नि० (दाशिवांड्) हविर्दत्तवानस्मि (आ) समान्नात् (वोचे) मार्थयामि (इव) यथा (महस्य) महतः (नोदस्य) शिक्षकस्य गुरोः (शरणे) गृहे ॥२॥

भाषार्थः - १ हेअमेवाआत्माग्ने २तेरे ३ सेवक मैंने ४ तुमको ५ पूजनविधि से ६ हवि अर्पण कियाहै ७ सबओर से ८ प्रार्थना करता हूं ९ जैसे १०,११ गुरुके १२ गृहमेंशिष्य ॥ २॥

विश्वामित्र ऋषिः ककुप् छन्दोऽग्निर्देवता·

प्रहोत्रे पूर्व्यं वचोऽग्नये भरता बृहत्। विपां ज्योतींषि बिभ्रते न वेधसे॥ ३॥

हेहोत्रादयः (विपाम्) मेधाविनां (ज्योतींषि) सत्कर्मानुष्ठान सम्पाद्यानितेजांसि (विभ्रते) निमित्ततया कुर्वाणाय (न) च (वेधसे) जगतो विधात्रे (होत्रे) देवानामाह्वात्रे (अग्नये) (बृहत्) महत (पूर्व्यम्) वेदोक्तं (वचः) स्तोत्र शस्त्रादिकं वाक्यं (प्रभरत) सम्पादयत ॥३॥

भाषार्थः - हेहोताआदिऋत्विजो १ ज्ञानियों के २ सत्कर्मानुष्ठानसम्पाद्यतेजों को ३ भासकरानेवाले ४ और ५ जगत के विधाता ६ देवाह्वानकर्त्ता ७ अग्नि के लिये ८ महान् ९ वेदोक्त १० स्तोत्र शस्त्रादि वाक्यको ११ सम्पादन करो—॥३॥

अथाध्यात्मम् - हेवाणाद्यृत्विजः (विपाम्) प्राणायामनिष्ठानां योगिनां (ज्योतींषि) प्रतिबिंबरूपाणि (बिभ्रते) स्वात्मनि धारकाय (न) च (वेधसे) जगतो विधात्रे (होत्रे) महा

पुरुषपुरुषाणामाह्वाने (अग्नये) आत्माग्नये (बृहत्) महत् (पूर्व्यम्) वेदोक्तं (वचः) महावाचं (प्रभरत) सम्पादयत॥२॥

भाषार्थः – हे वागाद्यृत्विजो १ प्राणायामनिष्ठयोगियोंके २ अनिर्विवरूपतेजोंको ३ अपने आत्मामें धारण करनेवाले ४ और ५ जगतके विधाता ६ महापुरुषपुरुषोंके आव्हान। ७ आत्माग्निके लिये ८ महान ९ वेदोक्त १० महावाक्को ११ सम्पादन करो॥२॥

गोतमऋषिरुष्णिक्छन्दोऽग्निर्देवता

अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो। अस्मे देहि जातवेदो महि श्रवः॥३॥ – ९९

हे (सहसोयहो) ब्राह्मज्योतिषः पुत्र (जातवेदः) सर्वज्ञ (अग्ने) (गोमतः) बहुभिर्गोभिर्युक्तस्य (वाजस्य) अन्नस्य (ईशानः) ईश्वरस्त्वं (अस्मे) अस्मासु (महि) प्रभूतं (श्रवः) अन्नं (देहि) १

भाषार्थः – १ हे ब्रह्मज्योतिके पुत्र २ सर्वज्ञ ३ अग्ने ४ बहुत गौसे युक्त ५ अन्नके ६ स्वामी तुम ७ हमारे लिये ८ बहुत ९ अन्नको १० दो॥३॥

अथाध्यात्मम् – हे (सहसोयहो) ब्राह्मज्योतिषः प्रादुर्भूत (जातवेदः) सर्वज्ञ (अग्ने) महापुरुषाग्ने (गोमतः) गोलोकसम्बन्धिनः (वाजस्य) दिव्यभोगस्य (ईशानः) स्वामीत्वं (अस्मे) अस्मासु भक्तेषु (महि) महान्तं (श्रवः) भोगं (देहि) ३

भाषार्थः – १ हे ब्राह्मज्योतिसे प्रादुर्भूत २ सर्वज्ञ ३ महापुरुषाग्ने ४ गोलोकसम्बंधी ५ दिव्यभोगके ६ स्वामी तुम ७ हम भक्तोंको ८ महान्न ९ भोग १० दीजिये॥३॥

विश्वामित्रऋषिरुष्णिक्छन्दोऽग्निर्देवता

अग्ने यजिष्ठो अध्वरे देवान्देवयते यज। होता मन्द्रो
विराजस्यति स्रिधः ॥४॥—१००

हे (अग्ने) अग्ने आत्माग्नेवा (यजिष्ठः) यष्टृतमः त्वम् (अध्वरे) यज्ञेयोगयज्ञेवा (देवयते) देवानात्मनइच्छते यजमानाय (देवान्) (यज) (होता) देवानामाह्वाता (मन्द्रः) यजमानस्य मादयिता त्वं (स्रिधः) क्षपयितॄन् शत्रून्कामादीन्वा (अति) अतिक्रम्य (विराजसि) विशेषेण शोभसे ॥४॥

भावार्थः —१ हे अग्नेवा आत्माग्ने २ बडेयष्टातुम ३ यज्ञवायोग यज्ञमें ४ देवेच्छु यजमान के लिये ५ देवताओं को ६ पूजो ७ देवताओं के आह्वाता ८ यजमान के संतुष्ट करने वाले तुम ९ शत्रुओं वा काम आदि को १० अतिक्रमण कर ११ विशेष शोभित होते हो ॥ ४ ॥

त्रितऋषिरुष्णिक्छन्दोग्निर्देवता

जज्ञानः सप्तमातृभिर्मेधामाशासत श्रिये। अ
यं ध्रुवो रयीणाञ्चिकेतदा ॥५॥—१०१

(सप्त) (मातृभिः) हविर्मानसमर्थाभिर्जिह्वाभिः स्वात्मनिहविःप्रक्षेप्त्रीभिर्वाजिह्वाभिः सह (जज्ञानः) प्रादुर्भूतः (ध्रुवः) स्थिरः (अयम्) अग्निः (रयीणाम्) धनानां स्वरूपं (आचिकेतत्) अपश्यम् (मेधाम्) स्वकीयां बुद्धिं (श्रिये) यजमानस्यधनार्थं (अनुशासत) ॥५॥

भावार्थः—१,२ सप्तजिह्वाओं के साथ ३ प्रादुर्भूत ४ स्थिर ५ इस अग्नि ने ६ धनों के स्वरूप को ७ देखा ८ अपनी बुद्धि को ९ यजमान के धनार्थ १० अनुशासन करता है ॥५॥

अथाध्यात्मम् – (सप्त) (मातृभिः) सप्तयोगभूमिभिः (जज्ञे) नः) प्रादुर्भूतः (ध्रुवः) अचलः (अयम्) आत्माग्निः (रयीणाम्) योगधनानांस्वरूपं (आचिकेतत्) अपश्यत् (मेधाम्) स्वकीयशक्तिरूपां यजमानस्यबुद्धिं (श्रिये) योगलक्ष्मीलाभाय (अनुशासत) ॥५॥

भावार्थः – १,२ सप्तभूमियोगके साथ ३ प्रादुर्भूत ४ अचल ५ इस आत्माग्निने ६ योगधनोंके स्वरूपको ७ देखा ८ निज शक्तिरूप यजमान की बुद्धिको ९ योगलक्ष्मीके लिये १० अनुशासन करता है ॥५॥

इरिमिठिर्ऋषिरुष्णिक् छन्दो दितिर्देवता·

उतस्यानो दिवामतिरदितिरूत्यागमत्। साशन्तातामयस्करदपस्त्रिधः ॥६॥ १०२

(उत) अपिच (सा) (या) प्राणरूपा (मतिः) बुद्धिरूपा (अदितिः) अखण्डिता पराशक्तिः श० ४।१।२।६–९ (ऊत्या) रक्षयासार्द्धं (दिवा) उत्तरायणे समाधौवा (नः) अस्मान् (आगमत्) (सा) (शन्ताता) शान्ति विस्तारकारिणी परा शक्तिः तनविस्तृतौ (मयः) सुखं (करत्) करोतु (स्रिधः) क्षमापितृन् शत्रून्कामादीन्वा (अप) अपगमयतु ॥६॥

भावार्थः – १ और २ वह ३ प्राणरूप ४ बुद्धिरूप ५ अखण्डितापराशक्तिः ६ रक्षाके साथ ७ उत्तरायणवा समाधिमें ८ हमको ९ प्राप्तहुई १० वह ११ शान्तिविस्तारकरने वालीपराशक्ति १२ सुखको १३ करो १४ शत्रुओंवा काम आदिको १५ दूरहटाओ ॥६॥

द्वयो विश्वमनावैयश्वऋषिरुष्णिक्छन्दोग्निर्देवता·

ईडिष्वा हि प्रतीव्यां३ं यजस्व जातवेदसम्। चरिष्णुधूममगृभीतशोचिषम्॥७॥—१०३

(प्रतीव्यम्) शत्रुषुप्रतिगमनशीलं (अग्नि) अग्निं (हि) एव (ईडिष्व) स्तुतिभिः स्तुतं कुरु किञ्च (चरिष्णुधूमम्) सर्वत्रचरणशील धूमज्वालं (अगृभीतशोचिषम्) रक्षोभिरधृतदीप्तिं (जातवेदसम्) सर्वज्ञं (यजस्व) हविर्भिः पूजय॥७॥

भाषार्थः–१ शत्रुओंपरधावा करनेवाले २ अग्निको ३ ही ४ स्तुत करो ५ सर्वत्र गमनशील धूमवाले ६ राक्षसों से अप्रधृतदीप्तिवाले ७ सर्वज्ञ अग्नि कोही हविओं से पूजो॥७॥

अथाध्यात्मम्– (प्रतीव्यम्) कामादिषुगमनशीलं (अग्नि) आत्माग्निं (हि) एव (ईडिष्व) किञ्च (चरिष्णुधूमम्) कमलेषुचरणशीलप्राणं। प्राणो धूमः श० १४।८।१।१५ (अगृभीतशोचिषं) कामादिभिरप्रधृतदीप्तिं (जातवेदसम्) सर्वज्ञात्माग्निं (यजस्व) पूजय॥७॥

भाषार्थः–१ काम आदिपरधावा करनेवाले २ आत्माग्निको ३ ही ४ पूजो और ५ कमलोंमेंगनिशील प्राण वाले ६ काम आदि से अप्रधृतदीप्तिवाले ७ सर्वज्ञ आत्माग्नि कोही पूजन करो॥७॥

उष्णिक् छन्दोऽग्निर्देवता

न तस्य मायया चन रिपुरीशीत मर्त्यः। यो अग्नये ददाश हव्यदातये॥८॥—१०४

(मर्त्यः) मरणशीलः (रिपुः) शत्रुः (मायया) (चन) अपि (तस्य) योगिनो भक्तस्य वा (न) (ईशीत) ईश्वरो न भवति (यः) (हव्य

दातये) हविषांमादानुसमर्थाय (अग्नये) अग्नये। आत्माग्नये· इष्टदेवाग्नयेवा (ददाश) हवींषि प्रयच्छति ॥ ८ ॥

भावार्थः – १ मरणशील २ शत्रु ३ मायासे ४ भी ५ उसयोगीभक्त पर ६,७ समर्थनहींहोताहै ८ जोकि ९ हविग्रहणमेंसमर्थ १० अग्निवा आत्माग्निवाइष्टदेवाग्निकेलिये ११ हविसमर्पण करताहै ॥ ८ ॥

भरद्वाजऋषिरुष्णिक्छन्दोग्निर्देवता·

अपत्यं वृजिनं रिपुं स्तेनमग्ने दुराध्यम्।
दविष्ठमस्य सत्पते कृधी सुगम् ॥ ९ ॥ – १०५

हे (सत्पते) सतांपालयितः (अग्ने) अग्ने आत्माग्नेवा (त्यं) प्रसिद्धं (वृजिनम्) कुटिलं (दुराध्यं) दुःखस्याध्यातारं दुष्टाभिप्रायं (स्तेनम्) चौररूपं (रिपुम्) शत्रुंकामम्वा (दविष्ठम्) दूरतमं (अपास्य) अपक्षिप। असुक्षेपणे (यिमं) (यः) पुरुषोत्तमः (इ) तस्यशक्तिस्तंशक्तियुक्तंपुरुषोत्तमं (सुगम्) सुलभं (कृधि) कुरु ॥ ९ ॥

भावार्थः – १ हे सत्पुरुषोंकेपालक २ अग्नेवाआत्माग्ने ३ उस प्रसिद्ध ४ कुटिल ५ दुष्टाभिप्राय ६ चौररूप ७ शत्रुवाकामको ८ बहुतदूर ९ फेंको १० शक्तियुक्त पुरुषोत्तमको ११ सुलभ १२ करो ॥ ९ ॥

विश्वमनाएवर्षिरुष्णिक्छन्दोग्निर्देवता

श्रुष्ट्यग्ने नवस्य मे स्तोमस्य वीर विश्पते। निमा
यिनस्तपसा रक्षसो दह ॥ १० ॥ – १०६

हे (वीर) शत्रूणांविनाशयितः वीर्यवन्वा (विश्पते) विशां· योगिनाम्वापालयितः (अग्ने) अग्ने। आत्माग्नेवा (मे) (नव

स्य) गुरूपदेशान्नवतुल्यस्य (स्तोमस्य) स्तोत्रस्य (भुर्णी) अन्तरिक्षे व्याप्तिः नि० तस्मात् (तपसा) तापकेन तेजसा (मायिनः) मायाविनः (रक्षसः) राक्षसान् कामादीन्वा (निर्दह) नितरांभस्मीकुरु ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ हे शत्रु विनाशक २ योगियोंके रक्षक ३ अग्ने ४ मेरे ५ गुरूपदेश सेनवतुल्य ६ स्तोत्रकी ७ अन्तरिक्षमेंव्याप्ति है उसकारण ८ तापक तेज से ९ मायावी १० राक्षसों वा काम आदि को ११ निरन्तरभस्मकरो ॥ १० ॥

इतिश्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनुज्वालाप्रसादशर्म्म विरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्यैकादशः खण्डः ॥

अथ द्वादशः खण्डः

प्रयोगो भार्गव ऋषिः ककुप् छन्दोग्निर्देवता

प्रेमंहिष्ठाय गायत ऋतावे बृहते शुक्रशोचिषे। उपस्तुतासो अग्नये ॥ १ ॥ — १०७

हे (उपस्तुतासः) उपगम्य स्तोतारः यूयं (मंहिष्ठाय) दातृतमाय (ऋतावे) यज्ञवते सत्यवतेवा (बृहते) महते (शुक्रशोचिषे) शुद्धतेजसे व्यष्टिसमष्टिरूपतेजसेवा। एषवै शुक्रोय एषतपति: श० ४।३।१।२६ (अग्नये) अग्नये आत्माग्नयेवा (प्रगायत) स्तोत्रंपठत ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ हे उपस्तोताओ तुम २ बड़े दाता ३ यज्ञवान वा सत्यवान ४ महान् ५ शुद्धतेजवाले ६ अग्निवा आत्माग्निके लिये ७ स्तोत्र को पढ़ो ॥ १ ॥

द्वयोः सौभरिर्ऋषिरुष्णिक् छन्दोग्निर्देवता

प्रसो अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस्तरति वाजकर्म भिः। यस्य त्वं सख्यमाविथ ॥ २ ॥ १०८

हे(अग्ने) अग्ने। आत्माग्नेवा (सः) यजमानः (तव) (सुवीराभिः) महावीराभिः यद्वा शोभन वीराः पुत्रादयो यासुताभिः (वाजकर्मभिः) वाजानामन्नानां बलानां वा कर्म रक्षणं यासुता दृशीभिः (ऊतिभिः) रक्षाभिः (प्रतरति) आपदं संसार सागरं वा प्रतरति (यस्य) यजमानस्य (त्वम्) (सख्यम्) सखित्वं मित्रत्वं (आविथ) प्राप्नोषि ॥ २ ॥

भाषार्थः- १ हे अग्ने वा आत्माग्ने २ वह यजमान ३ तेरी ४ महावीरवती वा पुत्रादिवती ५ रक्षकबलकर्मवती ६ रक्षाओं से ७ आपद वा संसार सागर को तरता है ८ जिस यजमान के ९ तुम १० सखाभाव को ११ प्राप्त करते हो ॥ २

उष्णिक् छन्दोऽग्निर्देवता

तं गूर्द्धया स्वर्णरं देवासो देवमरतिं दधन्विरे। देवत्रा हव्यमूहिषे ॥ ३ ॥ - १०९

(अ) हे ब्राह्मण त्वं (देवत्रा) यज्ञे। देवान् हविर्दानेन त्रायते त्राक (हव्यम्) हविः (ऊहिषे) निर्णीतं कुरुषे (देवासः) विद्वांसः ऋत्विजः (अरतिम्) देवान् यजमानांश्च प्रति गन्तारं (स्वः) सूर्यरूपं (नरम्) नररूपं (देवम्) अग्निमात्माग्निम्वा (दधन्विरे) धारितवन्तः स्थापितवन्तः नि० २।१४ तस्मात्त्वं (तम्) अग्निमात्माग्निम्वा (गूर्द्धय) स्तुहि गूर्धयतिः स्तुतिकर्मा नि० ३।१४।५ ॥ ३

भाषार्थः- १ हे ब्राह्मण तुम २ यज्ञ में ३ हवि को ४ निर्णीत करते हो ५ विद्वान ऋत्विजों ने ६ देवता और यजमानों के पास जाने वाले ७ सूर्यरूप ८

नररूप ९ अग्निवा आत्माग्नि को १० स्थापन किया ११ उसअग्निवा आत्माग्नि को १२ स्तुन करो ॥ ३ ॥

प्रयोगोभार्गवऋषिः सोभरिः काएवोवाऋषयउष्णिक् छन्दो ग्निर्देवता- मंहिष्ठं न मित्रं तुसुरघ्रं पुरुप्रशस्तमीयः। यः सुहोता स्वध्वरः ॥ ४ ॥ २२०

हे ऋत्विक् सङ्घ (नः) अस्माकं (अतिथिम्) अतिथिवत्प्रियमग्नि मात्माग्निम्वा (मो) (हृणीथाः) माहर (यः) (एषः) (सुहोता) सुष्ठु देवानामाहाता (स्वध्वरः) शोभनयज्ञः (पुरुप्रशस्तः) बहुभिःस्तुतः (वसुः) ब्रह्मांशुरूपः ॥ ४ ॥

भावार्थः - हे ऋत्विज समूह १ हमारे २ अतिथि समान प्रिय अग्नि वा आत्माग्नि को ३, ४ हरण मत करो ५ जो ६ यह ७ देवताओं का आह्वाता ८ शोभनयज्ञवाला ९ बहुतों से स्तुत १० ब्रह्मांशुरूप है ॥ ४ ॥

त्रिस्तृणं सोभरिर्ऋषिरुष्णिक् छन्दोग्निर्देवता

भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः। भद्रा उत प्रशस्तयः ॥ ५ ॥ २२१ ॥

हे (सुभग) शोभनैश्वर्याग्ने। आत्माग्नेवा (आहुतः) हविर्भिस्तर्पितस्त्वं (नः) अस्मभ्यं (भद्रः) कल्याणोभवतु (रातिः) तवदानं (भद्रो) कल्याणंभवतु (अध्वरः) यज्ञः योग यज्ञोवा (भद्रः) कल्याणोभवतु (उत) अपिच (प्रशस्तयः) प्रशंसाः (भद्राः) कल्याणयश्च भवन्तु ॥ ५ ॥

भावार्थः - १ हे शोभनैश्वर्यवान अग्नेवा आत्माग्ने २ हविसे तर्पित तुम ३ हमारे लिये ४ कल्याणरूप हूजिये ५ तेरा दान ६ कल्याणरूप हो ७ यज्ञवा

वायोगयज्ञ ८ कल्याणरूपहो ९ और १० प्रशंसा ११ कल्याण रूपहों ५॥

उष्णिक्छन्दोग्निर्देवता-

यजिष्ठंत्वा ववृमहे देवंदेवत्रा होतारममर्त्यम्। अ
स्ययज्ञस्य सुक्रतुम्॥ ६॥ ११२

हे अग्ने। आत्माग्नेवा (अस्य) (यज्ञस्य) (सुक्रतुं) सुष्ठुकर्त्तारं (यजिष्ठं) यष्टृतमं (देवत्रा) देवेषुमध्ये (देवम्) अतिशयेन दानादिगुणं (होतारम्) देवानामाह्वातारं (अमर्त्यम्) अविनाशिनं (त्वा) त्वां (ववृमहे) वृणीमहे संभजामहे॥६॥

भाषार्थः - हे अग्नेवा आत्माग्ने १ इस २ यज्ञके ३ श्रेष्ठकर्त्ता ४ बडेयष्टा ५ देवताओंके मध्य ६ अतिशयदानादिगुणवाले ७ देवताओंके आह्वाता ८ अविनाशी ९ तुमको १० हमसेवन करते हैं॥६॥

बार्हस्पत्यऋषिः ककुप्छन्दोग्निर्देवता-

तदग्नेद्युम्नमाभरयत्सासाहा सदने कञ्चिदत्रिणम्। मन्युंजनस्यदूढ्यम्॥७॥ ११३

(अग्ने) हे अग्ने। आत्माग्नेवा (यत्) यदा (आसदने) यज्ञेयोगयज्ञेवा (जनस्य) यजमानस्य (अत्रिणम्) अत्तारं (कम्) कामं (मन्युम्) क्रोधं (दूढ्यं) दुष्टंबुद्धिं नि० ५।४।२६ (चित्) अपि (सासाह) (तत्) तदा (द्युम्नम्) यशः (आभर) अस्मभ्यमाहर॥७॥

भाषार्थः - १ हे अग्नेवा आत्माग्ने २ जब ३ यज्ञवा योगयज्ञमें ४ यजमानके ५ भक्षक ६ कामको ७ क्रोधको ८ दुष्टबुद्धिको ९ भी १० जयकरो ११ तब १२ यशको १४ हमेंप्राप्तकराओ॥७॥

विश्व मनाऋषि ऋषिाक छन्दोग्निर्देवता-

यद्दाउ३विश्पतिः शितः सुप्रीतो मनुषो विशो। विश्वे

दग्निः प्रति रक्षा थं सि सेधति ॥८॥ ११४

(यद्दै) यदैव (विश्पतिः) विशां योगिनाम्वा पालयिता (शितः) हविर्भिस्तीक्ष्णी कृतः संस्कृतोवा शोतनुकरणेश्यतिः संस्कार्थः (सुप्रीतः) सुष्ठुप्रीतो ऽग्निरात्माग्निर्वा (मनुषः) यजमानस्य (विशे) गृहे देहेवा प्रादुर्भवति विश प्रवेशने। तदैव (उ) रुद्ररूपः (अग्निः) अग्निरात्माग्निर्वा (विश्वा) सर्वाणि (इत्) एव (रक्षांसि) रक्षांसि कामादीन्वा (सिसेधति) गृह्णाति षिधु गतौ ॥८॥—११४

भाषार्थः

१जभी २ योगियोंकारक्षक ३हविओंसेतीक्ष्ण किया हुआ वा संस्कृत ४अति प्रसन्न अग्नि वा आत्माग्नि ५ यजमानके ६ गृह वा देहमें प्रकट होताहै तभी ७ रुद्ररूप ८ अग्नि वा आत्माग्नि ९ सब १०, ११ राक्षसोंवा काम आदिकोही १२ ग्रहण करता है॥ ८॥ ११४॥

इतिश्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने प्रथमोऽध्यायः-

समाप्त माग्नेयं पर्व्व आग्नेय काण्डम्वा

॥ इति १मपर्व ॥

अथद्वितीयाध्याय आरभ्यते ॥

तत्र प्रथमः खण्डः

शंयुर्बार्हस्पत्य ऋषिर्भरद्वाजऋषिर्वा गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

नेद्दो गायसुते सचा पुरुहूताय सत्वने। शंयद्गवे



नेशाकिने ॥१॥ १

अत्र श्रुत योविचारणीयाः इन्द्रोवैयजमानः श० ३।१।७।११ मन एवेन्द्रः १२।९।१।१३ प्राणा एवेन्द्रः १२।९।१।१४ हृदयमेवेन्द्रः १५ इन्द्रो वैसर्वेदेवाः १३।७।१।४ इदिपरमैश्वर्ये इन्द्रः परमेश्वरः। वह्वर्थ संभवे योर्थोयत्र संभविष्यतितमेव कथयिष्यामइति— हेस्तोतः (वः) निवृत्तात्मा (सचा) ऋत्विग्भिः सहितस्त्वं (सुते) अभिषुतेसोमे सति (पुरुहूताय) बहुभिर्यजमानैराहूताय (सत्वने) धनानांदात्रे। षणुदाने (इन्द्राय) (तत्) स्तोत्रं (गाय) (यत्) स्तोत्रं (गवे) विष्णवं अंशुरूपाय (नः) च (शाकिने) शक्तिमते इन्द्राय (शम्) सुखकरं भवेत ॥१

भाषार्थः – हे स्तोता १, २ ऋत्विज सहित निवृत्तात्मा तुम ३ सोमाभिषव होनेपर ४ बहुत यजमानों से आहूत ५ धनदाता ६ इन्द्र के लिये ७ उस स्तोत्र को ८ गाओ ९ जो स्तोत्र १० विष्णु के अंशरूप ११ और १२ शक्तिमान इन्द्र के लिये १३ सुखकर्त्ता होवे ॥१॥

अथाध्यात्मम-हे अन्तरात्मन् (वः) निवृत्तात्मा (सचा) वागाद्यृत्विग्भिः सहितस्त्वं (सुते) अभिषुते प्रतिविंबे (पुरुहूताय) बहुभिर्योगिभिराहूताय (सत्वने) मोक्षदात्रे (इन्द्राय) परमेश्वराय (तत्) स्तोत्रं (गाय) (यत्) (गवे) ब्रह्मांशुरूपाय (नः) च (शाकिने) सर्वशक्तिमते (शम्) आनंदकरं भवति १

भाषार्थः – हे अन्तरात्मन् १, २ वागादि ऋत्विज सहित निवृत्तात्मा तुम ३ आत्मप्रतिविंबाभिषव होनेपर ४ बहुत योगियों से आहूत ५ मोक्षदाता ६ परमेश्वर के लिये ७ उस स्तोत्र को ८ गाओ ९ जो स्तोत्र १० ब्रह्मांशु

रूप ११ और १२ सर्वशक्तिमान परमेश्वर के लिये आनन्द कर्त्ता होवे॥१॥

सुभकक्षऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

यस्ते नूनꣳ शतक्रतविन्द्र द्युम्नितमो मदः।
तेन नूनं मदे मदेः॥२॥२

हे (शतक्रतो) शत यज्ञ कर्त्तः (इन्द्र) (यः) (द्युम्नितमः) दीप्तितमः (मदः) सोमः (ते) (नूनम्) त्वदर्थमेवास्माभिरभिषुतोऽस्ति (तेन) सोमेन (नूनम्) अवश्यमेव (मदे) नव मदे सञ्जाते सति (मदेः) अस्मानपिमादय मदी हर्षे॥२॥

भावार्थः – १ हे शतयज्ञकर्त्ता २ इन्द्र ३ जो ४ बड़ा दीप्यमान ५ सोम ६ आपके लिये ७ निश्चय अभिषुत हुआ ८ उस सोमसे ९ अवश्यही १० तेरा मद उत्पन्न होनेपर ११ हमको भी हर्षित कर॥२॥

अथाध्यात्मम् – हे (शतक्रतो) अनन्तकर्मन् (इन्द्र) परमेश्वर (यः) (द्युम्नितमः) यशस्वितमः (मदः) आत्म प्रतिविंबः (ते) (नूनम्) त्वदर्थमेवाभिषुतोऽस्ति (तेन) आत्मप्रतिविंबेन (नूनम्) अवश्यमेव (मदे) सञ्जाते सति (मदेः) अस्मानपिमादय मदीहर्षे॥२॥

भावार्थः – १ हे अनन्त कर्मा २ परमेश्वर ३ जो ४ बड़ा यसस्वी ५ आत्मप्रतिविंब ६,७ आपके लियेही अभिषुत हुआ है ८ उस आत्मप्रतिविंबसे ९ अवश्यही १० आपका मद उत्पन्न होनेपर ११ हम आत्मारूप यजमानों कोभी आनन्दित करो॥२॥ हर्यतऋषि गायत्री छन्दो गौर्देवता

गावउपवदावटे मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा हिरण्यया॥३॥–३

हे(गौः) वेदमंत्र (अः) वागीशस्त्वं(अवंदे) कर्णरन्ध्रे(उपवदु)य स्मात्(यज्ञस्य) यज्ञस्ययोगयज्ञस्यवा(मही) भूमिः(रप्सुदा) (रूप) मन्त्रस्तेनसुदासुखदात्री(उभा) उभौ (कर्णा) कर्णौ (हिर एयया) ज्योतिर्मयौ महावाक् श्रवणेसमर्थौ। ज्योतिर्वैहिर एयं श०६।७।१।२—॥३॥

भाषार्थः—१ हेवेदमंत्र २ वागीशतुम ३ कर्णरन्ध्रमें ४ कहो जिसका रण ५ यज्ञवायोगयज्ञकी ६ भूमि ७ मंत्रद्वारा सुखदाता है और दोनों ८ कान १० ज्योतिर्मय अर्थात् महावाक् श्रवणमें समर्थ हैं॥३॥

श्रुतकक्षऋषिर्गायत्रीछन्द इन्द्रो देवता॰

अरमश्वाय गायत श्रुतकक्षारं गवे। अरमिन्द्र स्य धाम्ने॥४॥—४॥

हे(श्रुतकक्ष) श्रुतंशास्त्रमेवकक्षे बाहू यस्य सश्रुतकक्षः हे शा स्त्रानुवर्तिन्नन्तरात्मन्(अश्वाय) विराडात्मने सूर्याय। असौवा आदित्य एषोऽश्वः श०६।३।१।२९(अरम्) अलं (गायत) पुनशि ष्याद्यभिप्रायेण बहुवचनं(गवे) सूर्याशरूपदेवसमूहाय। एषवैगु णोयएषतपतितस्यये रश्मयस्तेविश्वेदेवाः श०४।३।१।२६(अरम्) अलंगायत(इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य(धाम्ने) महापुरुषलोकाय (अरम्) अलंगायत॥४॥

भाषार्थः—१ हेशास्त्रानुवर्तिअन्तरात्मन् २ विराडात्मा सूर्यकेलिये ३ पर्याप्त ४ गानकरो ५ सूर्याशरूपदेवसमूहके लिये ६ पर्याप्तगानकरो ७ पर मेश्वरके ८ धाम अर्थात् महापुरुषलोकके लिये ९ पर्याप्त गान करो—॥४॥

श्रुतकक्षऋषिर्गायत्रीछन्द इन्द्रो देवता—

तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे। स वृषा
वृषभो भुवत्॥५॥—५

(तम्) (इन्द्रम्) इन्द्रं परमेश्वरं वा (महे) महते (वृत्राय) पापाय (हन्तवे) महापापस्य हन्तुं (वाजयामसि) सोमेनात्मप्रतिबिंबेन वा वाजवन्तमन्नवन्तम्वा कुर्मः (सः) (वृषा) धनैः शक्तिभिर्वा सेक्ता दाता (वृषभः) कामानां योगैश्वर्याणाम्वा दाता (भुवत्) भवतु॥५॥

भावार्थः – १ उस २ इन्द्र वा परमेश्वर को ३,४,५ महापाप के नाशार्थ ६ सोम वा आत्मप्रतिबिंबार्पण से हम अन्नवान करें ७ वह ८ धन वा शक्तियों का दाता ९ कामना वा योगैश्वर्यों का दाता १० होस्रो॥५॥

इन्द्रमातरो देवजामयऋषिका गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः। त्वं वृषन्
वृषेदसि॥६॥—६

हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वम्) (सहसः) ब्राह्मज्योतिषः (बलात्) बलशक्त्या (ओजसः) दीप्तिशक्त्या (अधिजातः) प्रादुर्भूतोऽसि हे (वृषन्) धर्मकामार्थमोक्षाणां वर्षितः। दातः (त्वम्) (सनित्) सदैव (वृषा) कामादीनां वर्षिता (असि) नान्यः स्वस्यान्याभावात्॥६॥

भावार्थः – १ हे परमेश्वर २ तुम ३ ब्राह्मज्योति की ४ बलशक्ति ५ और दीप्तिशक्ति से ६ प्रकट हुए हो ७ हे धर्म काम अर्थ मोक्ष के दाता ८ तुम ९ सदैव १० कामादि की वर्षा करने वाले ११ हो अद्वैत होने से॥६॥

गोपत्यश्वसूक्तिनो ऋषी गायत्री छन्दो महानारायणो देवता·

यज्ञ इन्द्रमवर्द्धयद्यद्भूमिं व्यवर्त्तयत्। चक्राण ओपशं दिवि॥७॥ य

(यज्ञः) यज्ञपुरुषो महानारायणः (इन्द्रम्) ईश्वरं ब्रह्मविष्णुशिवेन्द्राख्यं (अवर्द्धयत्) (यत्) यस्मात् (दिवि) परमेधाम्नि (ओपशम्) उपेत्यशयनं (चक्राणः) कुर्वन् (भूमिम्) व्यष्टिसमष्ट्याख्यभूमिं ब्रह्माण्डं (व्यवर्त्तयत्) विशेषेण वर्त्तमानमकरोत् ॥७॥

भावार्थः —१ यज्ञपुरुष महानारायणने २ ब्रह्माविष्णुशिवइन्द्रनाम ईश्वरको ३ बढ़ाया ४ जिसकारण ५ परमधाममें ६ शयन करते ७ हुए ८ व्यष्टिसमष्टिभूमिनाम ब्रह्मांण्ड को ९ विशेष कर वर्त्तमान किया ॥७॥

गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ ऋषी गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

यदिन्द्राहं यथात्वमीशीयवस्वएकइत्। स्तोता मे गोसखा स्यात् ॥८॥८

(इन्द्र) हे परमेश्वर (यथा) (त्वम्) (एकः) (इत्) एव (वस्वः) परमैश्वर्यस्य ईशिषे तथा (अहम्) (यद्) यदि (ईशीय) योगैश्वर्ययुक्तः स्याम् तदानीम् (मे) मम (स्तोता) वाक् (गोसखा) महावाचांसखा (स्यात्) ८॥८॥

भावार्थः —१ हे परमेश्वर २ जैसे ३ तुम ४ अकेले ५ ही ६ परमैश्वर्य के स्वामी हो तैसे ही ७ में ८ यदि ९ योगैश्वर्यवान होऊं तो ११ मेरा ११ वाक् १२ महावाक्यों का सखा १३ होवै ॥८—८॥

मेधातिथिराङ्गिरस ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

पन्यंपन्यमित्सोतार आधावत मद्याय। सोमं वीराय शूराय ॥९॥—९

हे (स्तोतारः) अभिषोतारो ऽध्वर्यवः। वागाद्यृत्विजो वा (मद्याय) मद्योग्याय (वीराय) विक्रान्ताय (शूराय) शौर्यवते। इन्द्राय

परमेश्वरायवा (पन्यम्) आधिदेवयज्ञेस्तुत्यं (पन्यम्) अध्यात्मयज्ञेस्तुत्यं (इत्) एव (सोमम्) सोम मात्मप्रति विम्बं (आधावत) आभिगमयत प्रयच्छतेत्यर्थः ॥ ९ ॥

भाषार्थः हेअध्वर्युलोगो वावागादिऋत्विजो २ मदयोग्य ३ वीर ४ शूरइन्द्रवापरमेश्वरकेलिये ५ आधिदेव यज्ञमें स्तुति योग्यवा ६ अध्यात्मयज्ञमेंस्तुतियोग्य ७ ही ८ सोमवाआत्मप्रतिविंवको ९ समर्पणकरो ॥ ९ ॥

काण्वः प्रियमेधऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

इदंवसोसुतमन्धः पिवासुपूर्णमुदरम्। अनाभयिन्ररिमाते ॥ १० ॥ १०

(अनाभयिन्) हेनिर्भय (वसो) प्रशस्तधनवन्निन्द्र (इदम्) (सुतम्) आभिषुतं (अन्धः) सोमलक्षणान्नं यथा (सुपूर्णम्) (उदरम्) भवतितथा (आपिव) (ते) तुभ्यं (ररिम) दद्मः ॥ १० ॥

भाषार्थः – १ हेनिर्भय २ प्रशस्तधनवन्निन्द्र ३ इस ४ आभिषुत ५ सोमलक्षण अन्नकोजैसे ६,७ उदरपूर्णहोनैसेही ८ पानकरो ९ आपकेलिये १० हमदेतेहैं ॥ १० ॥

अथाध्यात्मम् – (अभायिन्) हेभयशून्य (वसो) यज्ञस्वरूप (से) परमेश्वर (इदम्) (सुतम्) आभिषुतं (असुपूर्णं) प्राणैर्युक्तं (अनुदरम्) त्यक्तभोगं (अन्धः) आत्मप्रतिविंवरूपान्नं (पिव) (ते) तुभ्यंत्वदर्थं (ररिम) दद्मः रादाने ॥ १० ॥

भाषार्थः – १ हेभयशून्य २ यज्ञस्वरूप ३ परमेश्वर ४ इस ५ आभिषुत ६ प्राणोंसेयुक्त ७ त्यक्तभोग ८ आत्मप्रतिविंवरूपअन्नको ९ पानकरो १० आपकेलिये ११ हमदेतेहैं ॥ १० ॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्मविरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य प्रथमः खण्डः॥

सूतकक्षः शुनकक्षोवाऋषि गायत्रीछन्दः सूर्योदेवता-

उदूघेदभि श्रुतामघं वृषभन्नर्यापसम्। अस्तारमेषि सूर्य॥१॥ ११

(सूर्य) हे सूर्यरूपेश्वर (घ) किरणमालया सहितस्त्वं (श्रुतामघं) सर्वदादेयत्वेन विख्यातधनं (वृषभम्) याचमानानां धनवर्षितारं (नर्यापसम्) नरहितं नर्य्यं नरहितकर्म्माणं (अस्तारं) शत्रूणां क्षेप्तारं महानारायणं (उत्) उत्कर्षेण (अभिइत्) समन्तादेव (एषि) प्राप्नोषि तस्याशिरस्त्वात् साकाराणामाद्यत्वाच्च॥१॥१२॥

भावार्थः-१ हे सूर्यरूप ईश्वर २ किरणमाला से युक्त तुम ३ सदा विख्यातधन वाले ४ याचकोंके धनदाता ५ प्राणियोंके हितकारी कर्म करने वाले ६ शत्रुजयी महानारायण को ७ उत्कर्ष के साथ ८ सब ओर से ही ९ प्राप्त करते हो उसके शिररूप और साकारों में आद्य होने से॥१॥१२ विनियोगः पूर्ववत्-

यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभिसूर्य। सर्वन्तदिन्द्र ते वशे॥२॥१२-

हे (वृत्रहन्) पापनाशक यद्वा अपामावरकस्य मेघस्य हन्तः (इन्द्र) ईश्वर (सूर्य) (अद्य) सृष्टिस्थितिकाले (यत्) (कच्च) यत् किञ्चित् पदार्थजातं (अभि) अभिमुखीकृत्य (उदगाः) उदयं प्राप्तवानसि इण् गतौ उत्पूर्व्वः तस्य लुङि गादेशः (तत्) (सर्वम्) (ते) तव

रूपेणजीवस्यसहवर्त्तमानं(वृत्रेषु)पापेषु(वज्रिणम्)इन्द्रतुल्यं(इन्द्रम्) परमेश्वरं(हवामहे) आह्वयामः ॥६॥१६

भाषार्थः -१हम२योगैश्वर्यनिमित्त३तथास्वल्पभोगसाधननिमित्त४अन्तर्यामीरूपसेजीवात्माकेसहचर५पापपुरुषोंकेमध्य६इन्द्रतुल्य७परमेश्वरको८हमआह्वान करते हैं॥६॥१६

विशोकऋषिर्गायत्रीछन्दइन्द्रोदेवता

आपिबत्कद्रुवःसुतमिन्द्रःसहस्रबाह्वे। तत्रादर्दिष्ट पौंस्यम् ॥७॥१७

(इन्द्रः) परभुरामरूपः परमेश्वरः(सहस्रबाह्वे)सहस्रबाह्वाख्यनृपतये(कद्रुवः)कामवृक्षस्यदेहस्य(सुतम्)अभिषुतंक्रोधं(अपिबत्) मनसिधारयामास(तत्र)तस्मिन्नवसरे(पौंस्यम्) वैष्णवंवीर्य्यं(आदर्दिष्ट) आदीप्यत ॥७॥

भाषार्थः -१परशुरामरूपपरमेश्वरने२सहस्रबाहुनामराजाकेलिये३कामवृक्षदेहके४अभिषुतक्रोधको५मनमेंधारणकिया६उसअवसरमें७वैष्णवीपराक्रम८प्रकाशितहुआ-॥७॥

वसिष्ठऋषिर्गायत्रीछन्दइन्द्रोदेवता

वयमिन्द्रत्वायवोऽभिप्रणोनुमोवृषन्। विद्धीत्वस्यनोवसो ॥८॥१८

हे(वृषन्)धर्मार्थकाममोक्षाणांवर्षितः(इन्द्र) परमेश्वर(त्वायवः) त्वत्कामाः(वयम्)(त्वा)त्वां(प्राभिनोनुमः)प्रकर्षेणस्तुमः(वसो)हेज्योतिःस्वरूप(नः)अस्माकं(अस्य)आत्मनः(विद्धी)प्रार्थनांजानीहि॥८॥

भाषार्थः –१हेधर्मार्थकाममोक्षकेदाता२परमेश्वर३तेरेभक्त४हम५तुमको६स्तुतकरते हैं७हेज्योतिस्वरूप८हमारे९आत्माकी १० प्रार्थनाकोजानो॥८॥

विशोकऋषिर्गायत्रीछन्द इन्द्रोदेवता·

आघायेअग्निमिन्धतेस्तृणन्तिबर्हिरानुषक्।
येषामिन्द्रोयुवासखा॥९॥ १९

(ये) भक्ताः(आनुषक्) आनुपूर्व्येणानिरु०६।३।१६(बर्हिः) (स्तृणन्ति)(अग्निम्)(इन्धते) दीपयन्ति(येषाम्) भक्तानां (युवा) अजरामरः(इन्द्रः) परमेश्वरः(सखा) ते(आघाः) निष्पापाः॥९॥

भाषार्थः –१जोभक्त२क्रमपूर्वक ३,४ कुशास्तरणकरते हैं ५अग्निको६दीप्तकरते हैं७जिनभक्तोंका८अजरामर९परमेश्वर१० सखा हैं वे११निष्पापहैं॥९॥

अथाध्यात्मम् (ये) योगिनः(आनुषक्) आनुपूर्व्येण योगविधिना(बर्हिः) प्राणसमूहं प्रजावैबर्हिः २।६।१।२३ प्राणः प्रजा १४।४।३।१४(स्तृणन्ति)(अग्निम्) आत्माग्निं(इन्धते) (येषाम्) योगिनां(युवा) अजरामरः(इन्द्रः) महानारायणः (सखा)ते(आघाः) निष्पापाः॥९॥

भाषार्थः – १जोयोगी२योगविधिसे३प्राणसमूहको ४अन्तर्गत करते हैं५आत्माग्निको ६प्रज्वलितकरते हैं७जिन योगियों का८अजरामर९महानारायण १० सखाहैवे११निष्पाप हैं॥९॥

विशोकऋषिर्गायत्रीछन्दइन्द्रोदेवता·

भिन्धिविश्वाअपद्विषःपरिबाधोजहीमृधः।वसु
स्पार्हन्तदाभर॥१०॥२०

हेपरमेश्वर(विश्वाः)सर्वाः(द्विषः)द्वेष्ट्रीःशत्रुसेनाः कामादीनां सेनावा(अप)अस्मत्तःअपनीय(भिन्धि)विदारय(बाधः)हिंसित्रीः(मृधः)संग्रामान्(परिजही)हिंस्याः द्व्यचोतइति(६।३।१३५)दीर्घः(तत्)(स्पार्हं)स्पृहणीयं(वसु)धनं योगधनंवा(आभर)अस्मभ्यम् आहर॥१०॥२०

भाषार्थः– हेपरमेश्वर१सब २द्वेषकरनेवाली शत्रुसेनावा कामादिकी सेनाको ३हमसेदूरहटाकर ४विदारणकरो ५हिंसाशील ६संग्रामोंको ७नष्टकरो ८उस ९स्पृहणीय १० धनवायोगधनको ११दीजिये–॥१०॥२०

इतिश्रीभृगुवंशावतंसश्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्मविरचितेछन्दोव्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयः खण्डः

अथतृतीयःखण्डः

इहेवशृण्वएषांकशाहस्तेषुयद्वदान्।नियामं
चित्रमृञ्जते॥१॥२१-

(एषाम्)मरुतां(हस्तेषु)स्थिताः(कशाः)स्वस्ववाहनताडनहेतवः(यत्)(वदान्)यद्वदन्तिध्वनिंकुर्वन्तितं(इहेव)अत्रैवस्थित्वा(शृण्वे)शृणोमिसध्वनि विशेषः(चित्रम्)विचित्रं(यामम्)रथं(न्यृंजते)नितरामलङ्करोति ऋञ्जतिः साधनकर्मा निघ०६।४।२४–॥१॥२१

भाषार्थः–१इनमरुतोंके २हाथोमे स्थित ३कशा ४जो ५धुनिकरतीहैं उसको ६यहांहीस्थितहोकर ७सुनताहूं वह ध्वनिविशेष ८विचित्र ९रथको

१० निरन्तर अलंकृत करती है ॥१॥ २१

अथाध्यात्मम् (एषाम्) प्राणानाम्। (हस्तेषु) स्थिताः (कशाः) अनाहतशब्दाः। कशशब्दे (यत्) ऐश्वर्यं (वदान्) कथयन्ति तं शब्दसमूहं (इहैव) अत्रैव समाधौ (शृण्वे) शृणोमि स अनाहतशब्दः (चित्रम्) विचित्रं (यामम्) योग रथं (न्यृञ्जते) नितरामलङ्करोति ॥१॥ २१

भावार्थः – १ इन प्राणोंके २ वशमें वर्त्तमान ३ अनाहत शब्द ४ जिस ऐश्वर्यको ५ कहते हैं उस शब्द समूह को ६ यहां समाधिमें ही ७ सुनता हूं वह अनाहत शब्द ८ विचित्र ९ योगरथको १० निरंतर अलंकृत करता है ॥१॥

त्रयोस्त्रिशोक ऋषि र्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता –

इमे त उ त्वा वि चक्षते सखाय इन्द्र सोमिनः। पुष्टावन्तो यथा पशुम् ॥२॥ २२

(इन्द्र) हे इन्द्र परमेश्वर वा (इमे) (सोमिनः) अभिषुत सोमाः। अभिषुतात्ममति विंवा वा (सखायः) भक्ताः (त्वा) त्वां (उ) एव (वि चक्षते) (यथा) (पुष्टावन्तः) सम्भृत घासाः पुरुषाः (पशुम्) गो पशुम् विपश्यन्ति ॥२॥ २२

भावार्थः – १ हे इन्द्र वा परमेश्वर २ ये ३ अभिषुत सोम वा आत्ममति विंव ४ भक्त ५,६ आपको ही ७ देखते हैं ८ जैसे ९ घास इकट्ठी करने वाले पुरुष १० गो पशुको – २॥ २२

वत्सकाण्व ऋषि र्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता –

समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः। समुद्रायेव सिन्धवः ॥३॥ २३

(विशः) परमेश्वरेनिविशन्त्यः। विश प्रवेशे (विश्वाः) सर्वाः (कृष्टयः) प्रजाः मुमुक्षवः (अस्य) परमेश्वरस्य (मन्यवे) ज्ञान यज्ञाय जपयज्ञायवा मननपूजायांबोधेच (संनमन्त) (इव) यथा (सिन्धवः) स्यन्दनशीलानद्यः। इन्द्रियाणिवा (समुद्राय) समुद्रायमनसेवा। मनोवैसमुद्रः श० ७।५।२।५२—॥३॥

भाषार्थः—१परमेश्वरमेंप्रवेशकरनेवाले २ सब ३ मुमुक्षुजन ४ परमेश्वरके ५ ज्ञान यज्ञवाजपयज्ञ के लिये ६ झुकते हैं ७ जैसे ८ नदियांवाइन्द्रियां ९ समुद्रवामन के लिये—॥३॥

कुसीदीकाण्वऋषि र्गायत्री छन्दो देवा देवताः

देवानोमिदवोमहत्तदावृणीमहेवयम्। वृष्णामस्मभ्यमूतये॥ ४ ॥ २४

(वृष्णाम्) धर्मार्थकाम मोक्षाणां वर्षितॄणां (देवानाम्) महापुरुषपुरुषाणां (इत्) एव (महत्) (अवः) पालनमस्ति (तत्) पालनं (अस्मभ्यम्) (ऊतये) स्वकीयरक्षणाय (वयम्) (आवृणीमहे) आभिमुख्येनप्रार्थयामः॥४॥

भाषार्थः—१ धर्मार्थकाममोक्षकेदाता २ महापुरुषपुरुषोंका ३ ही ४ बड़ा ५ पालनहै ६ उसपालनको ७, ८ निजरक्षाके लिये ९ हम १० चाहतेहैं॥४॥

मेधातिथिऋषि र्गायत्री छन्दो ब्रह्मणस्पतिर्देवता

सोमानं स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते। कक्षीवन्तंय औशिजः॥५॥२५

(ब्रह्मणस्पते) हेप्राण। प्राणोहि ब्रह्मणस्पतिः श० १४।४।१।२३ (कक्षीवन्तं) कक्षंपापंकक्षीपापी कामस्तद्धन्तं (सोमानं) नस्मा

देवसोमस्यात्मप्रतिविंबस्याभिषवकर्त्तारं(माम्) ब्राह्मणंमां(स्वर्णं) ब्रह्मवर्चस्विनं(कृणुहि) कुरु(यः) अहं(औशिजः) योगेच्छयायुक्तोस्मि॥५॥

भावार्थः–१हेप्राण २कामी ३और आत्मप्रतिविंबका अभिषवकरनेवाले ४ मुझब्राह्मणको ५ब्रह्मवर्चस्वी ६करो ७जोमें ८योगेच्छासेयुक्तहूं॥५

शुनकस्सऋषिर्गायत्रीछन्द इन्द्रो देवता-

वोधन्मना इदस्तु नो वृत्रहा भूर्यासुतिः। शृणोतु शक्र आशिषम्॥६॥२६

(वृत्रहा) पापस्यहन्ता(भूर्यासुतिः) वहुसोमरसेनात्मप्रतिविंबेनवापूज्यः(शक्रः) सर्वशक्तिमान्परमेश्वरः। शाकसामर्थ्ये(नः) अस्माकं(वोधन्मनाः) ईप्सितानांज्ञाता(इत्) एव(अस्तु)(आशिषम्) अस्मदीयांस्तुतिं(शृणोतु)॥६॥२६

भावार्थः–१पापनाशक २वहुतसोमरसवा आत्मप्रतिविंबसेपूज्य ३सर्वशक्तिमानपरमेश्वर ४हमारे ५ईप्सितोंकाज्ञाता ६ही ७हो ८हमारीस्तुतिकोदेसुनो॥६॥२६ (श्यावाश्वऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवता-

अद्यनोदेवसवितः प्रजावत्सावीः सौभगम्। परादुष्वप्न्यं सुव॥७॥२७

हे(सवितः) सूर्ययद्वासर्वस्यप्रसविता(देव) मायाक्रीडनकैःक्रीडनशीलपरमेश्वर(अद्य)(नः) अस्मभ्यम्(प्रजावत्) पुत्राद्युपेतंप्राणाद्युपेतंवा(सौभगम्) शोभनंधनंयोगैश्वर्यम्वा(सावीः) प्रेरय(दुष्वप्न्यम्) दुःस्वप्नंदुःखंदुःस्वप्नतुल्यंसंसारम्वा(परासुव) दूरेप्रेरयप्रेरणे॥७॥२७

भावार्थः –१ हे सूर्यवासवके प्रेरक २ मायाके खिलोनों से क्रीडनशील परमेश्वर ३ अब ४ हमारे लिये ५ पुत्र आदि से युक्त वा माण आदि से युक्त ६ शोभन धन वा योगैश्वर्यको ७ दीजिये ८ दुःस्वप्न वा दुःस्वप्नरूप संसारको ९ दूर कीजिये –॥७॥ २७

प्रगाथः काण्व ऋषिर्गायत्री छन्दो महानारायणो देवता-

क्वा३स्य वृषभो युवा तुविग्रीवो अनानतः। ब्रह्मा कस्तꣳ सपर्यति ॥८॥ २८

(अस्य) ब्रह्माण्डस्य (वृषभः) स्वकीयशक्तिभिर्वर्षिता। पादोस्य विश्वा भूतानीति मन्त्रात् (युवा) अजरामरः (तुविग्रीवा) वहुशीर्षा (अनानतः) कदाचिदप्यनवनतः परात्परत्वात् महानारायणः (क्व) कुत्र वर्त्तते। इति कोजानाति (कः) प्रजापतिर्विष्णुः। कम्वै प्रजापतिः श० २।५।२।१३ (ब्रह्मा) च (तम्) महानारायणं (सपर्य्यति) पूजयति ॥८॥२८

भावार्थः –१ इस ब्रह्माण्डको २ अपनी शक्तिका दाता ३ अजरामर ४ बहुशीर्षा ५ परात्पर होने से किसी को भी न झुकने वाला महानारायण ६ कहां है इसको कौन जानता है अर्थात् कोई नहीं ७ प्रजापति विष्णु वा शिव ८ और ब्रह्मा ९ उस महानारायणको पूजते हैं ॥८॥

वत्स ऋषिर्गायत्री छन्दो विप्रो देवता-

उपह्वरे गिरीणाꣳ सङ्गमे च नदीनाम्। धिया विप्रो अजायत ॥९॥ २९

(विप्रः) वेदस्थो महापुरुषः (गिरीणाम्) गगनमेघानां नि० १।१० (उपह्वरे) प्रान्ते गगनमण्डले (च) (नदीनाम्) नाडीनाम्

(सङ्गमे) भृकुटौ (धिया) पराशक्तिरूपविद्यया (अजायत) योगिनांदृष्टौप्रादुर्भवति॥९॥

भाषार्थः – १वेदज्ञमहापुरुष २गगनमेघोंके ३मान्तंगगनमण्डल ४और ५नाड़ियोंके ६संयमभृकुटिमें ७पराशक्तिरूपविद्याकेद्वारा ८योगियोंकीदृष्टिमेंप्रकटहोताहै॥९॥

इरिमिवऋषिर्गायत्रीछन्दइन्द्रोदेवता·

प्रेसम्राजंचर्षणीनामिन्द्रंस्तोतानव्यं गीर्भिः नरंनृषाहंमंहिष्ठम्॥१०॥३०

हे स्तोतारः (चर्षणीनां) कृताकृतज्ञानवतांभक्तानां (सम्राजम्) अधीश्वरं (अनव्यम्) अनुः जीवस्तस्यदातारं (नरम्) समष्टिजीवरूपं (नृषाहं) नृणांशत्रुंमनुष्याणामभिभवितारं (मंहिष्ठम्) भक्तानांदातृतमं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (गीर्भिः) वैदिकमंत्रैः (प्रस्तोत) प्रकर्षेणस्तुत॥१०॥

भाषार्थः – हेस्तोताओ १कृताकृतज्ञानवाले भक्तोंके २अधीश्वर ३जीवकेदाता ४समष्टिजीवरूप ५शत्रुओंकेजयकरनेवाले ६भक्तोंकेमहादानी ७परमेश्वरको ८वैदिकमन्त्रोंसेस्तुतकरो—॥१०॥

इतिद्वितीयस्यार्द्धःप्रपाठकः

इतिश्रीभृगुवंशावतंसश्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्मविरचितेछन्दोव्याख्यानेद्वितीयाध्यायस्यतृतीयःखण्डः

अथचतुर्थःखण्डः

श्रुतकक्षऋषिर्गायत्रीछन्दइन्द्रोदेवता·

अपादुशिप्र्यन्धसःसुदक्षस्यप्रहोषिणः। इन्दो

रिन्द्रोयवोशिरः॥१॥३१

(शिप्री)(श) महानारायणः(इ)शक्तिः(प) ब्रह्मा(र) रुद्रः (श्र) विष्णुः यस्यरूपाणिस(इन्द्रः) परमेश्वरः(सुदक्षस्य) योगक्रियायांकुशलस्य(महोषिणः) प्रकर्षेणदेवानिन्द्रियरूपहविर्भिर्संहृतः(अन्धसः)अन्नरूपस्य(इन्दोः) मनसः। मनोचन्द्रमाश०१४।४।२।१७एववैसोमोराजादेवानामन्नंयच्चन्द्रमाः श०२।४।४।१५(यवाशिरः) यवेनप्राणेनसहितं मानससूर्यं। अन्नंहिप्राणः श०२।२।२।६।।विष्णोःशिरःपपाततत्पतित्वासावादित्योऽभवत् श०१४।१।१।१०(उ) एव(अपात्) अपिबत्।१

भावार्थः - १शक्तिसहितत्रिदेवरूपवाले २परमेश्वरने ३योगक्रियामें कुशल ४देवताओंकोइन्द्रियरूपहविसे पूजनेवाले ५अन्नरूप ६मनके ७प्राणसहित मानससूर्यको ८ही ९पानकिया—॥१॥

मेधातिथिऋषिर्गायत्रीछन्द इन्द्रोदेवता

इमाउत्वापुरुवसोभिप्रनोनवुर्गिरः। गावोवत्सन्नधेनवः॥२॥३२

हे(पुरुवसो) बहुधनपरमेश्वर(त्वो) त्वां (उ) एव(इमाः)(गिरः) वेदवाचः(अभि) अभिमुखीभूताः सत्यः (प्रनोनवुः) प्रकर्षेणपुनःपुनः स्तुवन्तिप्राप्नुवन्ति। नौतिस्तव्याप्तिकर्मा(न) यथा(धेनवः)(गावः)(वत्सम्) अभिलक्ष्यहम्भारवंकुर्वन्ति॥२॥

भावार्थः - १हेबहुधनीपरमेश्वर २तुमको ३ही ४ये ५वेदवचन ६सन्मुखहोते ७वारम्वारस्तुनकरतेहैं ८जैसे ९,१० गौ ११ वत्सकोदेखकरहम्भारवकरतीहैं॥२॥

गोतम ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम्। इत्था चन्द्रमसो गृहे॥ ३॥ ३३

(अत्र) विचार काले (इत्था) अनेन प्रकारेण (आह) वेदोऽक थयत् (अमन्वत) विद्वांसोऽजानन् (गोः) ब्रह्मांशुरूपस्य (त्वष्टुः) महानारायणस्य (नाम) आत्मा (चन्द्रमसः) मनसः (गृहे) मानसकमले (अपीच्यम्) अन्तर्हितंजीवोपाधिना॥ ३॥

भावार्थः – १ यहां विचारकालपर २ इसप्रकार से ३ वेदने कहा ४ विद्वानोंनेजाना ५ ब्रह्मांशुरूप ६ महानारायणका ७ आत्मा ८-९ मानसकमलमें १० जीवोपाधि से अन्तर्हितहै॥ ३॥

भरद्वाज ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

यदिन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृषन्तमः तत्र पूषा भुवत्सचा॥ ४॥ ३४॥

(यद्) यदा (वृषन्तमः) स्वांशुभिरतिशयेन वर्षितः (इन्द्रः) महानारायणः (अपः) दिव्य पार्थिव देहानां जननीः (रितः) प्राप्तः सन् (महीः) पार्थिव दिव्यभूमी (अनयत्) (तत्र) सृष्टि रचनायां (पूषा) व्यष्टि समष्टि सूर्यः (सचा) सहायः (भुवत्)॥ ४॥

भावार्थः – १ जब २ निज किरणोंकी वर्षा करनेवाले ३ महानारायणने ४ दिव्य पार्थिव देहों की जननी जलों को ५ प्राप्त करतेहुए ६ पार्थिव दिव्यभूमियोंको ७ उत्पन्न किया ८ वहां सृष्टि रचना में ९ व्यष्टि समष्टि सूर्य १० सहायक ११ हुआ॥ ४॥

विन्दुः पूतदक्षोवा ऋषि गायत्री छन्दो गौर्देवता

गोष्ठ्ये यति मरुतो थं अवस्यु र्माता मघोनाम्।
युक्ता वन्ही रथानाम्॥५॥३५

(युक्ता) ब्रह्मणि युक्ता (रथानाम्) ब्राह्मादिलोकानां (वन्हिः) प्रापका (मघोनाम्) धनवतां (मरुताम्) वैश्यानाम्। विशो वै मरुतः श० २।५।१।१२ (माता) (गौः) दिव्यभौमरूपा पृथिवी (अवस्यु) तेभ्यो ऽन्नं कामयमाना सती (धयति) पोषयति॥५॥

भाषार्थः—१ ब्रह्म में युक्त २ ब्राह्म आदि लोकों की प्रापक ३,५,६ धनवान वैश्यों की माता ७ दिव्य भौम रूप पृथिवी ८ उनके लिये अन्न को चाहती ९ पालन करती है—॥५॥

श्रुतकक्ष एव सुकक्षो वा ऋषि र्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

उपनो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते। उपनो हरिभिः सुतम्॥६॥३६

हे (मदानांपते) अहङ्कारास्पदानां जीवानां स्वामिन् परमेश्वर त्वं (हरिभिः) ब्रह्म विष्णु महेश रूपैः (नः) अस्माकं (सुतम्) अभिषुत मात्मप्रति बिंबं (उपयाहि) प्राप्नुहि नथेन्द्र रूपस्त्वं (हरिभिः) अश्वैः (नः) अस्माकं (सुतम्) अभिषुत सोमं (उप) उपयाहि प्राप्नुहि॥६॥

भाषार्थः—१ हे जीवों के स्वामी परमेश्वर तुम २ ब्रह्मा विष्णु महेश रूपों से ३ हमारे ४ अभिषुत आत्म प्रति बिंब को ५ प्राप्त करो तथा इन्द्र रूप तुम ६ घोड़ों के द्वारा ७ हमारे ८ अभिषुत सोम को ९ प्राप्त करो—॥६॥

श्रुतकक्ष एव सुकक्षो वा ऋषि र्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

इष्टा होत्रा असृक्षतेन्द्रं वृधन्तो अध्वरे। अच्छाव

भृथं मोजसा ॥७॥ ३७

हे यजमानाः (अध्वरे) द्रव्य यज्ञे योग यज्ञे वा (अवभृथेम्) (अ॰च्छ) आप्तुं (ओजसा) मन्त्रबलेन (इन्द्रम्) परमेश्वरं (वृधन्तः) वर्द्धयन्तः (इष्टाः) प्रियाः (होत्राः) ह्वयन्त इति होत्राः आहुतयस्ताः (असृक्षत) विसृजत दत्त इत्यर्थः ॥७॥

भाषार्थः – हे यजमानो १ द्रव्ययज्ञवायोगयज्ञ में २ अवभृथ स्नान ३ प्राप्तकरने को ४ मन्त्र बलसे ५ परमेश्वरको ६ बढ़ानेतुम ७ प्रिय आहुतियोंको ८ छोड़ो ॥७॥

वत्सः काण्व ऋषि र्गायत्री छन्दो यजमानो देवता

अहमिद्धि पितुस्परि मेधामृतस्य जग्रह। अहं सूर्य इवाजनि ॥८॥ ३८

(अहम्) जीवात्मा (ऋतस्य) सत्यस्य (पितुः) सर्वपालकस्य महानारायणस्य (मेधाम्) ज्ञानशक्तिं (इत्) एव (परिजग्रह) परिगृहीतवानस्मि (हि) यस्मात् (अहम्) (सूर्यः) (इव) (अजनि) प्रादुरभूवम् देहाभिमानत्यागेनेत्यर्थः ॥८॥

भाषार्थः – १ जीवात्मा मैंने २ सत्य ३ सर्वपालक महानारायण की ४ ज्ञानशक्ति को ५ ही ६ ग्रहण किया है ७ जिस कारण ८ मैं ९,१० देहाभिमान त्याग से सूर्य की समान ११ प्रकट हुआ ॥८॥

शुनः शेप ऋषि र्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः। क्षुमन्तो याभिर्मदेम ॥९॥ ३९

(इन्द्रे) अन्तर्यामिनि परमेश्वरे (सधमादे) अस्माभिः सहहर्षयु

न्ते सति (नः) अस्माकं (रेवतीः) रेवत्यः महावाचः। वाग्वै रेवतीश० ३।८।१।१२ (तुविवाजाः) बहुबलाः नि० २।९।३ (सन्तु) (याभिः) वाग्भिः (क्षुमन्तः) ब्रह्माण्ड रूपान्नवन्तः वयं नि० २।७ (मदेम) हृष्येम ॥९॥

भाषार्थः – १ अन्तर्यामी परमेश्वर के २ हमारे साथ हर्षयुक्त होने पर ३ हमारे ४ महावाक् ५ बहुबली ६ होवे ७ जिन महा वचनो के द्वारा ८ ब्रह्माण्ड रूपान्न वाले हम ९ हर्षित होवें ॥९॥

शुन शेपो वामदेवो वा ऋषिः गायत्री छन्दो जीवेशौ देवते

सोमः पूषा च चेततुर्विश्वासा छं सुक्षितीनाम्।
देवत्रा रथ्योर्हिता ॥१०॥ ४०

(देवत्रा) विद्वत्सु। विद्वांसो हि देवाः श० ३।७।३।१० (रथ्योः) स्थूलसूक्ष्म शरीरयोः रंहति गति कर्मा (हिता) हितौ हितकरौ (सोमः) जीवात्मा (च) (पूषा) अन्तर्यामी (विश्वासाम्) सर्वासाम् (सुक्षितीनाम्) योग भूमीनां विधिं (चेततुः) जानीतः ॥१०॥ ४०

भाषार्थः – १ विद्वानो मे २ स्थूलसूक्ष्म शरीर ३ का हितकारी ४ जीवात्मा ५ और ६ और अन्तर्यामी ७ सब ८ योग भूमिओं की विधि को ९ जानते हैं – ॥१०॥४०॥ इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य चतुर्थ खंडः

अथ पञ्चमः खण्डः

श्रुतकक्ष ऋषिः गायत्री छन्दः इन्द्रो देवता

पान्तमा वो अन्धस इन्द्रमभि प्रगायत। विश्वासाह छं शतक्रतुं म छं हिष्ठञ्चर्षणीनाम् ॥१॥ ४१

हे ऋत्विजः। वागाद्यृत्विजो वा यूयं (वः) युष्माकं (अन्धसः) सोमस्यात्मप्रति विंबस्य वा (आपान्तम्) आभिमुख्येन पिबन्तं। पापाने छान्दसः शपोलुक् (विश्वासाहम्) सर्वेषां शत्रूणामभिभवितारं (शतक्रतुम्) अनन्तकर्माणं (चर्षणीनाम्) कृताकृतस्थानवतां भक्तानां (मंहिष्ठम्) यष्टव्यत्वेन पूजनीयं (इन्द्रम्) परमेश्वरमिन्द्रं वा (अभिप्रगायत) प्रकर्षेणाभिष्टुत ॥१॥

भाषार्थः – हे ऋत्विजो वा वागाद्युत्विजो १ तुम्हारे २ सोम वा आत्म प्रतिविंब के ३ सन्मुख पानकर्त्ता ४ सब शत्रुओं के तिरस्कर्त्ता ५ अनन्तकर्मा ६ कृताकृतस्थानवाले भक्तों के ७ पूजनीय ८ इन्द्र वा परमेश्वर को ९ भले प्रकार गाओ—॥१॥ (वसिष्ठऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता)

प्रव इन्द्राय मादनं हर्यश्वाय गायत। सखायः सोमपाव्ने ॥२॥ ४२

हे (सखायः) भक्ताः (वः) यूयं (हर्य्यश्वाय) हरिनामकाश्वाय यद्वा ब्रह्म, विष्णु महेशेषु व्यापकाय। अश्नुते व्याप्नोतिस अश्वः (सोमपाव्ने) सोमपात्रे प्रतिविंब पात्रे वा (इन्द्राय) इन्द्राय महानारायणाय वा (मादनम्) मदकरं स्तोत्रं (प्रगायत) प्रपठत ॥२॥

भाषार्थः – १ हे भक्तो २ तुम ३ हरिनामक अश्ववाले व ब्रह्मा विष्णु महेशों में व्यापक ४ सोमपाता वा प्रतिविंब पाता ५ इन्द्र वा परमेश्वर के लिये ६ मदकर स्तोत्र को ७ पाठ करो—॥२॥

मेधातिथि प्रियमेधा ऋषी गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः। कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते ॥३॥ ४३

हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वायन्तः) त्वामिच्छन्तः (सखायः) भक्ताः (वयम्) (तदिदर्थाः) यत्त्वद्विषयं स्तोत्रं तदेव प्रयोजनं येषां तादृशाः सन्तः (त्वा) त्वां (उ) एव (जरामहे) स्तूमहे यस्मात् (कण्वाः) मेधाविनः नि० (उक्थेभिः) उक्थैः शस्त्रैः (जरन्ते) त्वां स्तुवन्ति परात्परत्वात्सर्वात्मकत्त्वाच्च ॥ ३ ॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ तुमको चाहते ३ भक्त ४ हम ५ आपके स्तोत्रको ही चाहते ६, ७ तुमको ही ८ स्तुत करते हैं जिस कारण ९ मेधावी १० शास्त्रों से ११ आपकी ही स्तुति करते हैं आपके परात्पर और सर्वात्मक होने से ॥ ३

श्रुतकक्ष ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्राय मद्वने सुतम्परिष्टोभन्तु नो गिरः । अर्कमर्चन्तु कारवः ॥ ४ ॥ ४४

(मद्वने) मदनशीलाय (इन्द्राय) इन्द्राय परमेश्वराय वा (सुतम्) अभिषुतं सोम मात्मप्रतिबिम्बं वा (नः) अस्माकं (गिरः) मुखोच्चारिता वेदवाचः (परिष्टोभन्तु) परितः स्तुवन्तु तथा (कारवः) स्तोतारः नि० ३।१५ (अर्कम्) सर्वैरर्चनीयमिन्द्रं परमेश्वरम्वा (अर्चन्तु) पूजयन्तु ॥ ४ ॥

भाषार्थः – १ मदनशील २ इन्द्र वा परमेश्वर के लिये ३ अभिषुत सोम वा आत्म प्रतिबिंब को ४ हमारे ५ मुखोच्चारित वेदवचन ६ सब ओर से स्तुत करो ७ तथा स्तोता लोग ८ सब से पूजनीय इन्द्र वा परमेश्वर को ९ पूजन करो ॥ ४

(इरिमिठ ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता)

अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि । एहीमस्य द्रवा पिब ॥ ५ ॥ ४५

(इन्द्र) हे इन्द्र परमेश्वर वा (ते) तुभ्यं त्वदर्थं (अयम्) (सोमः) सोमः। आत्म प्रति विंबो वा (अधिबर्हिषि) वेद्यां आस्तीर्णे दर्भे। सुषुम्णायां वा (निपूतः) अभिषवादि संस्कारैः शोधितः (अस्य) (इम्) सारम मृतं मानस सूर्यं वा (एहि) प्राप्नुहि (द्रवं) गच्छ (पिब) पानं कुरु ॥ ५ ॥

भावार्थः – १ हे इन्द्र वा परमेश्वर २ आपके लिये ३ यह ४ सोम वा आत्म प्रतिविंब ५ वेदी में स्तीर्ण दर्भ वा सुषुम्णा नाडी पर ६ अभिषव आदि संस्कारों से शोधित हुआ ७ इसके सार अमृत वा मानस सूर्य को ८ प्राप्त करो १० जाओ ११ पान करो ॥ ५ ॥

मधुच्छन्दा ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

सुरूपकृत्नु मूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहूमसि द्यविद्यवि ॥ ६ ॥ ४६

(सुरूपकृत्नुम) सुरूपाणां ब्रह्म विष्णु महेशादीनां कर्त्तारं परमेश्वरं (ऊतये) शत्रुभ्यः संसाराद्वा रक्षणाय (द्यवि द्यवि) प्रतिदिनं (जुहूमसि) आह्वयामः (इव) यथा (गोदुहे) गोदोह कर्मार्थं (सुदुघाम्) सुष्ठु दोग्ध्रीं गामाह्वयन्ति ॥ ६ ॥

भावार्थः – १ ब्रह्मा विष्णु महेशादि सुरूपों के कर्त्ता परमेश्वर को २ शत्रुओं वा संसार से रक्षा के लिये ३ प्रतिदिन ४ हम आह्वान करते हैं ५ जैसे ६ गोदोह कर्म के लिये ७ अच्छी दोग्ध्री गौ को ॥ ६ ॥

त्रिशोक ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये। तृम्पा व्यश्नुही मदम् ॥ ७ ॥ ४७

(वृषभ) धर्मार्थ काम मोक्षाणां वर्षिनः (अ) महानारायण (सुते)

अभिषुते सति (सुतम्) सोममात्मप्रतिबिंबम्वा (पीतये) पानाय (त्वा) त्वां (अभिसृजामि) ददामि (आ + इ) हे महालक्ष्मीनारायण (तृम्प) प्रीणनेनु० पर० सक० सेट् (मदम्) (व्यश्नुहि) विशेषेण प्राप्नुहि ॥७॥

भावार्थः – १ हे धर्मार्थकाममोक्ष के दाता २ महानारायण ३ अभिषुत होने पर ४ सोम वा आत्मप्रतिबिंब को ५ पान करने के लिये ६ आपको ७ देता हूं ८ हे महालक्ष्मीनारायण ९ तृप्त हो १० मद को ११ प्राप्त करो ॥७॥

कुसीदऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

यइन्द्रचमसेष्वा सोमश्चमूषु ते सुतः। पिबेदस्य त्वमीशिषे ॥८॥ ४८

हे (इन्द्र) इन्द्र परमेश्वर वा (यः) (सोमः) सोमः। आत्मप्रतिबिम्बो वा (चमसेषु) अधिषवणफलकेषु। मनो हृदय भृकुटिषु वा (ते) त्वदर्थं (सुतः) अभिषुतः (चमूषु) भक्षणपात्रेषु। कमलेषु वा। चमुष्वृले (आ) आवर्त्तते (अस्य) (पिब) पानं कुरु (त्वम्) (इत्) (ईशिषे) ईश्वरो भवसि ॥८॥

भावार्थः – १ हे इन्द्र वा परमेश्वर २ जो ३ सोम वा आत्मप्रतिबिंब ४ अधिषवण फलक वा मन हृदय भृकुटि में ५ आपके लिये ६ अभिषुत हुआ ७ भक्षणपात्र वा कमलों में ८ वर्त्तमान है ९ इसका १० पान करो ११ तुम १२ ही १३ ईश्वर हो – ॥८॥

शुनःशेप ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये ॥९॥ ४९

(सखायः) भक्तावयं (योगे) (योगे) प्रत्येकयोगानुष्ठाने (वाजे) (वाजे) कामादीनां प्रत्येकसङ्ग्रामे (तवस्तरम्) अतिशयेन बलिनं नि० २।९ (इन्द्रम्) परमेश्वरं (ऊतये) संसाराद्रक्षणाय (हवामहे) आह्वयामः॥९॥

भाषार्थः–१ भक्तहम २,३ प्रत्येकयोगानुष्ठानमें ४,५ कामादिके प्रत्येक संग्राममें ६ अतिबली ७ परमेश्वरको ८ संसार से रक्षा के लिये ९ हम आह्वान करतेहैं–॥९॥ मधुच्छन्दाऋषिर्गायत्री छन्दइन्द्रो देवता

आत्वेतानिषीदतेन्द्रमभिप्रगायत। सखायः स्तोमवाहसः॥१०॥ ५०

हे (स्तोमवाहसः) यज्ञे त्रिवृत्पञ्चदशादिस्तोमानां प्रापकाः। प्राणायामकर्त्तारो वा। प्राणा वै स्तोमाः श० ८।४।१।४ (सखायः) ऋत्विजः। सखिवत्प्रिया भक्ता वा (तु) क्षिप्रं (आएत) द्रव्ययज्ञं योगयज्ञम्वाऽऽगच्छत (आनिषीदत) आगत्योपविशत (इन्द्रम्) इन्द्रं परमेश्वरम्वा (अभिप्रगायत) सर्वतः प्रकर्षेण स्तुत॥१०॥

भाषार्थः–१ हे यज्ञमें त्रिवृत्पञ्चदश आदि स्तोमके प्रापक वा प्राणायामकर्त्ता २ ऋत्विजो ३ शीघ्र ४ आओ ५ आकर बैठो ६ इन्द्र वा परमेश्वरको ७ सब ओरसे भले प्रकार गाओ स्तुत करो–॥१०॥

इतिश्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्मविरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य पञ्चमः खण्डः

अथ षष्ठखण्डः

विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्दो महानारायणो देवता

इदं ह्यन्वोजसा सुतं राधानाम्पते। पिबा

त्वो३स्येगिर्वणः॥१॥५१

हे (राधानाम्) राधांशभूतानांदेवीनां (पते) स्वामिन् (गिर्वणः) गीर्भिर्वेदवचनैर्वननीयसंभजनीय (त्वं) महानारायण (अस्य) भक्तस्य (ओजसा) योगवलेन (हि) (सुतम्) (इदम्) अभिपुत मात्ममतिविंवं (अनु) अनुलक्ष्य (तु) क्षिप्रं (पिव) ॥१॥

भाषार्थः –१,२ हेराधांशभूतदेविओंकेस्वामी ३ वेदवचनोंसेभजनीय ४ महानारायण ५ इसभक्तके ६ योगवलसे ७ ही ८,९ इसअभिपुत आत्मप्रतिविंवको १० अनुलक्षणकर ११ शीघ्र १२ पानकरो ॥१॥

मधुच्छन्दाऋषिर्गायत्रीच्छन्दो इन्द्रोदेवता

महाँ इन्द्रः पुरश्चनो महित्वमस्तु वज्रिणे। द्यौर्न्नप्रथिनाशवः॥२॥५२

(पुरश्चनः) पुरः व्यष्टि समष्टि शरीराण्येवचनोऽन्नंयस्यतादृशः (इन्द्रः) परमेश्वरो महानारायणः (महान्) परात्परः (वज्रिणे) ज्ञानवज्रयुक्ताय परमेश्वरायैव (महित्वम्) ब्रह्माण्डरूपत्वं (अस्तु) यस्य शक्त्या भून्या (प्रथिना) पृथिवी (न) च (द्यौः) स्वर्गलोक (शवः) मृतदेहोभवतीत्यर्थः॥२॥

भाषार्थः –१ व्यष्टिसमष्टिरूपअन्नवाला २ परमेश्वर महानारायण ३ परात्परहै ४ ज्ञानवज्रधरपरमेश्वरकेलियेही ५ ब्रह्माण्डरूपत्व ६ हो ७ जिसकीशक्तिसे भून्य पृथिवी ८ और ९ स्वर्गलोक १० मृतदेहहोतेहैं—॥२॥

कुसीदकाण्वऋषिर्गायत्रीछन्द इन्द्रोदेवता

आतूनइन्द्र क्षुमन्तंचित्रंग्राभं सङ्गृभाय महाहस्तीदक्षिणेन॥३॥५३

हे (इन्द्र) परमेश्वर (महाहस्ती) महाहस्तवान्त्वं (नः) अस्माकं (द्युमन्तम्) अन्नवन्तं भोगवन्तं (आग्राभम्) समन्तात् मायाविकाराणां गृहीतारं (चित्रम्) अङ्गुष्ठमात्रंजीवात्मानं (दक्षिणेन) हस्तेन (तू) क्षिप्रं (सङ्गृभाय) सङ्ग्रहाण संसारकूपादुद्धर ॥ ३॥

भावार्थः – १ हे परमेश्वर २ बड़े हाथवाले तुम ३ हमारे ४ अन्नभोगवान् ५ सब ओर मायाके गृहीता ६ अंगुष्ठ मात्र जीवात्मा को ७ हाथसे ८ शीघ्र ९ ग्रहण कर संसारकूपसे उद्धार कर ॥ ३॥

प्रिय मेधऋषिः गायत्री छन्द इन्द्रो देवता ·

अभिप्रगोपतिङ्गिरेन्द्रमर्च यथा विदे। सूनꣳ सत्यस्य सत्पतिम् ॥ ४ ॥ ५४

(सत्यस्य) ब्रह्मणः (सूनम्) पुत्रं तेन प्रादुर्भूतं (सत्पतिम्) सतां भक्तानां पालकं (गोपतिम्) गोपालं श्री कृष्णं गोलोक स्वामिनं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (गिरा) वेदवाचा (यथा) (प्रविदे) अहम्वेदः प्रकर्षेण जानामि तथा (अभ्यर्च) आभिमुख्येन पूजय ॥ ४॥

भावार्थः – १, २ ब्रह्मपुत्र ब्रह्मसे प्रादुर्भूत ३ भक्तपालक ४ गोपाल गोलोक स्वामी श्री कृष्णनाम ५ परमेश्वर को ६ वेदवचनसे ७ जैसे ८ मैं वेदज्ञानता हूं तैसेही ९ सन्मुख होकर पूजन करो ॥ ४॥

वामदेवऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता ·

कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता ॥ ५ ॥ ५५

(सदावृधः) सर्वदा वर्द्धमानः (चित्रः) अद्भुतः ज्योतिः स्वरूपत्वेन विलक्षणः (सखा) सखिवत्प्रियः परमेश्वरः (कया) (ऊती) ऊत्या

तर्पणेन। सुपांसु लुगित्यादिना (३।१।३९) पूर्वसवर्णदीर्घः (कया) (शचिष्ठया) प्रज्ञावत्तमया (वृता) वर्त्तनेन कर्मणा (नः) अस्माकं (आभुवन्) अभिमुखो भवेदिति सदा विचारणीयमित्यर्थः॥५॥

भाषार्थः

१ सर्वदा वर्द्धमान २ ज्योतिस्वरूप होनेसे विलक्षण ३ सखाकी समान प्रिय परमेश्वर ४.५ किस तर्पण ६ और किस ७,८ प्रज्ञावत्तम कर्मके द्वारा ९ हमारे १० सन्मुख होवै यह सदा विचार योग्य है॥५॥

श्रुनकक्षऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता॰

त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ष्वायतम्। आच्यावयस्यूतये॥६॥ ५६

हे मेधाविन् यजमान त्वं (तम्) (सत्रासाहम्) सत्येन ज्ञानेन मायोपाधीनामभिभवितारं (वः) युष्मदीयेषु (विश्वासु) सर्वेषु (गीर्षु) स्तोत्रेषु (आयतम्) विस्तृतं सर्वरूपत्वात् (यम्) परमेश्वरं (उ) एव (ऊतये) रक्षणाय (आच्यावयसि) आभिमुख्येन गमयसि च्युङ् गतौ॥६॥

भाषार्थः – हे मेधावी यजमान तुम १ उस २ सत्य ज्ञान द्वारा माया उपाधियोंके अभिभविता ३ तुम्हारे ४ सब ५ स्तोत्रोंमें ६ सर्व रूपसे विस्तृत ७ परमेश्वर को ८ ही ९ रक्षाके लिये १० सन्मुख प्राप्त करते हो॥६॥

मेधातिथिऋषि गायत्री छन्दः सदसस्पतिर्देवता॰

सदसस्पतिमद्भुतम्प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिम्मेधामयासिषम्॥७॥ ५७

(सदसस्पतिम्) भक्तसभायाः पालकं (अद्भुतम्) मानसविधिना

ऽद्भुतं(प्रियम्) चतुष्पदार्थदानेनप्रियं(काम्यम्) मेधाविभिर्वाञ्छनीयं(इन्द्रस्य)(सनिमे) परमेश्वरस्यपूजनं(मेधाम्) अर्चाहं बुद्धिञ्च(अयासिषम्) प्राप्तवानस्मि ॥७॥

भाषार्थः –१ भक्तसभाकेपालक २ मानसविधिसे अद्भुत ३ चतुष्पदार्थदानसेप्रिय ४ मेधावियोंसेवांछनीय ५ परमेश्वरके ६ पूजनको ७ और पूजनयोग्यबुद्धिकोभी ८ मैंने प्राप्त किया है ॥७॥

वामदेव ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

येते पन्था अधोदिवो येभिर्व्यश्वमैरयः उतनःश्रोषन्तुनो भुवः ॥८॥५८

हेपरमेश्वर(ये)(पन्थाः) देवयानादिभेदैर्बहुसंख्याकाः(दिवः) महानारायणलोकस्य(अधः) अधस्तात् सन्ति(उत) अपिचत्वं(येभिः) यैर्मार्गैः(व्यश्वम्) मानससूर्यं जीवात्मानं। असौवाआदित्यएषोऽश्वः श०६।३।१।२९(ऐरयः) विशेषेणप्रेरयसि(ते) पन्थाः(नः) अस्माकं(भुवः) भक्तिभूमेर्योगभूमेर्वा(श्रोषन्तु) शृणवन्तु ॥८॥

भाषार्थः –१ जो २ मार्ग देवयान आदि भेदोंसेवहुत संख्यावाले ३ महानारायणलोकसे ४ नीचेहैं ५ और ६ जिन मार्गोंसे ७ मानस सूर्यजीवात्माको ८ विशेषप्रेरणाकरतेहो ९ वेमार्ग १० हमारी ११ भक्तिभूमिवा योगभूमिके १२ श्रोताहों ॥८॥

श्रुतकक्ष ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

भद्रम्भद्रन्न आभरेषमूर्जं शतक्रतो। यदिन्द्र मृडयासिनः ॥९॥५९

हे(शतक्रतो) वहुकर्मन् वहुयज्ञवा(इन्द्र) इन्द्र परमेश्वर् वा(भद्रम्) सुखोत्पादकं(इषम्) अन्नं(भद्रम्) सुखोत्पादकं(ऊर्जम्) रसञ्च(नः) अस्मभ्यं(आभर) आहरसम्पादयदेहि(यद्) यदि(नः) अस्मान्(मृडयासि) सुखयासि ॥९॥

भाषार्थः —१वहु कर्मा वहु यज्ञ वा २इन्द्र वा परमेश्वर ३सुखोत्पादक ४अन्न ५सुखोत्पादक ६रसको भी ७हमें ८दो ९जो १०हमको ११सुखी करते हो॥९॥ विन्दुऋषिर्गायत्री छन्दो मरुताद्या देवताः

अस्ति सोमो अयꣳ सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः। उत स्वराजो अश्विना ॥१०॥ ९०

(अयम्)(सोमः) सोमः। आत्ममतिविंवोवा(सुतः) अभिषुतः(अस्ति)(मरुतः) देवाः प्राणावा(अस्य)(पिवन्ति) पानंकुर्वन्ति(उत) अपिच(स्वराजा) स्वतेजसा दीप्यमानौ(अश्विना) अश्विनौ नरनारायणौवा(उ) अपि पिवतः ॥१०॥

भाषार्थः —१यह २सोमवा आत्म मतिविंव ३साभिषुत है ४,५ मरुतदेवतावा प्राण ६इसका ७पान करते हैं ८और ९अपने तेजसे दीप्यमान १०अश्विनीकुमार वा नरनारायण ११भी पान करते हैं—॥१०॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनुज्वालाप्रसादशर्म्मविरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य षष्ठः खण्डः

अथसप्तमः खण्डः

इन्द्र मातरो देवयामयऋषिका गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

ईङ्खयन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते। वन्वानासः सुवीर्यम् ॥१॥ ९१

(ईडयन्तीः) ज्ञानावस्थायां परमेश्वरंमाप्नुवन्त्यः ईडगतौ(अपस्युवः) उपासनायां कर्मेच्छन्त्यः नि०(सुवीर्यम्) (वन्वानासः) परमेश्वरात्स्वकीयंशोभनवीर्यंयाचमाना वेदवाचः वनुयाचने(जातम्) प्रादुर्भूतं(इन्द्रम्) परमेश्वरं(उपासते) तस्य सर्वात्मकत्वात् ॥१॥

भावार्थः – १ ज्ञानअवस्था में परमेश्वर को प्राप्त करने वाली २ उपासना में कर्म चाहने वाली ३,४ परमेश्वर से अपने बल को चाहने वाली वेदवाणी ५ प्रादुर्भूत ६ परमेश्वर को ७ उपासना करती हैं उसके सर्वात्मक होने से॥१॥ गोधाऋषि गायत्री छन्दो देवा देवताः

नकिर्देवा इनीमसि नक्यायोपयामसि। मन्त्रश्रुत्यं चरामसि ॥२॥ ६२

तस्मात्हे(देवाः)(कि) काम्ययज्ञे(न)(इनीमसि) नहिंस्मः प्राणिवधंकर्म पश्वादियागंनकुर्मः। मीङ् हिंसायां क्र्यादिकमीनातेर्निगमे(७।३।८।१पा०) इतिह्रस्वः इदन्तोमसि(७।१४६पा०) मकारलोपश्छान्दसः। आकार समुच्चये(कि) काम्ययज्ञे(न)(योपयामसि) यूपनिखननंवृक्षौषध्यादिहिंसामपिनकुर्मः(मन्त्रश्रुत्यं) मन्त्रेणस्मार्यंश्रुत्याप्रतिपाद्यंजपयज्ञं(आचरामसि) आचरामः अनुतिष्ठामः यथामनुः २अ० जप्येनैवतुसंसिद्ध्येद्ब्राह्मणोनात्रसंशयः कुर्यादन्यन्नवा कुर्यान्मैत्रोब्राह्मण उच्यते। यज्ञानांजपयज्ञोस्मीतिभगवद्वचनाच्च॥२

भावार्थः –उसकारण १हेदेवताओ २ काम्ययज्ञमें ३,४ प्राणिवधकर्म पश्वादियज्ञको हमनहीं करते हैं ५ काम्ययज्ञमें ६,७ यूपखनन

दृक्षोपाधि आदि हिंसाको भी नहीं करते हैं ८ जपयज्ञ कोही करते हैं ॥२

दध्यङ्ङाथर्वण ऋषि गायत्री छन्दः सविता देवता

दोषो आगाद्बृहद्गायद्युमद्गामन्नाथर्वण। स्तुहि देवं सवितारम् ॥ ३ ॥ ६३ ॥

हे (द्युमद्गामन्) द्युमतां स्वरसौष्ठव युक्तानां साम्नां गामनग तः (आथर्वण) वाक्। वाग्वै दध्यङ्ङाथर्वणः श० ६।४।२।३(दोषो) रात्रिः (आगात्) समन्तादृतवान्। आगतावा संध्याव र्त्तते (बृहत्) साम (गाय) (सवितारम्) सर्वस्य प्रसवितारं (देव म्) मायाक्रीडनकैः क्रीडनशीलं परमेश्वरं (उ) एव (स्तुहि)

भावार्थः – १ स्वरसे सामगान करने वाले २ वाक ३ रात्रि ४ व्यतीत हुई वा आई सन्ध्या वर्त्तमान है ५ बृहत्साम को ६ गाओ ७ सबके प्रेरक ८ माया के खिलोनों से क्रीडन शील परमेश्वर को ९ ही १० स्तुत करो ॥ ३ ॥

प्रस्कण्व ऋषि गायत्री छन्दो अश्विनौ देवते

एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः। स्तुषे वामश्विना बृहत् ॥ ४ ॥ ६४

(एषो) (अपूर्व्या) पूर्वं नास्ति सा (प्रियो) जपकालत्वेन विदुषां प्रिया (उषा) (दिवः) (व्युच्छति) तमो वर्जयति हे (अश्विना) अश्विनौ ब्रह्माण्डे व्यापकौ परा महापुरुषौ। अश्वाः सूर्य रूपा अतिविंधाः सन्ति ब्रह्माण्डे पु ययोः इति। असौवा आदित्य एषोऽश्वः श० ६।३।१।२९ (वाम्) युवाम् (उ) एव (बृहत्) प्रभूतं यथा भवति तथा (स्तुषे) स्तौमि ॥ ४ ॥ ६४

भावार्थः – १ यह २ प्रादुर्भूत ३ जपकाल होने से ज्ञानियों की प्रिया ४

उपा ५ स्वर्गके ६ तमको हटानी है ७ हे अश्विनी कुमारो वा ब्रह्माण्ड में व्याप कपरा महापुरुषो ८ तुमदोनोंकी ९ ही १०।११ चड़ा स्तुत करता हूं ॥ ४ ॥

गोतम ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः। जघान नवतीर्नव ॥ ५ ॥ ६५

यस्मात् (अप्रतिष्कुतः) अप्रति स्खलितः (इन्द्रः) यजमानः। इन्द्रो वै यजमानः (दधीचः) आथर्वणस्य वेद वाचः। वाग्वै दध्यङ्ङाथर्वणः श० ६।४।२।३ (अस्थिभिः) सारैर्महावाग्भिः। अस्थीन्येव धीः श० १०।२।६।१८ (नवतीर्नव) समनस्कानि दशेन्द्रियाणि ११ त्रिगुण त्रिकाल रागद्वेष मोह गुणितानि (वृत्राणि) पापरूपाणि। पाप्मा वै वृत्रः श० ६।४।२।३ (जघान) ॥ ५ ॥ ६५

भाषार्थः – जिसकारण १ अप्रतिस्खलित २ यजमान ने ३ वेदवचनों के ४ सार महा वाक्योंसे मन सहित इन्द्रियों को जोकि त्रिगुण त्रिकाल रागद्वेषमोहसे गुणित होकर ९९ होती हैं ६ पापरूपों को ७ मारा ॥ ५ ॥ ६५

मधुच्छन्दा ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः। महाँ अभिष्टिरोजसा ॥ ६ ॥ ६६

हे (इन्द्र) परमेश्वर (ओजसा) बलेन तेजसा वा (महान्) (अभिष्टिः) अभिमायानस्याऽइष्टिर्होमो यस्मिन्नीदृशस्त्वं (एहि) आगच्छ (अन्धसः) अन्नरूप जीवात्मनः नि० ५।२।१७ (विश्वेभिः) सर्वैः (सोमपर्वभिः) शक्तिरूपेन्द्रियभागैः। प्राणः सोमः श० ७।२।४।१२ (मत्सि) माघहृष्टोभव ॥ ६ ॥

भावार्थः–१ हे परमेश्वर २ बलवानेजसे ३ महान ४ मायाहोम के स्थान तुम ५ आओ ६ अन्नरूप जीवात्मा के ७ सब ८ शक्ति रूप इन्द्रियमाणोंसे ९ हर्षितहूजिये॥६॥ वामदेवऋषिर्गायत्रीछन्द इन्द्रो देवता·

आतूनं इन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्द्धमागहि। महान्महीभिरूतिभिः॥७॥ ६७

हे (वृत्रहन्) पापनाशक (इन्द्र) परमेश्वर (तूः) अस्माकं (महान्) महेश्वरस्त्वं (महीभिः) योगभूमिभिः (ऊतिभिः) रक्षाभिः सह· (अस्माकम्) (अर्द्धम्) समीपं (तू) शीघ्रं (आगहि) आगच्छ॥७॥

भावार्थः–१ हे पापनाशक २ परमेश्वर ३ हमारे ४ महेश्वर तुम ५ योगभूमि ६ और रक्षाओं के साथ ७ हमारे ८ समीप ९ शीघ्र १० आओ॥७॥

वत्सऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत्समवर्त्तयत्। इन्द्रश्चर्मेव रोदसी॥८॥ ६८॥

(अस्य) परमेश्वरस्य (तत्) (ओजः) बलं (तित्विषे) दिदीपेत्विषदीप्तौ (दि० प०) (यत्) यस्मात् (इन्द्रः) परमेश्वरः (उभे) (रोदसी) द्यावापृथिव्यौब्रह्माण्डं (चर्म) (इव) (समवर्त्तयत्) महाप्रलयकाले बीजरूपं कृतवान्॥८॥

भावार्थः–१ इस परमेश्वर का २ वह ३ बल ४ प्रदीप्त होता है ५ जिस कारण ६ परमेश्वर ने ७ दोनों ८ पृथिवी स्वर्ग अर्थात् ब्रह्माण्ड को ९,१० चर्म के समान ११ महाप्रलय काल पर बीज रूप किया॥

शुनःशेपऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

अयमु ते समतसि कपोत इव गर्भधिम्। वचस्तच्चिन्न ओहसे॥९॥ ६९

हे परमेश्वर (अयम्) जीवात्मा (ते) (उ) तवैव तं (समतसि) सम्यक् सातत्येन प्राप्नोपि (इव) यथा (कपोतः) कस्य मनोः प्रजापतेर्मा

ह्यानौका। कंवैप्रजापतिः श० २।५।२।१३ (गर्भंधिम्) गर्भस्थब्रह्माण्डस्यधारकंमहासमुद्रम् (तच्चित्) तस्मादेवकारणात् (नः) अस्माकं (वचः) (ओहसे) माप्नोषि॥९॥

भाषार्थः-हेपरमेश्वर १ यहजीवात्मा २,३ तेराहीउसको ४ भलेप्रकारनिरन्तर प्राप्तकरतेहो ५ जैसे ६ प्रजापतिकी महा नौकाने ७ ब्रह्माण्डके धारकमहासमुद्रको ८ उसीकारणसे ९ हमारे १० वचनोंको ११ प्राप्त करते हो॥९॥

वातायनउलनऋषिर्गायत्री छन्दो वातो देवता-

वात आ वातु भेषजं शम्भु मयो भु नो हृदे। प्र न आयूंषि तारिषत्॥१०॥ ७०

(वातः) प्राणः। प्राणोवैवातः श० ९।५।२।१४ (नः) अस्माकं (हृदे) हृदयाय (शम्भु) संसाररोगशमनस्यभावयितृ (मयोभु) मोक्षसुखस्यचभावयितृ (भेषजम्) औषधममृतरसम्वा (आवातु) आगमयतु (नः) अस्माकं (आयूंषि) (प्रतारिषत्) प्रवर्द्धयतु प्राणायामैः॥१०

भाषार्थः-१ प्राण २ हमारे ३ हृदयकेलिये ४ संसाररोगनाशक ५ मोक्षसुखकेदाता ६ औषधिवाअमृतरसको ७ प्राप्तकराओ ८ हमारी ९ आयुको १० बढ़ाओ प्राणायामकेद्वारा॥१०॥ इतिश्रीभृगुवंशावतंसश्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्मविरचितेसामवेदीयब्रह्मभाष्येछन्दोव्याख्यानेद्वितीयाध्यायस्यसप्तमःखंडः

अथाष्टमः खण्डः

कण्वऋषिर्गायत्री छन्दो वरुणाद्या देवताः

यं रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रो अर्यमा। नकिः स दभ्यते जनः॥१॥ (प्रचेतसः) प्रकृष्टज्ञानाः (वरुणः) अपानः (मित्रः) प्राणः। प्राणोवैमित्रः। अपानो वरुणः श० १२।९।१२ (अर्यमा) मनः पितरः श० १४।४।३।१३ (यम्) (रक्षन्ति) (स) (जनः) योगी (किः) (क) परमेश्वरः (इ) शक्तिः प्रकृतिपुरुषरूपः सन्नपि (न) (दभ्यते) नहिंस्यते॥२॥

भावार्थः – १ महात्मानी २ अपान ३ प्राण ४ मन ५ जिसको ६ रक्षा करतेहैं ७ वह ८ योगी ९ प्रकृतिपुरुष रूपहोताभी १०,११ हिंसितनहीं होताहै

वत्सऋषि गोयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

गव्योषुणो यथा पुराश्वयोत रथया। वरिवस्या महोनाम् ॥२॥७२

(अ) हे सर्वव्यापिन् (यथा) (पुरा) पूर्वकाले यथा तथा (नः) अस्माकं (महोनाम्) मघंहविर्लक्षणं धनंयेषामस्तितेषां यजमानानां (गव्यो) महावाग्दानेच्छया (अश्वया) समष्टिभावदानेच्छया। असौवाऽआदित्यएषोऽश्वः श० ६।३।१।२९ (उत) अपिच (रथया) योगरथदानेच्छया (सुवरिवस्य) परिचर आगच्छेत्यर्थः ॥२॥

भावार्थः – १ हे सर्वव्यापिन् २ जैसे ३ पूर्वकालमें तैसेही ४ हमारे ५ यजमानोंके ६ महावाग्दान की इच्छा ७ और समष्टिभावदानकी इच्छा ८ और ९ योगरथदान की इच्छासे १० आओ —॥ २॥

वत्सऋषि गोयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

इमास्तइन्द्र पृश्नयो घृतंदुहत आशिरम्। एनामृतस्य पिप्युषीः ॥ ३॥ ७३

हे (इन्द्र) परमेश्वर (ते) त्वदीयाः (इमाः) (पृश्नयः) महावाचः (एनाम्) (घृतम्) इन्द्रियशक्तिसमूहं। प्राणः पयः शीर्षस्तन्प्राणं श० ६।५।४।१५ (ऋतस्य) सत्यस्यब्रह्मणः (पिप्युषीः) वर्धयित्रीर्वृद्धिदत्रीः (आशिरम्) मानससूर्यञ्च श० १४।२।१।१० (आदुहत) दुहन्ति देहाभिमानात्पृथक् कुर्वन्ति ॥३॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ आपके ३ ये ४ महावाक् ५ इस ६ इन्द्रिय-समूह ७,८ ब्रह्मवर्द्धक बुद्धिवृत्तियों ९ और मानस सूर्यको १० देहाभिमान से पृथक् करती हैं ॥ ३॥

शुनकस्य ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

अया धिया च गव्यया पुरुणामन्पुरुष्टुत। यत्सोमे सोम आभुवः ॥ ४ ॥ १४

हे (पुरुणामन्) बहुनामन् (पुरुष्टुत) बहुभिः स्तुत परमेश्वर (त्वं) यस्मात्त्वं (सोमे) (सोमे) प्रत्येकात्म प्रति बिंबे (आभुवः) अन्तर्यामि रूपेण प्रादुर्भूतोसि तस्मात् (अया) आत्माकारया (गव्यया) महा वागिच्छया (धिया) प्रज्ञया (च) प्रादुर्भव ॥ ४ ॥

भाषार्थः – १ हे बहुनाम वाले २ बहुत से स्तुत परमेश्वर ३ जिस कारण तुम ४,५ प्रत्येक आत्म प्रतिबिंब में ६ अन्तर्यामी रूपसे प्रकट हुए हो उस कारण ७ आत्माकार ८ महावाक् की इच्छा ९ और प्रज्ञा के द्वारा १० प्रकट हूजिये ॥ ४॥ मधुच्छन्दा ऋषि गायत्री छन्दः सरस्वती देवता

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥ ५ ॥ १५

(पावका) शोधयित्री (वाजिनीवती) योगक्रियावती (धियावसुः) ज्ञानधना (सरस्वती) वागधिष्ठात्री देवी (वाजेभिः) प्राणाद्यन्नैर्निमित्त भूतैः (नः) अस्मदीयं (यज्ञम्) योग यज्ञं (वष्टु) वष्टु ॥ ५ ॥

(भाषार्थः)

१ शोधका २ योगक्रियावती ३ ज्ञान धना ४ वागधिष्ठात्री देवी ५ प्राण आदि अन्नों के निमित्त ६ हमारे ७ योग यज्ञ को ८ चाहो ॥ ५॥

वामदेवऋषि र्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता॰

कद्दू मन्न्नाहुषीष्वा इन्द्रे ॐ सोमस्य तर्पयात्
सनो वसून्या भरात् ॥ ६ ॥ ७६

(कः) अन्तर्य्यामी परमेश्वरः कं वै प्रजापतिः श॰ २।५।२।१३ (नहुषीषु) मनुष्य सम्बन्धि योग यज्ञेषु । नहुष इति मनुष्यनाम नि॰ (इमम्) (इन्द्रम्) महा पुरुषं (सोमस्य) सोमेनात्म प्रतिविंवेन (आतर्पयात्) आतर्पयति प्रीणाति तस्मात् (सः) अन्तर्यामी (नः) अस्माकं (वसूनि) धनानि (आभरत्) आभरत् आहरतु स्वायत्तानि करोतु धनत्यागेहि मुक्ति लाभ इत्यर्थः ॥ ६ ॥

भाषार्थः – १ अन्तर्यामी परमेश्वर २ मनुष्य सम्बंधि योग यज्ञों में ३ इस ४ महा पुरुषको ५ सोम वा आत्म प्रति विंवके द्वारा ६ तृप्त करता है ७ वह अन्तर्यामी ८ हमारे ९ धनोंको १० अपनाही करो अर्थात् धनत्याग मेंही मुक्तिलाभहै ॥ ६ ॥

इरिमिठ ऋषि र्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता॰

आयाहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिवा इमम् ।
एदं वर्हिः सदो मम ॥ ७ ॥ ७७

हे (इन्द्र) इन्द्र परमेश्वर वा (आयाहि) आगच्छ (हि) यस्माद्वयं (ते) त्वदर्थं (सुषुमः) सोमं मात्मप्रति विंवं वाऽभिषुतवन्तः (इमम्) (सोमम्) सोम मात्मप्रति विम्वंवा (पिव) (मम) मदीयं (इदम्) (वर्हिः) वेद्यां मास्तीर्णं दर्भं सुषुम्णाम्वा (आसदः) आसीद अभिनिषीद ॥ ७ ॥ ७७

भाषार्थः – १ हे इन्द्र वा परमेश्वर २ आओ ३ जिस कारण हमने ४ आप

केलिये५सोमवा आत्म प्रतिविंबका अभिषवकिया ६ इस७ सोमवा आत्म प्रतिविंबको ८ पानकरो ९ मेरी १० इस ११ वेदी में आस्तीर्णदर्भवा सुषुम्णा पर १२ बैठो—॥७॥७७

वारुणिः सत्यधृतिर्ऋषिर्गायत्री छन्दो मित्रादयोदेवताः

महि त्रीणामवरस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः। दुराधर्षं वरुणस्य ॥८॥७८

तस्मिन्काले(त्रीणाम्) त्रयाणां(मित्रस्य) मित्रस्य प्राणस्य वा(अर्यम्णः) अर्यम्णः। मनसोवा(वरुणस्य) वरुणस्यापानस्यवा(द्युक्षम्)(द्यु) स्वर्गः(क्ष) निवासः प्राप्तिश्च स्वर्गे निवासो प्राप्तिर्वा यस्मिंस्तं(दुराधर्षम्) अन्यैर्धर्षितुं बाधितुमशक्यं(महि) महत्(अवः) अवः रक्षणं। विसर्जनीयस्य रेफादेशश्छान्दसः(अस्तु)॥८॥

भावार्थः—उससमयपर१तीनों२मित्रवाप्राण३अर्यमावामन४वरुणवाअपानका५स्वर्गप्रापक६अबाधित७,८महारक्षण९प्राप्तहोवै॥८॥

वत्सऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

त्वावतः पुरूवसो वयमिन्द्र प्रणेतः। स्मसि स्थातर्हरीणाम्॥९॥७९

हे(पुरूवसो) बहुधन(प्रणेतः) भक्तानां स्वामिन्(हरीणाम्) ब्रह्मविष्णु महेशरूपाणां वैष्णवरूपाणाम्वा(स्थातः)(इन्द्र) परमेश्वर(वयम्)(त्वावतः) त्वत्सदृशस्येश्वरस्यैव। सादृश्ये वतुप(स्मसि) नवस्वभूताःस्मः॥९॥

भावार्थः—१हेबहुधन२भक्तोंकेस्वामी३ब्रह्माविष्णुमहेशवावै

ष्णव रूपोंके ४ धारक ५ परमेश्वर ६ हम ७ तुमसे ईश्वर केही ८ हैं - ॥ ९॥

अथाधिदैवम् - हे (पुरूवसो) बहुधन (मघोनः) लोकानांमघोनः (हरीणाम्) अश्वानां (स्थातः) (इन्द्र) (वयम्) (त्वावतः) त्वत्सदृशस्येश्वरस्यैव (स्मसि) नवस्वभूताः स्मः ९

भावार्थः - १ हे बहुधन २ लोकोंकेमघोना ३ घोड़ों पर ४ चढ़ने वाले ५ इन्द्र ६ हम ७ तुमसे ईश्वर केही ८ हैं॥ ९॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने द्वितीयाध्यायस्याष्टमः खण्डः ८

इति द्वितीयः प्रपाठकः २

अथनवमः खण्डः। अथतृतीयः प्रपाठकः

प्रगाथऋषि र्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता -

उत्वा मदन्तु सोमाः कृणुष्वराधोअद्रिवः। अव ब्रह्मद्विषोजहि॥ १॥ ८०

हे (अद्रिवः) वज्रवन्निन्द्र यद्वा अद्रिः सूर्यः सर्विश्वात्मा। ब्रह्मण्डानांधारक परमेश्वर (सोमाः) सोमा आत्मप्रति विंवा वा (त्वा) (उ) त्वामेव (मदन्तु) (राधः) धनं योग धनम्वा (कृणुष्व) कुरुप्रयच्छ (ब्रह्मद्विषः) ब्राह्मणानां ब्रह्मज्ञानिनाम्वा द्वेष्टीन् (अवजहि) अधोगमं नरकंनय। हन्ते र्गत्यर्थस्येदं रूपम्॥ १॥ — ॥ ८०॥

भावार्थः - १ हे वज्रधरेन्द्र वा ब्रह्माण्डों के धारक परमेश्वर २ सोम वा आत्मप्रतिविंव ३,४ तुमकोही ५ हर्षित करो ६ तुम धन वा योगधन को ७ दो ८ ब्राह्मण वा ब्रह्मज्ञानियों के द्वेषीओ को ९ नरक में प्राप्त करो — ॥ १॥

विश्वामित्र ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे। इन्द्र त्वादातमिद्यशः ॥२॥८१

हे (गिर्वणः) गीर्भिः वाग्भिः स्तुतिभिः वननीय सम्भजनीय (इन्द्र) परमेश्वर (नः) अस्माकं (सुतम्) अभिषुतमात्म मतिविम्बं (पाहि) संसाराद्रक्ष (मधोः) (धाराभिः) प्राणधाराभिः। प्राणो वै मधु श० १४।१।३।३० (अज्यसे) सिच्यसे (यशः) मया समर्पित मुदकमन्नं धनञ्च नि० (त्वादातम्) पूर्वं त्वया गृहीतं (इत्) एव यथा भगवद्वाक्यं यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोमि ददासि यत् यत्त पस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् शुभाशुभ फलैरेव मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः सन्न्यास योग युक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसीति ॥२॥

भाषार्थः – १ हे स्तुति से सम्भजनीय २ परमेश्वर ३ हमारे ४ अभिषुत आत्म मतिविंब को ५ संसार से रक्षा करो ६,७ प्राणधाराओं से ८ सिंचते हो ९ मुझ से समर्पित अन्न जल धन १०,११ पहिले ही तुम से अंगीकृत है ॥२॥

वामदेव ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

सदा व इन्द्रश्चर्कृषदा उपो नु स सपर्यन्। न देवो वृतः शूर इन्द्रः ॥३॥८२

मन्त्रः कथयति (सः) (इन्द्रः) परमेश्वरः सदा (वः) युष्माकं (उपो) समीप एव (सपर्यन्) परिचरन् प्रीतिमुत्पादयन् (आचर्कृषत्) आकर्षणं कृतवान् (नु) परन्तु (देवः) माया क्रीडाकैः क्रीडाशीलः (शूरः) मायोपाधि युद्धे कुशलः (इन्द्रः) परमे

श्वरः (न) (वृनः) अभ्यार्थितः ॥ ३ ॥

भाषार्थः – मंत्र कहता है १ उस २ परमेश्वर ने ३ तुम्हारे ४ समीपही ५ अन्तर्यामी रूपसे मीन्युत्पादन करते हुए ६ आकर्षण किया ७ परन्तु ८ मायाके खिलोनों से क्रीडन शील ९ मायोपाधिके युद्धमें कुशल १० परमेश्वर ११.१२ तुमसे प्रार्थित नही हुआ ॥ ३ ॥

श्रुत कक्ष ऋषि र्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

आ त्वा विशन्त्विन्दवः समुद्रमिव सिन्धवः। न त्वामिन्द्राति रिच्यते ॥ ४ ॥ ८३

हे (इन्द्र) परमेश्वर (इन्दवः) मनो वृत्तयः। मनोचन्द्रमा श्० १४।४।१।१७ (त्वा) त्वां (आविशन्तु) (इव) यथा (सिन्धवः) स्यंदन शीला नद्यः (समुद्रम्) कश्चित् (त्वाम्) (न) (अतिरिच्यते) त्वत्तोधिको नास्ति सर्वेषां त्वदंशत्वात् ॥ ४ ॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ मनकी वृत्ति ३ तुममें ४ प्रवेश करो ५ जैसे ६ नदियां ७ समुद्र में कोई ८ तुमसे ९ अधिक नहीं है अर्थात् तुम सबसे अधिक हो सब तुम्हारे ही अंश हैं ॥ ४ ॥

मधुच्छन्दा ऋषि र्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः। इन्द्रं वाणीरनूषत ॥ ५ ॥ ८४

(गाथिनः) गीयमान साम युक्ता उद्गातारः (बृहत्) बृहता साम्ना (इन्द्रम्) परमेश्वरं (इत्) एव (अनूषत) स्तुवन्ति (अर्किणः) अर्चन हेतु मन्त्रोपेता होतारः (अर्केभिः) उक्थ रूपैर्मन्त्रैः स्तुवन्ति (वाणीः) महावाचः (इन्द्रम्) परमेश्वर मेव स्तुवन्ति तस्या

न्याभावात् ॥५॥

भाषार्थः - १ सामगान करनेवाले उद्गाता २ बृहत्सामद्वारा ३ परमेश्वरको ४ही ५ स्तुत करते हैं ६ होता लोग ७ उक्थ रूप मंत्रों से स्तुत करते हैं ८ महावाक् ९ परमेश्वर ही की स्तुति करते हैं ॥ ५॥

श्रुतकक्षऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्र इषे ददातु न ऋभुक्षणमृभुꣳ रयिम्। वाजी ददातु वाजिनम् ॥६॥ ८५

(इन्द्रः) परमेश्वरः (इषे) अमृत वृष्ट्यै (ऋभुक्षणम्) मेधाविनां क्षणमुत्सवरूपं (ऋभुम्) उरुभासमानं (रयिम्) योगधनं (नः) अस्मभ्यम् (ददातु) तथा (वाजी) सूर्य रूपः परमेश्वरः (वाजिनम्) स्वकीयात्मानं (ददातु) समाधि रूपलाभाय वाजी वा अश्वः नि० २।२८ असौवा आदित्य एषो ऽश्वः श० ६।३।१।२९ – ॥३॥

भाषार्थः - १ परमेश्वर २ अमृत वृष्टि के लिये ३ मेधावियों के उत्सव रूप ४ बहुभासमान ५ योगधन को ६ हमें ७ दे तथा ८ सूर्यरूप परमेश्वर ९ अपनी आत्मा को १० समाधि रूपलाभ के लिये हमे दो – ॥ ६॥

गृत्समदऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्रो अङ्ग महद्भयमभी षदप चुच्यवत्। स हि स्थिरो विचर्षणिः ॥७॥ ८६

(इन्द्रः) परमेश्वरः (महत्) (भयम्) संसारभयं (अङ्ग) क्षिप्रं (अभीषत्) अभिभवति अभिभवद्वा (अपचुच्यवत्) अपच्यावयति अपच्यावयेद्वा (हि) यस्मात्कारणात् (सः) (स्थिरः) अचलः अनन्तत्वात् (विचर्षणिः) सर्वस्य द्रष्टा सर्वगतत्वात् ॥७॥

भाषार्थः—१ परमेश्वर २,३ संसारभयको ४ शीघ्र ५ तिरस्कार करता है ६ और दूर करताहै ७ जिस कारण ८ वह ९ अनन्त होनेसे अचल १० सर्वगत होनेसे सब का द्रष्टा है ॥७॥

भरद्वाज ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

इमो उत्वा सुते सुते नक्षन्ते गिर्वणो गिरः। गावो वत्संन्न धेनवः ॥८॥ ८७

(हे (गिर्वणः) वेदवाग्भिर्वननीयसम्भजनीयपरमेश्वर (सुते सुते) सोमे चात्मप्रतिबिंबेऽभिषुते सति (इमाः) (गिरः) वेदवाचः (त्वा) (उ) त्वामेव (नक्षन्ते) व्याप्नुवन्नित्वदन्याभावात् (न) यथा (धेनवः) (गावः) (वत्सम्) व्याप्नुवन्ति ॥८॥

भाषार्थः—१ हे वेद वचनों से संभजनीय परमेश्वर २ सोम वा आत्मप्रतिबिंब के अभिषुत होनेपर ३ ये ४ वेदवचन ५,६ तुमको ही ७ व्याप्त करते हैं ८ जैसे ९,१० दुग्धदाता गौ वत्स को ॥८॥

भरद्वाज ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रापूषणा देवते·

इन्द्रानुपूषणा वयं सख्याय स्वस्तये। हुवेम वाजसातये ॥९॥ ८८

(वयम्) (स्वस्तये) कल्याणाय (सख्याय) सखिभावलाभाय (वाजसातये) प्राणेन्द्रियरूपान्नस्य सम्भजनाय (नु) क्षिप्रं (इन्द्रा पूषणा) महापुरुषं विराजञ्च (हवेम) आह्वयामः स्तवमो वाह्वयते ह्वयतिवा अर्चतिकर्मस्वपिपठ्यते नि॰ ३।१४=॥ ९

भाषार्थः—१ हम २ कल्याण ३ सखिभाव ४ और प्राण इन्द्रियरूप अन्न के अर्पणार्थ ५ शीघ्र ६ महापुरुष और विराट् को ७ आह्वान करते हैं ॥९

वामदेवऋषिः गायत्रीछन्दः इन्द्रो देवता॰

नकिरिन्द्र त्वदुत्तरं नज्यायो अस्ति वृत्रहन्।
नक्येवं यथा त्वम् ॥१०॥ ८९

हे (वृत्रहन्) पापनाशक (इन्द्र) परमेश्वर (नकि) सृष्टौ कोऽपि नहीं
सृष्टिवाचकं किं सप्तम्यन्तं पदं (त्वत्) त्वत्तः (उत्तरः) श्रेष्ठः (न)
(अस्ति) (न) (ज्यायः) ज्यायान् प्रशस्ततरः (यथा) यादृशः
(त्वम्) तादृशः (नकि) सृष्टौ (नैव) ॥१०॥

भावार्थः – १हे पापनाशक २परमेश्वर ३ सृष्टिमें ४ आपसे ५ श्रेष्ठ
६नहीं ७ है ८ न ९ प्रशस्ततर है १० जैसे ११ तुम हो वैसा १२ सृष्टिमें १३ न॰
हीहै॥१०॥

इतिश्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते
सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य नवमः खण्डः

अथ दशमः खण्डः

त्रिशोक ऋषि गायत्री छन्दो महा नारायणो देवता॰

तरणिं वो जनानां त्रदं वाजस्य गोमतः। समा
नमु प्रशंसिषम् ॥१॥ ९०

वेदः कथयति हे भक्ताः (वः) युष्माकं (जनानाम्) मनुष्याणां॰
(तरणिम्) संसार सागरात्तारकं (त्रदम्) कामादीनां नर्दयि
तारं (वाजस्य) भक्तेः भोग्यस्य (गोमतः) गोलोकस्य (समान
म्) सम्यक् प्रापकं (उ) महानारायणमेव (प्रशंसिषम्) प्र
कर्षेण स्तौमि ॥१॥

भावार्थः – वेद कहता है हे भक्तो १ तुम २ मनुष्यों के ३ संसार सागर

सेतारक ४ काम आदिके हिंसक ५ भक्तोंके भोग्य ६ गोलोक के ७ मापक ८ महानारायण को ही ९ स्तुत करता हूं उसका अन्य न होनेसे॥ १॥

मधुच्छन्दा ऋषि र्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

अस्मु प्रमिन्द्र तेगिरः प्रति त्वा मुदहासत। सजोषा वृषभं पतिम्॥ २॥ ९१

हे (इन्द्र) परमेश्वर (ते) त्वदीयाः (गिरः) मन्त्र रूपाः (अस्मुग्रम्) उच्चारितवानस्मिताः (त्वाम्) (वृषभम्) धर्मार्थ काम मोक्षाण वर्षितारं (पतिम्) स्वामिनं (प्रति) (उदहासत) उत्कर्षेण प्रानुवन् तादृशी गिरस्त्वं (सजोषाः) सेवितवानसि वैदिक मन्त्रा स्त्वामेव स्तुवन्ति नान्य मित्यर्थः॥ २॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ आपके ३ मन्त्ररूप बचनों को ४ मैंने उच्चारण किया ५ उन्होंने तुझ ६ धर्मार्थ काम मोक्षके दाता ७ स्वामी को ८, ९ उत्कर्षा के साथ प्राप्त किया तुमने १० उनको सेवन किया है अर्थात् वैदिक मंत्र आपकी ही स्तुति करते हैं न दूसरे की॥ २॥

वत्स ऋषि र्गायत्री छन्दो मरुदर्यमणौ देवते·

सुनीथो घा स मर्त्यो यं मरुतो यमर्यमा। मित्राः स्पान्त्यद्रुहः॥ ३॥ ९२

(सः) (मर्त्यः) मनुष्यः (घो) मेधया (सुनीथः) सुप्रशस्तः (यम्) (अद्रुहः) अद्रोग्धारः (मित्राः) मित्रभूताः (मरुतः) मरुतः प्राणा वा (पान्ति) रक्षन्ति (यम्) (अर्यमा) देवः मनोवा पाति॥ ३॥

भाषार्थः – १ वह २ मनुष्य ३ बुद्धिद्वारा ४ सुप्रशस्त है ५ जिसको ६ द्रोहन करनेवाले ७ मित्ररूप ८ मरुद्गण वा प्राण ९ रक्षा करते हैं १० जिस

को ऐश्वर्य मादेवता वामन रक्षाकरता है—॥ ३॥

त्रिशोक ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

यदीडा विन्द्र यत् स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम्।
वसुस्पार्हन्तदाभर॥ ४ ॥ ८३

हे (इन्द्र) परमेश्वर (वीडौ) प्राणस्यपूरके (व) प्राणः (ईडि) अध्येषणाकर्मा (यत्) योगधनं (स्थिरे) कुम्भके (यत्) योगधनं (परिशाने) समन्तात्प्राण दानं यस्मिन्तस्मिन् रेचके। शाणदाने (यत्) योगधनं (पराभृतम्) सम्भृतम् (तत्) (स्पार्हम्) स्पृहणीयं (वसु) योगधनं (आभर) आहरदेहि॥ ४॥

भावार्थः –१ हे परमेश्वर २ प्राणके पूरक में ३ जो योगधन ४ कुम्भकमें ५ जोयोगधन ६ रेचक मे ७ जो योगधन ८ सम्भृत है ९ उस १० स्पृहणीय ११ योगधनको १२ दीजिये॥ ४॥

सुकक्ष ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

श्रुतं वो वृत्रहन्तमं प्रशर्द्धं चर्षणीनाम्। आशिषे राधसे महे॥ ५॥ ८४

मन्त्रः कथयति (वः) युष्माकं (चर्षणीनाम्) मनुष्याणां (महे) महते (राधसे) योगैश्वर्याय (श्रुतम्) विख्यातं (वृत्रहन्तमम्) अतिशयेन पापस्यहन्तारं (शर्द्धम्) योगबलं नि॰ ३। ४ (आशिषे) प्रकर्षेण शास्मि। शास शासने। आशंसन। आशीर्वाद प्रार्थने॥ ५॥

भावार्थः

मन्त्र कहताहै १ तुम २ मनुष्योंके ३,४ योगैश्वर्यकेलिये ५ विख्यात ६ अतिशयपापनाशक ७ योगबलको ८ परमेश्वर से चाहताहूं॥ ५॥

वामदेवऋषि र्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

अरन्त इन्द्र श्रवसे गमेम शूर त्वावतः। अरꣳ
शक्र परेमणि ॥ ६॥ ९५

हे (शूर) वीर (इन्द्र) परमेश्वर (ते) तव (श्रवसे) विराड्रूपान्नाय अन्नं वै विराट् श० १२।२।४।५ (अरम्) (अ) कृष्णाः (र) राधारूपा कृष्ण रूपं त्वां (गमेम) गच्छेम प्राप्नुयाम हे (शक्र) सर्व शक्तिमन् (त्वावतः) त्वत्सदृशस्य (परेमणि) परमुत्कृष्टं स्थानं गम्यते येन सः परेमा यज्ञस्तस्मिन्भक्ति यज्ञे (अरम्) राधाकृष्णरूपं त्वां प्राप्नुयाम ॥ ६ ॥ ९५

भावार्थः – १ हे वीर २ परमेश्वर ३ आपके ४ विराट् रूप अन्न के लिये ५ राधाकृष्ण रूप तुमको ६ हम प्राप्त करें ७ हे सर्व शक्तिमन् ८ आपसे के ९ भक्ति यज्ञ में १० राधाकृष्ण रूप तुम को प्राप्त करें – ॥ ६ ॥

विश्वामित्र ऋषि र्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता–

धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम्। इन्द्र
प्रातर्जुषस्व नः ॥ ७ ॥ ९६

हे (इन्द्र) (धानावन्तम्) धाना भृष्टयवाः तद्वन्तं (करम्भिणम्) करम्भो दधिमिश्राः सक्तवः तद्वन्तं (अपूपवन्तम्) सवनीय पुरोडाशोपेतं (उक्थिनम्) स्तोत्र युक्तं (नः) अस्माकं सोमं (प्रातः) प्रातः सवने (जुषस्व) सेवस्व ॥ ७ ॥

भावार्थः – १ हे इन्द्र २ भृष्ट यव युक्त ३ सक्तु युक्त ४ सवनीय पुरोडाश से युक्त ५ स्तोत्र युक्त ६ हमारे सोम को ७ प्रातः सवन में ८

अथाध्यात्मम् – हे (इन्द्र) परमेश्वर (नः) अस्माकं

धाधारणो धाना धारणात्तद्वन्तं (करम्भिणम्) केन कामेन रम्यते सिच्यतेनेतत्करम्भं मनस्तद्वन्तं (अपूपवन्तम्) पूरणोधे भुद्धिं नपाति सइन्द्रियसमूहस्तद्वन्तं (उक्थिनम्) प्राणसम्बन्धिनं मात्मभति विंबं प्राणोवा उक्थं श० १४।८।१४।१ अयु छंहवा अस्येपोऽनिरुक्त आत्मा यदुक्थं श०१४।८।१४।१ (प्रातः) समाधिकाले (जुषस्व) सेवस्व॥७॥

भाषार्थः – १ हेपरमेश्वर २ हमारे ३ धारणावान ४ मनवान ५ इन्द्रियसमूहयुक्त ६ प्राणसम्बन्धी आत्मभति विंबको ७ समाधिकालपर ८ सेवनकरो॥७॥ गोषूक्त्यश्वसूक्तिनावृषी गायत्रीछन्द इन्द्रो देवता।

अपाम्फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्त्तयः। विश्वा यदजय स्पृधः॥८॥ ८७

हे (इन्द्र) (यद्) यदात्वं (विश्वाः) सर्वाः (स्पृधः) स्पर्द्धमाना आसुरीः सेनाः (अजयः) जितवानसि तद् (अपाम्) (फेनेन) वज्रीभूतेन (नमुचेः) असुरस्य (शिरः) (उदवर्त्तयः) शरीरादुद्गतमवर्त्तयः अच्छैत्सीत्यर्थः॥८॥

भाषार्थः – १ हेइन्द्र २ जबतुमने ३ सब ४ स्पर्द्धमान आसुरी सेनाको ५ जीताहैतब ६,७ वज्ररूपजलफेनसे ८ नमुचि असुरके ९ शिरको १० तुमने काटा॥८॥

अथाध्यात्मम्

मन्त्रोपदेशः हे (इन्द्र) यजमान। इन्द्रो वै यजमानः श०१।१।२।११ (यद्) यदात्वं (विश्वाः) सर्वाः (स्पृधः) स्पर्द्धमानाः कामसेनाः (अजयः) जितवानसि तदा (अपाम्) कमलान्तरिक्षाणां (फेनेन) ज्ञानवज्रेण (नमुचेः) पापस्य। पाप्मा वै नमुचिः श०१२

९ १०
७।३।४ (शिरः) (उदवर्त्तयः) ॥८॥

भाषार्थः – मन्त्रकहता है १ हे यजमान २ जबतुमने ३ सब ४ स्पर्द्धमानकामसेनाको ५ जीतातब ६ कमलान्तरिक्षोंके ७ ज्ञान वज्रसे ८ पापके ९ शिरकोकाटो –॥८॥

वामदेवऋषि गायत्रीछन्द इन्द्रो देवता

इमेतइन्द्र सोमाः सुतासो येचसोत्वाः। तेषां मत्स्व प्रभूवसो ॥९॥ ९९

हे (प्रभूवसो) प्रभूतधनवन् (इन्द्र) इन्द्रपरमेश्वरवा (ये) (सोत्वाः) ग्रभिषोतव्याः (सोमाः) सोमाः। इन्द्रियात्मप्रतिबिंवाव (ते) (इमे) (सुतासः) ग्रभिषुताः (तेषाम्) मदेन (मत्स्व) हृष्टोभव॥९॥

भाषार्थः

१ हेवहुधनवान २ इन्द्रवापरमेश्वर ३ जो ४ ग्रभिषोतव्य ५ सोमवा इन्द्रियग्रात्मप्रतिबिंवहैं ६ वे ७ ये ८ ग्रभिषुत हुए ९ इनके १० मदसे हर्षितहूजिये॥९॥ श्रुतकक्षऋषि गायत्रीछन्द इन्द्रो देवता

तुभ्यं सुतासः सोमा स्तीर्णं वर्हिर्विभावसो। स्तोतृभ्य इन्द्र मृडय ॥१०॥ ९९

हे (विभावसो) महादीप्तिधन (इन्द्र) परमेश्वर (तुभ्यम्) त्वदर्थं (सोमाः) इन्द्रियात्मप्रतिबिंवाः (सुतासः) ग्रभिषुताः (वर्हिः) सुषुम्णा (स्तीर्णम्) प्रसारिता (स्तोतृभ्यः) ग्रस्मभ्यं (मृडय) मोक्षानन्दं देहि॥१०॥

भाषार्थः – १ हेमहादीप्तिधन २ परमेश्वर ३ ग्रापकेलिये ४ इन्द्रियग्रात्मप्रतिबिंव ५ ग्रभिषुत हुए ६ सुषुम्णा ७ प्रसारित है ८ हमस्तोताग्रोंकेलिये

८ मोक्षानन्द दीजिये ॥ १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य दशमः खण्डः

अथैकादशः खण्डः

शुनः शेप ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

आ॒व इन्द्रं॒ क्रि॒विं य॒था वा॒जय॒न्तः श॒तक्र॑तुम्। मंहि॑ष्ठं सिञ्च॒ इन्दु॑भिः ॥ १ ॥ १००

(वः) निवृत्तात्मा अहं (शतक्रतुम्) बहुकर्माणं (मंहिष्ठम्) पूज्जनीयतमं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (इन्दुभिः) प्राणेन्द्रियात्मप्रतिबिंबैः सोमो वै प्राट् ३।२।४।८ प्राणो वै सोमः श०७।३।१।४५ इत्यादि· (आसिञ्चे) (यथा) (वाजयन्तः) अन्न मिच्छन्तः पुरुषाः (क्रिविम्) कृषिं जलेन पूरयन्ति। कृतीच्छेदने कृत्यते छिद्यते खन्यते इति क्रिविः कृषिः ॥ १ ॥

भाषार्थः – १ निवृत्तात्मा मैं २ बहुकर्मा ३ पूज्जनीयतम ४ परमेश्वरको ५ प्राण इन्द्रिय आत्म प्रतिबिंब से ६ सींचता हूं ७ जैसे ८ अन्नको चाहने पुरुष ९ खेतको जलसे भरते हैं ॥ १ ॥

श्रुतकक्षऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

अ॒तो॑ष्वि॒न्दि॑न्द्र॒ न उप॑ या॒ह्ये॒ शतवा॑जया। इ॒षा स॒हस्र॑वाजया ॥ २ ॥ १०१

ईशोपदेशः हे (इन्द्र) यजमान जीवात्मन् (अतश्चित्) मानसकर्मणा देव (शतवाजया) शं कल्याणं तनोतीति शतं तया अन्नाह्नशब्दवता (सहस्रवाजया) सहस्राह्न ज्योतिस्तं राति ददा·

नीति सहस्त्वं तया ऽ नाहत शब्द वता। वाजानिः स्वने (इषो) अमृत रसेन सिक्तस्त्वं यथा श्रुतिः इषेऽत्वोर्जेत्वेति वृष्ट्यैतदाहुयो वृष्टादूर्ग्रसो जायते तस्मैतदाह।१।७।१।२ (नः) अस्माकं (उपायाहि) समीपमा गच्छ॥२॥

भाषार्थः – ईश्वर कहते हैं १ हे यजमान २ मानस कमल से ही ३ कल्याण दाता अनाहत शब्द वान ४ ब्राह्म ज्योति के दाता अनाहत शब्दवान ५ अमृत रस से सिक्त तुम ६ हमारे ७ समीप आओ॥२॥

विशोक ऋषि र्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

ओवुन्दं वृत्रहो ददे जातः पृच्छाद्वि मातरम्। क उग्राः के ह शृण्विरे॥३॥१०२

(जातः) योगेन संस्कृतः (वृत्रहो) पापस्य नाशक आत्मा रूप यजमानोऽहं (वुन्दम्) जीवात्मा रूपमिषुं वुन्द इषुर्भवतीति यास्क ६।३२।३३ (आददे) यस्मात्स जीवः (मातरम्) विद्या रूपां मातरं (विपृच्छात्) पृष्टवान् (के) पुरुषाः (उग्राः) हिंसकाः (के) पुरुषाः (ह) प्रसिद्धो (शृण्विरे) भक्तिस्नान शास्त्राणि॥३॥ **भाषार्थः**

१ योग से संस्कृत २ पापनाशक आत्मा रूप यजमान मैं ३ जीवात्मा रूप बाण को ग्रहण करता हूं जिस कारण उस जीव ने ४ विद्यारूप माता को ६ पूछा ७ कौन पुरुष ८ हिंसक हैं ९ किन पुरुषों ने १० प्रत्यक्ष में ११ भक्ति स्नान शास्त्रों को सुना॥३॥

मेधातिथि ऋषि र्गायत्री छन्दः प्राणो देवता·

दृवदुक्थं हुवामहे स्तम्भे करस्नं मूतये। साधः कृण्वन्त मवसे॥४॥१०३

(ऊतये) संसाराद्रक्षणाय (स्तम्भे करस्नं) प्रलम्बवाहुं नि० ६।१७

(भवेसे) लोकस्य पालनाय (साधः) योगसाधनं (कृण्वन्तम्) कुर्वन्तम् (तृवदुस्थं) मुहुदुस्थं समष्टिप्राणं। प्राणोवाऽउस्थं श० १४।८।१४।१ (हवामहे) आह्वयामः॥४॥

भावार्थः —१संसार से रक्षा के लिये २मलंबबाहु ३लोक पालन के लिये ४योगसाधन ५करने वाले ६समष्टिप्राण को ७हम आह्वान करते हैं॥४॥

गोतमऋषि गायत्री छन्दो मित्राद्या देवता॥

ऋजुनीतीनो वरुणो मित्रोनयति विद्वान्। अर्यमा देवैः सजोषाः॥५॥ १०४

(देवैः) इन्द्रियैः (सजोषाः) समानप्रीतिः (विद्वान्) नेतव्य मुत्तमस्थानंजानन् (मित्रः) प्राणः (वरुणः) अपानः (अर्यमा) मनः (ऋजुनीती) ऋजुनीत्याऋजुनयनेनकौटिल्य रहितेन गमनेन (नयति) समाधौप्रापयति॥५॥

भावार्थः —१इन्द्रियों के साथ २समानप्रीति वाला ३प्राप्ति योग्य उत्तमस्थान कोजान्ता ४प्राण ५अपान ६मन ७सीधी चालसे ८समाधि में प्राप्त करते हैं॥५॥ ब्रह्मातिथिऋषि गायत्री छन्दो यजमानो देवता।

दूरादिहेवयत्सतो रुणप्सुरशिश्वितत्। विभानुंविश्वथातनत्॥६॥ १०५

(यत्) यदा (अरुणप्सुः) अरुणरूपो यजमानः (दूरात्) दूरेगगनमण्डलेवर्त्तमानात् (सतः) महापुरुषात् (इह) (इव) मानसकमले (अश्वितत्) आप्तः। श्विगतौतदा (भानुम्) दीप्तिं (विश्वथा) विश्वधा वहुधा मनोवुद्धीन्द्रिय रूपेण (व्यतनत्) विस्तारयति॥६॥—१०५

भाषार्थः –१जब२अरुणरूपयजमान३गगन मंडल में वर्त्तमान ४म हापुरुषसे ५,६इसमानसकमलमेंही७प्राण अपानव८दीप्ति को९वहम कारमनबुद्धिइन्द्रियरूपसे विस्तृत करता है—॥६॥९५

विश्वामित्रोजमदग्निर्वाऋषिर्गायत्रीछन्दोमित्रावरुणौदेवते·

आनोमित्रावरुणाघृतैर्गव्यूतिमुक्षतम्। मध्वा रजांसिसुक्रतू॥७॥१०६

(सुक्रतू) शोभनकर्माणौ (मित्रावरुणौ) प्राणोदानौ। प्राणोदानौवैमित्रावरुणौ श० १।८।३।१२ (नः) अस्माकं योगिनां (गव्यूतिम्) इन्द्रियाणामालयं (घृतैः) इन्द्रियशक्तिभिः। प्राणः पयः शीर्षस्तत्प्राणां श० ६।५।४।१५ (आ) समन्तात् (उक्षतम्) सिञ्चतम् (रजांसि) कमलरूपलोकान् (मध्वा) ज्ञानरसेन· सिञ्चतम्। इदंवैतन्मधुदध्यङ्ङाथर्वणोऽश्विभ्यामुवाच श० १४ ।५।५।१६—॥७॥

भाषार्थः –१शोभनकर्मा२प्राणउदान३हमयोगियोंकी ४इन्द्रियोंके आलयसमूहको५इन्द्रियोंकी शक्तिसे६सबओर७सींचो८कमल रूपलोकोंको९ज्ञानरससे सींचो॥७॥

मस्काण्वऋषिर्गायत्रीछन्दः प्राणानाहतशब्दोदेवते·

उदुत्येसूनवोगिरःकाष्ठायज्ञेष्वत्नत। वाश्रा अभिज्ञुयातवे॥८॥१०७

(ये) (सूनवः) वाचउत्पादकाः प्राणाः। सुनोतेः रूपं (गिरः) अनाहतशब्दाः (नः) (यज्ञेषु) योगयज्ञेषु (काष्ठाः) अमृतरूपापः (उ) एव (उदत्नत) विस्तारितवन्तः पुनः (वाश्राः) इन्द्रियाणि (अभिज्ञु)

जान्वभिमुखं यथा भवति तथा (यातवे) आलयेषु मति गमना यमेरित वन्तः ॥ ८ ॥

भावार्थः — १ जो २ वचन को उत्पन्न करने वाले भाण ३ और अनाहत शब्द हैं ४ उन्हों ने ५ योग यज्ञों में ६ अमृत रूप जलों को ७ ही ८ विस्तृत किया ९ और इन्द्रियों को १० जानु अभिमुख जैसे हों वैसे ही ११ निजालयों में चलने के लिये प्रेरित किया ॥ ८ ॥

मेधातिथिर्ऋषिः गायत्री छन्दो विष्णुर्देवता·

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढम स्यपा ᳪ सुरे ॥ ९ ॥ १०८

(विष्णुः) वामनावतारः (इदम्) ब्रह्मलोक पर्यन्तं जगत् (विचक्रमे) विभज्य क्रमते स्म (त्रेधा) (पदम्) (निदधे) भूमावेकं पदमन्तरिक्षे द्वितीयं दिवि तृतीयं (अस्य) (पदम्) (पा ᳪ सुरे) चतुर्दशभुवन मय ब्रह्माण्डे (समूढम्) सम्यगन्तर्भूतम् ॥ ९ ॥

भावार्थः — १ वामनावतार विष्णु ने २ इस ब्रह्मलोक पर्यन्त जगत को ३ विभाग कर उल्लंघन किया ४ तीन प्रकार से ५ पद को ६ रक्खा ७ भूमि पर एक पद को अन्तरिक्ष में दूसरे को स्वर्ग में तीसरे को ८ इस का ८ पद ९ चतुर्दश भुवन मय ब्रह्माण्ड में १० भले प्रकार अन्तर्गत हुआ ॥ ९ ॥

अथाध्यात्मम् (विष्णुः) योगयज्ञस्य यजमानः। यथा श्रुतिः एतद्देवा विष्णु र्भूत्वेमांल्लोकान् क्रमन्त तथैवैतद्यजमानो विष्णुर्भूत्वेमांल्लोकान्क्रमते ६।७।२।१० (अस्य) देहस्य (इदम्) सुषुम्णा मार्गं (विचक्रमे) विभज्य क्रमते स्म (पा ᳪ सुरे) योगभूमौ (त्रेधा) ज्ञातृज्ञान ज्ञेयाख्य त्रिविधि भेदेन (समूढम्) सम्य

गन्तर्हितं (पदम्) ब्रह्म यथा भगवद्याकपूततः पदंतत्परि मार्गतव्यं यस्मिन्नातानानि वर्त्तन्ते भूयइति (निदधे) स्वात्मनि धारयामास ॥९॥ **भावार्थः** – १ योग यज्ञके यजमानने २ इस देहके ३ इस सुषुम्णा मार्गको विभाग कर उलंघन किया ४ योग भूमिमें ६ ज्ञात्रज्ञान ज्ञेयनाम त्रिविधिभेदसे ७ अन्तर्हित ८ ब्रह्म को ९ अपने आत्मा में धारण किया ॥९॥

तृतीयोऽर्थः

(विष्णुः) (अस्य) प्रधानस्य (इदम्) कार्यं विम्बं (विचक्रमे) विशेषेण स्वां भुमि गतवान् व्याप्तवान् क्रम। पादविक्षेपणेन गतौ पाद किरणे (पांसुले) पांसवो भूम्यादिलोक रूपा विद्यन्ते यस्य तुल्यां सुलं जगत्तस्मिन् जगति (समूढम्) सम्यगन्तर्हितं (पदम्) पद्यते ज्ञायत इति पदमद्वैताख्यं स्वरूपं (त्रेधा) त्रिदेवरूपेण (निदधे) संसारे स्थापितवान् ॥९॥

भावार्थः – १ विष्णुने २ इस प्रधान के ३ इस कार्य विम्बको ४ अपनी किरणों से व्याप्त किया ५ जगत में ६ अन्तर्हित ७ अद्वैत स्वरूपको ८ त्रिदेवरूप से ९ संसार में स्थापन किया ॥ ९ ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने द्वितीयाध्यायस्यैकादशः खण्डः

अथ द्वादशः खण्डः

मेधातिथिऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

अतीहि मन्युषाविणं सुषुवांसमुपेरय ।
अस्य रातौ सुतं पिब ॥ १ ॥ १०९

हे इन्द्र परमेश्वर त्वा (मन्युषाविणं) क्रोधशोकाहंकारान् सुन्व-

न्तंजनं(अतीहि) अतिक्रम्यगच्छ(सुषुवांसम्) सोमम्, आत्मप्रति विम्बंवा सुन्वन्तंजनं(उपेरय) स्वसमीपेमेरय(अस्य)(राधो) यज्ञाख्येदाने(सुतम्) अभिषुतंसोम मात्मप्रति विम्बंवा(पिव) ॥१॥ **भावार्थः** –हेइन्द्रवापरमेश्वर१ क्रोधशोकअहंकार का अभिषवकरनेवाले मनुष्यको२ अतिक्रमणकरकेजाओ३ सोमवाआत्म प्रतिविंबका अभिषवणकरनेवाले मनुष्यको४ अपनेसमीपप्रेरणाकरो५ इस६ यज्ञनामदानमें७ अभिषुतसोमवाआत्म प्रतिविंबको८ पानकरो॥१

वामदेवऋषिर्गायत्रीछन्दोदेवोदेवता-

कद्दुप्रचेतसे महे वचोदेवायशस्यते। तदिध्यस्य वर्द्धनम् ॥२॥ ११०

(कद्दु) कस्मात्कारणादेव(महे) भगवदवतारदिवसाद्युत्सवेयज्ञे वा(प्रचेतसे) प्रकृष्टज्ञानायज्ञानस्वरूपायवा(देवाय) परमेश्वराय(वचः) स्तोत्रं(शस्यते) उच्चार्यते(हि) यस्मात्(तदित्)तदेव स्तोत्रं(अस्य) यजमानस्य(वर्द्धनम्) वृद्धिकरम्२ **भावार्थः** –१ किसीकारण२ भगवदवतारके दिवसआदि उत्सववा यज्ञमें३ श्रेष्टज्ञानवाले वाज्ञानस्वरूप४ परमेश्वरकेलिये५ स्तोत्र६ उच्चारणकियाजाताहै७ जिसकारण८ वही स्तोत्र९ इसयजमानकी१० वृद्धिकरनेवालाहै॥२॥

मेधातिथिप्रियमेधाऋषीगायत्रीछन्दइन्द्रोदेवता-

उक्थञ्चनशस्यमानन्नागोरयिराचिकेत। नगायत्रङ्गीयमानम् ॥३॥ १११

(अयिः) (अ) विष्णुः(य) ब्रह्मा(इ) रुद्रः त्रिदेवरूपोपरमेश्वरः

(नागोः) अव्यक्तभाषिणाः। गुङ्। अव्यक्ते शब्दे, अगुः व्यक्तभाषी नागुः अव्यक्तभाषीतस्य (शस्यमानं) पठ्यमानं (उक्थम्) शस्त्रं (च) (गीयमानं) (गायत्रं) साम (न) (आचिकेत) नाभिजानीयादिति (न) अन्तर्यामी सन्सर्वं शृणोतीत्यर्थः॥ ३॥

भाषार्थः – १ निदेवरूपपरमेश्वर २ अव्यक्तभाषीके ३ पढ़ेहुए ४ शस्त्रको ५ और ६ गायेहुए ७ गायत्रसामको ८, ९ नहींजाने १० यहबातनहीं क्योंकि अन्तर्यामीहोतासबकोसुन्ताहै॥ ३॥

विश्वामित्रऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

इन्द्रउक्थेभिर्मन्दिष्ठोवाजानांञ्च वाजपतिः
हरिवांत्सुतानांᳪसखा॥ ५॥ ११२

(वाजानाम्) यज्ञानांमध्ये (वाजपतिः) यज्ञपतिः (च) (हरिवान्) विष्णुरूपः (इन्द्रः) परमेश्वरः (उक्थेभिः) शस्त्रैः स्तोत्रैः (मन्दिष्ठः) अतिशयेन तृप्तः सन् (सुतानाम्) देहाभिमानरहितानांभक्तानां (सखा) भवति॥ ४॥

भाषार्थः – १ यज्ञोंकेमध्य २ यज्ञपति ३ और ४ विष्णुरूप ५ परमेश्वर ६ शस्त्र और स्तोत्रोंसे ७ अत्यन्ततृप्त होता ८ देहाभिमानरहितभक्तोंका ९ सखाहोताहै॥ ४॥ मेधातिथिप्रियमेधा ऋषी गायत्री छन्द आत्मा देवता-

आयाह्युपनःसुतंवाजेभिर्माहृणीयथा। महांᳪ
इवयुवजानिः॥ ५॥ ११३

वागादृत्विजांवचनम् हे आत्मारूपयजमान। आत्मावैयज्ञस्य यजमानोऽङ्गान्यृत्विजः श० ६। ५। २। १६ (नः) अस्माकं (सुतम्) अभिषुतंशक्तिसमूहं (उपायाहि) प्राप्नुहि (वाजेभिः) विषयैः

(मो) (हृणीयथाः) माहृियस्व (इव) यथा (महान्) महापुरुषः (युवजानिः) यौवनोपेतजायायाः स्वामीसन्नन्याभिर्नापह्रियते ५

भावार्थः — वागाघृत्विज कहते हैं हे आत्मारूपयजमान १ हमारे २ अभिषुतशक्ति समूह को ३ प्राप्त कर ४ विषयों से ५ ६ हरण मत कराओ ७ जैसे ८ महापुरुष ९ युवाजाया का स्वामी होता अन्यस्त्रियों से हरण नहीं किया जाता ॥ ५ ॥ कौत्सोदुर्मित्रऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

कदा वसो स्तोत्रं हर्यत आ अव श्मशा रुधद्वाः दीर्घं सुतं वाताप्याय ॥ ६ ॥ ११४

हे (वसो) ज्योतिर्मयपरमेश्वर (कदा) (वाः) गगनामृतं (अवारुधत्) अवरोत्स्यति तदा (वाताप्याय) प्राणेनाप्यते ऊर्ध्वंनिपात्यते तस्मै गगनामृताय (स्तोत्रम्) (हर्यते) आप्यते पठ्यते हर्य्यगतौ गगनामृतञ्च (सुतम्) अभिषुतं (दीर्घम्) समष्टिभावापन्नमात्मप्रतिविंबं प्रति (श्मशा) कुल्यारूपं भवति ॥ ६ ॥

भावार्थः — १ हे ज्योतिर्मयपरमेश्वर २ कभी ३ गगनामृत ४ अवरोध को पाता है तब ५ गगनामृत के लिये ६ स्तोत्र ७ पढ़ा जाता है और गगनामृत अभिषुत ८ समष्टिभावापन्न आत्मप्रतिविंब के प्रति १० कुल्यारूप होता है ॥ ६ ॥

मेधातिथिऋषिः गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पिबा सोममृतूँरनु। तवेदं सख्यमस्तृतम् ॥ ७ ॥ ११५ ॥

हे (इन्द्र) परमेश्वर (ऋतूंरनु) प्रत्येक समाधिकाले (ब्राह्मणात्) ब्रह्मज्ञानयुक्तात् (राधसः) राधामहामायातस्या अंशरूपाद्देहात् (सोमम्) आत्मप्रतिविंबं (पिब) यस्मात् (तव) (इदम्) (सख्य

म्)(अस्तृतम्) अहिंसितमस्ति ॥७॥ ११५

भाषार्थः – १हेपरमेश्वर २प्रत्येकसमाधिकालपर ३ब्रह्मज्ञानयुक्त ४माया के अंश रूपदेहसेआत्मप्रतिविंबकोपान करो जिसकारण ७तेरी ८ यह ९ मित्रता १० अहिंसित है ॥७॥

मेधातिथिऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

वयं घा ते अपि स्मसि स्तोतार इन्द्र गिर्वणः।
त्वन्नो जिन्व सोमपाः ॥८॥ ११६

हे(गिर्वणः) गीर्भिर्वननीयसम्भजनीय(इन्द्र) परमेश्वर(वयम्)(ते)तव(स्तोतारः)(स्मसि)स्मः भवामः हे(सोमपाः)आत्मप्रतिविंबस्यपातः(त्वम्)(अपि)(नः)अस्मान्(घा)मेधया(जिन्व)प्रीणय ॥८॥

भाषार्थः – १हेवेदवचनोंसेसंभजनीय २परमेश्वर ३हम ४तेरे ५स्तोता ६हैं ७हेआत्मप्रतिविंबकेपान करनेवाले ८तुम ९भी १०हमको ११बुद्धिसहित १२प्राप्तकरो जिन्वतिर्गच्छतिकर्मानि घ०—॥८॥

विश्वामित्रो गाथिनो भोपाद उदलो वाऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो दे०

एन्द्र पृक्षु कासु चिन्नृम्णन्तनूषु धेहि नः। सत्राजिदुग्र पौंस्यम् ॥९॥ ११७

हे(इन्द्र) परमेश्वर(कासुचित्)(पृक्षु) कास्वपियोग क्रियासुसम्पृक्तासु(नः)अस्माकं(तनूषु) अङ्गेषु(नृम्णम्) योगवलं(आधेहि)समन्तात्स्थापय हे(उग्र)उत्कृष्ट(सत्राजित्) यज्ञेनाजितः भक्तैकल्भ्यस्त्वं(पौंस्यम्)पुरुषार्थं मोक्षंदेहि ॥९॥

भाषार्थः – १हेपरमेश्वर २,३किसीयोगक्रियाकेबीच ४हमारे ५अंगों

में ६ योगबलको ७ धारणकरो ८ हेउत्कृष्ट ९ यज्ञसे भजिनके बलभक्तिसेलभ्यतुम १० पुरुषार्थ मोक्षकोदीजिये ॥ ९॥

श्रुतकक्ष ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः। एवा ते राध्यम्मनः ॥१०॥ ९९८

(अ) हे विष्णुरूप परमेश्वरत्वं (हि) निश्चयेन (वीरयुः) कामयुद्धे वीरान् भक्तान् स्वात्मनि मिश्रयिता। युमिश्रणे (एव) (असि) त्वं हे शिवरूप परमेश्वरत्वं (शूरः) असुराणां संग्रामे शूरः (उत) अपि च (स्थिरः) (एव) असि हे (त्वं) महानारायण (ते) तव (मनः) (राध्यम्) स्तुतिभिराराधनीयं (एव) ॥१०॥

भावार्थ–१ हे विष्णुरूप परमेश्वर २ निश्चय ३ तुमही भक्तों को अपने आत्मा में मिलाने वाले ४ ही ५ हो ६ हे शिवरूप परमेश्वर तुम ७ असुरों के संग्राम में शूर ८ और ९ स्थिर १० ही हो ११ हे महानारायण १२ आपका १३ मन १४ स्तुतिओं से आराधनीय १५ ही है ॥१०॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्मविरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने द्वितीयोऽध्यायः २

अथ तृतीयाध्याय आरभ्यते

अथ प्रथमः खण्डः

वसिष्ठ ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धा इव धेनवः। ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः ॥१॥ १

हे (शूर) असुराणां युद्धे शूर (इन्द्र) परमेश्वर (अस्य) (जगतः)

जङ्गमस्य (ईशानम्) ईश्वरं (तस्थुषः) स्थावरस्य (ईशानम्) स्वामिनं (स्वर्दृशम्) सूर्यरूपेण सर्वस्यद्रष्टारं (त्वा) त्वां (अभिनोनुमः) भृशमभिष्टुमः (इव) यथा (अदुग्धाः) (धेनवः) आत्मीयंवत्सं स्नेहार्द्रेण मनसा हुंकारादिभिरभिनन्दन्ति ॥ १ ॥

भाषार्थः – १ हे असुरोंके युद्धमें भूर २ परमेश्वर ३ इस ४ चरके ५ ईश्वर ६ अचरके ७ स्वामी ८ सूर्यरूपसे सबकेद्रष्टा ९ तुमको १० हमस्तुत करते हैं ११ जैसे १२ अदुग्ध १३ गौ अपने वछड़े को स्नेहार्द्र मन हुङ्कारादि के द्वारा प्रसन्न करती हैं ॥ १ ॥ भरद्वाजऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता·

त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः । त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः ॥ २ ॥

(इन्द्र) हे परमेश्वर (कारवः) स्तोतारो वागाद्यृत्विजो वयं (वाजस्य) विराड्रूपान्नस्य (सातौ) लाभनिमित्ते (त्वाम्) (इत्) एव (हि) (हवामहे) स्तुतिभिर्ह्वयामहे (नरः) इन्द्रियाणांनेतारः (सत्पतिम्) सतांभक्तानां पालयितारं (त्वाम्) (वृत्रेषु) पापेषु सत्सु भजन्ति (अर्वतः) मानस सूर्यस्य । असौवा आदित्य एषोऽश्वः श० ६।३।१।२९ (काष्ठासु) कामसङ्ग्रमेषु (त्वाम्) त्वामेवाह्वयंति ॥ २ ॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ स्तोता हम वागादि ऋत्विज ३ विराट्रूप अन्न के ४ लाभनिमित्त ५ तुमको ६,७ ही ८ स्तुतिद्वारा आह्वान करते हैं ९ इन्द्रियोंके नेता १० भक्तपालक ११ तुमको १२ पापोंके होनेपर भजते हैं १३ मानससूर्यके १४ काम संग्रामोंमें १५ तुमको ही आह्वान करते हैं ॥ २ ॥

वालखिल्याऋषयो बृहती छन्द इन्द्रो देवता·

अभिप्रवः सुराधसमिन्द्रमर्च यथा विदे । यो जे

रित्तृभ्यो मघवा पुरूवसुः सहस्रेणेव शिक्षति ॥३॥३
(यः)(पुरूवसुः) महातेजस्वी ज्योतिः स्वरूपः (मघवा) मघवान्
योगधनवान् परमेश्वरः (सहस्रेणेव) सहस्रज्योतिस्तंरानिददा
नितेन रूपेणैव (जरित्तृभ्यः) स्तोतृभ्यः आभि (शिक्षति) अभीष्टंद
दाति शिक्षतिर्दानकर्माति० ३।२० हेमनः (वः) निवृत्तात्मात्वं (य
था) (विद्रे) वेदोहंजानामिविदज्ञानेतथा (सुराधसम्) श्रेष्ठधनो
पेतं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (मर्च्च) प्रकर्षेणपूजय ॥ ३ ॥

भावार्थः – १ जो २ ज्योतिस्वरूप ३ धनवान परमेश्वर ४ ज्योतिदाता रूपके द्वाराही ५ स्तोताओंके लिये ६ अभीष्ट को देता है ७ हे मन निवृत्तात्मा तुम ८ जैसे ९ मैं वेदजान्ता हूं उसी प्रकार १० श्रेष्ठ धनसे युक्त ११ परमेश्वरको १२ पूजन करो ॥३॥ नोधाऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता।

तुभ्योदस्मं ऋतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः। अभि
वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे॥४॥४

वेदोपदेशः हे (वसो) आत्मांशुरूपजीवात्मन् (तम्) (दस्मम्) श
त्रूणामुपक्षयितारं। दसुउपक्षये (ऋतीषहम्) वाधकानामभिभ
वितारं (अन्धसः) नैवेद्याद्यन्नात् (मन्दानम्) मोदमानं (इन्द्रम्)
परमेश्वरं (वः) युष्माकं (स्वसरेषु) गृहेषुदेवमन्दिरेषुनि० ३।४ (गी
र्भिः) मन्त्रैः (अभिनवामहे) अभिणुमः।णुस्तवने शब्देच (न) यथा
(धेनवः) (वत्सम्) गोष्ठेस्ववत्समभिलक्ष्यशब्दयन्ति ॥ ४ ॥

भावार्थः – वेदउपदेशकरताहै १ हे आत्मांशुरूपजीवात्मन् २ उस ३ शत्रुनाशक ४ वाधकोंके अभिभविता ५ नैवेद्य आदि अन्नसे ६ मोदमान ७ परमेश्वरको ८ तुम्हारे ९ गृहों वा देवालयोंमें १० मंत्रों से ११ हम स्तुत करते हैं १२ जैसे

से१३ गौ १४ बछड़े को गोष्ठ में देखकर शब्द करती हैं—॥ ४॥

कलिः प्रगाथ ऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता·

त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः। त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः॥

तरोभिर्वो विदद्वसुमिन्द्रं सबाध ऊतये। बृहद्गायन्तः सुतसोमे अध्वरे हुवे भरन्न कारिणम् ५—५

(सबाधः) ऋत्विजः नि॰ ३।१८ (सुतसोमे) अभिषुतसोमके (अध्वरे) यज्ञे (बृहत्) साम (गायन्तः) तिष्ठन्ति मन्त्रोऽहं (वः) युष्माकं (तरोभिः) योगबलैः (विदद्वसुं) योगधनवेदकं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (ऊतये) रक्षणाय (हुवे) (न) यथा (कारिणम्) स्वहितकरणशीलं (भरम्) भर्त्तारं कुटुम्बपोषकं पुत्रादय आह्वयन्ति॥ ५॥

भावार्थः—१ ऋत्विज लोग २ अभिषुत सोमवाले ३ यज्ञमें ४ बृहत्साम को ५ गाते रहते हैं मंत्रमें ६ तुम्हारे ७ योगबलोंसे ८ योगधनके दाता ९ परमेश्वरको १० रक्षाके लिये ११ आह्वान करता हूं १२ जैसे १३ कुटुंब पोषक पिता आदि को पुत्र आदि॥ ५॥

वसिष्ठ ऋषि र्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

तरणिरित्सिषासति वाजं पुरन्ध्या युजा। आ व इन्द्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्र्वम्—६॥ ६

(तरणिः) मानससूर्यः (युजा) सहायभूतया (पुरन्ध्या) प्रज्ञया (इत्) एव (वाजम्) विराड्रूपान्नं (सिषासति) सम्भजते वेदोऽहं (वः) युष्मदर्थं (पुरुहूतम्) बहुभिराहूतं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (गिरा) स्वकीय वाचा (आनमे) अभिमुखं कुर्वे (इव) यथा (तष्टा) वर्द्धकिः (सुद्र्वं) शोभनदारुं (नेमिम्) चक्रस्य वलयमानमयने॥ ६॥

भावार्थः—१ मानससूर्य २ सहायभूत ३ प्रज्ञाके द्वारा ४ ही ५ विराट्रू

पश्चन्नको ६ सेवन करताहै मैवेद ७ तुम्हारेलिये ८ बहुतसेआकृत ९ परमेश्वरको १० अपनी वाणी से ११ सन्मुख करता हूं १२ जैसे १३ बढई १४ शोभन काष्ठ वाले १५ चक्र वलय को भुकाताहै — ६॥

मेधातिथि ऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

पिबासुतस्य रसिनो मत्स्वान इन्द्र गोमतः। आपि र्नो बोधि सधमाद्ये वृधे३स्मा थं अवन्तु ते धियः ७

(इन्द्र) हे इन्द्रपरमेश्वरवा (नः) अस्मदीयस्य (रसिनः) रसवतः (गोमतः) गोविकारैः पयः प्रभृतिभिः अपणाद्रव्यैर्युक्तस्य। इन्द्रिययुक्तस्यवा (सुतस्य) अभिषुतसोमस्यात्मप्रतिबिंबस्यवा (पिब) पानंकुरु (मत्स्व) मत्तोभव (सधमाद्ये) सहमाद्यन्ति देवा अचेतिसधमाद्यो यज्ञः तस्मिन्सोमयज्ञे। योगयज्ञेवा (आपिः) वन्धुर्व्यापको वात्वंनि० ७।१९ (नः) अस्माकं (वृधे) वर्द्धनाय (बोधि) बोध्यस्व (ते) त्वदीयाः (धियः) बुद्धयः (अवन्तु) अस्मान्रक्षन्तु ॥७॥

भाषार्थः — १ हे इन्द्र वा परमेश्वर २ हमारे ३ रसवान् ४ पय आदि से युक्त वा इन्द्रियों से युक्त ५ अभिषुत सोम वा आत्मप्रतिबिंब का ६ पान करो ७ मत्त हो ८ सोमयज्ञ वा योग यज्ञ में ९ वन्धु वा व्यापक तुम १० हमारी ११ वृद्धि के लिये १२ चेतो १३ आपकी १४ बुद्धियां १५ हमको रक्षा करो — ॥७॥

भर्ग ऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

त्वं थं ह्येहि चेरवे विदा भगं वसुत्तये। उद्वावृषस्व मघवन्गविष्टय उदिन्द्राश्वमिष्टये ॥८॥ ८

हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वम्) (हि) (एहि) प्रादुर्भव (वसुत्तये) अस्माकं वागाद्यृत्विजां योग धनदानाय (चेरवे) ज्ञानिने यजमानाय (भगम्)

योगैश्वर्यं (विदाः) लभस्वदत्स्व हे (मघवन्) लक्ष्मीपते (गविष्टये) इन्द्रिय यज्ञाय (उद्वावृषस्व) योगैश्वर्य मासिञ्च। वृषु सेचने (अश्वम्) मानस सूर्यं (इष्टये) यागाय (उद्) उद्वा वृषस्व स्वात्मनि- सिञ्च ॥ ८॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २,३ तुमही ४ आओ ५ हमवागा ऋत्विजों के योगधनके दानार्थ ६ ज्ञानी यजमानके लिये ७ योगैश्वर्यको ८ दो ९ हे लक्ष्मीपते १० इन्द्रिय यज्ञके लिये ११ योगैश्वर्यको दो १२ मानस सूर्यको १३ योगके लिये १४ अपने आत्मामें सींचो ॥ ८॥

वसिष्ठ ऋषिर्बृहती छन्दो मरुतो देवता

नहि वश्चरमञ्चन वसिष्ठः परिमंसते। अस्माकमद्य मरुतः सुते सचा विश्वे पिबन्तु कामिनः ॥ ९॥ ९

हे (मरुतः) देवाः प्राणा वा (वसिष्ठः) वाक्। वाग्वै वसिष्ठः श० १४। ९।२।२ (वः) युष्माकं मध्ये (चरमं) (चन) अन्त्यमपि (नहि) (परिमंसते) वर्जयित्वा नस्तौति किन्तु सर्वानेव युष्मान् स्तौति (अद्य) (अस्माकं) (सुते) अभिषुते सोमे। आत्म मति बिम्बे वा (कामिनः) कामयमानाः (विश्वे) सर्वे यूयं (सचा) सङ्गत्य (पिबन्तु) पानं कुर्वन्तु ॥ ९॥

भाषार्थः

१ हे मरुत् देवताओ वा प्राणो २ वाक् ३,४,५,६,७ तुम सबकी स्तुति करता है ८ अब ९ हमारे १० अभिषुत सोम वा आत्म मतिबिंबमें ११ इच्छामान १२ सब तुम १३ मिलकर १४ पान करो— ॥ ९॥

प्रगाथः काण्व ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

मान्चिदन्यद्विशंसत सखायो मारिषण्यत। इन्द्रमित्स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत ॥१०॥—१०

हे (सखायः) भक्ताः (अन्यत्) भगवत्स्तोत्रादन्यत् (मा चित्) मैव (विशंसत) उच्चारयत (मा) (रिषण्यत) मा हिंसिता रो भवत (सुते) अभिषुते सोमे। आत्ममति विवेवा (वृषणम्) धर्मकामार्थमोक्षाणां वर्षितारं (इन्द्रम्) (इत्) परमेश्वरमेव (सचा) सह सङ्गीभूय (स्तोत) स्तुत त्वं (उक्था) उक्थानि शस्त्राणि (मुहुः) पुनः पुनः (शंसत) उच्चारयत ॥१०॥

भाषार्थः – १ हे भक्तो २ भगवत् स्तोत्र से अन्य को ३,४ मत उच्चारण करो ५,६ मत हिंसित होओ ७ सोम वा आत्म मति विवेक अभिषुत होने पर ८ धर्मकामार्थ मोक्ष के दाता ९,१० परमेश्वर को ही ११ मिलकर १२ स्तुत करो १३ और १४ शस्त्रों को १५ वारम्वार १६ उच्चारण करो – १०॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य प्रथमः खण्डः १

अथ द्वितीयः खण्डः

आङ्गिरसः पुरुहन्मा ऋषिः बृहती छन्दः इन्द्रो देवता-

नकिष्टं कर्मणा नशद्यश्चकार सदावृधम्। इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्त्तमृभ्वसमधृष्टं धृष्णुमोजसा ॥१॥११

(किः) कर्त्ता देहेन्द्रियमनोबुद्धिसमूहः नि० (तम्) जीवात्मानं (कर्मणा) कर्मफलेन (न) (नशत्) व्याप्नोति नशत् व्याप्ति कर्मा नि० २।१८ (यः) जीवात्मा (सदावृधम्) सदावर्द्धकं (विश्वगूर्त्तं) सर्वैः

स्तुत्यं(ऋग्मियम्) महान्तं(नं) च(ओजसा) बलेन(अधृष्टं) अन्यैर्धर्षितुमशक्यं(धृष्णुम्) शत्रूणां धर्षकं(इन्द्रम्) परमेश्वरं(यज्ञैः)(चकार) अनुकूलं कृतवान्॥१॥

भाषार्थः –१ कर्त्ता देह इन्द्रिय मन बुद्धि का समूह २ उस जीवात्मा को ३ कर्मफल से ४,५ व्याप्त नहीं करता है ६ जिस जीवात्मा ने ७ सदा वृद्धि देनेवाले ८ सबसे स्तुति योग्य ९ महान्त १० और ११ बल से १२ दूसरे के अधृष्य १३ शत्रुओं के धर्षक १४ परमेश्वर को १५ यज्ञों के द्वारा १६ अनुकूल किया॥१॥

द्वयोर्मेधातिथिर्ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

यऋतेचिदभिश्रिषःपुराजत्रुभ्यआतृदः। संधाता सन्धिंमघवापुरूवसुर्निष्कर्त्ताविह्रुतंपुनः॥२–१२

(यः) परमेश्वरोऽन्तर्यामिरूपेण देहे तिष्ठन्सन्(अभिश्रिषः) अभिश्लेषणात् सन्धानद्रव्यात्(ऋते)(चित्) विनापि(जत्रुभ्यः) ग्रीवाभ्यः सकाशात्(आतृदः) आतर्दनात् आरुधिरनिस्रवणात्(पुरा) पूर्वमेव(सन्धि सन्धाता) सन्धातव्यस्य संयोजयिता(पुनः)(विह्रुतं) विह्रुतं विच्छिन्नं(निष्कर्त्ता) संस्कर्त्ता स(मघवा) लक्ष्मीवान्(पुरूवसुः) बहुधनः॥२॥

भाषार्थः –१ जो परमेश्वर अन्तर्यामी देह में रहता २,३,४ सन्धान द्रव्य के विना भी ५ ग्रीवाओं से ६,७ रुधिर गिरने से पहिले ही ८ संधातव्य अंगों का संयोजक है ९ फिर १० विशेष छिन्न अंग का ११ संस्कर्त्ता है वह १२ लक्ष्मीवान १३ बहुत धनवाला है–॥२॥ विनियोगः पूर्ववत्

आत्वासहस्रमाशतंयुक्तारथेहिरण्यये। ब्रह्मयुजोहरयइन्द्रकेशिनोवहन्तुसोमपीतये२–१३

हे (इन्द्र) (हिरण्यये) हिरण्मये (रथे) (युक्ताः) (ब्रह्मयुजः) वैदिक मन्त्रेण युक्ताः (केशिनः) केशाः ग्रीवाया उपरि वर्त्तमानाः सटाख्यै र्युक्ताः (शतम्) शतसङ्ख्याकाः (सहस्रम्) सहस्रसङ्ख्याका वा (हरयः) (त्वा) त्वां (सोमपीतये) सोमपानाय (आ) आदरेण (आवहन्तु) अस्मद्यज्ञमानयन्तु ॥ ३॥

भाषार्थः – १ हे इन्द्र २ सुनहरी ३ रथमें ४ युक्त ५ वैदिक मंत्रसे जोड़े हुए ६ केश वा ग्रीवापर सटाओंसे युक्त ७ सौ ८ वा सहस्र ९ घोड़े १० तुमको ११ सोमपानके लिये १२ आदरपूर्वक १३ हमारे यज्ञमें लाओ ॥ ३॥

अथाध्यात्मम् – हे (इन्द्र) परमेश्वर (हिरण्यये) ज्योतिर्मये ज्योतिर्वै हिरण्यं श० ६।७।१।२ (रथे) योगरथे (युक्ताः) (ब्रह्मयुजः) महावाचा युक्ताः (केशिनः) क, अ, ई, श ब्रह्म विष्णु भगवति महेशानामुपासकाः (हरयः) मानससूर्याः (शतम्) कल्याण विस्तारकरं (सहस्रम्) स्वकीयज्योतिषो दातारं (त्वा) त्वाम् (सोमपीतये) आत्मप्रतिबिंबस्य पानाय (आ) समन्तात् (आवहन्तु) ध्याने मापयन्तु ॥ ३ ॥

भाषार्थः

१ हे परमेश्वर २ ज्योतिर्मय ३ योगरथमें ४ युक्त ५ महावाक्से जोड़े हुए ६ भगवतीसहित त्रिदेवके उपासक ७ मानससूर्य ८ कल्याण विस्तारकर्त्ता ९ अपनी ज्योतिके दाता १० तुमको ११ आत्मप्रतिबिंबके पानार्थ १२ सब ओरसे १३ ध्यान द्वारा प्राप्त करो– ॥ ३॥ विश्वामित्र ऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता॰

आमन्द्रैरिन्द्र हरिभीर्याहि मयूररोमभिः। मात्वा केचिन्नियेमुरिन्न पाशिनोऽतिधन्वेव ताँ इहि ४–२४

हे (इन्द्र) (मन्द्रैः) गम्भीरध्वनिवद्भिः (मयूररोमभिः) मयूररोम

दृशरोमयुक्तैः (हरिभिः) अश्वैरुपेतस्त्वं (आयाहि) यज्ञंप्रत्यागच्छ (केचित्) (इत्) केचिदपि प्रतिबन्धकाः कार्यविशेषाः (त्वा) (त्वां) (मा) (नियेमुः) गमनप्रतिबन्धंमाकुर्वन्तु (न) यथा (पाशिनः) पाशहस्ताव्याधाः पक्षिणां (धन्वा) (इव) मरुस्थलानीव (तान्) प्रतिबंधकान् (अति) अतिक्रम्य (एहि) आगच्छ॥ ४॥

भाषार्थः – १ हे इन्द्र २ गम्भीरध्वनिवान् ३ मयूरसमरोमयुक्त ४ घोड़ों की सवारीसे युक्ततुम ५ यज्ञमें आओ ६,७ कोई प्रतिबंधक कार्यविशेष ८ तुम्हारी ९,१० रुकावट मतकरो ११ जैसे १२ पाशधरव्याधपक्षियों की १३,१४ मरुस्थलकीसमान १५ उनको १६ अतिक्रमणकरके १७ आओ –॥ ४॥

अथाध्यात्मम् – हे (इन्द्र) यजमान (मन्द्रैः) अनाहतशब्दवद्भिः (मयूररोमभिः) (म-मेधा) (अ+अ-चक्षू) (ऊ, श्रोत्रे) (य वाक्) र-रसनेन्द्रियं (र) जाठराग्निः (ओ, रागमूल्यः कामः) (म, मनः) तैः सहितैः (हरिभिः) प्राणैः सहितस्त्वं (आयाहि) भृकुटिमंडलं प्रत्यागच्छ (केचित्) (इत्) कामादयः (त्वा) त्वां (मा) (नियेमुः) (न) यथा (पाशिनः) (धन्वा) मरुस्थलानि (इव) निष्फलान् (तान्) कामादीन् (अति) अतिक्रम्य (एहि) गगनमंडलंप्राप्नुहि॥ ४॥

भाषार्थः

१ हे यजमान २ अनाहतशब्दवाले ३ चक्षुश्रोत्र वाक्रसनेन्द्रियजाठराग्नि रागमूल्यकाम औरमनसहित ४ प्राणोंकेसाथतुम ५ भृकुटिमंडलमेंजाओ ६,७ कोई भीकामआदि ८ तुमको ९,१० मतरोको ११ जैसे १२ पाशधरव्याध – १३,१४ मरुस्थलकीसमाननिष्फल १५ उन्हकामआदिको १६ अतिक्रमणकरके १७ गगनमंडलकोप्राप्तकरो॥ ४॥

गोतमऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

त्वमङ्ग प्रशंसिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम्। नत्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः॥५॥

हे (शविष्ठ) बलवत्तम (मघवन्) लक्ष्मीपते (अङ्ग) ब्रह्माणि प्रादुर्भूत (इन्द्र) परमेश्वर (ते) तवैव (वचः) वैदिकमन्त्ररूपं (ब्रवीमि) उच्चारयामि (त्वदन्यः) त्वत्तोऽन्यः कश्चित् (मर्डिता) सुखयिता (न) (अस्ति) (देवः) (त्वम्) (मर्त्यम्) अहङ्कारास्पदं जीवात्मानं (प्रशंसिषः) प्रशस्तं करोषि—॥५॥

भावार्थः—१ हे बलवत्तम २ लक्ष्मीपते ३ ब्रह्ममें प्रादुर्भूत ४ परमेश्वर ५ आपके ही ६ वैदिक मंत्ररूप वचनको ७ उच्चारण करता हूं ८ आपसे अन्य को ई ९ सुखदाता १० नहीं ११ है १२ मायाके खिलोंनोंसे खेलने वाले १३ तुम १४ अहंकारास्पद जीवात्मा को १५ प्रशस्त करते हो—॥५॥

नृमेध पुरुमेधा ऋषी बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

त्वमिन्द्र यशा अस्यृजीषी शवसस्पतिः। त्वं वृत्राणि हंस्यप्रतीन्येक इत्पुर्वनुत्तश्चर्षणीधृतिः ६-१६

(इन्द्र) हे अन्तर्यामिन् परमेश्वर (त्वम्) (शवसस्पतिः) बलपतिरात्मारूपः (ऋजीषी) ऋजीषतुल्ये देहे व्याप्तो भूतात्मारूपः (यशाः) मानससूर्यरूपः। आदित्यो यशः प्रा० १४।८।१।३२ (असि) (अनुत्तः) नकेनापि प्रेरितो हेता भगवान् (चर्षणीधृतिः) भक्तानां धारकस्त्वं (एकः) (इत्) एव (अप्रतीनि) मायश्चित्तहीनानि (पुरु) पुरूणि बहूनि (वृत्राणि) पापानि (हंसि)—॥६॥

भावार्थः—१ हे अन्तर्यामी परमेश्वर २ तुम ३ बलपति आत्मा रूप ४ भूता

आगच्छ (सचा) सहवासी भूत्वा (सुपिब) आत्मप्रति विंबं सुष्ठुपिव॥१॥

भावार्थः – १ हे परमेश्वर २ जैसे ३ गौरमृग ४ प्यासा होता ५ जलोंसे संस्रुत ६ निस्तृणतटाकदेशको ७ प्राप्त करता है उसी प्रकार ८ सखित्व ९ प्राप्त होनेपर १० शीघ्र ११ हम १२ मेधावी वागादिऋत्विजों के बीच १३ आओ १४ सहवासी होकर १५ आत्मप्रतिविंब को पान करो –॥२०॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्मविरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने तृतीयाध्यायस्य द्वितीयः खण्डः

अथ तृतीयः खण्डः

भर्गऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

शग्ध्यू ३ षु शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः। भगं नहि त्वा यशसं वसुविदमनु शूर चरामसि॥१॥२१

हे (शचीपते) यज्ञपते। शचीति कर्मनाम नि० २।१।२२ (न) च (शूर) असुराणां जये शूर (इन्द्र) परमेश्वर (विश्वाभिः) सर्वाभिः (ऊतिभिः) रक्षाभिः (उ) एव (भगम्) योगैश्वर्यं (शग्धि) देहि (वसुविदं) धनस्य योगैश्वर्यस्य वा लम्भकं (यशसम्) यशस्विनं (त्वा) त्वाम् (अनुचरामसि) परिचरामः॥१॥

भावार्थः – १ हे यज्ञपते २ और हे असुरों के जीतने में शूर ४ परमेश्वर ५ सब ६ रक्षाओं के साथ ७ ही ८ योगैश्वर्य को ९ दो १० धन वा योगैश्वर्य के प्रापक ११ यशस्वी १२ तुमको १३ हम सेवा करते हैं॥१॥

रेभः काश्यपऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

यो इन्द्र भुज आभरः स्ववाँ असुरेभ्यः। स्तोतारमिन्मघवन्नस्य वर्द्धय ये च त्वे वृक्तबर्हिषः॥२॥२२

हे(मघवन्) धनवन्(इन्द्र) परमेश्वर(स्वर्वान्) सूर्यरूपस्त्वं(याः) (भुजः) यानि भोक्तव्यान्यन्नानि(असुरेभ्यः) मेघेभ्यः सकाशात्नि (आभरः) आहरः उत्पन्नानि कृतवानसितैः(अस्य) तवस्वरूपस्य (स्तोतारम्)(इत्) एव(वर्द्धय)(ये)(त्वे) त्वदर्थं(वृक्तबर्हिषः) स्तीर्णबर्हिषः(च) तानपि वर्द्धय॥२॥

भावार्थः—१हे धनी २परमेश्वर ३सूर्यरूप तुमने ४जिन ५भोक्तव्य अन्नोंको ६मेघोंके सकाश से ७उत्पन्न किया है उनके द्वारा ८तेरे स्वरूपके ९स्तोताको १० ही ११ बढ़ाओ १२ जो १३ आपके लिये १४ स्तीर्णकुशा हैं १५ उनकोभी बढ़ाओ—॥२॥ जमदग्निर्ऋषिर्बृहती छन्दो मित्राद्या देवताः

प्र मित्राय प्रार्यम्णे सचथ्यमृतावसो वरूथ्ये ३ वरुणे छन्द्यं वचः स्तोत्रं राजसु गायत॥२३

हे ऋत्विजः(ऋतावसः) यज्ञान्नवतो यजमानस्य(वरूथ्ये) यज्ञगृहे(मित्राय)(अर्यम्णे)(वरुणे) वरुणाय(छन्द्यम्) छन्दोमयं(सचथ्यम्) सेवार्हं वेदोक्तं(वचः) वचनं स्तोत्रं(प्रगायत)(राजसु) यज्ञे राजमानेषु तेषु(स्तोत्रम्)(प्र) प्रपठत॥३॥

भावार्थः—हे ऋत्विजो१ यज्ञान्नवान् यजमानके २यज्ञगृहमें ३मित्र४ अर्यमा५ वरुणाके लिये ६छन्दोमय७ सेवा योग्य वेदोक्त ८स्तोत्रको ९गाओ १० यज्ञमें उनके विराजमान होनेपर ११ स्तोत्रको १२पढो॥३

अथाध्यात्मम्—वागाद्यृत्विजः(ऋतावसः) सत्यान्नवतो योगिनः(वरूथ्ये) यज्ञगृहे(मित्राय) प्राणाय(अर्य्यम्णे) मनसे (वरुणे) अपानाय(छन्द्यम्) छन्दोमयं(सचथ्यम्) वेदोक्तं(वचः) स्तोत्रं(प्रगायत)(राजसु) योगानुष्ठाने राजमानेषु तेषु(स्तोत्रम्)

(प्र) प्रपठत ॥ ३ ॥

भाषार्थः – हे वागादि ऋत्विजो १ सत्य अन्न वाले योगी के २ यज्ञ गृह में ३ प्राण ४ मन ५ और अपान के लिये ६ छन्दोमय ७ वेदोक्त ८ स्तोत्र को ९ गाओ १० योगानुष्ठान में उनके विराजमान होने पर ११ स्तोत्र को १२ पढो ॥ ३ ॥

मेधातिथिऋषिर्बृहती छन्द इन्द्र रुद्रा देवताः

अभि त्वा पूर्वपीतय इन्द्र स्तोमेभिरायवः । समीचीनास ऋभवः समस्वरन्रुद्रा गृणन्त पूर्व्यम् ॥ ४ ॥ २४

हे (इन्द्र) परमेश्वर (आयवः) मनुष्याः स्तोतारः (पूर्वपीतये) पूर्वस्यात्ममतिबिंबस्य पानाय (स्तोमेभिः) स्तोत्रैः (त्वा) त्वां (पूर्व्यम्) आद्यं (समस्वरन्) सम्यग् स्तुवन् स्तु शब्दे तथा (समीचीनासः) सङ्गताः (ऋभवः) मेधाविनः (रुद्राः) प्राणाः श० १४ । ६ । ९ । ५ (अभि गृणन्त) अभ्यष्टुवन् ॥ ४ ॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ स्तोता मनुष्य ने ३ आत्ममतिबिंब के पानार्थ ४ स्तोत्रों से ५ तुझ ६ आद्य को ७ भले प्रकार स्तुत किया तथा ८ सङ्गत ९ मेधावी १० प्राणों ने ११ स्तुति की ॥ ५ ॥

नृमेधपुरुमेधावृषी बृहती छन्द इन्द्र मरुता देवताः

प्र व इन्द्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चत । वृत्रं हनति वृत्रहा शतक्रतुर्वज्रेण शतपर्वणा ॥ ५ ॥ २५ ॥

हे (मरुतः) प्राणाः श० १४ । ६ । ९ । ५ यद्वा वागाद्यृत्विजः नि० ३ । १८ (वः) युष्माकं (बृहते) महते (इन्द्राय) परमेश्वराय (ब्रह्म) आत्ममतिबिंबरूपान्नं नि० २ । ७ । २५ (अर्चत) प्रार्पयत यस्मात् (वृत्रहा) पापस्य हन्ता (शतक्रतुः) अनन्तकर्मा परमेश्वरः (शतपर्वणा)

अनन्त धारेण (वज्रेण) ज्ञान वज्रेण (वृत्रम्) पापं (हनोति) नाशयति ॥५॥

भावार्थः –१ हे प्राणों वा वागादि ऋत्विजो २ तुम्हारे ३,४ परमेश्वर के लिये ५ आत्म मति विंवरूप अन्न को ६ भाग्न कराओ ७ पाप नाशक ८ अनन्त कर्मा ९ परमेश्वर १० अनन्त धारा वाले ११ ज्ञान वज्र से १२ पाप को १३ नाश करता है ॥५॥ विनियोगः पूर्ववत्

बृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहन्तमम् । येन ज्योतिरजनयन् नृतावृधो देवन्देवाय जागृवि ६-२६

हे (मरुतः) वागाद्यृत्विजः (इन्द्राय) परमेश्वराय (वृत्रहन्तमम्) अतिशयेन पाप विनाशकं (बृहत्) साम (गायत) (येन) साम्ना (ऋतावृधः) ऋतस्य यज्ञस्य वर्धकाः प्राणाः (देवाय) परमेश्वराय (देवम्) विद्वांसं। विद्वांसोहि देवाः श० ३।७।३।१० (जागृवि) जागरण शीलं (ज्योतिः) मानस सूर्यं (अजनयन्) संस्कृतम कुर्वन् ॥६॥ **भावार्थः**

१ हे वागाद्यृत्विजो २ परमेश्वर के लिये ३ अतिशय पाप विनाशक ४ बृहत्साम को ५ गाओ ६ जिस साम के द्वारा ७ यज्ञ वृद्धि करने वाले प्राणों ने ८ परमेश्वर के लिये ९ विद्वान् १० जागरण शील ११ मानस सूर्य का १२ संस्कार किया ॥६॥

वसिष्ठ ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्र क्रतुन्न आभर पिता पुत्रेभ्यो यथा । शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि ॥७॥२७

हे (इन्द्र) परमेश्वर (नः) अस्मभ्यम् (क्रतुम्) प्रज्ञानं (आभर)

आहर देहि (नः) अस्मभ्यं (शिक्षे) विद्यांप्रयच्छ (यथा) (पिता) (पुत्रेभ्यः) हेपुरुहूत) बहुभिराहूतपरमेश्वर (जीवाः) वयं (यामनि) योग यज्ञे। यान्ति देवा यस्मिन् स यामो यज्ञः (ज्योतिः) महा पुरुषं त्वां (अशी महि) प्राप्नुयामः॥ ७॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ हमारे ३ प्रज्ञान को ४ दीजिये ५ हमारे लिये ६ विद्या दीजिये ७ जैसे ८ पिता ९ पुत्रों के लिये देता है १० हे बहुत से आहूत परमेश्वर ११ हम जीव १२ योगयज्ञ में १३ महा पुरुष तुमको १४ प्राप्त करें॥ ७

रेभऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता।

मा न इन्द्र परा वृणग्भवा नः सधमाद्ये। त्वन्न ऊती त्वमिन्न आप्यं मा न इन्द्र परा वृणक्॥ ८॥ २८

(हे) सर्वव्यापिन् हे (इन्द्र) परमेश्वर (नः) अस्मान् (मा) (परा वृणक्) मापरित्याक्षीः। वृजी वर्जने (नः) अस्माकं (सधमाद्ये) सहमादन हेतु भूते यज्ञे (भव) प्रादुर्भव (इन्द्र) हे परमेश्वर (त्वम्) (नः) अस्माकं (ऊती) रक्षिता (त्वम्) (इत्) एव (नः) अस्माकं (आप्यम्) ज्ञातव्यो बन्धुः (नः) अस्मान् (मा) (परा वृणक्) मा परित्याक्षीः॥ ८॥

भाषार्थः

१ हे सर्वव्यापिन् २ परमेश्वर ३ हमको ४,५ मत त्यागो ६ हमारे ७ यज्ञ में ८ प्रकट हो ९ हे परमेश्वर १० तुम ११ हमारे १२ रक्षक हो १३ तुम १४ ही १५ हमारे १६ जानने योग्य बन्धु हो १७ हमको १८,१९ मत त्यागो—॥ ८॥

मेधातिथिऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता।

वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः। पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन् परि स्तोतार आसते॥ ९-२९

हे (वृत्रहन्) पापनाशक परमेश्वर (सुतावन्तः) सोममात्मप्रतिबिंबमभिषुतवन्तः (वृक्तबर्हिषः) स्तीर्णबर्हिषः स्तीर्णनाडीका (स्तोतारः) (वयम्) (त्वा) त्वां (घ) खलु (पवित्रस्य) प्राणस्य। अयं वै पवित्रं योऽयं पवते सोऽयं पुरुषेऽन्तः प्रविष्टः श० १।१।३।२ (प्रस्रवणेषु) कमलेषु (पर्यासते) (न) यथा (आपः) नदी निर्झरेण स्थानेषु द्वीपं परिवार्य व्यवतिष्ठन्ते ॥९॥

भावार्थः – १ हे पापनाशक परमेश्वर २ सोमवा आत्मप्रतिबिंब का अभिषव करने वाले ३ स्तीर्णबर्हिवा नाडी वाले ४ स्तोता ५ हम ६ तुमको ७ ही ८ प्राण के ९ कमलों में १० उपासना करते हैं ११ जैसे १२ जल नदी के झिरना से स्थानों में द्वीप को घेरकर स्थित होते हैं ॥९॥

भरद्वाज ऋषिः बृहती छन्द इन्द्रो देवता।

यदिन्द्र नाहुषीष्वा ओजो नृम्णं च कृष्टिषु।
यद्वा पञ्च क्षितीनां द्युम्नमाभर सत्रा विश्वानि
पौंस्या ॥१०॥ ३०

हे (इन्द्र) परमेश्वर (नाहुषीषु) मानवीषु। नहुष इति मनुष्यः निं० २।३।९ (कृष्टिषु) प्रजासु (यत्) (ओजः) बलं (च) (नृम्णम्) धनं (आ) आविद्यते (वा) अथवा (पञ्च) (क्षितीनाम्) ब्रह्मचारिगृहस्थवानप्रस्थसन्यासिपरमहंसानां। क्षितय इति मनुष्यनाम निं० २।३।६ (यत्) (द्युम्नम्) बलं यानि (विश्वानि) सर्वाणि (पौंस्या) पौंस्यानि पुरुषार्थसाधनानि चिनानि (सत्रा) सर्वदा (आभर) आहर देहि ॥१०॥

भावार्थः – १ हे परमेश्वर २ मानवी ३ प्रजाओं में ४ जो ५ बल ६ और

७धन ८ विद्यमानहै ९ अथवा १०,११ ब्रह्मचर्य गृहस्थवानप्रस्थ सन्यासीपरम-हंसोंका १२ जो १३ बल और जो १४ सब १५ पुरुषार्थ साधनहै १६ उन सबको-१७ दीजिये ॥—॥१०॥

इतिश्री भृगुवंशावतंसश्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्मविरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्यानेतृतीयाध्यायस्यतृतीयः खण्डः ३

अथ चतुर्थः खण्डः

मेधातिथिऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

सत्यमित्था वृषेदसि वृषजूतिर्नोऽविता। वृषाह्युग्र शृण्विषे परावति वृषो अर्वावति श्रुतः॥१॥३१

हे(उग्र) उत्कृष्ट परमेश्वर(सत्यम्) ब्रह्मरूपस्त्वं(इत्था) एवंप्रकारेण(वृषा) धर्मकामार्थमोक्षाणां वर्षकः(इत्) एव(असि)(वृषजूतिः) वृषेधर्मेजूतिर्वेगोयस्य सधर्मरूपस्त्वं(नः) अस्माकं(अविता) रक्षिता(वृषा) धर्मकामार्थमोक्षाणांवर्षकः(हि)(शृण्विषे) श्रूयसे(परावति) महानारायणरूपे(वृषो)(इव) असि(अर्वावति) अर्वा अश्वः मानस सूर्यस्तद्वति विष्णुमहेशादिरूपे(वृषा) धर्मार्थकाममोक्षाणांवर्षकः(श्रुतः)॥१॥

भावार्थः—१हेउत्कृष्टपरमेश्वर २ब्रह्मरूपतुम ३इसीप्रकारसे ४धर्मकामार्थमोक्षकेदाता ५ ही ६ हो ७ धर्मरूपतुम ८ हमारे ९ रक्षक १० चारोंपदार्थकेदाता ११ ही १२ सुनेजातेहो १३ महानारायणरूपमें १४ चारोंपदार्थकेदाता १५ हीहो १६ विष्णुमहेशआदिरूपमें १७ चारोंपदार्थकेदाता-१८ विख्यातहो॥१॥ रेभऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

यच्छक्रासि परावति यदर्वावति वृत्रहन्। अतस्त्वा

गीर्भिर्द्युगदिन्द्र केशिभिः सुतावाँ अविवासति ॥२॥

हे (शक्र) शत्रुहनन समर्थ (वृत्रहन्) वृत्रनाशक (इन्द्र) (यद्) यदा (परावति) दूरे द्युलोकदेशे (असि) (यद्) यद्वा (अर्वावति) अर्वाचीने अन्तरिक्षे (अतः) अस्मात्स्थानात् (सुतावान्) अभिषुत सोमवान् यजमानः (त्वा) त्वां (केशिभिः) हरिभिरिवस्थिताभिः (गीर्भिः) (द्युगत्) शीघ्रं (आविवासति) आत्मीयं यज्ञं प्रति आगमयति ॥२॥

भावार्थः

१ हे शत्रुहनन में समर्थ २ वृत्रनाशक ३ इन्द्र ४ जब ५ स्वर्ग में ६ हो ७ अथवा ८ अन्तरिक्ष में हो ९ इस स्थान से १० अभिषुत सोम वाला यजमान ११ तुमको १२ अश्व तुल्य स्थित १३ वेदवचनों के द्वारा १४ शीघ्र १५ अपने यज्ञ में प्राप्त करता है ॥२॥

अथाध्यात्मम्

(हे (शक्र) सर्वशक्तिमन् (वृत्रहन्) पापनाशक (इन्द्र) परमेश्वर (यत्) यस्मात् (परावति) महानारायण रूपे (असि) (यत्) यस्माच्च (अर्वावति) ब्रह्मविष्णु महेशादि रूपे ऽसि (अतः) अस्मात्कार———णात् (सुतावान्) अभिषुतात्म मति विंबो यजमानः (त्वा) त्वां (केशिभिः) (क) ब्रह्मा (अ) विष्णुः (इ) रुद्रः (श) महापुरुषः तत्संबंधिभिः (गीर्भिः) (द्युगत्) शीघ्रं (आविवासति) परिचरति ॥२॥

भावार्थः

१ हे सर्वशक्तिमान २ पापनाशक ३ परमेश्वर ४ जिस कारण ५ महानारायण रूप में ६ हो ७ और जिस कारण ८ ब्रह्मा विष्णु महेश आदि रूप में हो ९ इसी कारण से १० अभिषुत आत्ममति विंव वाला यजमान ११ तुमको १२ त्रिदेव महापुरुष संबंधी १३ वचनों के द्वारा १४ शीघ्र १५ सेवा करता है ॥२

वत्सऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता·

अभिवोवीरमन्धसोमदेषुगायगिरामहाविचे तसम्। इन्द्रन्नामश्रुत्यꣳशाकिनंवचोयथा ३-३३

हे(वाक्)(वः) युष्माकं(अन्धसः) आत्ममतिविवस्य(मदेषु)(वीरं) कामादीनां जेतारं(नाम) शत्रूणां नामकं(विचेतसं) ज्ञानस्वरूपं (शाकिनं) सर्वशक्तिमन्तं(इन्द्रम्) परमेश्वरं(महागिरा) महा वाचा (अभिगाय)(यथा)(श्रुत्यम्) श्रुतौभवं(वचः) वचनं कश्चित्सत्यार्थत्वेन स्तौति ॥ ३॥

भाषार्थः – हेवाक् १ तुम्हारे २ आत्ममतिविवके ३ मदों में ४ काम आदि के जेता ५ शत्रुओं के अभिभविता ६ ज्ञानस्वरूप ७ सर्वशक्तिमान ८ परमेश्वर को ९ महावाक्द्वारा १० गाओ ११ जैसे १२ श्रुतिभव १३ वचन को कोई सत्यार्थता से स्तुत करता है ॥ ३॥

भरद्वाजऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता·

इन्द्रत्रिधातुशरणन्त्रिवरूथꣳस्वस्तये। छर्दिर्यच्छमघवद्भ्यश्चमह्यञ्चयावयादिद्युमेभ्यः ४-३४

हे(इन्द्र) परमेश्वर(स्वस्तये) कल्याणाय मोक्षाय(त्रिधातु) ब्रह्मविष्णुमहेशाख्यधातुभिर्युक्तं(त्रिवरूथम्) जन्मस्थितिमरणजदुःखानां वारकं(छर्दिः) योगसमृद्ध्यादीप्तं। छर्दिर्दीप्तौ(शरणम्) स्वकीयलोकरूपं गृहं(मघवद्भ्यः) नखवद्भ्यः स्वपूजकेभ्यः(च)(मह्यम्) त्वद्भक्ताय(यच्छ) देहि(एभ्यः) भक्तेभ्यः सकाशात्(दिद्युम्) कामाज्ञाभ्यां प्रेरितं द्योतमानमायुधं(यावय) समन्तात्पृथक्कुरु ॥ ४॥

भाषार्थः –१ हे परमेश्वर २ कल्याण मोक्ष के लिये ३ त्रिदेवनाम धातु से युक्त ४ जन्मस्थिति मरण के दुखों के वारक ५ योगसमृद्धि से दीप्त ६ निज लोक रूप गृह को ७ अपने पूजकों ८ और ९ आपके भक्त मेरे लिये १० दीजिये ११ भक्तों के सकाश से १२ काम अज्ञान से प्रेरित द्योतमान आयुध को १३ सब ओर से हटाओ॥४॥ नृमेध ऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

श्रायन्त इव सूर्यं विश्वे दिन्द्रस्य भक्षत। वसूनि
जातो जनिमान्योजसा प्रति भागन्न दीधिमः ५-३५

हे वागाद्यृत्विजः (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य (विश्वा) विश्वानि सर्वाणि (जाते) जातानि (उ) च (जनिमानि) जनिष्यमाणानि (वसूनि) धनानि (इत्) एव (भक्षत) भजत (इव) यथा (सूर्यम्) (श्रायन्तः) समाश्रितास्तस्यांशवः वयमपि योगिनः (ओजसा) योग वलेन (प्रतिदीधिमः) मति धारयेम (न) यथा (भागम्) पित्र्यंभागं पुत्राः॥५

भाषार्थः – हे वागादि ऋत्विजो १ परमेश्वर के २ सब ३ उत्पन्न ४ और ५ जनिष्यमाण ६ धनों को ७ ही ८ सेवन करो ९ जैसे १० सूर्य में ११ समाश्रित किरणो–हम योगी भी १२ योगवल से १३ धारणा करें १४ जैसे १५ पिता के भाग को पुत्र॥५॥ पुरुहन्मा ऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

नसीमदेव आपत दिषन्दीर्घायो मर्त्यः। एतग्वा
चिदेत शो युयोजत इन्द्रो हरी युयोजते ॥६॥३६

हे (दीर्घायो) परमेश्वर (अदेवः) विज्ञान शून्यो हं ममत्वास्पदो मनुष्यः (सीम्) मायारूपं (इषम्) अन्नं (न) (आपतत्) न माप्नोति (यः) (अमर्त्यः) देवो विद्वान् विद्वांसोहि देवाः श० ३।७।३।१०(चित्) चिदात्मा (एतग्वा) अश्वो मानस सूर्यः नि० स (एतशः) मानससूर्य

(युयोजते) योगरथं योजयतितदा (इन्द्रः) परमेश्वरः (हरी) जीवेशौ (युयोजते) ॥ ६॥

भाषार्थः –१ हेपरमेश्वर २ विज्ञान भून्य अहं ममत्वास्पद मनुष्य ३ माया रूप ४ अन्न को ५,६ प्राप्तनहीं करताहै ७ जो ८ विद्वान् ९ चिदात्मा १० मानस सूर्य है ११ वह १२ योगरथको जोडताहैतव १३ परमेश्वर १४ जीवेश्वर को १५ एक करता है ॥ ६॥

नृमेधपुरुमेधा ऋषी बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

श्रोनो विश्वासु हव्यमिन्द्रं समत्सु भूषत। उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहन् परमज्या ऋचीषम ७-३७

(नः) अस्माकं (ब्रह्माणि) वेदोक्तानि स्तोत्राणि (विश्वासु) सर्वासु (समत्सु) यज्ञक्रियासु (हव्यम्) आव्हातव्यं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (आभूषत) अलङ्कुरुत हे (वृत्रहन्) पापनाशक (परमज्याः) वलवतां शत्रूणां नाशकः। परमान् वलेन् महतः शत्रून् जिनाति हिनस्तीति परमज्यास्तादृशस्त्वं (ऋचीषम) स्तुतिभिरभि मुखी करणीयपरमेश्वर (सवनानि) (उप) उपभूषय ॥ ७॥ .

भाषार्थः –१ हमारे २ वेदोक्त स्तोत्र ३ सव ४ यज्ञक्रियाओं में ५ आह्वान योग्य ६ परमेश्वरको ७ अलंकृत करो ८ हेपापनाशक ९ स्तुतिओं से सन्मुख करने योग्य परमेश्वर १० वलवान शत्रुओं के नाशक तुम ११ सवनों को १२ शोभितकरो ॥ ७ ॥ वसिष्ठ ऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

तवेदिन्द्रावमं वसु त्वं पुष्यासि मध्यमम्। सत्रा विश्वस्य परमस्य राजसि न किष्ट्वा गोषु वृण्वते ८॥ ३८

हे (इन्द्र) परमेश्वर (अवमम्) अधमं जीवसम्वन्धि (वसु) धनं (तव)

त) नवैव (त्वमे) (मध्यमं) ईश सम्बन्धि धनं (पुष्यसि) (सत्रा) सत्य स्वरूपेण (विश्वस्य) जीव समूहस्य (परमस्य) ईश समूहस्योपरि (राजसि) ईशिषे (किः) केऽपि (त्वा) त्वां (गोषु) किरण रूपेषु मानस सूर्येषु (न) (वृण्वते) नवारयन्ति सर्वात्मकत्वात्॥८॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ जीव सम्बंधी ३ धन ४ आप काही है ५ तुम ६ मध्यम ईश सम्बंधी धनको ७ पुष्ट करते हो ८ सत्य स्वरूपसे ९ जीव समूह १० और ईश संमूह के ऊपर ११ प्रकाश करते हो १२ कोई भी १३ तुमको १४ किरण रूप मानस सूर्यों में १५, १६ निवारण नहीं करते हैं सर्वात्मा होने से॥८॥ मेधातिथि र्मेध्यातिथिश्च ऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता॥

क्वेयथ क्वेदसि पुरुत्रा चिद्धि ते मनः। अलर्षि युध्म खजकृत् पुरन्दर प्रगायत्रा अगासिषुः॥९–३९॥

हे (इन्द्र) परमेश्वर (क्व) कुत्र लोके (इयथ) गतवानसि (क्व) (इत) कुत्र वा (असि) इति न (हि) यस्मात् (ते) तव (मनः) (चित्) चिदात्मा (पुरुत्रा) ब्रह्म विष्णु महेशादीनां देहेषु वर्त्तते बहुरूपः सर्व रूपश्चासि त्वदन्याभावादित्यर्थः हे (पुरन्दर) कामादीनां पुरां देहानां दारयतः (युध्म) हे युद्ध कुशल हे (खजकृत्) खे महाकाशे जन्म यस्य तद्ब्रह्माण्डं खजं तस्य कर्तृत्वं (अलर्षि) आगच्छ (गायत्राः) मन्त्राः (आगासिषुः) त्वां प्रगायन्ति स्तुवन्ति। अलर्षीति गतिकर्माणि० २।१४—॥९॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ किस लोक में ३ गये हो ४, ५ वा कहां ६ हो य ह वान नहीं है जिस कारण ८ तेरा ९ मन १० चिदात्मा ११ ब्रह्म विष्णु महेश आदि के देहों मे वर्त्तमान है अर्थात् आपका अन्य न होने से बहु रूप और सर्व रूप हो

१२ हे कामपुर शरीरों के दारक १३ हे युद्धकुशल १४ हे ब्रह्मांएड के कर्त्ता तुम १५ आओ १६ मन्त्र १७ तुमको गाते स्तुत करते है ॥ ६॥

कलिऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

वयमेन मिदाह्योपीपेमेह वज्रिणम्। तस्माउ अद्य सवने सुतं भरान्नूनं भूषत श्रुते-१०॥ ४०

(वयम्) यजमानाः (इह) अस्मिन्यज्ञे (एनम्) (वज्रिणम्) ज्ञान वज्र युक्तं परमेश्वरं (इत्) एव (आह्यो) अह व्याप्तौ इन् - आहिः परमात्मा तस्य प्रतिविंब आह्यस्तेन (उ) एव (अपीपेम) आप्याय याम। प्यायी ओप्यायी वृद्धौ हे वागा ऋत्विजः (अद्य) (सवने) (तस्मै) (उ) एव (सुतम्) अभिपुतात्मप्रतिविंबं (भर) देहि (नूनम्) (श्रुते) विख्याते परमेश्वरे (आभूषत) १०—॥४०॥

भावार्थः – १ हम यजमान २ इस यज्ञमें ३ इस ४ ज्ञान वज्रधारी परमेश्वरको ५ ही ६ आत्म प्रतिविंबार्पणद्वारा ७ ही ८ स्तुत करें ९ हे वागा ऋत्विजो अब १० सवनमे ११-१२ उसी के लिये १३ अभिपुत आत्म प्रतिविंब को १४ अर्पण करो १५ निश्चय १६ विख्यात परमेश्वर मे १७ शोभित होओ ॥ १०॥ ४०

इतिश्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य चतुर्थः खण्डः ४॥

अथ पञ्चमः खण्डः

पुरुहन्माऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः। विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठो यो वृत्रहा गृणे॥१॥ ४१

(यः) (चर्षणीनां) भक्तानां (राजा) (अध्रिगुः) अधृतगमनः अचल:

सन्(रथेभिः) शरीर रूपरथैः(याती)(विश्वासाम्) सर्वासां(पृतना नां) भक्तसेनानां(तरुता) तारकः(यः)(वृत्रहा) पापस्य हन्ता तं(ज्येष्ठम्) महापुरुषं(गृणे) स्तौमि॥१॥

भाषार्थः –१ जो २ भक्तोंका ३ रक्षा ४ परमेश्वर अचल होता ५ शरीर रूप रथों केद्वारा ६ व्यवहार में चलने वाला है ७ सब ८ भक्त सेनाओं का ९ तारक १० जो ११ पापनाशक है उस १२ महापुरुष को १३ स्तुत करता हूं॥१॥

भर्ग ऋषि बृहती छन्द इन्द्रो देवता

यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि। मघव ञ्छग्धि तव तन्न ऊतये वि द्विषो वि मृधो जहि॥२-४२

(इन्द्र) हे परमेश्वर(यतः) यस्मात्संसारात्(भयामहे)(ततः) तस्मात्(नः) अस्मभ्यं(अभयम्)(कृधि) कुरु हे(मघवन्) लक्ष्मी पते (नः) अस्माकं(ऊतये) रक्षणाय(तव) त्वभूतं(तत्) आत्म मतिविवं(शग्धि) याचस्व(द्विषः) अस्मद्द्वेष्टॄन् कामादीन्(विजहि)(मृधः) अस्मद्धिंसकान् विषयान्(वि) विजहि॥२॥

भाषार्थः –१ हे परमेश्वर २ जिस संसार मे ३ हम डरते हैं ४ उससे ५ हमारे लिये ६ अभय ७ करो ८ हे लक्ष्मी पते ९ हमारी १० रक्षा के लिये ११ आपके धनरूप १२ उस आत्म मति विवको १३ मांगो १४ हमारे द्वेष्टा काम आदिको १५ मारो १६ हमारे हिंसक विषयों को १७ मारो॥२॥

इरिमिठ ऋषि बृहती छन्द इन्द्रो देवता

वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणा ꣳ सत्रꣳ सोम्यानाम्। द्रप्सः पुरां भेत्ता शश्वतीनामिन्द्रो मुनीनां सखा॥३॥४३

हे(वास्तोष्पते) ब्रह्माण्डस्य स्वामिन्त्वं(स्थूणा) सुमेरु रूपः

(ध्रुवः) अचलः (सोम्यानाम्) अभिषुतात्मप्रतिबिंबानां भक्तानां (अंसत्रम्) कवचं कवचरूपः (द्रप्सः) द्रवणशीलात्मप्रतिबिंबरूप (शश्वतीनाम्) वह्वीनां नि० ३।१ (पुराम्) बंधकारण लिङ्ग देहानां (भेत्ता) विदारयिता (इन्द्रः) परमेश्वरः (मुनीनाम्) महर्षीणां योगिनां भक्तानां (सखा) असि ॥ ३ ॥

भावार्थः – १ हे ब्रह्माण्ड के स्वामी तुम २ सुमेरु रूप ३ अचल ४ अभिषुत आत्मप्रतिबिंब रूप भक्तों के ५ कवच रूप ६ द्रवणशील आत्मप्रतिबिंब रूप ७ बहुत ८ बंधकारण लिंग शरीरों के ९ चीरने वाले १० परमेश्वर ११ महर्षी योगी भक्तों के १२ सखा हो – ॥ ३ ॥

जमदग्निर्ऋषिर्बृहती छन्दः सूर्योदेवता

बण्महाँ असि सूर्य बडादित्य महाँ असि। महस्ते सतो महिमा पनिष्टम मह्ना देव महाँ असि ॥ ४-४४

हे (सूर्य) सर्वप्रेरक परमेश्वर त्वं (महान्) महापुरुषः (असि) इति (बट्) सत्यं हे (आदित्य) सूर्यरूप परमेश्वर त्वं (महान्) (असि) ब्रह्माण्डे व्यापकत्वात् (बट्) इति सत्यं (महो) महतः (सतः) (ते) तव (महिमा) महत्वं (पनिष्टमे) पनस्यते स्तोतृभिः स्तूयते हे (देव) मायाक्रीडनकैः क्रीडनशील परमेश्वर त्वं (मह्ना) महत्वेन (महान्) (असि) परात्परत्वात् ॥ ४ ॥

भावार्थः – १ हे सर्वप्रेरक परमेश्वर तुम २ महापुरुष ३ हो ४ यह सत्य है ५ हे सूर्य रूप परमेश्वर ६ महान ७ हो ब्रह्माण्ड में व्यापक होने से ८ यह सत्य है ९-१०,११ तुझ महापुरुष का १२ महत्व १३ स्तोताओं से स्तुति किया जाता है १४ हे माया के खिलौनों से क्रीडनशील परमेश्वर तुम १५ महत्व से-

१६ महान् १७ ही परात्पर होनेसे ॥ ४ ॥

देवातिथि र्ऋषिः बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

अश्वी रथी सुरूप इद्गोमाँ इदिन्द्र ते सखा। श्वात्रभाजा वयसा सचते सदा चन्द्रैर्याति सभामुप ॥ ५ ॥ ४५

हे (इन्द्र) परमेश्वर (ते) तव (सखा) भक्तः (अश्वी) अश्वैर्युक्तः (रथी) रथवान् (सुरूपः) शोभन रूपः (इत्) एव भवति तथा (गोमान्) गोभिर्युक्तः (इत्) एव भवति अपि च (श्वात्रभाजा) धन संयुक्तेन। श्वात्रमिति धन नाम नि० २।१० (वयसा) अन्नेन नि० २।७ (सचते) समवैति सङ्गच्छते (चन्द्रैः) सर्वेषामाल्हादकैः कान्तिभिः (सभाम्) जनसंसदं (उपयाति) उपगच्छति ॥ ५ ॥ ४५

भावार्थः -१ हे परमेश्वर २ तेरा ३ भक्त ४ घोड़ोंसे युक्त ५ रथवान् ६ शुभरूप ७ ही होता है ८ गौओं से युक्त ९ ही होता है और १० धन संयुक्त ११ अन्नसे १२ संयोग को पाता है १३ सर्वाल्हादक कान्तिओं के साथ १४ सभाको १५ जाता है-॥ ५ ॥ ४५ पुरुहन्मा ऋषिः बृहती छन्द इन्द्रो देवता

यद्द्याव इन्द्र ते शतं शतं भूमीरुत स्युः। न त्वा वज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी ॥ ६-४६

हे (वज्रिन्) ज्ञान वज्रधर (इन्द्र) परमेश्वर (यत्) यदि (ते) (द्यावः) द्युलोकाः (शतम्) बहवः (स्युः) (उत) (भूमीः) भूम्यः (शतम्) (न) च (सूर्याः) (सहस्रम्) स्युः तथापि (रोदसी) द्यावापृथिव्यौ (जातम्) महापुरुषरूपेण प्रादुर्भूतं (त्वा) त्वां (न) (अन्वष्ट) न व्याप्नुवन्ति सर्वेभ्योऽधिकोसीत्यर्थः यथा पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या

मूर्तं दिवीत यज्ञु० ॥६॥

भाषार्थः –१ हे ज्ञान वज्रधारी २ परमेश्वर ३ यदि ४ आपका ५ स्वर्गलोक ६ शतगुण ७ होवे ८ और ९ भोमदिव्यभूमि १० शतगुण होवें ११ और १२ सूर्य १३ सहस्र होवें तो भी १४ पृथिवी स्वर्ग १५,१६ तुझ महापुरुषरूप से मादुर्भूतको १७,१८ व्याप्त नहीं करे–॥६॥

देवातिथिर्ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

यदिन्द्र प्रागपागुदङ्न्यग्वा हूयसे नृभिः सिमा पुरू नृषूतो अस्यानवेऽसि प्रशर्ध तुर्वशे ॥७॥ ४७

हे (इन्द्र) परमेश्वर (यद्) यस्मात् (प्राक्) प्राच्यां (अपाक्) प्रतीच्यां (उदक्) उदीच्यां (वा) यद्वा (न्यक्) नीचायां दिशि (नृभिः) प्रवृत्त पुरुषैः (सिमा) सर्वस्मिन्यज्ञे (पुरू) बहुलं (हूयसे) आहूयसे तस्मात् हे (प्रशर्ध) प्रकर्षेण शर्धयितः कामादीनामभिभवितः (अस्य) आत्ममति विवस्य (तुर्वशे) उरुवक्त्र अश भोजने विराड् रूपान्नं भोजनं यस्य तस्मै निवृत्त मार्गस्थे (आनवे) अनुर्देहस्तत्रस्यात्मनि (नृषूतः) नृभिर्नेतृभिर्वागाद्यृत्विग्भिः प्रेरित (असि) ७

भाषार्थः –१ हे परमेश्वर २ जिस कारण ३ पूर्व ४ पश्चिम ५ उत्तर ६ वा ७ नीची दिशा में ८ प्रवृत्त पुरुषों के द्वारा ९ सब यज्ञों में १० बहुधा ११ आह्वान किये जाते हो उस कारण १२ हे काम आदि के अभिभविता १३ इस आत्ममति विवके १४ विराट् रूपान्न भक्षी १५ आत्मा में १६ वाक् आदि ऋत्विजों से प्रेरित १७ हो–॥७॥ वसिष्ठ ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

कस्तमिन्द्र त्वा वसवा मर्त्यो दधर्षति। श्रद्धा हि ते मघवन्पार्ये दिवि वाजी वाजं सिषासति ॥८॥ ४८

हे(वसो) सर्वव्यापिंन्(इन्द्रे) परमेश्वर(तमे) यजमानं(कः)(मर्त्यः) मनुष्यः शत्रुः(आधर्षति) नकोपियः(मघवान्) मखवान् अ०१४।१।१।१३(वाजी) मानससूर्यः अ०६।३।१।२९(ऋद्धाहिते) ऋद्ध्या स्थापिते योग यज्ञे(पार्ये) पारेभवे(दिवि) भृकुट्यां(वाजम्) आत्ममतिविंबरूपान्नं(त्वा) त्वां(सिषासति) दातुमिच्छति॥८॥

भाषार्थः

१ हे सर्वव्यापिन् २ परमेश्वर ३ उस मानससूर्य को ४ कोन ५ शत्रु ६ तिरस्कृत करता है अर्थात् कोई नहीं जो ७ यज्ञवान ८ मानससूर्य ९ ऋद्धि से स्थापित योग यज्ञ में १०,११ भृकुटि मंडल के बीच १२ आत्ममतिविंब रूप अन्न १३ तुझको १४ देना चाहता है—॥८॥

भरद्वाज ऋषिर्बृहती छन्दइन्द्राग्नी देवते

इन्द्राग्नी अपादियं पूर्वागात्पद्वतीभ्यः। हित्वी शिरो जिह्वया रारपच्चरत्त्रिंशत्पदान्यक्रमीत् ९-४९

हे(इन्द्राग्नी) जीवेशौ। इन्द्राग्नी वै सर्वे देवाः अ०६।१।२।२८(इयम्)(अपात्) पादरहिता अचला महावाक्(पद्वतीभ्यः) पादयुक्ताभ्यश्चलाभ्यः(सुवाग्भ्यः) वाग्भ्यः(पूर्वा) मुख्या(आगात्) आदुर्भूता(शिरः) मानससूर्यं अ०६।३।१।२९(हित्वा) त्यक्त्वा तेन आदुर्भूत्वा(जिह्वया)(रारपत्) भृशं शब्दं कुर्वती(चरत्) उपाधिं भक्षयन्ती(त्रिंशत्)(पदानि) तत्वानि २४ शरीराणि ३ अवस्थाः ३(न्यक्रमीत्) अतिक्रामति सोपासनीयेत्यर्थः॥९॥

भाषार्थः—१ हे जीव ईश्वरो २ यह ३ अचला महावाक् ४ पादयुक्त चल ५ वाक्यों से ६ मुख्य ७ प्रकट हुई ८ मानससूर्य को ९ त्याग कर अर्थात्

उससे प्रकट होकर १० जिह्वा से ११ शब्द करती १२ और उपाधि को भक्षण करती १३, १४ चौवीस तत्व तीन शरीर तीन अवस्था इन तीसों को १५ अतिक्रमण करती है वही उपासना योग्य है—॥९॥

वालखिल्या ऋषयो बृहती छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्र नेदीय एदिहि मितमेधाभिरूतिभिः। आ शन्तम शन्तमाभिरभिष्टिभिरा स्वापे स्वापिभिः१०—५०

हे (शन्तम) महाऽऽनन्दस्वरूप (स्वापे) अस्माकं बंधुभूत (इन्द्र) परमेश्वर (शन्तमाभिः) महाऽऽनन्दस्वरूपाभिः (स्वापिभिः) बंधुभूताभिः (अभिष्टिभिः) अभामायातस्या दृष्टिभिः (नेदीयः) अत्यंत समीपस्थस्त्वं (मितमेधाभिः) मेधया मिताभिः (ऊतिभिः) रक्षाभिः सह (एदिहि) आगच्छ (आ) एदिहि (आ) एदिहि आगच्छ॥१०॥

भाषार्थः—१ हे महाआनन्दस्वरूप २ हमारे बंधुभूत ३ परमेश्वर ४ महाआनंदस्वरूप ५ बंधुभूत ६ माया दृष्टिओं के द्वारा ७ अत्यन्त समीपस्थ तुम ८ बुद्धि निर्मित ९ रक्षाओ के साथ १० आओ ११ आओ १२ आओ—॥१०॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सनुज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य पञ्चमः खण्डः ५॥

अथ षष्ठः खण्डः

नृमेध ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

इतऊती वो अजरं प्रहेतारमप्रहितम्। आशुं जेतारं हेतारं रथीतममतूर्त्तं तुग्रियावृधम्॥१॥

हे भक्तजनाः (अजरम्) महापुरुषरूपेण जरारहितं (प्रहेतारम्) ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपेण देवशत्रूणां प्रेरकं (अप्रहितं) नृसिंहबुधरूपा

भ्यांकेनाप्यप्रेषितं (आभुम्) वराहरूपेण समन्तात्भूशब्दस्य कर्त्तारं (ऊती) ऊत्यालीलयैवावतारेषु (जेतारम्) असुराणांजेतारं (वः) (होतारं) अग्निरूपेणयुष्माकंहोतारं (रथीतमम्) रामरूपेणरथिनां श्रेष्ठं (अतूर्त्तं) अन्तर्यामिरूपेणकेनाप्यहिंसितं (तुग्र्यावृधं) कूर्ममत्स्यरूपाभ्यामुदकेवर्धमानंपरमेश्वरं (इतः) मानुत ॥१॥

भावार्थः

हेभक्तजनो १ महापुरुषरूपसेजरारहित २ ब्रह्मविष्णुमहेशरूपसे शत्रुओंकेमेरक ३ नृसिंहवुधरूपसेकिसीसेभीनभेजे ४ वाराहरूपसे सबओर भूशब्दकरनेवाले ५ अवतारोंमेंलीलाओंसेही ६ असुरोंकेजेता ७,८ अग्निरूपसे तुम्हारेहोता ९ रामरूपसेरथियोंमेंश्रेष्ठ १० अन्तर्यामीरूपमें सबकेअहिंसित ११ कूर्ममत्स्यरूपमें जलमें वर्द्धमान परमेश्वरको १२ मात्रकरो—॥१॥

वसिष्ठऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता—

मोषुत्वावाघतश्चनारे अस्मन्निरीरमन्। आरात्तोद्वासधमादन्न आगहीहवासन्नुप श्रुधि ॥२॥

हेपरमेश्वर (सुवाघतः) मेधाविनो वागा ऋत्विजः (चन) अपि (त्वो) त्वां (अस्मत्) अस्मत्तः (आरे) दूरे (मो) मैव (निरीरमन्) निनरां मा रमयन्तु (आरात्तात्) योगात्पूर्वं दूरेऽपिवर्त्तमानः (नः) अस्मदीयं (सधमादं) सहमाद्यन्तियत्रसयोगयज्ञस्तंप्रति (आगहि) आगच्छ (वा) अथवा (इह) जीवात्मनि (सन्) अन्तर्यामिरूपेणविद्यमानःसन् (उपश्रुधि) अस्मदीयंस्तोत्रमुपशृणु ॥२॥

भावार्थः – हेपरमेश्वर १ मेधावीवाक् आदिऋत्विज २ भी ३ तुमको ४ हमसे ५ दूर ६ मत ७ रमाओ ८ योगसेपूर्वदूरवर्त्तमानभी ९ हमारे १० यज्ञमें ११

आओ १२ अथवा १३ इसजीवात्मामें १४ अन्तर्यामी रूपसे विद्यमान होने १५ हमारे स्तोत्रकोसुनो ॥२॥

वासिष्ठ ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता–

सुनोतसोमपावने सोममिन्द्राय वज्रिणे। पचता पक्तीरवसे कृणुध्वमित् पृणन्नित्पृणते मयः॥३-५३

हे मदीयाः पुरुषाः (वज्रिणे) वज्रवते (सोमपाव्ने) सोमस्य पात्रे (इन्द्राय) (सोमम्) (सुनोत) अभिषुणुत (अवसे) इन्द्रन्तर्पयितुं (पक्तीः) पक्तव्यान् पुरोडाशादीन् (आपचत) (कृणुध्वम्) (इत्) इन्द्रप्रियकराणि कर्माणि च कुरुतैव सः (मयः) सुखं (पृणन्नित्) यजमानाय प्रयच्छन्नेव (पृणते) हवींषीति शेषः॥३॥

भाषार्थः – हे मेरे पुरुषो १ वज्रधारी २ सोमपाता ३ इन्द्र के लिये ४ सोमको ५ अभिषवन करो ६ इन्द्र के तर्पण को ७ पकाने योग्य पुरोडाश आदि को ८ पकाओ ९,१० इन्द्र प्रिय कारक कर्मों को ही करो ११ वह इन्द्र सुख को १२,१३ यजमान को देताही १४ हविओं को भक्षण करता है॥३

अथाध्यात्मम् – हे भक्तजनाः (वज्रिणे) ज्ञानवज्रवते (सोमपात्रे) आत्मप्रतिबिंबस्य पात्रे (इन्द्राय) परमेश्वराय (सोमम्) आत्मप्रति बिंबं (सुनोत) अभिषुणुत (अवसे) तस्य तर्पयितुं (पक्तीः) पक्तव्यानीन्द्रियाणि (आपचत) (कृणुध्वम्) (इत्) योग क्रियाः कुरुतैव सः (मयः) मोक्षानन्दं (पृणाने) (इते) प्रयच्छन्नेव (पृणाने) स्वात्मानं प्रयच्छति॥३॥

भाषार्थः – हे भक्तजनो १ ज्ञानवज्रधारी २ आत्मप्रतिबिंब के पाता ३ परमेश्वर के लिये ४ आत्मप्रतिबिंबको ५ अभिषवन करो ६ उसका तर्पण करने-

को ७ पकाने योग्य इन्द्रियों को ८ पकाओ ९,१० योगक्रियाओं कोही करो ११ वह मोक्षानन्द को १२,१३ देताही १४ अपने आत्मा को देताहै ॥ ३ ॥

भरद्वाजऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता–

यः सत्राहा विचर्षणिरिन्द्रन्तं हूमहे वयम्। सहस्रमन्यो तुविनृम्ण सत्पते भवा समत्सु नो वृधे ॥ ४ ॥ ५४

(यः) (सत्राहा) सत्रेण योगयज्ञेन मायोपाधीनां हन्ता (विचर्षणिः) विशेषेण सर्वस्य द्रष्टा (तम्) (इन्द्रम्) परमेश्वरं (वयम्) (हूमहे) आह्वयामः हे (सहस्रमन्यो) सहस्राण्यनन्ता मन्यवो ऽहङ्कारास्पदा आत्मप्रतिबिंबा यस्मिन् स सहस्रमन्युस्तत्सम्बोधनं (तुविनृम्ण) बहुधनबहुबलवा (सत्पते) सतां पालयितः (भ) सर्वव्यापिन् (समत्सु) कामसंग्रामेषु (नः) अस्माकं (वृधे) समष्टिभावाय (भव) प्रादुर्भव ॥ ४ ॥

भावार्थः – १ जो २ योगयज्ञद्वारा माया की उपाधियों का नाशक ३ सर्वद्रष्टा है ४ उस ५ परमेश्वर को ६ हम ७ आह्वान करते हैं ८ हे अनन्तात्मप्रतिबिंबवाले ९ बहुधनी वा बहुबली १० सत्पुरुषों के पालक ११ सर्वव्यापिन् परमेश्वर ११ कामसंग्रामों में १२ हमारे १३ समष्टिभावके लिये १४ प्रकट हूजिये ॥ ४ ॥

परुच्छेपऋषिर्बृहती छन्दो नरनारायणौ दे०

शचीभिर्नः शचीवसू दिवा नक्तं दिशस्यतम्। मा वां रातिरुपदसत् कदाचनास्मद्रातिः कदाचन ॥ ५ ॥ २५

हे (शचीवसू) शचीरपि कर्मैव धनं ययोस्तौ नरनारायणौ युवां

(शचीभिः) अस्मदीयैः कर्मभिर्यागादिभिर्निमित्तभूतैः (दिवानक्तम्) अहनिरात्रौच (नः) अस्मभ्यं (दिशस्यतं) अभिमतं दत्तं दाशतिदान कर्मा नि० ३।२० (वां) युवयोः (रातिः) दानं (कदाचन) कदाचिदपि (मा) (उपदसत्) मोपक्षीणंभवेत् (अस्मद्) अस्माकमपि (रातिः) दानंहविरादिप्रदानं (च) (कदा) (न) नोपदसत्। अहमपि (सर्वदा युष्मानुद्दिश्य दद्याम्। युवामपि मदभिमतं सर्वदा दत्तमित्यर्थः ५

भावार्थः – १ हेस्तीए कर्त्ता नरनारायणो २ हमारे यज्ञ आदि के निमित्त ३ दिनरात ४ हमारे लिये ५ अभिमत दीजिये ६ तुम्हारा ७ दान ८ कभीभी ९, १० उपक्षय को मत पाओ ११ हमारा १२ दान १३ भी १४ कभी १५ उपक्षय-को मत पाओ —॥ ५॥ वामदेव ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

यदाकदाचमीढुषे स्तोताजरेतमर्त्यः। आदिद्वन्देत वरुणं विपागिराधर्त्तारं विव्रतानाम् ६॥५६

(यदाकदा) (स्तोता) (विपा) वाक् नि० (मीढुषे) धर्मकामार्थमोक्षैः सेक्त्रे परमेश्वराय (जरेत) स्तूयात् (आदित्) अनन्तरमेवतस्मिन्काले (मर्त्यः) भूतात्मा (च) अपि (गिरा) (विव्रतानाम्) विविधकर्माणां जीवानां (धर्त्तारम्) (वरुणम्) एकार्णवसमुद्रस्येशंमहापुरुषं (वन्देत) नमस्कुर्यात् नमस्कारशून्यास्तुतिरनुचितेत्यर्थः ६

भावार्थः – १ जबकभी २ स्तोता ३ वाक् ४ चारों पदार्थ से सेक्ता परमेश्वर के लिये ५ स्तुति करे ६ उसी समय ७ भूतात्मा ८ वाक्द्वारा ९ बहुकर्मा जीवों के- १० धारक ११ एकार्णवसमुद्र के स्वामी महापुरुष को १२ नमस्कार करे अर्थात् नमस्कार शून्य स्तुति अनुचित है ॥ ६॥

मेध्यातिथि ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

पाहि गा अन्धसो मद इन्द्राय मेध्यातिथे। यः
साम्मिश्लो हर्योर्यो हिरण्यय इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ७-५७

(हे)(अ) सर्वव्यापिन् (अतिथे) (इन्द्र) परमेश्वर (अयम्) सोम आत्मप्रतिबिंबो वा तस्य (अन्धसः) सोमस्यात्मप्रतिबिंबस्य वा (मदे) (एधि) एध वृद्धौ (गाः) इन्द्रियाणि (पाहि) विषयेभ्यो रक्ष (यः) (हिरण्ययः) ज्योतिर्मयस्त्वं (हर्योः) जीवेशयोः (साम्मिश्लः) संमिश्रयिता (यः) (वज्री) ज्ञानवज्रयुक्तः (इन्द्रः) ईश्वरः (हिरण्ययः) ज्योतिर्मयः ॥७॥

भाषार्थः —१ हे सर्वव्यापिन् २ अतिथिरूप ३ परमेश्वर ४ यह सोम वा आत्मप्रतिबिंब है उस ५ सोम वा आत्मप्रतिबिंब के ६ मद में ७ वृद्धि पाओ ८ इन्द्रियों को ९ विषयों से रक्षा करो १० जो ११ ज्योतिस्वरूप तुम १२ जीव ईश्वर को १३ संयोग करने वाले हो १४ जो १५ ज्ञानवज्रधारी ईश्वर १६, १७ ज्योतिर्मय है—७॥

भर्गऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता—

उभयं शृणवच्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः। सत्रा
च्या मघवा त्सोमपीतये धिया शविष्ठ आगमत् ८-५८

(इन्द्रः) परमेश्वरः (इदम्) (उभयम्) आधिदैवाध्यात्मविषयं (वचः) वचनं (अर्वाग्) अस्मदभिमुखं (शृणवत्) शृणोतु (च) (मघवान्) धनवान् लक्ष्मीपतिः (शविष्ठः) अतिशयेन बलवान् परमेश्वरः (सत्राच्या) अस्माकं यज्ञं पूजयन्त्या (धिया) बुद्ध्या (सोमपीतये) सोमस्यात्मप्रतिबिंबस्य वा पानाय (आगमत्) आगच्छतु ॥८॥

भाषार्थः

१ हे परमेश्वर २ इस ३ आधिदैव अध्यात्मविषयक ४ वचन को ५ हमारे सन्मु

रख ६ सुनो ७ शौर ८ धनवान्लक्ष्मीपति ९ अतिशय बलवान् परमेश्वर १० हमारे यज्ञको सराहनी ११ बुद्धि के साथ १२ सोम वा आत्ममतिविंबके पानार्थ १३ आओ ॥ ८ ॥ द्वयोर्मेधातिथिमेध्यातिथी ऋषी बृहती छन्द इन्द्रो दे०

महेचनत्वाद्रिवः पराशुल्कायदीयसे। नसहस्रा
युतायवज्रिवो नशताय शतामघ ॥ ९ ॥ ५९

हे (अद्रिवः) ज्ञान वज्रयुक्त (शतामघ) वहुधन (वज्रिवः) विज्ञान वज्रधर परमेश्वरत्वं (महे) योग यज्ञे भक्ति यज्ञे वा (पराशुल्काय) परा प्रकृति रूप शुल्काय (न) (दीयसे) (ननु) (सहस्राय) सहस्र रतीति सहस्रः मति विंबस्तस्मै। सुक्षरणे (न) (अयुताय) ब्रह्मण्य संयुक्ता अपरा तद्रूप शुल्काय (न) (शताय) वहुरूपः संसारस्तस्मै संसार रूप शुल्काय न दीयसे त्वां न परित्यजामि किन्तु मोक्षलाभाय वहुभिर्हविर्भि परिचरामीत्यर्थः ॥ ९ ॥

भावार्थः – १ हे ज्ञान वज्र युक्त २ वहुधनी ३ विज्ञान वज्रधर परमेश्वर तुम ४ योग यज्ञ वा भक्ति यज्ञमे ५ पराप्रकृति रूप शुल्क के लिये ६ नहीं ७ दिये जाते हो ८ न ९ मति विंब के लिये १० न ११ अपरा रूप शुल्क के लिये १२ न १३ संसार रूप शुल्क के लिये दिये जाते हो अर्थात् किसी के लिये तुमको नहीं त्यागता हूं किन्तु मोक्ष के लिये वहु विध हविओं से सेवा करता हूं यह अभिप्राय है ॥ ९ ॥ विनियोग पूर्ववत्

वस्यां ऽ इन्द्रासिमेपितुरुतभ्रातुरभुञ्जतः मोता
चमेछदयथः समावसो वसुत्वनायराधसे ।१०—६०

(वसो) हे यज्ञपुरुष (इन्द्र) महापुरुषत्वं (मे) मदीयान (पितुः) (वस्यान्) (उत) अपिच (अभुञ्जतः) अपालयितः (भ्रातुः) अधिक स्नेह

वान्। वसस्नेहे (आसि) (च) (समा) महालक्ष्मी (मे) मम (माता) युवाम् (वसुत्वनाय) व्यापनाय (राधसे) योगधनायच उभयोर्लाभाय (छदयेथः) मां पूजितं कुरुथः। छदयति र्चनिकर्मनि० ३।१४—॥ १०॥

भाषार्थः – १ हे यज्ञपुरुष २ महापुरुषतुम ३ मेरे ४ पिता से ५ और ६ अं पालक ७ भ्रातासे ८ अधिक स्नेहवान् ९ हो १० और ११ महालक्ष्मी १२ मेरी १३ माताहे तुमदोनों १४ व्यापन १५ और योगधनके लाभार्थ १६ मुझको पूजित करते हो—॥ १०॥

इतिश्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य षष्ठः खण्डः ६

इतितृतीयः प्रपाठकः

अथसप्तमः खण्डः। अथचतुर्थः प्रपाठकः

वसिष्ठऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

इमे इन्द्राय सुन्विरे सोमासो दध्याशिरः। ताँ२ आमदाय वज्रहस्तपीतये हरिभ्यां याह्योक आ॥ १॥

हे (वज्रहस्त) इन्द्र (इमे) (दध्याशिरः) दधिमिश्रिताः (सोमासः) सोमाः (इन्द्राय) तुभ्यं (सुन्विरे) सुताबभूवुः (मदाय) मदार्थं (तान्) (पीतये) पानाय (हरिभ्याम्) अश्वाभ्यां (आयाहि) आगच्छ (ओके) यज्ञसदने (आ) आयाहि॥ १॥

भाषार्थः – १ हे इन्द्र २ ये ३ दधिमिश्रित ४ सोम ५ तुझ इन्द्रके लिये ६ अभिषुत हुए ७ मदके लिये ८, ९ उनके पानार्थ १० हरिनामक अश्वोंकी सवारीसे ११ आओ १२ यज्ञशालामें १३ विराजमान हो—॥ १॥

अथाध्यात्मम्– हे (वज्रहस्त) ज्ञानवज्रधर परमेश्वर (इमे) (दध्याशिरः) निरुद्धमाण मिश्रिताः पयः माणः श० १२।८।१।२ (सोमासः) इन्द्रियमनो बुद्ध्यात्ममति विंवाः (इन्द्राय) परमेश्वराय तुभ्यं (सुन्विरे) सुनावभूवुः (मदाय) (तान्) (पीतये) पानाय (हरिभ्याम्) नरनारायण रूपाभ्यां (आयाहि) आगच्छ (ओके) योग यज्ञ सदने भृकुटि मंडले (आ) आयाहि॥ २॥

भाषार्थः–१ हे ज्ञानवज्र धारी परमेश्वर २ ये ३ निरुद्ध माण मिश्रित ४ इन्द्रिय मनबुद्धि आत्म मति विंव ५ तुझ परमेश्वर के लिये ६ अभिषुत हुए ७ मद के लिये ८,९ उनके पानार्थ १० नरनारायण रूपसे ११ आओ १२ योग यज्ञ शाला भृकुटि मंडल मे १३ वैरो–॥२॥

वामदेव ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता॥

इम इन्द्र मदाय ते सोमाश्चिकित्र उक्थिनः। मधोः पपान उप नो गिरः शृणु रास्व स्तोत्राय गिर्वणः॥ २–६॥

हे (गिर्वणः) गीर्भिर्वननीय (इन्द्र) इन्द्र परमेश्वर वा (इमे) (उक्थिनः) स्तोत्र युक्ताः माणयुक्ता वा श० १४।८।१४।१ (सोमाः) सोमाः। इन्द्रियात्म मति विंवा वा (ते) तव (मदाय) (चिकित्रे) ज्ञायन्ते कित ज्ञाने। कर्मणि लिट्। इरयोरे इतिरे– इत्यादेशः (मधोः) सोमस्यात्म मति विंवस्य वा (पपानः) पानं कुर्वाणस्त्वं (नः) अस्माकं (गिरः) स्तोत्र रूपा वाचः (उपशृणु) सम्यक् शृणु (स्तोत्राय) स्तोत्र कर्त्रे मह्यं (रास्व) अभीष्टं स्वात्मानं वा देहि॥ २

भाषार्थः–१ हे वेद वचनों से संभजनीय २ इन्द्र वा परमेश्वर ३ ये ४ स्तोत्र युक्त वा माण युक्त ५ सोम वा इन्द्रिय आत्ममति विंव ६ तेरे ७ मद के लिये ८

जानेजाते हैं–सोमवा आत्मप्रति विंब को १० पान करते तुम ११ हमारे १२ स्तोत्ररूपवचनों को १३ सुनो १४ मुझ स्तोत्र कर्त्ता के लिये १५ अभीष्ट वा अपने आत्मा को दो ॥ २॥ मेधातिथि मेध्यातिथी ऋषी बृहती छन्द इन्द्रो देवता

एके विश्वामित्र इत्याहुः

आत्वो ३ घे सर्वदुघा ७ हुवे गायत्र वेपसम्। इन्द्रं धेनु ७ सुदुघामन्यामिषमुरुधारमरंकृतम्॥ ३-६३

(अघ) (अरंकृतम्) आत्म नालङ्कृतं (इषम्) विराड् रूपान्नं। अन्नं वै विराट् श० १२।२।४।५ तथा (सर्वदुघाम्) (ऋत) निवृत्तिः सर्वनिवृत्ति दोग्धी (सुदुघाम्) सुखेन दोग्धुं शक्यां (उरुधारम्) बहुधारां (अन्याम्) माकृत धेनोरन्यां (धेनुम्) महावाचं। वाचमेवतद्देवा धेनुमकुर्वत श० ९।२।२।२७ तथा (गायत्रवेपसम्) गायत्रेण साम्नागति मन्तं। वेप–कम्पे (इन्द्रम्) परमेश्वरं (आहुवे) आह्वये

भावार्थः–१ अब २ आत्मा से अलंकृत ३ विराट्रूप अन्न को तथा ४ सर्वनिवृत्तिदोग्धी ५ सुख से दोहने योग्य ६ बहुधारा ७ माकृत धेनु से अन्य ८ महावाग्रूप गौ को ९ तथा गायत्र सामद्वारा गतिमान १० परमेश्वर को ११ में आह्वान करता हूं ॥ ३॥ नोधा ऋषि बृहती छन्द इन्द्रो देवता–

नत्वा बृहन्तो अद्रयो वरन्त इन्द्र वीडवः। यच्छिक्षसि स्तुवते मावते वसु न किष्टदामिनाति ते॥ ४-६४

हे (इन्द्र) श्रीकृष्णरूप परमेश्वर (बृहन्तः) महान्तः (वीडवः) दृढाः (अद्रयः) पर्वताः (त्वा) त्वां (न) (वरन्त) ब्राह्मणपुत्रानयनाय महापुरुषलोके गन्तारं त्वां न निवारयन्ति (स्तुवते) स्तोत्रं कुर्वते (मावते) (मा) मेधा–मेधावते ब्राह्मणाय (यत्) (वसु) पुत्रधनं (शिक्षसि)

२३ २४ २५ २६ २७
द्दासिनि॰ ३।२०(ते)तव(तत्) कर्म (किः) कश्चिन(न)(आमि
नाति) नहिनस्तिसर्वेश्वरः। मीञ्हिंसायांमीनातेर्निगमे७।३
।२१) इतिह्रस्वः॥४॥

भाषार्थः –१ हेश्रीकृष्णरूपपरमेश्वर२ बड़े ३ दृढ ४ पर्वत ५ तुमको ६ नहीं ७ रोकते हैं अर्थात् ब्राह्मणके पुत्र लाने को महापुरुषलोक में जाते तुमको नहीं रोकते हैं ८ स्तोत्रकर्त्ता ९ मेधावी ब्राह्मण के लिये १० जो ११ पुत्रधन १२ देते हो १३ आपके १४ उसकर्मको १५ कोई १६,१७ विघ्नयुक्त नहीं करता है॥४॥

मेधातिथिऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रोदेवता॰

१ २ ३ २३ ३ १ २ ३ १२ २२ ३ १२
कईवेद सुतेसचापिबन्तङ्कद्वयोदधे। अयंयः
३ १२ २२ ३ २ ३ १ २
पुरोविभिनत्त्योजसामन्दानःशिप्र्यन्धसः५–६५

(सुते) आत्मप्रतिबिंबाभिषुते सति (सचा) पराशक्त्यासह (पिबन्तम्) आत्मप्रति बिंबस्य पातारं (ईम्) परमेश्वरं (कः) (वेद) वेत्तिनकोपि वेत्त्यर्थः (यः) (अयम्) (शिप्री) (वयः) अन्नंप्राणादिरूपं (दधे) स्वात्मनि धारयति साकारेश्वरः (अन्धसः) आत्मप्रति बिंबेन (मन्दानः) तृप्यन्सन्। मदीतृप्तौ (ओजसा) बलेन (पुरः) स्थूलसूक्ष्म कारणशरीराणि (विभिनत्ति) इति (कः) कोजानातिनकोपीत्यर्थः॥

भाषार्थः –१ आत्मप्रतिबिंबके अभिषव होनेपर २ पराशक्ति सहित ३ आत्मप्रति बिंबका पान करनेवाले ४ परमेश्वरको ५ कोई ६ जानता है अर्थात् कोई नहीं जानता ७ जो ८ यह ९ साकार ईश्वर १० प्राणरूपान्नको ११ आत्मामें धारण करता है १२ आत्मप्रतिबिंबसे १३ तृप्त होता १४ बलसे १५ स्थूल सूक्ष्म कारणशरीरों को १६ तोड़ता है यह भी कोई नहीं जानता॥५॥

द्वयोर्वामदेवऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रोदेवता॰

यदिन्द्र शासो अव्रतं च्यावया सदसस्परि। अस्माकमंशुं मघवन् पुरुस्पृहं वसव्ये अधिवर्हय॥६-६६

हे (मघवन्) धनवन्लक्ष्मीपते (अ) सर्वव्यापिन् (इन्द्र) परमेश्वर त्वं (यत्) यस्मात् (शासः) शिक्षणीयानां यज्ञविरोधिनां शिक्षक स्तस्मात् (अव्रतम्) अकर्माणं याग विरोधिनं कामं (सदसः) योग यज्ञगृहात् (परिच्यावय) दूरंनिः सारय (पुरुस्पृहं) पुरुभिर्देहैः स्पृहणीयं (अस्माकम्) (अंशुम्) आत्ममतिविंवरूपं सोमं (वसव्ये) वसव्ये निवास योग्ये गगन मण्डले (अधिवर्हय) अधिकं वर्द्धय॥६॥

भावार्थः - १ धनवन्लक्ष्मीपते २ सर्वव्यापिन् ३ परमेश्वर तुम ४ जिसकारण ५ याग विरोधियों को शिक्षक हो उस कारण ६ अकर्मा योग विरोधी काम को ७ योगयज्ञशाला से ८ दूर निकालो ९ देहों से स्पृहणीय १० हमारे ११ आत्म मति विंवरूप सोम को १२ निवास योग्य गगन मंडल में १३ अधिक वढ़ाओ॥६॥

विनियोगः पूर्ववत् ब्रह्मण स्पत्याद्या देवताः

त्वष्टा नो दैव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः। पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिर्नु पातु नो दुष्टरन्त्रामणं वचः॥७-६७

(त्वष्टा) ज्योतिः स्वरूपः महानारायणः त्विषदीप्तौ (पर्जन्यः) सूर्यः (ब्रह्मणस्पतिः) ब्रह्मणः विराजस्य स्वामी विष्णुः (नः) अस्मदीयं (दैव्यम्) देवस्य परमेश्वरस्य सम्बंधिनी (वचः) महावाचं (पातु) (पुत्रैः) (भ्रातृभिः) सहिता (अदितिः) लक्ष्मीः (नु) अपि (नः) अस्माकं (दुस्तरम्) कामादिभिस्तरीतुमशक्यं (त्रामणम्) संसारात्रक्षकं (वचः) महावाचं पातु अत्रादिति शब्दार्थ प्रकाशको मन्त्रः अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता सपिता सपुत्रः। विश्वेदे-

देवा आदितिः पञ्च जना आदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ऋ० १ म० ८ अ० ४ सू० १० मन्त्रः—॥७॥

भाषार्थः –१ज्योतिःस्वरूपमहानारायण २सूर्य ३ और विष्णु ४ हमारे ५परमेश्वर सम्बंधी ७ महावाक्‌को ७ रक्षाकरो ८ पुत्र ९ भ्रातासहित १० लक्ष्मी ११ भी १२ हमारे १३ काम आदिसेदुस्तर १४ संसारसेरक्षक १५ महावाक्‌कोरक्षाकरो—॥७॥

वालखिल्याऋषयोबृहतीछन्दउपेन्द्रोदेवता-

कदाचनस्तरीरसिनेन्द्र सश्चसि दाशुषे। उपोपे

न्नुमघवन्भूयइन्नुतेदानं देवस्य पृच्यते॥ ८—६८

(नु) विकल्पे (उपेन्द्र) हेविष्णोत्वं (कदाचन) कदाचिदपि(स्तरीः) संसारबंधनेनहिंसकः (न) (असि) मनुष्यः स्वकर्मणैवबध्यते(नु) किन्तु (दाशुषे) (इत्) हविर्दात्रे यजमानायैव (सश्चसि) स्वात्मानंप्रापयसि। सश्चतिगतिकर्मा नि० हे(मघवन्) लक्ष्मीपते (देवस्य) द्योतनादिगुणकस्य (ते)तव (भूयः) मभूतं (दानम्) (इत्) एव (उपपृच्यते) उपेत्यभवति यावत्पूर्वदानं नैवक्षीयतेनावदेवददासीत्यर्थः॥८॥

भाषार्थः –१,२हेविष्णुतुम २कभी ३संसारबंधनसेहिंसक ४ नहीं ५ हो ६ किन्तु ७ हविदाता यजमानकेलिये ८ ही ९ अपने आत्माको प्राप्त करातेहो १० हेलक्ष्मीपति ११,१२तुम ज्योतिस्वरूपका १३ बड़ा दान १४ प्राप्त होता रहता है अर्थात् पहिले दानके व्ययसे पहिलेही दूसरे दानको देते हो।८

मेध्यातिथिऋषिर्बृहतीछन्द इन्द्रोदेवता-

युङ्क्ष्वाहि वृत्रहन्तम हरी इन्द्र परावतः। अर्वा

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनुज्वालाप्रसाद शर्म्मविरचिते साम वेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने तृतीयाध्यायस्य सप्तमः खण्डः ७

अथाष्टमः खण्डः

वसिष्ठऋषिर्बृहती छन्दो महाविद्या देवता-

प्रत्यु अदर्श्यायत्यू ३ च्छन्ती दुहिता दिवः। अपो महीवृणुते चक्षुषा तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी॥१-७१

(आयती) फलदान काल रूपा दीर्घ रूपा वा (व्युच्छन्ती) तमांसि वर्जयन्ती (दिवः) महापुरुष लोकस्य (दुहिता) महाविद्या (उ) एव (प्रत्यदर्शि) योगिजनैः प्रतिदृश्यते सा (मही) सर्वाधारभूता (सूनरी) (उ) ईशः (नरः) जीवः सुष्ठु जीवेश रूपा परा शक्तिः (उ) एव (चक्षुषा) ज्ञानचक्षुर्दानेन (तमः) अज्ञानं (अप वृणुते) अप वृणोति (ज्योतिः) ज्ञान प्रकाशं (कृणोति) करोति॥१॥

भावार्थः -१ फलदानकालरूप वा दीर्घरूप २ अन्धकारनाशक ३ महापुरुषलोक की ४ दुहिता महाविद्या ५ ही ६ योगियों से देखी जाती है वह ७ सर्वाधाररूप ८ जीवेशरूप पराशक्ति ९ ही १० ज्ञानचक्षु के दान से ११ अज्ञान को १२ दूर करती है १३ ज्ञान प्रकाश को १४ करती है॥१॥

वसिष्ठऋषिर्बृहती छन्दोऽश्विनौ देवते-

इमा उ वां दिविष्टय उस्रा हवन्ते अश्विना। अयं वामह्वेऽवसे शचीवसू विशं विशं हि गच्छथः २॥

हे (अश्विना) सर्वेषु व्याप्तौ नरनारायणौ (उस्रौ) रसानां ज्योतिषां चाधारभूतौ (वाम्) युवां (उ) एव (इमाः) (दिविष्टयः) दिवमिच्छन्त्यः प्रजाः (हवन्ते) आह्वयन्ति तस्मात् हे (शचीवसू) स्तुति

कर्मधनौ (युवाम्) (अवसे) संसाराद्रक्षणाय (आव्हे) आह्वयामि (हि) यस्मात् (विशंविशं) प्रत्येकयजमानं प्रति (गच्छतः) ॥ २॥

भाषार्थः – १ हेसर्वव्याप्तनरनारायण २ रसवाज्योतिके आधार रूप ३ तुमदोनोंको ४ ही ५ ये ६ स्वर्गकामाप्रजा ७ आव्हान करतेहैंउस कारण ८ हे सृष्टिकर्मधनवाले ९ तुमदोनोंको १० संसारसेरक्षाके लिये ११ आह्वान करताहूं १२ जिसकारण १३ प्रत्येक यजमानके १४ ध्यानमेंप्राप्त होतेहो – २॥

अश्विनौ वैवस्वतना ऋषी बृहती छन्दः अश्विनौ देवते ॥

कुष्ठः कोवामश्विना तपानो देवा मर्त्यः घ्नतोवा
मश्नयाक्षयमाणोंऽशुनेत्थमु आह्वन्यथा ॥ ३-७३

हे (देवौ) देवौ मायाक्रीडनकैः क्रीडनशीलौ (अश्विनौ) अश्विनौ नरनारायणौ (वाम्) युवां (कुष्ठः) कौपृथिव्यांवर्त्तमानः (कः) (मर्त्यः) मनुष्यः (तपानः) परमहंसरूपेण स्वतेजसा तपानो भवति नकोपीत्यर्थः (यथा) (घ्नता) पीडकया (अश्नया) क्षुधया (क्षयमाणः) क्षीयमाणः (आह्वन्) भक्षणकर्त्ता तृप्तो भवति (इत्थमु) एवमेव (वाम्) युवां (अंशुना) सोमेनात्ममतिविवेनतृप्तौ भवतम् ३

भाषार्थः – १ हेमायाकेखिलोनोंसेक्रीडनशील २ नरनारायण ३ तुमदोनोंको ४ भूमिस्थ ५ कौन ६ मनुष्य ७ परमहंसरूपद्वारा अपनेतेजसेतपाताहै अर्थात् कोईनहीं ८ जैसे ९ पीडक १० सुधासे ११ क्षीयमाण १२ भक्षणकर्त्ता तृप्त होताहै १३ इसीप्रकार १४ तुमदोनो १५ आत्ममतिविवसे तृप्त होतेहो ॥ ३॥ प्रस्कण्वऋषिर्बृहती छन्दोऽश्विनौ देवते-

अयंवांमधुमत्तमः सुतः सोमो दिविष्टिषु । तमश्वि
नापिबतन्तिरोअन्ह्यं धत्त्रंरत्नानिदाशुषे ॥ ४-७४

हे(अश्विना) अश्विनोनरनारायणौ (दिविष्टिषु) योगयज्ञेषु(अयम्) (मधुमत्तमः) ज्ञानवत्तम आत्मप्रतिविंबः (सुतः) अभिषुतः (तम्) (तिरोअन्ह्यम्) देवयानपितृयान मार्गौ तिरस्कृतौ येनतमात्मप्रति विंबं (पिबतम्) (दाशुषे) हविर्दत्तवते योगिने (रत्नानि) योगैश्वर्याणि (धत्तम्) प्रयच्छतम् ॥ ४ ॥

भाषार्थः – १ हेनरनारायण २ योगयज्ञों में ३ यह ४ वड़ाज्ञानी आत्मप्रतिविंब ५ अभिषुत हुआ ६ उस ७ देवयान पितृयान मार्गका तिरस्कार करनेवाले आत्मप्रतिविंबको ८ पान करो ९ हवि दाता योगी के लिये १० योगैश्वर्यों को ११ दीजिये ॥ ४ ॥

मेधातिथिमेध्यातिथीऋषी बृहतीछन्दइन्द्रोदेवता·

आत्वा सोमस्य गल्दया सदा याचन्नहं ज्या ।
भूर्णिंमृगन्न सवनेषु चुक्रुधं क ईशानं नयाचिषत् ॥ ५ ॥ ७५

हे (इन्द्र) परमेश्वर (भूर्णिम्) भूमिंनयति भूर्णिर्वराहावतारस्तद्रूपं (न) च (मृगम्) नृसिंह रूपं (त्वा) त्वां (सवनेषु) योगयज्ञेषु (सोमस्य) आत्मप्रतिविंब सम्बन्धिन्या (गल्दया) महावाचा नि०१।११ (सदा) (याचन्) (अहम्) (आचुक्रुधम्) यस्मात् (ज्या) क्षयशीलया बुद्ध्या युक्तः (कः) कामः (ईशानम्) ईश्वरं त्वां (न) (याचिषत्) ॥ ५ ॥

भाषार्थः – १ हेपरमेश्वर २ वाराह रूपधारी ३ और ४ नृसिंह रूपधारी ५ तुमको ६ योगयज्ञों में ७ आत्मप्रति विंब सम्बंधी ८ महावाक् द्वारा ९ सदा १० याचना करता ११ मैं १२ क्रोधित हुआ १३ जिस कारण क्षय शील बु-

द्धि से युक्त २४ कामने २५ तुम ईश्वर को २६ नहीं २७ याचना किया ॥५॥

देवातिथिर्ऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

अध्वर्यो द्रावया त्वं सोममिन्द्रः पिपासति। उपो नूनं युयुजे वृषणा हरी आ च जगाम वृत्रहा ॥६–१६

हे (अध्वर्यो) मनोरूपाध्वर्यो मनोवा अध्वर्युः श० २।५।१।२१ (सोमम्) आत्मप्रतिबिंबं (द्रावय) अभिषुणु (अ) सर्वव्यापी (इन्द्रः) परमेश्वरः (उ) एव (पिपासति) पातुमिच्छति (वृषणा) वर्षितारौ (हरी) जीवेशौ (नूनम्) (उपयुयुजे) उपयोजितवान् (च) (वृत्रहा) पापनाशकः परमेश्वरः (आजगाम) स्वरूपं प्रादुश्चकार ॥५॥

भाषार्थः – १ हे मनरूप अध्वर्यु २ आत्मप्रतिबिंब को ३ अभिषवन करो ४ सर्वव्यापी ५ परमेश्वर ६ ही ७ पान करना चाहता है ८ उसने वृष्टि कर्त्ता ९ जीव ईश्वर को १० निश्चय ११ अपने आत्मा में संयुक्त किया १२ और १२ पापनाशक परमेश्वर ने १३ अपने स्वरूप को प्रकट किया ॥५॥

द्युम्नो वैसिष्ठ ऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

अभी षतस्तदा भरेन्द्र ज्यायः कनीयसः पुरूवसुर्हि मघवन्बभूविथ भरेभरे च हव्यः ॥७॥७७

हे (इन्द्र) परमेश्वर (अभीषतः) अभीच्छतः। इषवाञ्छायां (कनीयसः) जीवात्मनः (तत्) (ज्यायः) प्रशस्तं योगधनं (आभर) आहर देहि हे (मघवन्) लक्ष्मीपते त्वं (पुरुवसुः) बहुधनः (हि) (बभूविथ) (भरेभरे) प्रत्येक यज्ञे (च) (हव्यः) होतव्यो बभूविथ ॥७॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ इच्छावान् ३ जीवात्मा के ४ उस ५ प्रशस्त योगधन को ६ दीजिये ७ हे लक्ष्मीपते तुम ८ बहुधनी ९ ही १० हो ११ प्रत्येक य-

न्नमें १२ भी १३ आह्वान योग्यहो॥७॥ विनियोगः पूर्ववत्-

यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय स्तोतारमिद्दधिषे रदावसो न पापत्वाय रंसिषं ॥८॥ ७८

हे (रदावसो) धनानांदातः (इन्द्र) परमेश्वरत्वं (यावतः) ऐश्वर्यस्येशिषे (यद्) यदि (एतावत्) एतावत ऐश्वर्यस्य। षष्ठ्यालुक् सुपांसुलुगित्यादिना (अहम्) (ईशीय) ईश्वरोभवेयंतदा (स्तोतारम्) (इत्) वाचमेव (दधिषे) आत्मनि धारयेयं मौनी भवेयं (पापत्वाय) पापभावाय (न) (रंसिषम्) नदद्याम्॥८॥

भाषार्थः - १ हे धनों के दाता २ परमेश्वर तुम ३ जितने ऐश्वर्य के स्वामी हो ४ यदि ५ इतने ऐश्वर्य का ६ में ७ स्वामी होऊं तब ८, ९ वाणी को ही १० आत्मा में धारण करूं अर्थात् मौनी होजाऊं ११ और उस वाणी को पापत्व के लिये १२, १३ प्रकट नहीं करूं॥८॥ नृमेधऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता·

त्वामिन्द्र प्रतूर्त्तिष्वभि विश्वा असि स्पृधः। अशस्तिहा जनिता वृत्रतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः॥९॥ ७९·

हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वम्) (प्रतूर्त्तिषु) प्रकर्षेण तूर्त्यन्ते हिंस्यन्ते यत्रसु प्रतूर्त्ति योग यज्ञास्तेषु (विश्वाः) सर्वाः (स्पृधः) काम सेनाः (अभ्यसि) अभिभवसि (अशस्तिहा) अकीर्तेर्नाशकः (जनिता) कीर्तेर्जनयिता (वृत्रतूः) पापस्य हन्ता (असि) तस्मात् (त्वम्) (तरुष्यतः) वधेच्छून् कामादीन् (तूर्य) प्रतिहिंस॥९॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ तुम ३ योग यज्ञों में ४ सब ५ काम सेनाओं को ६ जय करते हो ७ अकीर्त्ति के नाशक ८ कीर्त्ति के उत्पादक ९ पापनाशक १० हो ११ उस कारण ११ तुम १२ वधेच्छु काम आदि कों १३ मारो—॥९॥

गोधाऋषिर्दैहती छन्द इन्द्रो देवता-

प्रयोरिरिक्ष ओजसा दिवः सदोभ्यस्परि। नत्वा वि व्याचरज इन्द्र पार्थिवमति विश्वं ववक्षिथ ॥१०-८०

हे(इन्द्र) परमेश्वर त्वं(दिवः) स्वर्गस्य(सदोभ्यः) आब्रह्मलोकेभ्यः(प्ररिरिक्षे) प्रकर्षेणाधिकोऽसि। रिचेर्लिटि वहुलञ्छन्दसीति श्लुः। प्रत्ययस्वरः(पार्थिवम्) पृथिव्यांभवं(रजः) लोकसमूहः(त्वा) त्वां(न)(परिविव्याच) समन्तान्नव्याप्नोति(यः) त्वं(विश्वम्) सर्वब्रह्माण्डं(ओजसा) तेजसा बलेनच(अति) अतिक्रम्य व्याप्य (ववक्षिथ) महानसि नि० ३।३॥—१०॥

भाषार्थः –१ हे परमेश्वर तुम २ स्वर्ग के ३ स्थान ब्रह्मलोक तक से ४ अधिक हो ५ पृथिवी सम्बंधी ६ लोकसमूह ७ तुमको ८,९ व्याप्त नहीं करता है १० जो तुम ११ सर्व ब्रह्माण्ड को १२ तेज वा बल से १३ व्याप्त कर १४ महान हो ॥१०॥ इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्याष्टमः खण्डः८॥

अथ नवमः खण्डः

द्वयोर्वसिष्ठ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

असावि देवं गोऋजीकमन्धो न्यस्मिन्निन्द्रो जनुषेमुवोच। बोधामसि त्वा हर्यश्व यज्ञैर्बोधा नः स्तोमम न्धसो मदेषु ॥१॥ ८१॥

(देवम्) मायाक्रीडणकैः क्रीडणशीलं(गोऋजीकम्) गोभिरिन्द्रियैर्मिश्रितं(अन्धः) आत्मभानि० रूपान्नं(असावि) अभिषुतं(इन्द्रः) परमेश्वरः(अस्मिन्) आत्मप्रतिबिंबे(जनुषा) योग संस्कारेणल-

भ्यं (ईम्) शान्तिं (न्यु) वोच) नितरामुक्तवान् हे (हर्यश्व) ब्रह्मविष्णु महेशेषु व्यापक (त्वा) त्वां (यज्ञैः) अर्चाप्रभावैः (बोधामसि) बोधयामः (अन्धसः) आत्मप्रतिबिंबरूपान्नस्य (मदेषु) (नः) अस्माकं (सोमम्) स्तोत्रं (बोध) बुध्यस्व ॥१॥

भाषार्थः – १ मायाके खिलोंनोसे क्रीडनशील २ इन्द्रियों से भिन्न ३ आत्म प्रति बिंब रूप अन्न ४ अभिषुत हुआ ५ परमेश्वरने ६ इस आत्म प्रतिबिंबमें ७ योग संस्कार से लभ्य ८ शान्ति को ९ उपदेश किया १० हे त्रिदेवमें व्यापक ११ तुमको १२ अर्चाप्रभावों से १३ जतलाते हैं १४ आत्मप्रतिबिंबरूप अन्नके १५ मदोंमें १६ हमारे १७ स्तोत्र को १८ जानो —॥१॥ विनियोगः पूर्ववत्

योनिष्ट इन्द्र सदने अकारि तमा नृभिः पुरुहूत प्रयाहि। असो यथा नोऽविता वृधश्चिद्ददो वसूनि ममदश्च सोमैः॥२॥

हे (पुरुहूत) बहुभिराहूत (इन्द्र) (सदने) यज्ञगृहे (ते) तव (योनिः) स्थानं (अकारि) अहं कृतवानस्मि (नृभिः) नेतृभिर्मरुद्भिः सार्द्धं (तम्) स्थानं (आ प्र याहि) (यथा) (वृधः) महान्त्वं (नः) अस्माकं (अविता) रक्षकः (चित्) अपि (असः) भवासि (वसूनि) धनानि (ददः) देहि (सोमैः) (ममदः) ॥२॥

भाषार्थः – १ हे बहुतसे आहूत २ इन्द्र ३ यज्ञ गृहमें ४ तेरा ५ स्थान ६ मैंने संस्कृत किया ७ नेता मरुद्गणोंके साथ ८ उस स्थानको ९ प्राप्त करो १० जैसे ११ महान तुम १२ हमारे १३ रक्षक १४ भी १५ होओ १६ धनों को १७ दो १८ सोमों से १९ मद को पाओ —॥२॥

अथाध्यात्मम् – हे (पुरुहूत) बहुभिराहूत (इन्द्र) परमेश्वर (नृभिः) वागाद्यृत्विग्भिः सहितो हं (सदने) योग यज्ञ गृहे भृकुटिमाण्ड

ले (ते) नव (योनिः) स्थानं (अकारि) संस्कृतवानस्मि (तम्) (आप्याहि) (यथा) (वृधः) ज्योतिस्वरूपस्त्वं वृधदीप्तौ (नः) अस्माकं (अविता) संसाराद्रक्षकः (चित्) अपि (असः) (वसूनि) योगधनानि (ददः) (सोमैः) इन्द्रियप्राणात्ममतिविंवैः (ममदः) ॥२॥

भाषार्थः – १हे वज्रतसेआह्वान २परमेश्वर ३ वागाद्यृत्विजों से सहित मैंने ४ योग यज्ञ गृह भृकुटि मंडल में ५ आपके ६ स्थान को ७ संस्कृत किया ८ उसको ९ प्राप्त करो १० जैसे ११ ज्योतिस्वरूप तुम १२ हमारे १३ संसार से रक्षा करने वाले १४ भी १५ होवें १६ योगधनों को १७ दो १८ इन्द्रिय आत्ममतिविंव से १९ मद को पाओ—॥२॥ गानुर्ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

अर्दर्दृरुत्समसृजो विखानि त्वमर्णवान्बद्बधानाँ अरम्णाः । महान्तमिन्द्र पर्वतं वियद्वः सृजद्धारा अव यद्दानवान्हन् ॥३॥ ८२

हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वम्) तदानदा (उत्सम्) वाचं। मनो वै सरस्वान्वाक्सरस्वत्येतौ सारस्वता उत्सौ श०७।५।१।३१ (अर्दर्दः) मौनसाधनाय विदारितवानसि (खानि) इन्द्रियाणि कमलानि वा (व्यसृजः) ऊर्ध्व मुखान्यन्तर्मुखानि वा कृतवानसि (बद्बधानान्) बद, स्थैर्ये- बध संयमने- स्थैर्येण निरुद्धाः (अर्णवान्) मनोवृत्तीः मनो वै समुद्रः श०७।५।२।५२ (अरम्णाः) योगे विसृष्टवानसि (महान्तम्) (पर्वतम्) गगनमण्डलमेघं (विवः) विवृतवानसि (धाराः) अमृतधाराः (विसृजन्) व्यसृजः विसर्जितवानसि (यद्) (यद्) यदा यदा (दानवान्) कामादीन (अवहन्) अभिहतवानसि ॥३॥

भावार्थः—१ हे परमेश्वर २ तुमने तवनव ३ वाणीको ४ मौन साधन के लिये विदारण किया है ५ इन्द्रियोंवा कमलों को ६ ऊर्ध्वमुखवा अन्तर्मुख किया है ७ स्थिरता से निरुद्ध ८ मनोवृत्तियों को ९ योगमें रमाया है १०, ११ गगन मंडल के मेघको १२ प्रकट किया है १३ अमृत धाराओं को १४ छोड़ा है १५, १६ जवजव १७ काम आदिको १८ मारा है ॥ ३॥

पृथोर्वैन्य ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

सुष्वाणासइन्द्रस्तुमसित्वा सनिष्यन्तश्चित्तुवि नृम्ण वाजम्। आनोभरसुवितं यस्यकोनातनात्मनो सह्यामत्वोताः ॥ ४ ॥ ८४-

हे (तुविनृम्ण) बहुबल बहुधनवा (इन्द्र) परमेश्वर (सुष्वाणासः) सोम आत्ममतिविंबंवा अभिषुणवन्तः (वाजम्) चरुपुरोडाशादि लक्षणंभूतात्मरूपम्वा अन्नं (सनिष्यन्तः) सम्भक्तवन्तो वयं (त्वो चित्) त्वामेव (स्तुमसि) स्तुमः (नः) अस्माकं (सुवितम्) सुपमत्याहारेण युक्तं यज्ञं योगयज्ञंवा (आभर) आहर प्रयच्छ (आ) हे सर्वव्यापिन् (यस्य) यज्ञस्य (कोनाः) कः कामस्तेन—ऊनाः निष्कामाः (त्वोताः) त्वयि ओताः प्रोता वयं (त्मनो) आत्मन् आत्मनि बुद्धौ (तना) तनानि सांसारिक धनानि (सह्याम) अभिभवाम। सह अभिभवे॥ ४॥

भावार्थः

१ हे बहुबली वा बहुधनी २ परमेश्वर ३ सोम वा आत्ममतिबिंब का अभिषव करनेवाले ४ चरुपुरोडाश आदि वा भूतात्मारूप अन्नको ५ विभाग करने वाले हम ६ तुमको ७ ही ८ स्तुत करते हैं ९ हमारे १० सुपमत्याहार से युक्त यज्ञ वा योगयज्ञको ११ सिद्ध करो १२ हे सर्वव्यापिन् १३ जिस यज्ञके १४ निष्काम-

२५ और तुम्ह में मोतहम २६ बुद्धिमें २७ सांसारिक धनों को २८ तिरस्कार करें ॥४॥ सप्तगुर्ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

जगृम्णा ते दक्षिणमिन्द्र हस्तं वसूयवो वसुपते वसूनाम्। विद्मा हि त्वा गोपतिं शूर गोनामस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ॥ ५ ॥ ८५

हे (शूर) सर्वव्यापिन् (वसुपते) धनानां स्वामिन् (इन्द्र) परमेश्वर (वसूयवः) धनकामा वयं (ते) तव (दक्षिणम्) (हस्तम्) (जगृम्ण) गृह्णीमः हे (शूर) सर्वव्यापिन् (शूर) (त्वाम्) (हि) (गोपतिम्) गोपालं श्रीकृष्णं (विद्म) जानीमत्वं (अस्मभ्यम्) (वसूनाम्) स्वर्णादीनां (गोनाम्) गवां (चित्रम्) नानारूपधारणेनाद्भुतं (वृषणम्) दधिदुग्धघृतानां वर्षकं (रयिम्) धनं (दाः) देहि ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ धनों के स्वामी ३ परमेश्वर ४ धनकामा हम ५ आपके ६ दाहिने ७ हाथको ८ पकडते हैं ९ हे सर्वव्यापिन् १० शूर ११ तुमको १२ ही १३ गोपाल श्री कृष्ण १४ जानते हैं तुम १५ हमारे लिये १६ स्वर्ण आदि १७ गौओं के १८ नानारूपधारणसे अद्भुत १९ दधिदुग्ध घृतों के वर्षक २० धनको २१ दीजिये ॥ ५ ॥ वसिष्ठ ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः। शूरो नृषाता श्रवसश्च काम आ गोमति व्रजे भजा त्वं नः ॥ ६ ॥ ८६

(यत्) यदा (ताः) (पार्याः) पारलौकिकाः (धियः) बुद्धयः (युनजते) प्रयुज्यन्ते तदा (नरः) प्राणानां नेतारो योगिनः (नेमधिता) नेमो न्नं तद्धीयते यत्र स नेमधितो यज्ञस्तेन योगयज्ञेन (इन्द्रम्) परमेश्व

रं(त्वा) त्वां (हवन्ते) ह्वयन्ति हे परमेश्वर तस्मिन्काले (शूरः) (नृषाता) भक्तानां दाता त्वं (शवसः) योगबलस्य (चकामे) चकाने काम्यमाने सति (गोमति) (व्रजे) गोभिरिन्द्रियैर्युक्ते गोष्ठे मनसि (नः) अस्मान् (भज) सेवय॥ ६॥

भावार्थः — १ जब २ वे ३ पारलौकिक ४ बुद्धियां ५ आत्मा मे युक्त होती है तब ६ प्राणों के नेता योगी ७ योग यज्ञ द्वारा ८,९ तुझ परमेश्वर को १० आव्हान करते है हे परमेश्वर उस समय ११ शूर १२ भक्तों के दाता तुम १३ योग बल के १४ काम्यमान होने पर १५ इन्द्रिय युक्त १६ मन में १७ हम को १८ सेवन करो—॥ ६॥ गौरिवीत ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता·

वयः सुपर्णा उप से दुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः। अप ध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि चक्षुर्मुमुग्ध्यास्मान्निधयेव बद्धान्॥ ७॥ ८७

(प्रियमेधाः) प्रिया मेधा येषान्ते (ऋषयः) साक्षात्कृत धर्माणः (नाधमानाः) मन्त्रं याचमानाः नि० ३।४ (वयः) पक्षि सदृशाः (सुपर्णाः) जीवाः (इन्द्रम्) परमेश्वरं (उपसेदुः) उपसन्ना अभवन् हे परमेश्वर (ध्वान्तम्) अन्धकाररूपमज्ञानं (अपोर्णुहि) परिहर (चक्षुः) ज्ञानचक्षुः (पूर्धि) पूरय। नि० ४।३ (अस्मान्) (निधया) निधा पाश्या भवति पाश्या पाशसमूहः, जन्म मरणादि पाशसमूहेन (एव) (बद्धान्) (मुमुग्धि) मोचय॥ ७॥

भावार्थः — १ मेधा जिनकी प्रिय है २ उन धर्म को साक्षात् करने वाले ३ मन्त्र याचक ४ पक्षी सदृश ५ जीवात्माओं ने ६ परमेश्वर को ७ उपासना किया हे परमेश्वर ८ अन्धकार रूप अज्ञान को ९ दूर करो १० ज्ञानचक्षु को

११ परिपूर्ण करो १२ हम १३ जन्म मरण आदि पाश समूह से १४ ही १५ बद्धों को १६ छुड़ाओ ॥ ७ ॥ वेनो भार्गव ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता-

नाके सुपर्णमुपयत्पतन्तं हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा। हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युम् ॥ ८ ॥ ९८

(यत्) यस्मात् (हृदा) हृदयेन मनसा (उपवेनन्तः) समीपे पूजयन्तः वेनति रर्चतिकर्मा नि० ३।१४ तस्मात् (नाके) स्वर्गे (पतन्तम्) गच्छन्तम् (हिरण्यपक्षं) ब्राह्मज्योतिः पक्षो यस्य तादृशं (सुपर्णं) (वरुणस्य) एकार्णवेशस्य महानारायणस्य (दूतम्) (यमस्य)- (योनौ) स्थाने संसारे (शकुनम्) शक्तं समर्थं सूर्यं आत्मा जगतस्तस्थुषश्चेति मन्त्रात् (भुरण्युम्) शीघ्रगामिनं नि० २।१५ (त्वा) त्वां सूर्यरूपमीश्वरं (अभ्यचक्षते) अभिपश्यन्ति यथावज्जानन्तीत्यर्थः। ८

भावार्थः – १ जिस कारण २ हृदय मनसे ३ समीप पूजन करने वाले हुए उस कारण ४ स्वर्ग में ५ जाते ६ ब्राह्मज्योति रूप पक्ष वाले ७ पक्षी रूप ८ एकार्णवेश महानारायण के ९ दूत १०,११ संसार मे १२ समर्थ १३ शीघ्रगामी १४ तुझ सूर्यरूप परमेश्वर को १५ यथावत् जानते हैं ॥ ८ ॥

बृहस्पतिर्नकुलो वा ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता-

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ ९ ॥ ९९

(पुरस्तात्) पूर्वस्मिन् काले (प्रथमम्) सृष्ट्यादौ (जज्ञानम्) प्रादुर्भूतं (ब्रह्म) सूर्यरूपं ब्रह्म श० ७।४।१।१४ (सीमतः) ब्रह्माण्डस्य मध्यतः

श्रा०७।४।१।२४(सुरुचः) शोभमानानि भानू लोकान् श्रा०७।४।१।२४ (विश्नावः) स्वप्रकाशेनविवृतान करोत् (सः) (वेनः) कामनीयोमेधावीसूर्यः (उपमाः) सावकाशाः (च) (अस्य) जगतः (विष्ठाः) विविध स्थानरूपाः (बुध्न्याः) दिशः श्रा०७।४।१।२४ तथा (सतः) मूर्त्तस्य घटपटादेः (च) (असतः) अमूर्त्तस्य वाय्वादेः (योनिम्) प्रभवंब्रह्माण्डं (विवः) प्रकाशयति सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्चेति मन्त्रात् ।९

भाषार्थः – १पूर्व कालमें २ स्टष्टि की आदिमें ३ प्रादुर्भूत ४ सूर्यरूपब्रह्मने ५ब्रह्माण्ड के मध्य ६ इन शोभनलोकों को ७ अपने प्रकाश से विवृत्त किया ८ वह ९ कामनीय मेधावी सूर्य १० अवकाशवान् ११ और १२ इस १३ जगत की विविध रूप १४ दिशाओं को तथा १५ मूर्त घटपट आदि १६ और १७ असूर्त्त वायु आदि के १८ प्रभव ब्रह्माण्ड को १९ प्रकाशित करता है ॥ ९॥ ८९

सहोत्रऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो महानारायणोदेवता

अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै महे वीरायतवसेतुराय। विरप्शिने वज्रिणे शन्तमानि वचांसि स्यस्मै स्थविरायतक्षुः१० ९०

स्तोतारः (महे) यज्ञेउत्सवेवा (अस्मै) (वीराय) असुराणां मारयित्रे (तवसे) बलवते (तुराय) (त) विष्णुः (उ) शिवः (र) ब्रह्मा त्रिदेवरूपाय (विरप्शिने) विशेषेणवेदानां वक्ते महतेवा। रपव्यक्त वाक्ये (वज्रिणे) ज्ञानवज्रवते (स्थविराय) वृद्धाय महानारायणाय (अपूर्व्या) पूर्व्याणि येषांनसान्तितानि (पुरुतमानि) बहुतमानि (शन्तमानि) आनन्द कृत्तमानि (वचांसि) वेदस्तुति रूपाणि वाक्यानि (तक्षुः) ततक्षुः। तक्षतिः करोतीत्यर्थः ॥१०॥

भाषार्थः – स्तोता मनुष्योंने १ यज्ञवाउत्सव में २ इस ३ असुरनाशक ४

वलवान् ५ निदेवरूप ६ विशेष कर वेदों के वक्ता वा महान् ७ ज्ञान वज्रधारी ८ वृद्ध महानारायण के लिये ६ अपूर्व वेदोक्त १० वक्रतम ११ अत्यानन्द कर्त्ता १२ वचनों को १३ उच्चारण किया ॥१०॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य नवमः खण्डः ६

अथ दशमः खण्डः

द्युतानऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः आत्मा देवता-

अवद्रप्सो अ॑ꣳशुमतीमतिष्ठदीयानः कृष्णोदशभिः सहस्रैः। आवत्तमिन्द्रः शच्या धमन्तमपस्नीहितिं नृमणा अधद्राः ॥१॥ ६१

(कृष्णः) तमप्रधानः (सहस्रैः) सहस् वलं तस्य दातृभिः (दशभिः) इन्द्रियैः (इयानः) इयमानः (द्रप्सः) आत्मप्रतिविंब रूपो रसः (अंशुमतीम्) मनोरूपां नदीं (अवातिष्ठत्) (शच्या) कर्मणा नि० २।१ (तम्) (धमन्तम्) अहं ममेति शब्दं कुर्वन्तं आत्म प्रतिविंवं (इन्द्रः) आत्मारूप यजमानः। इन्द्रोवैयजमानः श० २।१।२।११ आत्मावैयज्ञस्य यजमानो ऽङ्गान्यृत्विजः श० ६।५।२।१६ (आवत्) प्राप्नोत् (अध) अनन्तरं पश्चात् (नृमणाः) नृपु नेतृषु वाग्याद्युत्विक्षु मनो यस्य स आत्मारूप यजमानः (स्नीहितिम्) हिंसित्रीं काम सेनां (अपद्राः) अपगमयत् ॥१॥

भावार्थः

१ तमप्रधान २, ३, ४ बलदाता इन्द्रियों के साथ गतिमान ५ आत्म प्रतिविंवरूप रस ६ मनरूप नदी में ७ स्थित हुआ ८ आत्मारूप यजमानने ६ कर्म द्वारा १० उस ११ मेंमेरा यह शब्द करनेवाले आत्म प्रतिविंव को १२ प्राप्त किया १३ पीछे १४

वाक् आदि में मन करने वाले आत्मा रूप यजमान ने २५ हिंसक काम सेना को २६ हटा दिया ॥ १ ॥ इन्द्रो देवता शेषं पूर्ववत्-

वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणा विश्वे देवा अजहुर्ये सखायः। मरुद्भिरिन्द्र सख्यन्ते अस्त्वथेमा विश्वाः पृतना जयासि ॥ २ ॥ ९२

हे (इन्द्र) यजमान ते (ये) (सखायः) (विश्वेदेवाः) शमदमादयः (वृत्रस्य) पापस्य (श्वसथात्) श्वासादीनाः। श्वसेरौणादिकोऽथप्रत्ययः (ईषमाणाः) सर्वतः पलायमानाः (त्वा) त्वां (अजहुः) त्यक्तवन्तः (ते) तव (सख्यम्) (मरुद्भिः) माणैः (अस्तु) (अथ) अनन्तरं (इमाः) (पृतनाः) कामसेनाः (जयासि) स्वबलेनाभिभवसि ॥ २ ॥

भावार्थः -१ हे यजमान तेरे २ जो ३ सखा ४ शमदम आदि हैं ५ पापके ६ श्वास से भय युक्त ७ सब ओर भागते उन्होंने ८ तुमको ९ त्याग किया १० तेरी ११ मित्रता १२ माणों को साथ १३ हो १४ फिर १५ इन १६ काम सेनाओं को १७ अपने बल से जय करोगे ॥ २ ॥

वृहदुक्थ ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द आत्मा देवता-

विधुं दद्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो जगार। देवस्य पश्य काव्यं महित्वाद्या ममार स ह्यः समान ॥ ३ ॥ ९३

(पलिता) (उ) वृद्धा वस्थैव (विधुम्) देहस्य धारयितारं (समने) संग्रामे (बहूनाम्) कामादीनां (दद्राणम्) द्रावकं (युवानम्) (सन्तम्) यजमानं (जगार) निगिरतस्म (काव्यम्) क वित्वं (पश्य) (देवस्य) विद्वतः (महित्वात्) माहात्म्येन (यो) पलिता (ममार)-

(सह्यः) ईशेनै कत्वंमाप्तोयोगी (समान) जीवन् मुक्तोऽभवत् ॥३॥

भावार्थः - १.२ वृद्धावस्थानेही ३ देह धारक ४.५.६ संग्राममें बहुत काम आदि के भगानेवाले ७ युवान ८ होने यजमान को ९ निगला १० बुद्धिमानों को ११ देखो १२ विद्वान के १३ महात्म्य से १४ जो पलिता १५ मरी १६ परमेश्वरसे एकत्व को प्राप्त योगी १७ जीवन्मुक्त हुआ - ॥३॥

द्युतानऋषि स्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

त्वेथं ह्रेत्यत्सप्तभ्योजायमानोशत्रुभ्यो अभवः शत्रुरिन्द्रः। गूढ़ेद्यावापृथिवीअन्वविन्दोविभुमद्भ्योभुवनेभ्योरणन्धाः ॥ ४ ॥ ८४

हे (इन्द्र) यजमान (ह) खलु (त्वम्) (यत्) यस्मात् (जायमानः) योग संस्कारेण जायमानः सन् (सप्तभ्यः) (शत्रुभ्यः) कामक्रोधलोभमोहाहङ्कारममत्वमत्सरेभ्यः (शत्रुः) (अभवः) (गूढे) गुप्ते (द्यावापृथिवी) मनोभृकुटी (अविन्दः) अलभथाः (तत्) तस्मात् (विभुमद्भ्यः) भुवनपालयुक्तेभ्यः (भुवनेभ्यः) चतुर्दश भुवनेभ्यः (रणम्) युद्धं (धाः) धारयकुरु मोक्षार्थी भवेत्यर्थः ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे यजमान २ निश्चय ३ तुम ४ जिसकारणसे ५ योग संस्कार से संस्कृत होते ६.७ सात शत्रु कामक्रोधलोभमोह अहंकार ममत्वमत्सर के लिये ८ शत्रु ९ हुए १० गुप्त ११ मनभृकुटिको १२ लब्धकिया १३ उसकारण १४ भुवनपालयुक्त १५ चतुर्दशभुवनों से १६ युद्ध १७ करो अर्थात् मोक्षार्थी हो-४

वामदेवऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

मेडिन्नत्वा वज्रिणम्भृष्टिमन्तम्पुरुधस्मानं वृषभथं स्थिरप्स्नुम्। करोष्यर्यस्तरुषी दुवस्यु

रिन्द्रं द्युक्षं वृत्रहणं गृणीषे ॥ ५ ॥ ९५

हे(इन्द्र) यजमान (दुवस्युः) दुवः परिचरणं स्तुत्यादि लक्षणं नादि च्छुः (अर्येः) इन्द्रियाणामीशत्वं (मेडिम्) महावाचं नि० २।११।२९ (तरुषीः) नारकायोगभक्ति भूमीश्च (करोषि) लभसितस्मान् (वज्रिणम्) ज्ञानवज्रधरं (भृष्टिमन्तम्) असुराणां भर्जनवन्तं (पुरुधस्मानं) वहूनां व्याष्टिसमष्टिदेहानां धारकं (वृषभम्) धर्मकामार्थमोक्षाणांवर्षकं (स्थिरप्सुम्) स्थिररूपमच्युतस्वरूपं (वृत्रहणं) पापनाशकं (द्युक्षम्) महानारायणलोके वर्त्तमानं परमेश्वरं (नत्वा) नमस्कृत्य (गृणीषे) स्तौषि ॥ ५ ॥

भाषार्थः – १ हेयजमान २ स्तुति आदि सेवाके चाहने वाले ३ इन्द्रियों के स्वामीतुम ४ महावाक को ५ और योगभक्ति की भूमियों को ६ लब्धकरते होउसकारण ७ ज्ञानवज्रधारी ८ असुरोंके नाशक ९ वहुतव्याष्टि समष्टिदेहों केधारक १० चारोंपदार्थकेदाता ११ स्थितरूप अच्युत स्वरूप १२ पापनाशक १३ महानारायणलोकमेंवर्त्तमान परमेश्वर को १४ नमस्कार करके १५ स्तुत करते हो — ॥ ५ ॥ वसिष्ठऋषिर्द्विपदा विराट् छन्द इन्द्रो देवता-

प्रवो महे महे वृधे भरध्वं प्रचेतसे प्रसुमतिं कृणुध्वं । विशः पूर्वीः प्रचर चर्षणिप्राः ॥ ६ ॥ ९६

हे भक्तजनाः (महे) (महे) मत्येकोत्सवे यज्ञेवा (वः) युष्माकं (प्रचेतसे) ज्ञानस्वरूपाय (वृधे) महापुरुषाय (प्रभरध्वम्) पुष्पचन्दादीनिवस्तूनि आर्पयत (सुमतिम्) सुष्टुतिञ्च (प्रकृणुध्वम्) प्रकुरुत हे परमेश्वर (चर्षणिप्राः) कामैर्भक्तानां पूरयितात्वमपि (पूर्वीः) (विशः) प्रजाः स्वपूजकान् (प्रचर) आभिगच्छ ॥ ६ ॥ ९६

भाषार्थः – हे भक्तजनो १,२ प्रत्येक उत्सव वा यज्ञमें ३ तुम्हारे ४ ज्ञानस्वरूप ५ महापुरुषके लिये ६ पुष्पचन्दन आदि वस्तुओं को अर्पण करो ७ और स्तुति को ८ करो हे परमेश्वर ९ कामनाओं से भक्तोंके पूरक तुमभी ९,१० अपनी पूजकप्रजाको ११ प्रसन्नकरो—॥६॥ ९६

विश्वामित्रऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

भुनं थं हुवेम मघवानमिन्द्र मस्मिन्नरे नृतमं वाजसातौ। भृण्वन्तमुग्र मूतये समत्सुघ्नन्तं वृत्राणि सञ्जितं धनानि ॥७॥ ९७

वेदोपदेशः (वाजसातौ) हविर्दानं यस्मिन्नस्मिन्यज्ञे (ऊतये) संसाराद्रक्षणाय (अस्मिन्) (नरे) जीवात्मनि (नृतमम्) अन्तर्यामि रूपं (भुनम्) आनन्दस्वरूपं (मघवानम्) धनवन्तं (उग्रम्) ईशस्वरूपं (समत्सु) कामयुद्धेषु (वृत्राणि) पापानि (घ्नन्तम्) हिंसन्तं (धनानि) असुराणांधनानि (सञ्जितम्) सम्यग्जेतारं (भृण्वन्तं) स्तुतिं भृण्वन्तं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (हुवेम) आह्वयेम॥७

भाषार्थः – वेदकाउपदेश १ हविदान वाले यज्ञमें २ संसार से रक्षा के लिये ३ इस ४ जीवात्मा में ५ अन्तर्यामी रूप ६ आनन्द स्वरूप ७ धनवान् ८ ईशरूप ९,१०,११ काम युद्धों में पापोंके नाशक १२,१३ असुरों के धनों को जीतने वाले १४ स्तुति के श्रोता १५ परमेश्वर को १६ हम आह्वान करते है ॥७॥

वसिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

उदु ब्रह्माण्यैरत श्रवस्येन्द्रं समर्ये महया वसिष्ठ। आयो विश्वानि श्रवसा ततानोपश्रोता मईवतो वचांसि॥८॥ ९८

(वसिष्ठ) हेवाक्।वाग्वै वासिष्ठाश० १४।६।२।२(समर्ये) यज्ञे (श्रवस्या) श्रवणीयानि (ब्रह्माणि) वैदिक स्तोत्राणि (उ) एव (उदेरत) (इन्द्रम्) परमेश्वरं (महय) पूजय (यः) (अः) सर्वव्यापी (विश्वानि) सर्वाणि भुवनानि (शवसा) अन्नेन (आततान) (मे) मम (ईवतः) शान्तिवतः वीजको० (वचांसि) स्तुति रूपाणि वाक्यानि (उपश्रोता) अन्तर्यामि रूपत्वात् ॥ ८ ॥

भावार्थः — १ हेवाक् २ यज्ञमें ३ श्रवण योग्य ४ वैदिक स्तोत्रों को ५ ही ६ उच्चारण करो ७ परमेश्वर को ८ पूजो ९ जैसे १० सर्वव्यापी ने ११ सब भुवनों को १२ अन्न सहित १३ विस्तृत किया १४ बहुतुम १५ शान्ति वान के १६ स्तुति रूप वचनों को १७ अन्तर्यामी रूपसे सुनने वाला है — ॥ ८ ॥

गौरिवीतिऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो विष्णुर्देवता-

चक्रं यदस्याप्स्वा निषत्तमुतो तदस्मै मध्विच्छद्यात्। पृथिव्यामतिषितं यदूधः पयो गोष्वदधा ओषधीषु ॥ ९ ॥ ६६

(अस्य) विष्णोः (तत्) (चक्रम्) सूर्याख्यं (अप्सु) अन्तरिक्षेषु (आनिषत्तं) सर्वतो निषण्णमासीत् (यत्) (अस्मै) विष्णवे (मधु) (इत्) यज्ञजमृतरसमेव (चच्छद्यात्) आपयति (उत) अपिच (यत्) (अतिषितं) अतिशीनं चक्रं (पृथिव्याम्) (ओषधीषु) (गोषु) (उ) (अपि) (ऊधः पयः) (आदधा) आदधाति ॥ ९ ॥

भावार्थः — १ इस २ विष्णु का ३ वह ४ सूर्यरूप चक्र ५ अन्तरिक्षोंमें ६ सब ओर विद्यमान हुआ ६ जो ७ इस विष्णु के लिये ८ यज्ञज अमृत रस को ९ ही १० प्राप्त कराता है ११ और १२ जो १३ अतिशीन चक्र १४ पृथिवी १५ ओष-

धि २६ और गौओं में २७ भी २८ अमृत दुग्ध के स्तनों को २९ धारण करता है ८
इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनुज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य दशमः खण्डः १०

अथैकादशः खण्डः ११

तार्क्ष्य पुत्रोऽरिष्टनेमिर्ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो गरुडो देवता॰

त्यमू षु वाजिनं देवजूतं सहोवानं तरुतारं रथानाम्। अरिष्टनेमिं पृतनाजमाशुं स्वस्तये तार्क्ष्यमिहा हुवेम॥१॥१००

(इह) यज्ञे (स्वस्तये) क्षेमाय (तम्) (यम्) वालं (देवजूतं) सोमाहरणाय देवेषु प्रेरितं (सुवाजिनम्) सुष्ठुन्नवन्तं त्सरुं (सहोवानम्) वलवन्तं। सहस शब्दाद्वनिप् मत्वर्थीयः (पृतनाजम्) देव सेनाया जेतारं (आशुम्) शीघ्र गामिनं (अरिष्टनेमिम्) इन्द्रस्य वज्रेणाहिंसितं नि॰ २।२० (रथानाम्) वैष्णव रथानां (तरुतारम्) वृक्षज ध्वजाया स्तारकं (तार्क्ष्यम्) ईशावतारं गरुडं (उ) अपि (आहुवेम) १

भावार्थः – १ इस यज्ञ में २ क्षेम के लिये ३ उस ४ वालक ५ सोमलाने के लिये देवताओं में प्रेरित ६ पिता के वनाये अन्न से त्सरु ७ वलवान ८ देवसेना के जेता ९ शीघ्रगामी १० इन्द्र के वज्र से अहिंसित ११ वैष्णव रथों की १२ ध्वजा के तारक १३ ईशावतार गरुड़ को १४ भी १५ हम आह्वान करते हैं॥१॥

भरद्वाज ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता॰

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम्। हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रमिदं हविर्मघवा वेत्विन्द्रः॥२॥१०१

(त्रातारम्) वेदोपदेशेनरक्षकं (इन्द्रम्) ब्रह्मारूपं परमेश्वरं (अवितारम्) नानावतारैः रक्षकं (इन्द्रम्) विष्णुरूपंपरमेश्वरं (हवे) (हवे) सर्वेष्वाहवनेषु (सुहवम्) सुखेनाह्वातुंशक्यं (शूरं) (इन्द्रम्) शिवरूपं परमेश्वरं (नः) च (पुरुहूतम्) पुरुभिर्बहुभिराहूतं (शक्रं) समर्थं (इन्द्रम्) देवेन्द्रं (उ) अपि (हुवे) आह्वयामि स (मघवा) धनवान् (इन्द्रः) परमेश्वरः (इदम्) पुरोवर्त्ति (हविः) (वेतु) भक्षयतु ॥२॥

भावार्थः - १ वेदोपदेशसे रक्षक २ ब्रह्मारूपपरमेश्वरको ३ नानावतारोंसेरक्षक ४ विष्णुरूपपरमेश्वरको ५,६ सब आहवनोंमें ७ सुखसे आह्वान योग्य ८,९ शिवरूपपरमेश्वरको १० और ११ बहुतनसे आहूत १२ समर्थ १३ देवेन्द्रको १४ भी १५ आह्वान करताहूं १६ वह धनवान १७ परमेश्वर १८ इस आगे वर्त्तमान १९ हविको २० भक्षणकरो ॥२॥

वसुक्रो विमदोवाऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

ईजामहे इन्द्रं वज्रदक्षिणं हरीणां रथ्यो३ं विव्रतानाम्। प्रश्मश्रुभिर्दोधुवदूर्ध्वधाभुवद्विसेनाभिर्भयमानोविराधसा ॥ ३ ॥ १०२ रथ्यमृङ्इतिऋग्वेदीयःपाठः

(वज्रदक्षिणं) वज्रोदक्षिणेहस्तेयस्यतं (विव्रतानाम्) रथवाहनादिविविधकर्मणां (हरीणाम्) अश्वानां (रथ्यम्) आनेतारं (इन्द्रं) (यजामहे) सोमलक्षणैर्हविर्भिः पूजयामः सः (श्मश्रुभिः) स्वकीयैः (दोधुवत्) पुनः पुनः धुन्वानः सन तान् (ऊर्ध्वधा) (विभुवत्) लेद (सेनाभिः) मरुदादिभिः (भयमानः) शत्रून्कम्पयन् (राधसा) धनेन (वि) विशिष्टो भवति ॥३॥

भावार्थः - १ दक्षिणहस्तमें वज्रधारी २ रथवाहन आदि नाना प्रकारके

र्मवाले ३ घोड़ों के ४ स्थानेना ५ इन्द्र को ६ सोमनामहविशेषों से हम पूजन करते हैं वह ७ डाढ़ी मूछों को ८ वारम्वार कंपित करता ९ ऊंची धारण करता १० प्रकट होता है ११ मरुद्गणादि की सेनाओं से १२ शत्रुओं को कंपाता १३ धनके द्वारा १३ विशिष्ट होता है ॥ ३ ॥ १०२ ॥

अथाध्यात्मम् – वाग (ऋत्विजां वचनं वयं (वज्रदक्षिणम्) ज्ञानवज्रधरं (इन्द्रम्) आत्मा रूपं यजमानं (विव्रतानाम्) विविधकर्मणां (हरीणाम्) प्राणानां (रथ्या) मार्गेण (यजामहे) आत्मप्रति विंवाख्य हविषा पूजयामः सः (श्मश्रुभिः) श्मश्रुप्रभृति रोमैः सह देहं (दोधुवत्) कम्पयन् सन् प्राणं (ऊर्ध्वधाः) (विभुवत्) किञ्च (सेनाभिः) शमादि सेनाभिः (भयमानः) कामादीन्कम्पयन्सन् (राधसा) योगैश्वर्येण (वि) विशिष्टो भवति ॥ ३ ॥

भाषार्थः वाक् आदि ऋत्विजों का वचन हम १ ज्ञानवज्र धारी २ आत्मारूप यजमान को ३ विविधकर्मवाले ४ प्राणों के ५ मार्ग से ६ आत्मप्रति विंवनाम हवि के द्वारा हम पूजते हैं वह ७ श्मश्रु आदि रोमों सहित देह को ८ कंपित करता ९ प्राण को १० ऊंचा धारण करनेवाला ११ होता है और ११ शम दम आदि सेनाओं से १२ काम आदि को कंपित करता १३ योगैश्वर्य से १४ विशिष्ट होता है —॥ ३ ॥ तिस्रणां वामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

सत्राहणं दाधृषिं तुम्रमिन्द्रं महामपारं वृषभं सुवज्रम्। हन्ता यो वृत्रं सनितोत वाजं दाता मघानि मघवा सुराधाः॥ ४ ॥ १०३

(यः) परमेश्वरः (वृत्रम्) पापं (हन्ता) (मघवा) मघवान् धनवान् (वाजम्) अन्नं (सनिता) दाता (उत) अपि च (सुराधाः) शोभनधन

युक्तः त्वं (मघानि) धनानि (दाता) (सत्राहणं) रुद्ररूपेण सर्वस्य हन्तारं (दाधृषिं) विष्णुरूपेणातिशयेन धर्षकं (तुम्रम्) अन्तर्यामिरूपेण सर्वस्य प्रेरकं। तुम्रिः प्रेरणाकर्मा (महां) महापुरुषरूपेण महान्तं (अपारम्) ब्रह्मात्मनाऽपारं (वृषभम्) सूर्यरूपेण वर्षितारं (सुवज्रम्) इन्द्ररूपेण वज्रधरं वेदाः स्तुवन्तीत्यर्थः ॥ ४ ॥

भाषार्थः – १ जो परमेश्वर २,३ पापनाशक ४ धनवान् ५,६ अन्नदाता ७ और ८ शोभन धनवाला ९,१० धनदाता है उस ११ रुद्ररूपसे सब के हन्ता १२ विष्णुरूपसे अतिशय धर्षक १३ अन्तर्यामीरूपसे सबके प्रेरक १४ महापुरुषरूपसे महान्त १५ ब्रह्म नामसे अपार १६ सूर्यरूपसे वृष्टि कर्त्ता १७ इन्द्ररूपसे वज्रधारीको वेद स्तुति करते हैं – ॥ ४ ॥ विनियोगः पूर्ववत्

योनोवनुष्यन्नभिदाति मर्त्तउगणावामन्यमान स्तुरोवा। क्षिधीयुधा शवसावातमिन्द्राभीष्याम वृषमणस्त्वोताः ॥ ५ ॥ १०५

(इन्द्र) हे परमेश्वर (यः) (मर्त्तः) मनुष्यः (वनुष्यन्) हन्तुमिच्छन् (नः) अस्मान् (अभिदाति) आभिमुख्येन छिनत्ति (वा) अथवा (उगणाः) भूतप्रेतादयः (वा) (मन्यमानः) अहंकारास्पदं (तुरः) हिंसकं मनः तुर्वति वधकर्मानि० २। १९ (वा) (क्षिधी) क्षिप्ये धीयते क्रियतेऽनेनेति क्षयकरः कामः (युधा) युद्धेन पीडयति (वृषमणः) वृषाङ्गवाचरन्तः (त्वोताः) त्वया उता रक्षिता वयं (तम्) शत्रुसमूहं (शवसा) बलेन योगबलेन वा (अभीष्याम) अभिभवेम ॥ ५ ॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ जो ३ मनुष्य ४ मारना चाहता ५ हमको ६ सन्मुख होकर घायल करता है ७ अथवा ८ भूतप्रेत आदि ९ वा १० अहंका-

रास्पद् ११ हिंसकमन १२ वा १३ क्षयकर्त्ता काम १४ युद्धसेपीडा देनाहै १५ वृषकी समान घूमते १६ आपसे रक्षित हम १७ उस शत्रु समूह को १८ बलवायोगरूलसे १९ जयकरें—॥५॥ विनियोगः पूर्ववत्-

यं वृत्रेषु क्षितयस्पर्द्धमानायं युक्तेषु तुरयन्तो हवन्ते
यं शूरसातौ यमपामुपज्मन्यं विप्रासो वाजयन्ते
स इन्द्रः ॥६॥१०४

(क्षितयः) मनुष्याः नि० २।३ (वृत्रेषु) पापेषु (स्पर्द्धमानाः) सन्तः (यम्) (हवन्ते) आह्वयन्ति (युक्तेषु) प्राणेन्द्रियाणामात्मनि युक्तेषु (तुरयन्तः) कामादीन् हिंसन्तः (यम्) आह्व० (शूरसातौ) काम संग्रामे (यम्) आह्व० (अपाम्) अमृतोदकानां (ज्मन्) ज्मनि भूमौ गगन मण्डले (यम्) (उप) उपाह्वयन्ति (विप्रासः) मेधाविनः (यम्) (वाजयन्ते) पूजयन्ति वाजयतीति अर्चति कर्मा नि० ३।१४ (सः) (इन्द्रः) परमेश्वरः ॥४॥

भाषार्थः — १ मनुष्य २ पापोंमें ३ स्पर्द्धाकरते ४ जिसको ५ आह्वान करतेहैं ६ प्राणइन्द्रियोंके आत्मा में युक्त होनेपर ७ काम आदि को मारते ८ जिसे आह्वान करते हैं ९ काम संग्राममें १० जिसे आह्वान करते हैं ११.१२ अमृतजलोंकी भूमि गगन मंडल में १३ जिसे १४ समीप आह्वान करते हैं १५ मेधावी ब्राह्मण १६ जिसे १७ पूजते हैं १८ वही १९ परमेश्वर है ॥४॥

विश्वामित्र ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः इन्द्रापर्वता देवते-

इन्द्रापर्वता बृहता रथेन वामीरिष आवहतं सुवीराः। वीतं हव्यान्यध्वरेषु देवा वर्द्धेथां गीर्भिरिडया मदन्ता ॥७॥ १०५

हे (इन्द्रापर्वता) हेइन्द्रापर्वतौ नरनारायणौ । जीवरूपपर्वाणि सन्तियस्यसपर्वतोनरः (बृहता) महता (रथेन) आगत्य (वामीः) सम्भजनीयाः (सुवीराः) शोभनपुत्रोपेताः (इषः) अन्नानि (आवहतम्) अस्मासु धारयन्तं प्रयच्छन्तमित्यर्थः किञ्च हे (देवा) देवौनरनारायणौ (अध्वरेषु) यज्ञेषु (हव्यानि) हवींषि (वीतम्) भक्षयन्तम् तथा (इडया) अस्माभिर्दत्तेनान्नेनानि० २।७ (मदन्ता) मदन्तौहृष्यन्तौयुवां (गीर्भिः) स्तुतिभिः (वर्द्धयां) प्रवृद्धौभवतौ ॥७॥

भाषार्थः – १ हेनरनारायण २ बड़े ३ रथकी सवारी सेआकर ४ सेवनयोग्य ५ श्रेष्ठपुत्रसे युक्त ६ अन्नोंको ७ हमेंदो ८ हेनरनारायण देवताओ ९ यज्ञों में १० हविओं को ११ भक्षण करोतथा १२ हमारेदिये अन्नसे १३ हर्षित तुमदोनों १४ स्तुतिओं से १५ प्रवृद्ध हूजिये ॥७॥

रेणुऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः इन्द्रोदेवता ।

इन्द्राय गिर अनिशितसर्गा अपः प्रेरयन्सगरस्य बुध्नात् । यो अक्षेणेव चक्रियौ शचीभिर्विष्वक्तस्तम्भ पृथिवीमुत द्याम् ॥८॥ १०७

(अनिशितसर्गाः) शान्तिरूपसङ्घातवन्तः (गिरः) अनाहतशब्दा (सगरस्य) गगनांतरिक्षस्यानि० १।३ (बुध्नात्) प्रदेशात् (इन्द्राय) आत्मारूपयजमानाय (अपः) अमृतोदकानि (प्रेरयन्) (यः) आत्मा (शचीभिः) कर्मभिःनि० २।१ (पृथिवीम्) (उत) अपिच (द्याम्) दिवंमनोभृकुटीवा (विष्वक्) सर्वतः (तस्तम्भ) अस्तम्भात् (इव) यथा (चक्रियौ) इयचक्रौचक्रतुल्यौमनः प्राणौ (अक्षेण) योग

रयाक्षेण ॥ ८ ॥

भावार्थः

१ शान्तिरूप संघात वाले २ अनाहतशब्दोंने ३ गगनान्तरिक्षके ४ प्रदेशसे ५ आत्मारूप यजमानके लिये ६ अमृत जलोंको ७ प्रेरित किया ८ जिस आत्माने ९ कर्मोंसे १० पृथिवी ११ और १२ स्वर्गवाभृकुटि मनको १३ सब ओरसे १४ स्तम्भित किया १५ जैसे १६ चक्रतुल्य मन प्राण १७ योगरयाक्षद्वारा ॥ ८ ॥ वामदेवऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता·

आत्वा सखायः सख्या ववृत्युस्तिरः पुरूचिदर्णवाञ्जगम्याः । पितुर्नपातमादधीत वेधा अस्मिन्क्षये प्रतरां दीद्यानः ॥ ९ ॥ १०८

हे परमेश्वर (सखायः) भक्त जनाः (सख्या) भक्तिभावेन (त्वा) त्वां (ववृत्युः) अभिमुखं कुर्वन्ति यस्मात् (वेधा) मेधावीत्वं (तिरः) तिर्यग्भूत्वा (पुरु) विस्तीर्णं (अर्णवम्) मनः । मनोवैसमुद्रः श० ७।५।२।५२ (जगम्याः) आगच्छः (अस्मिन्) (क्षये) शरीर रूप गृहे (प्रतराम्) प्रकृष्टं (दीद्यानः) अन्तर्यामि रूपेण दीप्यमानः सन् (पितुः) महानारायणस्य (नपातम्) पौत्र मात्म प्रतिबिंबं (आदधीत) महानारायणस्य पुत्र ईशस्तस्य पुत्र आत्म प्रतिबिंब इति ॥ ९

भावार्थः – हे परमेश्वर १ भक्तजन २ भक्तिभावसे ३ तुमको ४ सन्मुख करते हैं ५ जिसकारण मेधावी तुम ६ तिरछे होकर ७ विस्तीर्ण ८ मनमें ९ विराजमान हुए १० इस ११ शरीर रूप गृहमें १२ प्रकृष्ट १३ अन्तर्यामीरूपसे दीप्यमान होते १४ महानारायण के १५ पौत्र आत्म प्रतिबिंबको १६ अपने आत्मा में धारण करो — ॥ ९ ॥

गोतमऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो जीवेशौ देवते·

को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य शिमीवतो भामिनो दु
र्हृणायून्। आसन्नेषामप्सुवाहो मयोभून्य एषां
भृत्यामृणधत् स जीवात् ॥१०॥ १०९

(अद्य) अस्मिन्काले (ऋतस्य) सत्यस्य योगरथस्य (धुरि) (शि
मीवतः) योगक्रियोपेतान् नि० २।१ (भामिनः) तेजसा युक्तान्
(दुर्हृणायून्) परैर्दुःसहेन क्रोधेन युक्तान् नि० ३।१३ (अप्सुवाहः)
अन्तरिक्षेषु प्रापकान् (मयोभून्) सुखप्रदान् (गाः) प्राणान् (कः)
प्रजापतिरेव। कं वै प्रजापतिः श० २।५।२।१३ (युङ्क्ते) (यः) यो
गी (एषाम्) प्राणरूपाश्वानां (आसन्) आस्ये मुखे (भृत्याम्) भ
रणयोग्यां योगरश्मीनां (ऋणधत्) धारयति। ऋणाद्धि परिचर
णकर्मा नि० ३।५ (सः) (जीवात्) जीवन्मुक्तो भवेत् ॥१०॥

भावार्थः – १ अब २ योगरथकी ३ धुरिमें ४ योगक्रियावान् ५ तेजस्वी
६ शत्रुओंके दुःसह क्रोधसे युक्त ७ अन्तरिक्षों में पहुंचाने वाले ८ सुखदाता
९ प्राणोंको १० प्रजापति ही ११ युक्त करता है १२ जो योगी १३ इन प्राणरूप
घोड़ोंके १४ मुखमें १५ धारण योग्य १७ योग रश्मी को १६ धारण करता है
१७ वह १८ जीवन्मुक्त होवै ॥ १०॥ १०९

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते साम
वेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने तृतीयाध्यायस्यैकादशः खण्डः

इति त्रैष्टुभमैन्द्रम्– अथ द्वादशः खण्डः

मधुच्छन्दा ऋषिरनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता

गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः। ब्रह्मा
णस्त्वा शतक्रत उद्वंशमिव येमिरे ॥१॥ ११०

हे (शतक्रतो) वज्रकर्मन् परमेश्वर (त्वा) त्वां (गायत्रिणः) गायत्रं सामतस्योद्गातारः (गायन्ति) स्तुवन्ति नि० ३।१४ (अर्किणः) अर्चन हेतुमन्त्र युक्ताहोतारः (अर्कम्) अर्चनीयंत्वां (अर्चन्ति) शास्त्रगतैर्मन्त्रैः प्रशंसन्ति (ब्रह्माणः) ब्रह्मप्रभृतयः इतरे ब्राह्मणाः (त्वा) त्वामेव (उद्येमिरे) उन्नतिंप्रापयन्ति (इव) यथा (वंशम्) पुत्राः स्वकीयं कुलमुन्नतं कुर्वन्ति॥ १॥

भावार्थः – १ हे वज्रकर्म परमेश्वर २ तुमको ३ गायत्र सामके गाना ४ गाते है ५ होता ६ तुम पूजनीय को ७ प्रशंसा करते हैं ८ ब्रह्मा आदि ब्राह्मण ९ तुमकोही १० उन्नति प्राप्त कराते हैं ११ जैसे १२ पुत्र अपने कुल को उन्नत करते हैं–॥१॥ जेता माधुच्छन्दस ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः। रथी
तमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम्॥२॥ २११

(विश्वाः) सर्वाः (गिरः) वेदस्तुतयः (समुद्रव्यचसं) मनोव्याप्नवन्तं मनो वै समुद्रः श० ७।५।२।५२ (रथीनाम्) योगरथ युक्तानां योगिनां (रथीतमम्) योगेश्वरं (वाजानां) यज्ञानां (पतिम्) स्वामिनं (सत्पतिम्) सन्मार्ग वर्त्तिनां भक्तानां पालकं (इन्द्रं) परमेश्वरं (अवीवृधन्) वर्द्धितवत्यः। नान्यं तस्य सर्वरूपत्वात्॥ २॥

भावार्थः – १ सब २ वेदस्तुति ३ मनमें व्याप्त ४ योग रथारूढ योगियों के ५ योगेश्वर ६, ७ यज्ञोंके स्वामी ८ भक्त पालक ९ परमेश्वर कोंही १० बढ़ाती हैं उसके सर्वरूप होनेसे॥२॥

गौतम ऋषिरनुष्टुप् छंन्द इन्द्रो देवता-

इमामिन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम्। शुक्रस्य

३क १२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
त्वाम्यक्षरन् धारा ऋतस्य सादने ॥ ३॥ १९२

हे (इन्द्र) परमेश्वर (ज्येष्ठम्) योगप्रभावाज्ज्येष्ठं (मदम्) मद्रूपं (अमर्त्यम्) नवांशत्वादविनाशिनं (सुतम्) अभिषुतं (इमम्) आत्ममति बिंबं (पिब) यस्मात् (ऋतस्य) योग यज्ञस्य (सादने) अ + सदने ललाट रूप गृहे (भुक्तस्य) मानससूर्यस्य। एषवै भुक्तोयएषतपतिश० ४।३।१।२६ (धाराः) इन्द्रियशक्ति रूपधाराः (त्वा) त्वां (अभ्यक्षरन्) त्वां प्राप्तुं सयमेवागच्छन्ति ॥ ३॥

भावार्थः – १ हे परमेश्वर २ योगप्रभावसे ज्येष्ठ ३ मदरूप ४ आपका अंश होनेसे अविनाशी ५ अभिषुत ६ इस आत्म मति बिंबको ७ पान करो जिस कारण ८ योगयज्ञ के ललाट रूप गृहमें १० मानस सूर्य की ११ इन्द्रिय शक्ति रूपधारा १२, १३ तुम्हें प्राप्त करने को आपही आती हैं ॥ ३॥

अत्रिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता–

यदिन्द्र चित्रम इह नास्ति त्वादातमद्रिवः। राधस्तन्नो विदद्वस उभयाहस्त्याभर ॥ ४॥ १९३

हे (चित्र) सर्वेभ्यो विलक्षणत्वादद्भुत (अद्रिवः) विराडात्मसूर्यानांधारक (विदद्वसो) ज्ञानधनविद् ज्ञाने (इन्द्र) परमेश्वर (यत्) (मे) मम (राधः) धनं (इह) अस्मिन् लोके (न) (अस्ति) (त्वादातम्) त्वयादातव्यं (तत्) धनं योगधनंच (उभया) ऐहिकपारलौकिकभेदवत्या (हस्त्या) हस्त गृहीतयाधनशक्त्या (नः) अस्मभ्यम् (आभर) आहर देहि ॥ ४॥

भावार्थः – १ हे सर्व विलक्षण होनेसे अद्भुत २ विराडात्मा सूर्यों के धारक ३ ज्ञानधन ४ परमेश्वर ५ जो ६ मेरा ७ धन ८ इस लोक में ९ नहीं १०

है ११तुझसे देनेयोग्य १२ वह धनवा योगधन १३ ऐहिक पारलौकिक भेद वती १४ हस्तगृहीत धनशक्ति द्वारा १५ हमारे लिये १६दीजिये॥ ४॥

तिरश्ची आङ्गिरस ऋषिरनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

श्रुधी हवन्तिरश्च्या इन्द्र यस्त्वा सपर्यति। सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूर्द्धि महाँ असि॥ ५॥

हे(इन्द्र) परमेश्वर(यः) जीवात्माप्रभुः(तिरश्च्या) बुद्धिरूपपत्न्या सह(त्वा) त्वां(सपर्यति) परिचरतितस्य(हवम्) आह्वानं(श्रुधी) शृणु(सुवीर्यस्य) शोभनवीर्य्योपेतस्य(गोमतः) गोलोकस्य(रायः) धनं(पूर्द्धि) पूरयदेहि यस्मात्त्वं(महान्) महापुरुषः(असि)५

भावार्थः – १हेपरमेश्वर२ जीवात्माप्रभु ३ बुद्धिरूप पत्नी के साथ ४तुमको ५ सेवन करताहै ६उसके आह्वान को ७ सुनो ८ शोभन बल युक्त ९ गोलोक के १० धनको ११ दो जिस कारणतुम १२ महापुरुष १३ हो॥ ५

गौतमऋषिरनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

असावि सोम इन्द्र ते शविष्ठ धृष्णवा गहि। आ त्वा पृणक्त्विन्द्रियꣳ रजः सूर्यो न रश्मिभिः॥ ६॥ ११५

हे(शविष्ठ) अतिशयेन बलवन्(धृष्णो) असुराणां धर्षयितः (इन्द्र) परमेश्वर(ते) त्वदर्थं(सोमः) आत्मप्रतिबिंबः(असावि) अभिषुतो भूत्(आगहि) आगच्छ प्रादुर्भव(त्वा) त्वां(इन्द्रियम्) इन्द्रियसमूहः(आपृणक्तु) व्याप्नोतु। पृच सम्पर्के(न) यथा(सूर्यः)(रजः) लोकान्(रश्मिभिः) किरणैर्व्याप्नोति॥ ६॥

भावार्थः – १हे अतिशय बली २असुरों के जीतने वाले ३ परमेश्वर ४ आपके लिये ५ सोमवा आत्मप्रतिबिंब ६ अभिषुत हुआ ७ आओ ८

तुमको ९ इन्द्रिय समूह १० प्राप्त करो ११ जैसे १२ सूर्य १३ लोकोंको १४ किरणों से व्याप्त करता है॥ ६॥

कण्वो नीपातिथिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दइन्द्रो देवता-

ऐन्द्र याहि हरिभिरुप कण्वस्य सुष्टुतिम्। दिवो अमुष्य शासतो दिवं ययदिवावसो ॥७॥ ११६

हे (दिवावसो) सूर्यरूप (इन्द्र) परमेश्वर (दिवः) भृकुटेः (शासतः) (अमुष्य) (कण्वस्य) मेधाविनो योगिनः (सुष्टुतिम्) शोभनां स्तुतिं मतिं (हरिभिः) ब्रह्म विष्णु महेशादि रूपैः (उपायाहि) आगच्छ (दिवम्) स्वलोकं (यय) प्रापय। यागतौ॥७॥

भाषार्थः - १ हे सूर्यरूप २ परमेश्वर ३ भृकुटि का ४ शासन करते ५ इस ६ मेधावी योगी की ७ शोभन स्तुति मति ८ ब्रह्मा विष्णु महेश आदि रूपों से ९ आओ १० अपने लोक को ११ प्राप्त कराओ-॥७॥

द्युम्नोरिष्टरश्मी ऋषिरनुष्टुप् छन्दो देवता

आ त्वा गिरो रथीरिवास्थुः सुतेषु गिर्वणः। अभि त्वा समनूषत गावो वत्सं न धेनवः ॥८॥ ११७

हे (गिर्वणः) गीर्भिर्वननीय परमेश्वर (सुतेषु) सोमेषु। प्राणेन्द्रियात्म मति विवेष्वभिषुतेषु सत्सु (गिरः) वेदस्तुतयः (रथी) (इव) (त्वा) त्वाम् (आस्थुः) आभिमुख्येन शीघ्रं गच्छन्ति तथा (त्वा) त्वां (अभि) अभिलक्ष्य (समनूषत) सम्यक् स्तुवन्ति (न) यथा (धेनवः) (गावः) (वत्सम्) अभिलक्ष्य हम्भार वादि शब्दं कुर्वन्ति ॥८॥ **भाषार्थः**

१ हे वेदवाक्यों से संभजनीय परमेश्वर २ सोमवा प्राण इन्द्रिय आत्म प्र-

निर्विघ्न के अभिषुत होने पर ३ वेद स्तुति ४ रथी के समान ६ आपके ७ सन्मुख शीघ्र जाती हैं तथा ८ तुमको ९ सन्मुख देखकर १० भलेप्रकार स्तुति करती हैं ११ जैसे १२,१३ धेनु गौ १४ बछड़े को देखकर हम्भा आदि शब्द को करती हैं ॥ ८ ॥

विश्वामित्र ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

एतोन्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना। शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वांसं शुद्धं आशीर्वान्ममत्तु ॥ ९-२१८

हे ऋत्विजः (नु) क्षिप्रं। नि० २।१५ (एतो) आगच्छतैव (शुद्धेन) (साम्ना) (शुद्धैः) (उक्थैः) शस्त्रैः (शुद्धं) (इन्द्रम्) इन्द्रं परमेश्वरं वा (स्तवाम) स्तुयाम (आशीर्वान्) गव्यादिभिः संस्कृतः सोमः। निरुद्ध्यमाणेन सहित आत्मप्रतिबिंबो वा (शुद्धैः) सामभिरुक्थैः स्त्र (वावृध्वांसं) वर्द्धमान मिन्द्रं परमेश्वरं वा (ममत्तु) मादयतु (माद्यते) श्छान्दसः श्लुः ॥ ९ ॥

भावार्थः - हे ऋत्विजो १ शीघ्र २ आओही ३ शुद्ध ४ साम ५ और शुद्ध ६ शस्त्रों से ७ शुद्ध ८ इन्द्र वा परमेश्वर को ९ स्तुत करें १० गव्य आदि से संस्कृत सोम वा निरुद्ध्यमाण सहितात्मप्रतिबिंब ११ शुद्ध साम और शस्त्रों से १२ वर्द्धमान इन्द्र वा परमेश्वर को हर्षित करो ॥ ९ ॥

शंयुर्बार्हस्पत्य ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

यो रयिं वो रयिन्तमो यो द्युम्नैर्द्युम्नवत्तमः। सोमः सुतः स इन्द्र तेऽस्ति स्वधापते मदः ॥ १० ॥ २१९

हे (स्वधापते) (इन्द्र) परमेश्वर (यः) (वः) नित्यात्मा (रयिम्) तव धनरूपः परारूपत्वात् (रयिन्तमः) अतिशयेन योग धनवान् (यः) (द्युम्नैः) यशोभिः (द्युमन्वत्तमः) अतिशयेन यशस्वी (सः) (सुतः) अभि-

घृतः (सोमः) आत्मप्रति बिंबः (ते) तव (मदः) (अस्ति) ॥१०॥

भाषार्थः - १हे अमृतपति २ परमेश्वर ३ जो ४ निरुक्तात्मा ५तेरा धन रूप है परा रूप होने से ६ जो महा योग धनवान है ७ जो ८ यशों के द्वारा ९ अति यशस्वी है १० सह ११ अभिषुत १२ आत्म प्रति बिंब १३ तेरा १४ मद रूप- १५ है॥१०॥ इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य द्वादश खण्डः॥

अथ चतुर्थाध्याय आरभ्यते

तत्र प्रथमः खण्डः

भरद्वाज ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता।

प्रत्यस्मै पिपीषते विश्वानि विदुषे भर। अरङ्गमाय जग्मयेऽपश्चाद्दघ्वने नरः॥ १॥ १२०॥

हे (अध्वर्यो योगिन्) (नरः) प्राणानां नेतस्त्वं (अस्मै) (पिपीषते) पातुमिच्छते (विश्वानि) सर्वाणि (विदुषे) सर्वज्ञाय (अरङ्गमाय) पर्याप्त गमनाय (जग्मये) यज्ञेषु प्रादुर्भावशीलाय (अपश्चाद्दघ्वने) सर्वेषामग्रगामिने सर्वगत्वात् दघिर्गति कर्मा नि० २।१४ परमेश्वराय (प्रतिभर) सोममात्म प्रति बिम्बं वा प्रतिहर प्रयच्छ॥ १॥

भाषार्थः - हे अध्वर्यु वा हे योगी १ प्राणों के नेता तुम २ इस ३ पानेच्छु ४,५ सर्वज्ञ ६ पर्याप्त गमन वाले ७ यज्ञों में प्रादुर्भाव शील ८ सर्व गत होने से सबके अग्रगामी परमेश्वर के लिये ९ सोम वा आत्म प्रति बिंब को दो—॥१॥

वामदेवः शाकपूतो वा ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

आ नो वयोवयः शयं महान्तं गह्वरेष्ठां महान्तं पूर्विनेष्ठाम्। उग्रं वचो अपावधीः॥ २॥ १२१

वागाद्यृत्विजां प्रार्थना हे परमेश्वर (नः) अस्माकं (वयः) जीवरूपं सुपर्णं तथा (वयःशेयं) जीवरूपः सुपर्णः शय्या यस्य तं (सुहान्तम्) अन्तर्यामिनं (गह्वरेष्ठाम्) मानसगुहायां वर्त्तमानं (महान्तम्) मनः (पूर्व्यनेष्ठाम्) पूर्वकर्त्तरि स्थितां बुद्धिञ्च (आ) आदरस्वात्मनि स्थापय (उग्रम्) भयंकरं (वचः) क्षुधितोहंतृषितो हमित्यादिः (अपावधीः) अपजहि ॥२॥

भाषार्थः – वाक् आदि ऋत्विजों की प्रार्थना – हे परमेश्वर १ हमारे २ जीवरूप सुपर्ण को तथा ३ अन्तर्यामी को ४ मानसगुफा में वर्त्तमान ६ मन को ७ पूर्वकर्त्ता में स्थित बुद्धि को ८ अपने आत्मा में स्थापन करो ९ भयंकर १० में भूखा में प्यासा इस वचन को ११ दूर करो – ॥२॥

प्रियमेध ऋषिरनुष्टुप छन्द इन्द्रो देवता

आत्वा रथं यथोतये सुम्नाय वर्त्तयामसि । तुविकूर्मिमृतीषहमिन्द्रं शविष्ठ सत्पतिम् ॥३॥२२२

हे (शविष्ठ) बलवत्तम (तुविकूर्मिम्) बहुब्रह्माण्डानां कर्त्तारं (ऋतीषहं) हिंसकानामभिभवितारं (सत्पतिम्) सतांपालकं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (त्वा) त्वां (ऊतये) संसाराद्रक्षणाय (सुम्नाय) मोक्षसुखाय च (आवर्त्तयामसि) आवर्त्तयामः (यथा) (रथम्) रक्षणाय सुखाय चावर्त्तयन्ति ॥३॥

भाषार्थः – १ हे महाबली २ बहुत ब्रह्माण्डों के कर्त्ता ३ हिंसक जयी ४ सत्पुरुषपालक ५ परमेश्वर ६ तुमको ७ संसार से रक्षा के लिये ८ और मोक्ष सुख के लिये ९ अनुभव गोचर करते हैं १० जैसे ११ रथ को रक्षा और सुख के लिये प्राप्त करते ॥३॥

प्रगाथ ऋषिरनुष्टुप् छन्दो वेनो देवता

सुपूर्व्यो महोनां वेनः क्रतुभिरानजे। यस्य द्वारा मनुः पिता देवेषु धिय आनजे॥ ४॥ २२३

(सः) (वेनः) मेधावी (महोनाम्) मघोनां योगधनवतां मध्ये (पूर्व्यः) मुख्यः यः (क्रतुभिः) योगयज्ञैः (आनजे) आत्मतत्त्वं व्यक्ती करोति (मनुः) द्युस्थानदेवता (यस्य) (द्वारा) द्वाराणि प्राप्त्युपायानि (धिय) कर्माणि बुद्धीर्वा (आनजे) व्यक्ती करोति। अनज्ज व्यक्तौ स (देवेषु) विद्वत्सु। विद्वांसोहि देवाः श० ३।७।३।१० (पिता) पितृवत्पूज्यः॥ ४

भावार्थः —१ वह २ मेधावी ३ योगधनियों के मध्य ४ मुख्य है जो ५ योग यज्ञों से ६ आत्मतत्त्व को अनुभव करता है ७ स्वर्ग का देवता ८ जिसके ९ प्राप्ति उपायों को १० और कर्म वा बुद्धि को ११ प्रकट करता है वह १२ विद्वानों में १३ पिता की समान पूज्य होता है॥ ४॥

श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः अनुष्टुप् छन्द आत्मा देवता-

यदी वहन्त्याशवो भ्राजमाना रथेष्वा। पिबन्तो मदिरं मधु तत्र श्रवांसि कृण्वते॥ ५—२२४

(यदी) यत्र समाधि काले (भ्राजमानाः) दीप्यमानाः (आशवः) क्षिप्रगामिन आत्मारूप योगिनः (रथेषु) कमलेषु (आवहन्ति) स्वात्मानं प्रापयन्ति (तत्र) (मदिरम्) अहं ब्रह्मास्मीति मदस्य कर्त्तारं (मधु) आत्म प्रतिबिंबं (पिबन्तः) (श्रवांसि) स्थूल सूक्ष्म कारण देहरूपान्नानि (कृण्वते) हिंसन्ति कृञ् हिंसायां॥ ५॥

भावार्थः —१ जिस समाधिकाल में २ दीप्यमान ३ शीघ्र गामी आत्मारूप योगी ४ कमलों में ५ अपने आत्मा को प्राप्त करते हैं ६ वहां ७ मैं ब्रह्म हूं इस मद के कर्त्ता ८ आत्मप्रतिबिंब को ९ पान करते १० स्थूल सूक्ष्म कारण रूप अन्नों को ११

नाश करते हैं॥५॥ शंयुर्ऋषिरनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

त्यमु वो अप्रहणं गृणीषे शवसस्पतिम्। इन्द्रं विश्वासाहं नरं शचिष्ठं विश्ववेदसम्॥६॥२२५

(त्यं) हे योगिन् (वः) निवृत्तात्मा त्वं (तम्) (अप्रहणं) अप्रहर्तारं भक्ताना मनु ग्राहकं (शवसस्पतिम्) बलपतिं (विश्वासाहं) सर्वशत्रोरभिभवितारं (नरम्) नेतारं (शचिष्ठं) उत्पत्ति पालन संहार कर्मणि स्थितं (विश्ववेदसम्) महाधनपतिं परमेश्वरं (उ) एव (गृणीषे) नान्यंतस्यान्याभावात्॥६॥

भाषार्थः -१हे योगी २ निवृत्तात्मातुम ३ उस ४ भक्तानुग्राही ५ बलपति ६ सर्वजयी ७ नेता ८ उत्पत्ति पालन संहार कर्म में स्थित ९ महाधनपति परमेश्वर को १० ही ११ स्तुत करते हो—॥६॥

वामदेव ऋषिरनुष्टुप्छन्दो दधिक्रावा देवता

दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्र न आयूंषि तारिषत्॥७-२२६

वागाद्यृत्विजांस्वनं (जिष्णोः) कामजय शीलस्य (वाजिनः) वेगवतः (दधिक्राव्णः) प्राणाः पयः श० ६।५।४।१५ निरुद्धः प्राणो दधिते नोर्ध्वं क्रामतितस्य (अश्वस्य) मानस सूर्यस्य श० ६।३।१।२९ संस्कारं (अकारिषं) (नः) अस्माकं (मुखा) मुखानि (सुरभी) सुरभीणि (करत्) करोतु (नः) अस्माकं (आयूंषि) (प्रतारिषत्) प्रवर्द्धयतु॥७॥

भाषार्थः

वाक् आदि ऋत्विज कहते हैं १ कामजयशील २ वेगवान् ३ निरुद्ध प्राण द्वारा ऊपर चलने वाले ४ मानस सूर्य का ५ संस्कार किया वह ६ हमारे ७ मुखों

को ८ सुगंधितकरो ९ हमारी १० आयुको ११ बढ़ाओ ॥ ७ ॥

जेतामाधुछन्दसऋषिरनुष्टुप्छन्दइन्द्रो देवता·

पुराम्भिन्दुर्युवाकविरमितौजा अजायत। इन्द्रोविश्वस्य कर्मणोधर्त्ता वज्री पुरुष्टुतः ॥ ८ ॥ २२७

तेन संस्कारेण (इन्द्रः) आत्मारूपयजमानः (पुराम्) देहानां (भिन्दुः) भेत्ता (युवा) अजरामरः (कविः) मेधावी (अमितौजाः) प्रभूतबलः (विश्वस्य) सर्वस्य (कर्मणः) ब्रह्माण्डस्य तस्य कर्मरूपत्वात् (धर्त्ता) (वज्री) ज्ञानवज्रयुक्तः (पुरुष्टुतः) बहुभिः स्तुतः (अजायत)

भावार्थः — उस संस्कारसे १ आत्मारूपयजमान २ स्थूलसूक्ष्मकारण देहोंका ३ भेत्ता ४ अजरामर ५ मेधावी ६ बहुबली ७, ८ सब ब्रह्माण्डका धारक १० ज्ञानवज्रयुक्त ११ बहुतनसे स्तुत १२ हुआ — ॥ ८ ॥

इतिश्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्मविरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य प्रथमः खण्डः १

अथ द्वितीयः खण्डः

प्रियमेधाख्यऋषिरनुष्टुप्छन्दऋत्विजो देवता-

प्रप्रवस्त्रिष्टुभमिषं वन्दद्वीरायेन्दवे। धियावोमेधसातये पुरन्ध्या विवासति ॥ १ ॥ २२८

हे वाग्मा ऋत्विजः (वः) युष्माकं (वन्दद्वीराय) योवीरान्प्राणान्स्तौति तस्मै। प्राणावैदशवीराः श॰ १२।८।१।२२ (इन्दवे) आत्मयजमानविदाय (त्रिष्टुभं) (इषम्) आत्मारूपमन्नं। आत्मावै त्रिष्टुप् श॰ ६।४।२।६ (प्र) प्रभज (प्र) प्रभजत (मेधसातये) यज्ञसम्भजनाय (पुरन्ध्या) बहुप्रज्ञया (धिया) कर्मणा नि॰ ७।१ (वः) युष्मान-

(आविवासति) परिचरतीति नि० ३।५—॥१॥

भाषार्थः – हेवाक् आदिऋत्विजो १ तुम्हारे २ आग स्तोता ३ आत्मप्र निर्विव के लिये ४,५ आत्मा रूप अन्न को ६ अर्पण करो ७ अर्पण करो ८ जोकि यज्ञसंभजन के लिये ९ बहु मन्त्रावान १० कर्म के द्वारा ११ तुमको १२ सेवन करता है॥१॥ वामदेव ऋषिरनुष्टुप् छन्दो नरनुदेवने –

कश्यपस्य स्वर्विदो यावाहुः सयुजाविति। ययोर्विश्वमपि व्रतं यज्ञं धीरा निचाय्य ॥ २॥ १२९

(स्वर्विदः) स्वर्गं भृकुटि मण्डलं लब्धवन्तः (धीराः) पंडिताः योगिनः (यज्ञम्) योग यज्ञं (निचाय्य) निश्चित्य समाप्य (आहुः) (यौ) जीवेशौ (कश्यपस्य) कश्यमहंकार रूपं मद्यं पिबतीति कश्यपो भूतात्मा तस्य (सयुजौ) सह वर्त्तिनौ (विश्वम्) सर्वं ब्रह्माण्डं (अपि) (ययोः) जीवेशयोः (व्रतम्) कर्म (इति) ॥ २॥

भाषार्थः – १ भृकुटि मंडल को पाने वाले २ पंडित योगियों ने ३ योगयज्ञ को ४ समाप्त करके ५ कहा ६ कि जीव ईश्वर ७ भूतात्मा के सहवर्ती हैं ८ सब ब्रह्माण्ड १० भी ११ जिस जीवेश्वर का १२ कर्म है—॥२॥

प्रियमेध ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

अर्चत प्रार्चता नरः प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरमिद् धृष्ण्वर्चत ॥ ३॥ १३०

(प्रियमेधासः) प्रिये परमेश्वरे मेधा बुद्धिर्येषां ते (नरः) इन्द्रियाणां नेतारो भक्ताः (अर्चत) गंधपुष्पादिभिः पूजयत (प्रार्चत) स्तोत्रपाठेन पूजयत (अर्चत) ध्यानेन पूजयंत (उत) अपि च (पुत्रकाः) (पुरम्) मूर्त्तिमयं परमेश्वरं (इत्) एव (अर्चन्तु) (धृष्णु) (धः धात्री)

(ग्ग, गणेशः) (ष. सूर्यः) (ण. विष्णुः) (उ. शिवः) रूपाणि यस्य तं परमेश्वरं (अर्चत)—॥ ३॥

भावार्थः —१ हे परमेश्वर में बुद्धि लगाने वाले २ इन्द्रियों के नेता भक्तो ३ गधपुष्प आदि से परमेश्वर को पूजो ४ स्तोत्रपाठ से पूजो ५ ध्यान से पूजो ६ और ७ तुम्हारे बालक पुत्र ८ मूर्त्तिमय परमेश्वर को ९ ही १० पूजो ११ शक्ति गणेश सूर्य विष्णु शिव रूप वाले परमेश्वर को १२ पूजो—॥ ३ ॥

मधुच्छन्दा ऋषिरनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता।

उक्थमिन्द्राय शꣳस्यं वर्द्धनं पुरुनिष्षिधे। शक्रो यथा सुतेषु नो रारणत्सख्येषु च॥ ४॥ २३१

(पुरुनिःषिधे) पुरूणां वहूनां कामादीनां निषेधकारिणे (इन्द्राय) परमेश्वराय (वर्द्धनम्) वृद्धिसाधनं (उक्थम्) शस्त्रं (शंस्यम्) अस्माभिः शंसनीयं (यथा) (शक्रः) सर्व शक्तिमान परमेश्वरः (नः) अस्मदीयेषु (सुतेषु) अभिषुतेषु प्राणेन्द्रियादिषु (च) (सख्येषु) भक्तिभावेषु (रारणत्) वरं ब्रूहीति शब्दं कुर्यात्॥ ४॥

भावार्थः —१ वहुत कामादि के निषेधकर्त्ता २ परमेश्वर के लिये ३ वृद्धि साधन ४ शस्त्र ५ हमसे उच्चारण योग्य है ६ जैसे ७ सर्व शक्तिमान् परमेश्वर ८ हमारे ९ अभिषुत प्राण इन्द्रिय आदि १० और ११ भक्ति भावों में १२ वर मांगो यह शब्द उच्चारण करे—॥ ४॥

प्रियमेध ऋषिरनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता—

विश्वानरस्य वस्पतिमनानतस्य शवसः। एवैश्च चर्षणीनामूती हुवे रथानाम्॥ ५॥ २३२

हे वागाद्यृत्विज आत्मा रूप यजमानोऽहं (रथानाम्) देहानां (एवैः)

मरुतो गमनैः (चर्षणीनाम्) कृताकृतज्ञानवतां वागाद्यृत्विजां (वः) युष्माकं (च) मय्यात्मनि गमनैः सह (विश्वानरस्य) सर्वज्ञानां (अनानतस्य) अप्रह्वस्य (शवसः) योगबलस्य (पतिम्) परमेश्वरं (ऊती) ऊतये रक्षणाय (हुवे) आह्वयामि ॥ ५॥

भावार्थः – हे ऋत्विजो आत्मारूपयजमान में १ देहो के २ प्रकृति में गमन ३ और कृताकृतज्ञानवाले ४ तुम वाक् आदि ऋत्विजो के ५ मुझ आत्मा में गमनो के साथ ६ सब मनुष्यो के ७ पूज्य ८ योगबल के ९ स्वामी परमेश्वर को १० संसार से रक्षा के लिये ११ मैं आह्वान करता हूं ॥ ५॥

भारद्वाजऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

सघा यस्ते दिवो नरो धिया मर्तस्य शमतः। ऊती स बृहतो दिवो द्विषो अꣳहो न तरति ॥ ६॥ १३३

हे परमेश्वर (शमतः) शान्तस्य (मर्तस्य) देहस्य मध्ये (यः) (नरः) जीवः (ते) तव (धिया) पूजन कर्मणा (दिवः) कमलसमूहस्य (सखा) (स) (सघायः) सहायः सहचरोऽनुकूलः। हस्य घत्वं (बृहतः) महतः (दिवः) कमलसमूहस्य (ऊती) ऊत्या रक्षया (द्विषः) द्वेष्टॄन् कामादीन् (अंहः) (न) पापमिव (तरति) अतिक्रामति ॥ ६॥

भावार्थः

हे परमेश्वर १ शान्त २ देह के मध्य ३ जो ४ जीव ५ आपके पूजन कर्म से ६ कमल समूह का ८ सखा है ९ वह १० सहचर भक्त ११, १२ कमल समूह की १३ रक्षा द्वारा १४ द्वेष्टा काम आदि को १५, १६ पाप की समान १७ अतिक्रमण करता है ॥ ६॥

अत्रिऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

विभोष्टइन्द्र राधसो विभ्वी रातिः शतक्रतो। अथो

नोविश्व चर्षणेद्युम्नं सुदत्रम ंहय ॥७॥ १३४

हे (सुदत्र) कल्याणदान (विश्वचर्षणे) सर्वस्यद्रष्टः (शतक्रतो)
वहुकर्मन्परमेश्वर (विभोः) प्रभूतस्य (राधसः) धनस्य योग धन
स्यवा (ते) तव (रातिः) दानं (विश्वी) महत् (अथ) अतः कारणात्
(नः) अस्मभ्यं (द्युम्नं) धनं योग धनम्वा (मंहय) प्रयच्छ नि० ३।२०
॥७॥

भाषार्थः

१ हेकल्याणदान २ सवकेद्रष्टा ३ वहुकर्मापरमेश्वर ४.५ वहुतधनवा योगध-
नका ६ तेरा ७ दान ८ वड़ाहै ९ इसकारण १० हमारेलिये ११ धनवा योग धनको
१२ दीजिये ॥७॥ प्रस्कण्वऋषिरनुष्टुप् छन्द उषादेवता-

वयश्चित्तेपतत्रिणो द्विपाच्चतुष्पादर्जुनि। उषः प्रारे
न्नृतूं रनु दिवो अन्तेभ्यस्परि ॥८॥ १३५

हे (अर्जुनि) शुभ्रवर्णे (उषः) उषो देवते समाधिकाल (ते) तव (ऋ
तून्) ब्राह्ममुहूर्त्तकालान् (अनु) अनुलक्ष्य (द्विपात्) नरो जीवा
त्मा (चतुष्पात्) प्राणः। प्राणोवैपशुः श० ३।८।३।१५ (पतत्रिणः)
पतनशीलाः (वयः) (चित्) पक्षिण इव (दिवः) भृकुट्यादि कमल
समूहस्य (अन्तेभ्यः) प्रान्तेभ्यः (परि) उपरि गगनमण्डले (प्रारन्)
प्रकर्षेण गच्छन्ति। ऋच्छति गति कर्मा नि० २।१४।२५—॥८॥

भाषार्थः – १ हेशुभ्रवर्णे २ उषानाम समाधिकाल ३ तेरे ४ ब्राह्ममुहूर्त रूप
कालोंको ५ देखकर ६ जीवात्मा ७ प्राण ८ पतनशील ९.१० पक्षियोंकी सम
न ११ भृकुटि आदि कमल समूह के १२ प्रान्तोंसे १३ ऊपर गगन मंडलमे १४
जाते है—॥८॥ आप्त्यस्त्रित ऋषिरनुष्टुप् छन्दो देवा देवताः

अमी ये देवास्थन मध्य आरोचने दिवः। कद्व ऋत

कद्धृतं कोमत्नावश्चाहुतिः ॥ ९ ॥ २३६

तत्र समष्टि स्नानाय मज्जनान् कुर्वन्ति हे (देवाः) कमलस्थाः (ये) (अमी) यूयं (दिवः) पिण्डस्थस्वर्गस्य (आरोचने) दीप्ति विषये (न) च (मध्ये) अधः कमल समूहे (स्थ) तेषां (वः) युष्माकं (ऋतम्) यज्ञं (कत्) कुत्र भवति (अमृतं) सोमं (कत्) कुत्रास्ति (वः) युष्मदीया (प्रत्ना) पुराणी (आहुतिः) (का) = ॥ ९ ॥

भाषार्थः – वहां समष्टि स्नानके लिये मज्जनोंको करते हैं – १ हे कमलस्थ देवताओ २ जो ३ तुम ४ पिण्डस्थस्वर्ग के ५ दीप्ति विषय ६ और ७ नीचे के कमल समूह के मध्य ८ होउत ९ आपका १० यज्ञ ११ कहां होता है १२ सोम १३ कहां है १४ तुम्हारी १५ पुराणी १६ आहुति १७ कौन है – ॥ ९ ॥

वामदेव ऋषिरनुष्टुप् छन्द ऋक् सामे देवते

ऋचं साम यजामहे याभ्यां कर्माणि कृण्वते।
वि ते सदसि राजतो यज्ञं देवेषु वक्षतः ॥ १० ॥ २३७

उत्तरं लब्ध्वा कथयति वयम् (ऋचं) (साम) (यजामहे) पूजयाम (याभ्याम्) ऋक् सामाभ्यां (कर्माणि) शास्त्र स्तोत्र प्रमुखानि (कृण्वते) होतार उद्गातारश्च कुर्वन्ति (ते) ऋक्सामे (सदसि) सदो मण्डपे (विराजतः) स्तोत्र शस्त्र रूपेण विशेषेण प्रकाशयतः (देवेषु) (यज्ञं) (वक्षतः) प्रापयतः। तत्र जपयज्ञ एव भवतीत्यर्थः २१

भाषार्थः उत्तरको पाकर कहता है हम १ ऋग्वेद २ सामवेद को ३ पूजते हैं ४ जिनके द्वारा ५ शस्त्र स्तोत्र रूप कर्मोंको ६ होता और उद्गाता करते हैं ७ वे ऋग्वेद सामवेद ८ सदोमंडपमें ९ स्तोत्र शास्त्र रूपसे विशेष प्रकाश करते हैं १० देवताओंमें ११ यज्ञको १२ प्राप्त करते हैं वहां जप यज्ञही होता है यह अभि

प्रायहे॥१०॥ इतिश्रीभृगुवंशावतंसश्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्म विरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने चतुर्थाध्यायस्य द्वितीयः खण्डः॥२॥

अथतृतीयःखण्डः

रेभऋषिर्जगतीछन्द इन्द्रोदेवता

विश्वाःपृतनाअभिभूतरंनरः सजूस्ततक्षुरिन्द्रंजजनुश्चराजसे। क्रत्वेवरेस्थेमन्यामुरीमुतोग्रमोजिष्ठन्तरसंतरस्विनम्॥१॥२३८

(नरः) नेतारः(सजूः) परस्परं सङ्गताः(विश्वाः) सर्वाः(पृतनाः) प्राणादीनां सेनाः(अभिभूतरं) कामादीनामत्यर्थमभिभवितारं(इन्द्रं) यजमानं(ततक्षुः) योगकुठारेण(च) किञ्च(राजसे) आत्मनो विराजनार्थस्तुमर्थेऽसेप्रत्ययः(उत) अपिच(क्रत्वे) यज्ञलाभाय(वरे) श्रेष्ठे(स्थेमनि) अचलेब्रह्मणि(आमुरिम्) कामादीनां मारयितारं(उग्रम्) रुद्रस्वरूपं(ओजिष्ठम्) ओजस्वितमं(तरसम्) बलवन्तं(तरस्विनम्) वेगवन्तं(जजनुः)जनयामसुः१

भापार्थः — १ नेतृरूप २ परस्परसंगत ३ सब ४ प्राणआदिकी सेनाने ५ कामआदिके जेता ६ यजमानको ७ योग कुठार से ८ और ९ आत्माके विराजन १० और ११ यज्ञलाभके लिये १२ श्रेष्ठ १३ अचल ब्रह्ममें १४ कामादिके नाशक १५ रुद्रस्वरूप १६ तेजस्वी १७ बलवान १८ वेगवान् परमेश्वरको १९ संस्कृतवा ज्ञानदृष्टिगोचर किया—॥१॥

सुवेदः शैलूषिर्ऋषिर्जगतीछन्द इन्द्रोदेवता

श्रत्तेदधामिप्रथमायमन्यवेहन्यद्दस्युन्नर्यंविवेरपः। उभेयत्वारोदसीधावतामनुभ्यसात्तेशुष्मात्पृथिवी

चिदद्रिवः॥२॥२३९॥

हे(अद्रिवः) ज्ञानवज्रवन्नात्मारूपयजमान(ते)तव(प्रथमाय) मुख्याय(मन्यवे) रुद्ररूपाय(श्रद्दधामि) श्रद्धांकरोमि(यत्) यस्मात्(नर्य्यम्) नराणांजीवानांसम्बन्धिनं(दस्युं) कामं(अहन्यत्)(अपः) अमृतापः(विवे)प्रत्यागमयः हे रुद्ररूपपरमेश्वर(उभे)(रोदसी) द्यावापृथिव्यौ(त्वा)त्वां(अनुधावताम्)त्वदधीनेभवतः(पृथिवी) अन्तरिक्षंनि० १।३।९(चित्) अपि(शुष्मात्)त्वदीयाद्बलात्नि० २।९(भ्यसाते) भयेनकम्पते॥२॥

भाषार्थः – १ हेज्ञानवज्रधरआत्मारूपयजमान २ मुझ ३ मुख्य ४ रुद्ररूपके लिये ५ श्रद्धा करताहूं ६ जिस कारण ७ जीव सम्बंधी ८ चौरकामको ९ मारा १० अमृतजलोंको ११ उतारा १२ दोनो १३ पृथिवी स्वर्ग १४,१५ तेरे आधीनहोतेहैं १६ अन्तरिक्ष १७ भी १८ तेरे बल करके १९ भयसे कांपताहै —॥२॥

वामदेवऋषिर्जगती छन्दइन्द्रो देवता-

समेतविश्वाओजसापतिंदिवोयएकइद्भूरतिथिर्जनानाम्।सपूर्व्योनूतनमाजिगीषन्तंवर्त्तनीरनुवावृतएकइत्॥३॥२४०

हे(विश्वाः) विश्वदेहाभिमानिनोजनाः(ओजसा) भक्तिबलेन (दिवः)(पतिम्) गोलोकस्वामिनंपरमेश्वरं(समेत) सम्यक्प्राप्नुत(सः)(एकः)(इत्)एव(जनानाम्) भक्तानां(अतिथिः)(भूः) भवतिसः(पूर्व्यः) आद्यपुरुषः(एकः)(इत्)एव(आजिगीषन्तं) कामादीन्जेतुमिच्छन्तं(नूतनम्) संस्कृतंभक्तं(अनुवावृते) अनुवर्त्तयतिसामिप्यंददाति॥३॥

भाषार्थः -हे१ विश्वदेहाभिमानी मनुष्यो २ भक्तिबलसे ३,४ गोलोक-
स्वामी परमेश्वर को ५ भले प्रकार प्राप्त करो ६ वह ७ अकेला ८ ही ९ भक्तों
का १० अतिथि ११ होता है १२ वह १३ अकेला १४ ही १५ कामादि को जीत
ना चाहने १६ संस्कृत भक्त को १७ सामिप्य मोक्ष को देता है—॥३॥

सव्य आङ्गिरस ऋषिर्जगती छन्द इन्द्रोदेवता-

इमेत इन्द्रतेवयं पुरुष्टुतयेत्वारभ्यचरामसिप्रभूवसो। नहित्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत्क्षोणीरिवप्रतितद्धर्यनो वचः ॥४॥ २४१

हे (प्रभूवसो) प्रभूतधन (पुरुष्टुत) बहुभिः स्तुत (इन्द्र) परमेश्व
र (ये) (वयं) (त्वा) त्वां (आरभ्य) आश्रयतयावलंब्य (चरामसि) चरा
मः कर्मोपासनयोर्वर्त्तामहे (ते) (इमे) (ते) तवस्वभूताः हे (गिर्व
णः) गीर्भिर्वननीयपरमेश्वर (त्वत्) त्वत्तः (अन्यः) (गिरः) स्तुतीः
(नहि) (सघत्) प्राप्नोतित्वदन्याभावात् (क्षोणी) (इव) भूमारू
पस्त्वं (नः) अस्माकं (तत्) (वचः) (प्रतिहर्य) कामयस्व नि० २।
६—॥४॥

भाषार्थः

१ हे महाधनी २ बहुतसे स्तुत ३ परमेश्वर ४ जो ५ हम ६ तुमको ७ आश्रय-
मानकर ८ कर्मउपासना के द्वारा सेवन करते हैं ९ वे १० ये ११ आपके ही हैं
१२ हे वेदवचनों से संभजनीय परमेश्वर १३ आपसे १४ अन्यदेवता १५ स्तु
तिओं को १६,१७ प्राप्त नहीं करता है अर्थात् आप सर्वात्मा हो १८,१९ भूमा
रूप तुम २० हमारे २१ उस २२ वचन को २३ चाहो—॥४॥

विश्वामित्र ऋषिर्जगती छन्द इन्द्रो देवता-

चर्षणीधृतं मघवानमुक्थ्यो३मिन्द्रं गिरो बृह-

तीरभ्यनूषत। वावृधानं पुरुहूतं सुवृक्तिभिरमर्त्यं जरमाणन्दिवे दिवे ॥५॥ १४२

(बृहतीः) महतीः वेदोक्ताः (गिरः) वाचः (चर्षणीधृतं) भक्तानामभिमत फलप्रदानेन धारकं पोषकं (मघवानं) धनवन्तं (उक्थ्यम्) उक्थैः शस्त्रैः शंसनीयं (वावृधानं) भक्तानां स्तोत्रैर्वर्द्धमानं (पुरुहूतम्) बहुभिः स्तोतृभिराहूतं (अमर्त्यम्) अविनाशिनं (सुवृक्तिभिः) शोभनस्तुतिवाक्यैः (दिवे दिवे) प्रत्यहं (जरमाणम्) स्तूयमाणं नि० ३।१९ (इन्द्रम्) परमेश्वरं (अभ्यनूषत) अभितः सर्वस्तुवन्तु ।नि० ३।१४—॥५॥

भावार्थः—१ महती २ वेदोक्तवाणी ३ अभीष्ट फल दानसे भक्तों के पोषक ४ धनवान ५ शस्त्रोंसे शंसनीय ६ भक्तों के स्तोत्रोंसे वर्द्धमान ७ बहुत स्तोताओंसे आहूत ८ अविनाशी ९ शोभन स्तुति वचनोंसे १०,११ प्रतिदिन १२ स्तूयमान १३ परमेश्वर को १४ सब ओर से स्तुत करो—॥५॥

कृष्ण आङ्गिरस ऋषिर्जगती छन्द इन्द्रो देवता-

अच्छा व इन्द्रं मतयः स्वर्युवः सध्रीचीर्विश्वा उशतीरनूषत। परिष्वजन्त जनयो यथा पतिं मर्यं न शुन्ध्युं मघवानमूतये ६॥१४३

(वः) युष्माकं भक्तानां (स्वर्युवः) आत्मनि मिश्रयित्र्यः (सध्रीचीः) सङ्गताः (न) च (उशतीः) कामयमानाः (विश्वाः) सर्वाः (मतयः) स्तुतयः बुद्धयो वा (ऊतये) संसाराद्रक्षणाय (मघवानम्) धनवन्तं (शुन्ध्युम्) शुद्धं मायारहितं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (अच्छ) आभिमुख्येन (अनूषत) (न) च (परिष्वजन्त) (यथा) (जनयः)

जायाः (मर्य्यम्) मनुष्यं (पतिम्) ॥ ६ ॥

भावार्थः – १ तुमभक्तोंकी २ आत्मामें मिश्रित करनेवाली ३ सङ्गत ४ और ५ कामयमान ६ सब ७ स्तुति वा बुद्धियां ८ संसारसे रक्षाके लिये ९ धनवान् १० शुद्ध मायारहित ११ परमेश्वरको १२ सन्मुख होकर १३ स्तुत करो १४ और १५ मिलो १६ जैसे १७ स्त्रियां १८ सन्मुख १९ पतिको ॥ ६ ॥

सव्य ऋषिर्जगती छन्द इन्द्रो देवता-

अभित्यं मेषं पुरुहूतमृग्मियमिन्द्रं गीर्भिर्मदता वस्वो अर्णवम्। यस्य द्यावो न विचरन्ति मानुषं भुजे मंहिष्ठमभि विप्रमर्चत ॥ ७ ॥ २४५ ॥

(तम्) (मेषम्) मामाया-इषमन्नं यस्य तं (पुरुहूतम्) बहुभिराहूतं (ऋग्मियम्) ऋग्भिः स्तुतिवन्तं (अवस्वः) वसुः रश्मिः तमोभूतस्य समष्टिदेहस्य (अर्णवम्) वासस्थानं (मंहिष्ठम्) अतिशयेन प्रवृद्धं (विप्रम्) मेधाविनं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (यम्) महापुरुषं (गीर्भिः) वेदस्तुतिभिः (अभिमदत) आभिमुख्येन हर्षं प्रापयत (अभ्यर्चत) अभिपूजयत (यस्य) महापुरुषस्य (द्यावः) रश्मयः (भुजे) भोगाय (मानुषम्) लोकं (न) (विचरन्ति) तस्य निर्गुणत्वात् ॥ ७ ॥

भावार्थः

१ उस २ मायारूप अन्नवाले ३ बहुतसे आहूत ४ ऋचाओंसे स्तुतिवान् ५ समष्टिदेहके ६ वासस्थान ७ अतिशयप्रवृद्ध ८ मेधावी ९ परमेश्वर १० महापुरुषको ११ वेदस्तुतिओंसे १२ हर्षित करो १३ और पूजो १४ जिस महापुरुषकी १५ किरणें १६ भोगके लिये १७ मनुष्यलोकमें १८ नहीं १९ विचरतीहैं उसके निर्गुण होनेसे—॥ ७ ॥

सव्यऋषिर्जगती छन्द इन्द्रो देवता

त्यं सुमेषं महया स्वर्विदं शतं यस्य सुभुवः साकमीरते। अत्यं न वाजं हवनस्यदं रथमेन्द्रं ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः ॥८॥२४५

(यस्य) परमेश्वरस्य (सुभुवः) योगभूमिस्थाः भक्ताः (साकम्) पुत्रादिभिः सह (यम्) (मेषम्) अभक्तैः स्पर्द्धमानं (स्वर्विदम्) स्वभक्तैर्लभ्यं। आत्मनो लब्धारम्वा (हवनस्यदम्) आह्वानं प्रति गन्तारं। स्यन्दति गतिकर्मा (शतम्) बहुरूपं (रथम्) मूर्त्तिरूपं (सुमहया) सुपूजया (ईरते) प्रेरयन्ति (तम्) (इन्द्रम्) परमेश्वरं (यम्) महापुरुषं (सुवृक्तिभिः) सुस्तुतिभिः (अवसे) (न) तर्पणायैव (अत्यम्) भक्षणीयं (वाजं) आत्मप्रतिबिंबरूपान्नं प्रति (आववृत्याम्) प्रावर्त्तयेयम्

भाषार्थः – १ जिस परमेश्वर के २ योगभूमिस्थ भक्त ३ पुत्रआदि के साथ ४ जिस ५ अभक्तों से स्पर्द्धमान ६ निजभक्तों से लभ्य ७ आह्वान होने पर आने वाले ८ बहुरूप ९ मूर्त्तिरूप को १० श्रेष्ठ पूजा के द्वारा ११ प्रेरित करते हैं १२ उस १३ परमेश्वर १४ महापुरुष को १५ श्रेष्ठ स्तुति के द्वारा १६ रक्षा १७ और तर्पण के लिये १८ भक्षणीय १९ आत्मप्रतिबिंब के समीप २० प्राप्त करूं ॥ ८ ॥

भरद्वाजऋषिर्जगती छन्दो वरुणो देवता-

घृतवती भुवनानामभिश्रिया उर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा। द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा ॥ ९ ॥१४६

(भुवनानाम्) (अभिश्रिया) आश्रयंभूते (उर्वी) विस्तीर्णे (पृथ्वी) बहुकार्यरूपेण प्रथिते (मधुदुघे) आहुतिजलरूपरसस्पर्शे

(सुपेशसा) सुरूपे (अजरे) नित्ये (भूरिरेतसा) बहुरेतस्के (घृतवती) दीप्तिमत्यौ (द्यावापृथिवी) द्यावापृथिव्यौ (वरुणस्य) एकार्णवपतेर्महापुरुषस्य (धर्म्मणा) धारणशक्त्या (विष्कभिते) धारिते॥

भावार्थः – १भुवनोंके २ आश्रयरूप ३ विस्तीर्ण ४ बहुकार्यरूपसेमस्थित ५ आकृतिजलरूपरसकेदाता ६ सुरूप ७ नित्य ८ बहुवीर्यवान ९ दीप्तिमान १० पृथिवी स्वर्ग ११ एकार्णवपति महापुरुषकी १२ धारणशक्तिसे १३ धारित हैं॥९॥ मेधातिथि ऋषि महापंक्ति छन्द इन्द्रो देवता-

उभे यदिन्द्र रोदसी आपप्राथोषा इव। महान्तं त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनाम्। देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत्॥१०॥२४७

हे (इन्द्र) परमेश्वर (यत्) यस्मात् त्वं (उभे) (रोदसी) द्यावापृथिव्यौ (आपप्राथ) स्वतेजसा आपूरयसि। आपूरणे आदादिकः (पृ०) छान्दसो लिट् (इव) यथा (उषा) स्वभासा सर्वं जगदापूरयति (तम्) (महीनाम्) महतां देवानामपि (महान्तं) (चर्षणीनाम्) भक्तानां (सम्राजम्) स्वामिनं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (त्वा) त्वां (देवी) (जनित्री) अपराशक्तिः (अजीजनत्) भूतात्मरूपेणाजनयत् (जनेर्ण्यन्तात् लुङि चङि रूपमेतत्) तथा (भद्रा) परारूपा (जनयित्री) (अजीजनत्) जीवेशरूपेण जनयत्॥१०॥

भावार्थः – १हे परमेश्वर २ जिसकारण तुमने ३ दोनों ४ पृथिवी स्वर्ग को ५ अपने तेजसे पूर्णकिया ६ जैसे ७ उषा अपने प्रकाशसे सब जगत को ८ उस ९ महान् देवताओंकेभी १० महान्त ११ भक्तों के १२ स्वामी १३ परमेश्वर १४ तुमको १५,१६ अपराशक्तिने १७ भूतात्मारूपसे प्रकट किया १८

१९ परारूपमाताने २० जीवईशरूपसे प्रकट किया॥ १०॥

कुत्सऋषिर्जगती छन्द आत्मा देवता-

प्रमन्दिने पितुमदर्चता वचो यः कृष्णगर्भा नि
रहन्नृजिश्वना। अवस्यवो वृषणं वज्रदक्षिणं
मरुत्वन्तꣳ सख्याय हुवेमहि॥ ११॥ १४८

हे भूतात्मानः (मन्दिने) स्तुतिमते आत्मारूपयजमानाय (पितुमत्) स्वात्मारूपान्नेनोपेतं (वचः) स्तुतिलक्षणं वचनं (प्रार्चत) प्रकर्षेणोच्चारयत (यः) (ऋजिश्विना) स्थैर्यवत्या बुद्ध्या सहितः सन् (कृष्णगर्भाः) कृष्णं मनस्तस्य गर्भभूताः कामवृत्तीः (निरहन्) निरन्तरामवधीत् (अवस्यवः) रक्षणेच्छवो वयं वागाद्यृत्विजः (वृषणम्) अमृतस्य वर्षितारं (वज्रदक्षिणं) ज्ञानवज्रयुक्तेन दक्षिणहस्तेनोपेतं (मरुत्वन्तम्) प्राणवन्तमात्मारूपयजमानं (सख्याय) सख्युः कर्मणे (हुवेमहि) आह्वयामः॥ ११॥

भावार्थः – हे भूतात्माओ १ स्तुतिमान आत्मारूप यजमान के लिये २ अपने आत्मा रूप अन्न से युक्त ३ स्तुति रूप वचन को ४ उच्चारण करो ५ जिसने ६ स्थिर बुद्धि के साथ ७ काम वृत्तियों को ८ निरन्तर नष्ट किया ९ रक्षाकामा हम वाक् आदि ऋत्विज १० अमृतवर्धक ११ ज्ञानवज्रधारी १२ प्राणवान आत्मा रूप यजमान को १३ सखा कर्म के लिये १४ आह्वान करते हैं –॥ ११॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य तृतीयः खण्डः ३

अथ चतुर्थः खण्डः

नारदऋषिरुष्णिक् छन्द इन्द्रो देवता-

इन्द्र सुतेषु सोमेषु क्रतुम्पुनीष उक्थ्यम्। विदे वृधस्य दक्षस्य महां हि षः ॥१॥१४९

हे (इन्द्र) परमेश्वर (सोमेषु) प्राणेन्द्रियमतिविवेषु (सुतेषु) अभिषुतेषु सत्सु (क्रतुम्) योगक्रियामयं योगिनं (उक्थ्यम्) प्रशस्यं नि० ३।८।६ (वृधस्य) वर्द्धकस्य (दक्षस्य) योगबलस्य (विदे) लाभाय (पुनीषे) शोधयसि (हि) यस्मात्त्वं (महान्) (षः) वासुदेवः ॥१॥

भाषार्थः

१ हे परमेश्वर २ प्राण इन्द्रिय मति विवों के ३ अभिषुत होने पर ४ प्रशस्य ५ योगक्रियामय योगी को ६ वृद्धिकर्त्ता ७ योगबल के लाभार्थ ८ शोधन करते हो १० जिस कारण तुम ११ महान् १२ वासुदेव हो ॥१॥

ह्योगीपृक्तपश्व ऋक्तिना प्युष्णिक छन्द इन्द्रो देवता।

तमु अभिप्रगायत पुरुहूतं पुरुष्टुतम्। इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत ॥२॥१५०

(तम्) (पुरुहूतम्) बहुभिराहूतं (पुरुष्टुतम्) बहुभिस्स्तुतं (तविषम्) महान्तं नि० ३।३ (इन्द्रम्) परमेश्वरं (उ) एव (गीर्भिः) स्तुतिभिः (अभिप्रगायत) अभिमुखंप्रकर्षेण स्तुध्वम् (आविवासत) परिचरत नि० ३।५—॥२॥

भाषार्थः –१ उस २ बहुत से आहूत ३ बहुत से स्तुत ४ महान्त ५ परमेश्वर को ६ ही ७ स्तुति द्वारा ८ सन्मुख होकर स्तुत करो ९ सेवा करो—॥२॥

विनियोग. पूर्ववत्-

तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृक्षु सासहिम्। उ लोककृत्नुमद्रिवो हरिश्रियम् ॥३॥

हे (अद्रिवः) अद्रिवन् अद्रिः सूर्यः बहुभिर्व्यष्टि समष्टि सूर्यैरुपेत-महापुरुष (ते) त्वदीयं (तमं) (वृषणम्) धर्मार्थकाम मोक्षाणां वर्षितारं (एक्षु) (पसावित्री) (ऋतनिवृत्तिः) (क आत्मा) तेषु (सासेहिम्) विघ्नानामभिभवितारं (लोक कृत्नुम्) ब्रह्माण्डस्य कर्त्तारं (हरिश्रियम्) हरिभिर्ब्रह्म विष्णु महेशादिभिः श्रयणीयं सेव्यं (उ) एव (मदम्) (गृणीमसि) गृणीमः प्रशंसामः। गृशब्देत्यादिः प्वादीनां ह्रस्वः (७।४।८०) इदन्तोमसि (७।१।४६) इतिमसइकारागमः॥ ३॥

भाषार्थः – १ हे बहुत व्यष्टि समष्टि सूर्यों से युक्त महापुरुष २ आपके ३ उस ४ चारों पदार्थों के दाता ५ सावित्री निवृत्ति और आत्मा में ६ विघ्ननाशक ७ ब्रह्माण्ड के कर्त्ता ८ त्रिदेव से सेव्य ९ मद को १० ही ११ हम प्रशंसा करते हैं॥ ३॥

पर्वत ऋषि रुष्णिक छन्द इन्द्रो देवता

यत्सोममिन्द्र विष्णवि यद्वा घ त्रित आप्त्ये। यद्वा मरुत्सु मन्दसे समिन्दुभिः॥ ४—॥ १५२

हे (इन्द्र) परमेश्वर (विष्णवि) अन्तर्यामिनि (यत्) (सोमम्) आत्मं प्रति विंब रूपामृतं (वा) अथवा (आप्त्ये) अपाम्पुत्रे (त्रिते) जीवात्मनि (यत्) (वा) अथवा (मरुत्सु) प्राणेषु (यत्) (घ) प्रसिद्धैः तैः (इन्दुभिः) आत्मप्रति विंबैः (सम्मन्दसे) सम्यक् माद्यसि ४

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ अन्तर्यामी में ३ जो ४ आत्म प्रति विंब है ५ अथवा ६,७ जीवात्मा में ८ जो आत्म प्रति विंब है ९ अथवा १० प्राणों में ११ जो आत्मप्रतिविंब १२ प्रसिद्ध है १३ उन आत्म प्रति विंबों से १४ आप भले प्रकार हर्षित होते हो—॥ ४॥

तिसृणां विश्वमनावैयश्वऋषिरुष्णिक् छन्दो महापुरुषो देवता·

एन्दुमेधोमदिन्तरं सिञ्चाध्वर्यो अन्धसः। एवा हि वीरस्तवते सदावृधः॥५॥२५३

हे (अध्वर्यो) ज्ञानचक्षुः। चक्षुर्वै यज्ञस्याध्वर्युः श० १४।६।१।६ (मधोः) प्राणस्य। प्राणोवैमधु श० १४।१।३।३० (उ) च (अन्धसः) अन्नरूपस्यात्ममति विंवस्य (मदिन्तरम्) अत्यर्थं मादयितृतमं आत्मा रूपरसं (इन्दुं) एव (आसिञ्च) आभिक्षर (हि) यस्मात् (सदावृधः) सदावृद्धि युक्तः (वीरः) असुराणांजेता (एवो) महापुरुषः (एव) (स्तवते) स्तोत्र शस्त्रादिभिः स्तूयते नान्य इत्यर्थः॥५॥

भाषार्थः – १ हे ज्ञानचक्षु २ प्राणोंके ३ और ४ अन्न रूप आत्ममति विंब के ५ अतिहर्ष कारक आत्मा रूपरसको ५ ही ६ सींचो ७ जिस कारण ८ सदा वृद्धि युक्त ९ असुरजयी १० महापुरुष ११ ही १२ स्तोत्र शस्त्र आदिके द्वारा १३ स्तुति कियाजाता है॥५॥ विनियोगः पूर्ववत्

एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत पिबाति सोम्यं मधु। प्र राधांसि चोदयते महित्वना॥६॥२५४

हे योगिनः (इन्दुम्) आत्ममति विंवरूपं सोमं (इन्द्राय) परमेश्वराय (आसिञ्चत) आभिमुख्येन मत्या क्षारयत सः (सोम्यम्) सोमस्यात्ममति विंवस्य दातारं (मधु) प्राणं (पिबाति) समाधौ पिबति पुनः (महित्वना) स्वमहत्वेनैव (राधांसि) योगैश्वर्याणि (प्रचोदयते) ददाति॥६॥

भाषार्थः – हे योगिजनो १ आत्ममति विंव रूप सोमको २ परमेश्वर के लिये ३ अर्पण करो ४ वह आत्ममति विंवके दाता ५ प्राण को ६ समाधि में

पान करता है फिर ७ अपनेमाहात्म्य सेही ८ योगैश्वर्यों को देता है—६॥

विनियोगः पूर्ववत्

एतो न्विन्द्रं स्तवाम सखायः स्तोम्यं नरम्।
कृष्टीर्यो विश्वा अभ्यस्त्येक इत् ॥ ७ ॥ १५५

हे (सखायः) वागाद्यृत्विजः (नु) क्षिप्रं (एतउ) आगच्छतैव (स्तोम्यम्) स्तोमार्हं स्तवार्हं (नरम्) सर्वस्यनेतारं परमेश्वरं (स्तवाम) (यः) (एकः) (इत्) एव (विश्वाः) सर्वाः (कृष्टीः) असुरसेनाः (अभ्यस्ति) अभिभवति नानावतारैः ॥ ७ ॥

भाषार्थः—१ हे वाक् आदि ऋत्विजो २ शीघ्र ३ ही आओ ४ स्तुति योग्य ५ सबके नेतापरमेश्वर को ६ स्तुत करें ७ जो ८ अकेला ९ ही १० सब ११ असुर सेना को १२ नाना प्रकार के अवतारों से जय करता है ॥ ७ ॥

नृमेधऋषि रुष्णिक् छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्राय सामगायत विप्राय बृहते बृहत्। ब्रह्मकृते विपश्चिते पनस्यवे ॥ ८ ॥ १५६

हे भक्त जनाः (विपश्चिते) विदुषे (पनस्यवे) अर्चनमिच्छते (ब्रह्मकृते) तपः कर्त्रे (विप्राय) वामननिष्कलंक परशुरामादिरूपवते (बृहते) महते (इन्द्राय) परमेश्वराय (बृहत्) (साम) (गायत) ॥ ८ ॥

भाषार्थः

हे भक्तजनो १ विद्वान् २ पूजा चाहने ३ तप कर्त्ता ४ वामन निष्कलंक परशुराम आदिरूपवाले ५ महान् ६ परमेश्वर के लिये ७, ८ बृहत्साम को ९ गाओ—॥ ८ ॥

गौतमऋषि रुष्णिक् छन्द इन्द्रो देवता

य एक इद्विदयते वसु मर्त्ताय दाशुषे। ईशानो अ

प्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग ॥ ९ ॥ २५७

(यः) (अप्रतिष्कुतः) प्रतिकूल शब्द रहितः सर्वेश्वरत्वात् (ईशानः) सर्वस्यजगतः स्वामी (इन्द्रः) परमेश्वरः (एकः) (इत्) एव (दाशुषे) हविर्दत्तवते (मर्त्ताय) मनुष्याय भक्ताय (वसु) धनं योगधनं वा (अङ्ग) क्षिप्रं नि० ५।१७ (विदयते) विशेषेण ददाति ॥ ९

भावार्थः – १ जो २ सर्वेश्वर होने से प्रतिकूल शब्द रहित ३ सब जगत का स्वामी ४ परमेश्वर ५ अकेला ६ ही ७ हविदाता ८ भक्त के लिये ९ धन वा योग धन को १० शीघ्र ११ देता है ॥ ९ ॥

विश्वमना ऋषि रुष्णिक् छन्द इन्द्रो देवता-

सखाय आशिषामहे ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे । स्तुष ऊषुवो नृतमाय धृष्णवे ॥ १० ॥ २५८

हे (सखायः) योगिनो भक्ताः वयं वेदाः (वज्रिणे) ज्ञान वज्र धराय परमेश्वराय (उ) एव (ब्रह्म) स्तोत्रं (आशिषामहे) आशास्महे शास शासने वाग्रूप होता कथयति हे च सुरादृत्विजः (वः) युष्माकं (धृष्णवे) कामादीनां धर्षण शीलाय (नृतमाय) नेतृतमाय यजमानाय (उ) एव (सुस्तुषे) सुप्रस्तौमितमेव परमेश्वरं ॥ १० ॥ **भावार्थः** – १ हे योगी भक्तो २ हम वेद ज्ञान वज्र धारी परमेश्वर के लिये ३ ही ४ स्तोत्र को ५ उच्चारण करते हैं वाक् रूप होता कहता है हे चसु आदि ऋत्विजो ६ तुम्हारे शत्रु ७ काम आदि के धर्षण शील ८ महा नेता यजमान के लिये ९ ही १० उस परमेश्वर की स्तुति करता हूं ॥ १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य चतुर्थः खण्डः ४

इतिचतुर्थःप्रपाठकः

अथ पञ्चमःखण्डः।अथपंचमःप्रपाठकः

प्रगाथऋषिरुष्णिक्छन्द इन्द्रो देवता-

गृणे तदिन्द्र ते शव उपमां देवतातये। यद्धंसि वृत्रमोजसा शचीपते॥२॥२५९॥

हे(इन्द्र)(तत्)(ते) तव (उपमाम्) सर्वबलानां उपमाभूतं(शवः) बलं(देवतातये) यज्ञार्थं(गृणे) स्तुवे हे(शचीपते)(यत्)यस्मात्(वृत्रम्)(ओजसा) बलेन (हंसि)॥२॥

भावार्थः - १ हे इन्द्र २ तेरे ३ उस ४ सब बलों का उपमारूप ५ बल को ६ यज्ञ के लिये ७ स्तुत करता हूं ८ हे शचीपति ९ जिस कारण तुम १० वृत्रासुर को ११ बल से १२ मारते हो-॥२॥ **द्वितीयोऽर्थः**

हे(इन्द्र) यजमान (ते) तव (तत्) (उपमाम्) उपमाभूतं (शवः) योगबलं (स्तुवे) हे (शचीपते) योगकर्मणां स्वामिन् नि० २। १। २३ (यत्) यस्मात्वं (देवतातये) योगयज्ञाय (ओजसा) योग बलेन (वृत्रम्) पापं (हंसि)-॥२॥

भावार्थः - १ हे यजमान २ तेरे ३ उस ४ उपमारूप ५ योग बल को ६ स्तुत करता हूं ७ हे योग कर्मों के स्वामी ८ जिस कारण तुम ९ योग यज्ञ के लिये १० योगबल से ११ पाप को १२ नाश करते हो-॥२॥

भरद्वाजऋषिरुष्णिक छन्द इन्द्रो देवता-

यस्य त्यच्छम्बरं मदे दिवोदासाय रन्धयन्। अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब॥२॥२६०

हे(इन्द्र) परमेश्वर (यत्) यस्मात् (यस्य) आत्मप्रतिबिंबस्य (मदे)

हर्षे पानजनिते सति (शम्बरम्) शम्बरं दरिद्रं हानि ददाति स शम्बरः कामस्तं (दिवः) गोलोकस्य (दासाय) भक्ताय (रन्धयन्) हन्ता भवसि (तत्) तस्मात् (सः) (अयम्) (सोमः) आत्मप्रतिबिंबः (ते) त्वदर्थे (सुतः) अभिपुतस्त्वं (पिब) ॥ २॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ जिस कारण ३ आत्मप्रति बिंबके ४ पान जनित हर्ष में ५ कामको ६,७ गोलोक कामी भक्त के लिये ८ नाश करते हो ९ उस कारण १० वह ११ यह १२ आत्मप्रतिबिंब १३ तेरे लिये १४ अभिषुत हुआ उसको १५ पान करो ॥ २॥ **द्वितीयोऽर्थः**

हे (इन्द्र) (यत्) यस्मात् (यस्य) सोमस्य (मदे) सति (दिवः) स्वर्गस्य (दासाय) यज्ञानुष्ठात्रे यजमानाय (शम्बरम्) मेघं नि० १ । १० (रन्धयन्) हन्ता भवसि (तत्) तस्मात् (सः) (अयम्) (सोमः) (ते) त्वदर्थे (सुतः) अभिपुतस्त्वं (पिब) ॥ २॥

भाषार्थः – १ हे इन्द्र २ जिस कारण ३ सोमका ४ मद होनेपर ५ स्वर्गके ६ यज्ञानुष्ठाता यजमान के लिये ७ मेघको ८ वर्षा के लिये ताडित करते हो ९ उस कारण १० वह ११ यह १२ सोम १३ तेरे लिये १४ अभिषुत हुआ उसको १५ पान करो ॥ २॥ नृमेध ऋषि रुष्णिक छन्द इन्द्रो देवता-

एन्द्र नो गाधि प्रिय सत्राजिदगोह्य । गिरिर्न विश्वतः पृथुः पतिर्दिवः ॥ ३ ॥ १६१

हे (प्रिय) सर्वेषां प्रियतम (सत्राजित्) सर्वेषामसुराणां जेतः (अगोह्य) असंवरणीय (इन्द्र) इन्द्र परमेश्वर त्वा (गिरिः) (न) पर्वत इव (विश्वतः) सर्वतः (पृथुः) विस्तीर्णः (दिवः) स्वर्लोकस्य (पतिः) ईश्वरस्त्वं (नः) अस्मान्प्रति (आगहि) आगच्छ ॥ ३ ॥

भाषार्थः –१ हे सबके प्रियतम २ सब असुरों के जेता ३ असंवरणीय ४ इन्द्र वा परमेश्वर ५ पर्वत की समान ७ सब ओर से ८ विस्तीर्ण ९ स्वर्गलोक के १० ईश्वर तुम ११ हमारे पास १२ आओ—॥ ३॥

पर्वतऋषिरुष्णिक् छन्द इन्द्रो देवता–

यइन्द्र सोमपात्तमो मदः शविष्ठचेतति। येना
हꣳसि न्या३त्रिणन्तमीमहे॥ ४॥ २६२

हे (शविष्ठ) बलवत्तम (इन्द्र) परमेश्वर (यः) (मदः) अहं ब्रह्मास्मीतिमदः (चेतति) सर्वं जानाति (सोमपातमः) सोमस्यात्ममतिविंवस्य पानात्त्वं (येन) मदेन (अत्रिणम्) अत्तारं कामं (निहंसि) निहिनस्सि नितरां हिंसां प्रापयसि (तम्) मदं (ईमहे) याचामहे नि० ३।१९।१—॥ ४॥

भाषार्थः –१ हे महाबली २ परमेश्वर ३ जो ४ अहंब्रह्मास्मि रूपमद ५ सबको जान्ता है ६ सोमवा आत्म मति विंव के पाता तुम ७ जिस मद से ८ भक्षक काम को ९ मारते हो १० उस मद को ११ हम मांगते हैं—॥ ५॥

इरिमिठ ऋषि रुष्णिक् छन्दो विदेवा देवताः

तुचेतुनाय तत्सुनो द्राघीय आयुर्जीवसे। आ
दित्यासः सुमहसः कृणोतन॥ ५॥ २६३

हे (सुमहसः) शोभनतेजस्काः (आदित्यासः) अदितेः पराशक्तेः पुत्रा ब्रह्म विष्णु महेशाः (नः) अस्माकं (तुचे) पुत्राय नि० २।२ (तुनाय) पौत्राय। तनोति कुलमिति। उकारोपजनश्छान्दसः (जीवसे) जीवनाय (तत्) (द्राघीयः) दीर्घतमं (आयुः) (सु) सुष्ठु (कृणोतन) कुरुत॥ ५॥

भाषार्थः – १ हे श्रेष्ठ तेजवाले २ पराशक्ति के पुत्र ब्रह्मा विष्णु महेशो ३ हमारे ४ पुत्र के लिये ५ पौत्र के लिये ६ और जीवन के अर्थ ७ उस ८ बहुत बड़ी ९ आयु को १०।११ दान कीजिये—॥ ५॥

विश्व मना ऋषि रुष्णिक् छन्द इन्द्रो देवता

वेत्थ्यो हि निर्ऋतीनां वज्रहस्त परिवृजम्। अहरहः शुन्ध्युः परिपदामिव ॥ ६ ॥ २६४

हे (वज्रहस्त) ज्ञानवज्र युक्त (अ) सर्वव्यापिन् परमेश्वर त्वं (हि) (निर्ऋतीनाम्) नानामृत्यूनां (परिवृजम्) परित्यागं वृजन्त्या गे (वेत्थ) जानीषे (इव) यथा (शुन्ध्युः) शोधनहेतुः सूर्यः (अहरहः) प्रतिदिनं (पदाम्) लोकानां (परि) परित्यागं ॥ ६॥

भाषार्थः – १ हे ज्ञानवज्र धारी २ सर्वव्यापी परमेश्वर तुम ३ ही ४ नाना प्रकार की मृत्यु के ५ परित्याग को ६ जानते हो ७ जैसे ८ शोधन हेतु सूर्य ९ प्रति दिन १० लोकों के ११ परित्याग को—॥ ६॥

इरिमिठ ऋषि रुष्णिक् छन्दो विदेवा देवताः

अपामीवामप स्त्रिधमप सेधत दुर्मतिम्। आदित्यासो युयोतना नो अंहसः ॥ ७ ॥ २६५

हे (आदित्यासः) अदितेः पराशक्तेः पुत्राः ब्रह्म विष्णु महेशाः (अमीवाम्) संसाररोगं (अपसेधत) अस्मत्तोपगमयत (स्त्रिधम्) बाधकं कामं (अप) अपसेधत (दुर्मतिम्) दुष्टां बुद्धिं (अप) अपसेधत (नः) अस्मान् (अंहसः) पापात् (युयोतन) पृथक्कुरुत तस्य नमनयनाश्च (७।१।४५) इतितस्यतनादेशो रूपम्—॥ ७॥

भाषार्थः – १ हे पराशक्ति के पुत्र ब्रह्मा विष्णु महेशो २ संसार रोग को

३ हमसे दूर करो ४ बाधक कामको ५ दूर करो ६ दुष्टबुद्धि को ७ दूर करो ८ हम को ९ पापसे १० पृथक् करो—॥ ७॥

वसिष्ठ ऋषि विराट् छन्द इन्द्रो देवता-

पिबा सोममिन्द्र मन्दतु त्वा यन्ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः। सोतुर्बाहुभ्यां सुयतो नार्वा ॥ ८। २९९

हे (हर्यश्व) (इन्द्र) (सोमम्) (पिब) (स) (अ) अमृतः (त्वा) त्वां (मन्दतु) मादयतु (सोतुः) अभिषव कर्त्तुः (बाहुभ्याम्) (अर्वा) (न) अश्वइव (सुयतः) सुष्ठुपरिगृहीतः (अद्रिः) ग्रावा (ते) त्वदर्थं (सोमम्) (सुषाव) ॥ ८॥

भाषार्थः – १ हे हरिनाम अश्वपते २ इन्द्र ३ सोमको ४ पान करो ५ वह ६ अमृत ७ तुमको ८ हर्षित करो ९ अभिषव कर्त्ता की १० भुजाओं से ११ १२ घोड़े की समान १३ ग्रहण किये हुए १४ पाषाणने १५ तेरे लिये १६ सोम को १७ अभिषुत किया—॥ ८॥

अथाध्यात्मम्—हे (हर्यश्व) हरिषु ब्रह्म विष्णु महेशेषु मानससूर्य रूप (इन्द्र) परमेश्वर (सोमम्) आत्ममति विंबं (पिब) (स) (अ) अमृतरूपः (त्वा) त्वां (मन्दतु) मादयतु (सोतुः) अभिषव कर्त्तुरात्मारूपयजमानस्य (बाहुभ्याम्) ग्रहण शक्तिभ्यां (अर्वा) (न) अश्वइव (सुयतः) निरुद्धः (अद्रिः) माणः। माणावै ग्रावाणः १४।२।२।३३ (सोमं) आत्म मति विंबं (सुषाव) ॥ ८॥

भाषार्थः —१ हे त्रिदेवमें मानससूर्य रूप २ परमेश्वर ३ आत्ममति विंब को ४ पान करो ५ वह ६ अमृतरूप ७ तुमको ८ हर्षित करो ९ अभिषवकर्त्ता आत्मारूप यजमान की १० ग्रहण शक्तियों से ११,१२ घोड़े की समानानिरु

छ्१४ माणाने १५ आत्ममतिविवको १६ अभिपुतकिया ॥८॥

इतिश्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनुज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य पंचमः खण्डः ५

अथ षष्ठः खण्डः

सौभरिर्ऋषिः ककुप् छन्द इन्द्रो देवता-

अभ्रातृव्यो अना त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि। युधेदापित्वमिच्छसे॥१॥ २६७

हे(इन्द्र) परमेश्वर(त्वम्) (जनुषा) प्रादुर्भावकालात्(सनात्) चिरादेव(अभ्रातृव्यः) सपत्नरहितः सर्वरूपत्वात्(अना) अनेतृकः ब्रह्मरूपत्वात्(अनापि) बन्धुवर्जितः। अद्वैतत्वात्(असि) तथापि(युधा)(इत्) काम युद्धे नैव निमित्तेन(आपित्वं) भक्तैः सहवान्धवत्वं(इच्छसे) इच्छसि भक्तवत्सल त्वात् व्यन् सपत्ने(४।१।१४५) इतिव्यन् प्रत्ययः(अना) ऋतश्छन्दसि(५।४।१५८) इतिकपः प्रतिषेधः॥१॥

भावार्थः - १हेपरमेश्वर२तुम३प्रादुर्भावकाल४ दीर्घकाल से ५सर्वरूपहोनेके कारण शत्रुहीन ६ब्रह्मरूपहोनेसे अनेता७ अद्वैत होनेसे बंधुरहित ८होतौभी ९,१० कामयुद्ध के निमित्त ११ भक्तों के बांधवत्व को १२चाहतेहो॥१॥ सौभरिर्ऋषिः ककुप्छन्द इन्द्रो देवता-

यो न इदमिदं पुरा प्रवस्य आनिनाय तमु वस्तुषे। सखाय इन्द्रमूतये॥२॥ २६८

वेदोपदेशः हे(सखायः) भक्ताः(यः)(वस्यः) निवासयोग्यः वस निवासे(पूर्वम्) सृष्टि काले(इदम्)(इदम्) इकामस्तस्यदा-

नारमज्ञानं (मार्गिणाय) प्रकर्षेण नीतवान् कूर्मफलैः (तम्) (इन्द्रम्) परमेश्वरं (उ) एव (वः) युष्माकं (ऊतये) संसाराद्रक्षणाय (स्तुषे) स्तौमि ॥ २ ॥

भाषार्थः— वेद कहता है १ हे भक्तो २ जिसं ३ निवासयोग्य परमेश्वरने ४ सृष्टिकालपर ५ इस ६ अज्ञानको ७ कर्मफलोंके द्वारा प्राप्त कराया ८ उस ९ परमेश्वरको १० ही ११ तुम्हारी १२ संसार संरक्षाके लिये १३ स्तुत करता हूं ॥ २ ॥ सौभरिर्ऋषिः उष्णिक् छन्दो मरुतो देवताः

आगन्ता मा रिषण्यत प्रस्थावानो माप स्थात समन्यवः। दृढा चिद्यमयिष्णवः ॥ ३ ॥ १६९

हे (प्रस्थावानः) प्रस्थातारः प्रगन्तारः (मरुतः) देवाः (आगन्त) अस्मानागच्छन्त (मा) (रिषण्यत) अनागमने नुनोऽस्मान्मा हिंसिषत हे (समन्यवः) समानतेजस्काः (दृढाचित्) दृढान्यपि पर्वतादीनि (यमयिष्णवः) नियमयितृशीलाः। नियमयितारः (मा) (अपस्थात) अस्मत्तोन्यत्र मा तिष्ठत ॥ ३ ॥

भाषार्थः — १ हे गतिशील २ मरुद्गण देवताओ ३ आओ ४,५ न आनेसे हमको हिंसित मत करो ६ हे समान तेजवालो ७ दृढ पर्वत आदिके भी ८ नियमनशील तुम ९,१० हमसे दूर मत जाओ — ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम्— हे (प्रस्थावानः) प्रगन्तारः (मरुतः) प्राणाः (आगन्त) अन्तरागच्छन्त (मा) (रिषण्यत) समाधित्यागेननोऽस्मान्माहिंसिषत हे (समन्यवः) समानतेजस्काः (दृढाचित्) दृढानपि कामादीन् (यमयिष्णवः) नियमयितारः (मा) (अपस्थात) समाधेरन्यत्र मा तिष्ठत अस्मास्वेवावतिष्ठध्वमि

त्यर्थः ॥३॥ भाषार्थः

१हे गति शील २ प्राणो ३ हृदय में आओ ४, ५ समाधित्याग से हमं को हिंसित मत करो ६ समान तेजस्वी ७, ८ दृढ काम आदि को वश में करने वाले तुम ९, १० हृदय से दूर मत जाओ अर्थात् समाधिस्थर हो—॥ ३॥

सौभरिऋषिः ककुप्छन्द इन्द्रो देवता

आयाह्ययमिन्दवेऽश्वपते गोपतउर्वरापते। सोमं सोमपते पिब ॥ ४ ॥ २७०

हे (अश्वपते) अश्वानां स्वामिन् (गोपते) गवां पालयितः (उर्वरापते) सर्वशस्याढ्या भूमिरुर्वरा तस्याः पते हे इन्द्र (इन्दवे) सोमपानाय (आयाहि) आगच्छ हे (सोमपते) (सोमम्) (पिब)—॥ ४॥ भाषार्थः

१हे अश्वपते २ हे गोपालक ३ हे भूमिपते इन्द्र ४ सोमपान के लिये ५ आओ ६ हे सोमपते ७ सोम को ८ पान करो—॥ ४॥

अथाध्यात्मम—हे (अश्वपते) मानस सूर्यस्य स्वामिन् (गोपते) इन्द्रियाणां पालयितः (उर्वरापते) योगभूमिपते परमेश्वर (इन्दवे) आत्म मति विंव पानाय (आयाहि) अनुभवगोचरो भव हे (सोमपते) जीवेश्वर (सोमम्) आत्ममति विंवं (पिब) ॥४॥ भाषार्थः—१ हे मानस सूर्य के स्वामी २ इन्द्रियपालक ३ योग भूमि के अधिपति परमेश्वर ४ आत्म मति विंव के पानार्थ ५ अनुभव गोचर हूजिये ६ हे जीव के ईश्वर ७ आत्ममति विंव को ८ पान करो—॥ ४॥

सौभरिऋषिः ककुप्छन्द इन्द्रो देवता

त्वयाहस्विद्युजा वयं प्रति श्वसन्तं वृषभ ब्रुवी

महि से थं स्ये जनस्ये गोमतः ॥ ५ ॥ १७१

(वृषभ) धर्मार्थ काम मोक्षाणां वर्षितः परमेश्वर (गोमतः) इन्द्रियुक्तस्य (जनस्य) जीवात्मनः (संस्थे) स्थाने शरीरे (श्वसन्तम्) कामं (युजो) सहायेन (त्वया) (इत्) एव (वयम्) योगिनः (सुष्टु (प्रति ब्रुवी महि) प्रतिवचनं कुर्मः ॥ ५ ॥

भावार्थः — १ हे चारों पदार्थ के दाता परमेश्वर २ इन्द्रिय युक्त ३ जीवात्मा के ४ स्थान शरीर में ५ स्वांस लेते काम को ६, ७ तुझ सहायक के साथ ८ ही ९ हम योगी १०, ११ अच्छे उत्तर दाता होते हैं ॥ ५ ॥

सोभरि ऋषीः उष्णिक छन्दो मरुतो देवताः

गा वेश्चि ह्वा समन्यवः संजात्येन मरुतः स बन्धवः रिहते ककुभो मिथः ॥ ६ ॥ १७२

हे (समन्यवः) समान तेजस्काः (मरुतः) प्राणाः (सजात्येन) समान जातित्वेन (सबन्धवः) समान बन्धु कानि (गावः) इन्द्रियाणि (चित्) अपि (मिथः) परस्परं (ककुभः) योग भूमेर्दिशः (रिहते) लिहन्ति ॥ ६ ॥

भावार्थः

१ हे समान तेज वाले २ प्राणो ३ समान जन्मा होने से ४ समान बन्धु रूप ५ इन्द्रियां ६ भी ७ परस्पर ८ योगभूमि की दिशा को ९ स्पर्श करती हैं ॥ ६ ॥

द्युतो नृमेध ऋषि रुष्णिक् छन्द इन्द्रो देवता-

त्वन्न इन्द्रा भर ओजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे । आ वीरं पृतनासहम् ॥ ७ ॥ १७३

(हे (शतक्रतो) बहु कर्मन् (विचर्षणे) विशेषद्रष्टः परमेश्वर (त्वम्) (नः) अस्मभ्यं (ओजः) योगबलं (नृम्णम्) योग धनञ्च (आ

भर) आहर देहि (वीरम्) वीर्योपेतं (पृतनासहं) असुर सेनानाम-भिभवितारं त्वां (आ) आह्वयामहे॥७॥

भावार्थः – १ हे बहुकर्मा २ विशेषद्रष्टा परमेश्वर ३ तुम ४ हमारे लिये ५ योगबल ६ और योगधनको ७ दीजिये ८ वीर ९ असुर सेना के जेता तुमको १० हम आह्वान करते हैं॥७॥ विनियोगः पूर्ववत्

अधा हीन्द्र गिर्वण उप त्वा काम ईमहे ससृग्म हे। उदेव ग्मन्त उदभिः॥८॥ २७४

(अध) अथ हे (अ) सर्वव्यापिन् (गिर्वणः) गीर्भिर्वननीय (इन्द्र) परमेश्वर (कामे) निमित्ते सति (त्वा) त्वां (हि) (ईमहे) याचामहे नान्यं त्वदन्याभावात् (उपससृग्महे) तान्कामांश्च समीप-संयोजयामः (इव) यथा (उग्मन्तः) ऊर्ध्वं गच्छन्तः सूर्यादयः (उदभिः) उदकैः। उपसंयुक्ता भवन्ति॥८॥

भावार्थः १ तदनन्तर १ हे सर्वव्यापी २ वेदवचनोंसे संभजनीय ३ परमेश्वर ४ कामनाके निमित्त ५ तुमको ६ ही ७ हम याचना करते हैं ८ और उन-कामनाओं को प्राप्त करते हैं ९ जैसे १० ऊंचे चलते सूर्य आदि ११ जलों में युक्त होते हैं॥८॥ ऋषिः सोभरिः ऋषिः ककुप् छन्दः इन्द्रो देवता

सीदन्तस्ते वयो यथा गोश्रीते मधौ मदिरे विव-क्षणे। अभि त्वामिन्द्र नोनुमः॥९॥ २७५

हे (इन्द्र) परमेश्वर (गोश्रीते) इन्द्रियैः श्रिते (मदिरे) मदक-रे (विवक्षणे) महावाचं वक्तुमिच्छते (ते) त्वदीये (मधौ) आत्म म-ति विवेके (वयः) (यथा) पक्षिण इव (सीदन्तः) निवसन्तो नागा-र्थिनो वयं (त्वाम्) (अभि) आभिमुख्येन (नोनुमः) पुनः पुन

भृशं वास्तुमः ॥ ९ ॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ इन्द्रियों से भिन्न ३ मदकर्त्ता ४ महावाक् कहना चाहते ५ आपके ६ प्रतिबिंबमें ७,८ पक्षी की समान ९ निवास करते वाक् आदि ऋत्विज हम १० तुमको ११ सन्मुख होकर १२ नमस्कार वास्तुति करते हैं ॥ ९ ॥ सोभरिर्ऋषिः ककुप् छन्द इन्द्रो देवता-

वयमुत्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद्भरन्तोऽवस्यवः।
वज्रिञ्चित्रं हवामहे ॥ १० ॥ १७६

हे (वज्रिन्) ज्ञानवज्रयुक्त (अपूर्व्य) पूर्वैरकृत सर्वकारण रूप परमेश्वर (अवस्यवः) रक्षण मात्मन इच्छन्तः (न) च (त्वाम्) (उ) एव (भरन्तः) हविर्भिः पोषयन्तः (वयम्) (कच्चित्) कञ्चित् (स्थूरं) स्थूलं दृष्टिगोचरं (चित्रं) स्वरूपं विष्णवादिकं (हवामहे) आह्वयामः ॥ १० ॥

भाषार्थः – १ हे ज्ञानवज्रयुक्त २ सर्वकारण रूप परमेश्वर ३ अपनी रक्षा चाहते ४ और ५,६ तुमको ही ७ हविओं से तृप्त करते ८ हम ९ किसी १० स्वरूप ११ स्थूल दृष्टि विषय विष्णु आदि को १२ हम आह्वान करते हैं – ॥ १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म विरचिते साम वेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य षष्ठः खण्डः ॥ ६ ॥

इत्यौष्णिहं काकुभम् ॥ अथ सप्तमः खण्डः

गौतम ऋषिः पङ्क्तिश्छन्दो गौर्यो देवता-

स्वादोरित्था विषूवतो मध्वः पिबन्ति गौर्यः। या इन्द्रेण सयावरीर्वृष्णा मदन्ति शोभसे वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ १

(गौर्यः) महापुरुषस्य रश्मयः (इत्था विषूवतः) इत्थमनेन प्रका

रेण देहे व्याप्तस्य विपुलव्याप्तौ (स्वादोः) स्वादुभूतस्य (मधोः) आत्मप्रति विंबस्य (पिबन्ति) पानं कुर्वन्ति (याः) रश्मयः (वृषणा) धर्मकामार्थमोक्षाभिवर्षकेण (इन्द्रेण) महापुरुषेण (सयावरीः) सह गच्छन्त्यः सत्यः (मदन्ति) हृष्टा भवन्ति हे (वस्वीः) योगधनवन्त्यः रश्मयः यूयं (स्वराज्यम्) ब्रह्माण्डान्तर्गतं स्वकीयं राज्यं (अनु) अनुलक्ष्य (शोभथाः) ॥१॥

भाषार्थः – १ महापुरुष की किरणें २ इस प्रकार देह में व्याप्त ३ स्वादुभूत ४ आत्मप्रति विंब का ५ पान करती हैं ६ जो किरणें ७ चारों पदार्थ के दाता ८ महापुरुष के साथ रहती ९,१० हर्षित होती हैं ११ हे योग धनवती किरणो तुम १२ ब्रह्माण्डान्तर्गत निजराज्य को १३ देखकर १४ शोभित होती हो–॥१॥

गोतम ऋषिः पङ्क्तिश्छन्द इन्द्रो देवता-

इत्थाहि सोम इन्मदो ब्रह्म चकार वर्द्धनम्। शविष्ठवज्रिन्नोजसा पृथिव्या निः शशा अहिमर्चन्ननु स्वराज्यम् २-१४

(इत्थाहि) इत्थमेव। अनेन प्रकारेणैव (सोमः) आत्मप्रतिविंबः (इत्) एव (ब्रह्म) महावाक्यं (मद्वर्द्धनम्) अहं ब्रह्मास्मीति मृदवर्द्धनं (उ) एव (चकार) हे (शविष्ठ) अतिशयेन बलवन् (वज्रिन्) ज्ञानवज्रवन् परमेश्वर त्वं (स्वराज्यम्) स्वकीयं राज्यं (अन्वर्चन्) प्रशंसयन् (ओजसा) बलेन (अहिम्) आहन्तारं कामं (पृथिव्याः) मानसभूमेः सकाशात् (निः शशाः) निरगमय शशप्लुतगतौ ॥२॥

भाषार्थः –१ इस प्रकार से २ आत्मप्रतिविंब ने ३ ही ४ महावाक्य को ५ मद बढ़ाने वाला ६ ही ७ किया ८ हे महाबली ९ ज्ञानवज्रधर परमेश्वर तुम १० निजराज्य को ११ प्रशंसा करते १२ बल से १३ पीडक काम को १४ मानसभूमि

से २५ निकालो ॥२॥ गोतमऋषिः पंक्तिश्छन्दइन्द्रो देवता-

इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः। तमिन्महत्स्वाजिषूतिमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नोऽविषत् ३-२७९

(वृत्रहा) पापस्य हन्ता (इन्द्रः) परमेश्वरः (मदाय) आनन्दार्थं (शवसे) योगबलार्थञ्च (नृभिः) यज्ञस्य नेतृभिर्वागाद्यृत्विजैः (वावृधे) स्तोत्र शस्त्र रूपाभिः स्तुतिभिः प्रवर्द्धितो बभूव (तम्) (ऊतिम्) रक्षास्वरूपं रक्षकं (महत्सु) (आजिषु) उपाधीनां संग्रामेषु (अर्भे) अल्पे काम संग्रामे (इत्) एव (हवामहे) (सः) (वाजेषु) पूर्वोक्त संग्रामेषु (नः) अस्मान् (प्राविषत्) प्रावतु प्रकर्षेण रक्षतु। अवतेर्लेटि रूपम्॥३॥

भावार्थः -१ पापनाशक २ परमेश्वर ३ आनन्द बल ४ और योग बल के लिये ५ यज्ञ के नेता वाक् आदि ऋत्विजों से ६ स्तोत्र शस्त्र रूप स्तुतियों से वर्धित हुआ ७ उस ८ रक्षा स्वरूप रक्षक को ८,९ उपाधियों के संग्राम में १० काम संग्राम में ११ ही १२ हम आह्वान करते हैं १३ वह १४ पूर्वोक्त संग्रामों में १५ हमको १६ रक्षा करो-॥३॥ गोतमऋषिः पंक्तिश्छंद इन्द्रो देवता-

इन्द्र तुभ्यमिदद्रिवोऽनुत्तं वज्रिन्वीर्यम्। यद्ध त्यं मायिनं मृगन्तव त्यन्मायया वधीरर्चन्ननु स्वराज्यम्॥३॥ १८०

हे (अद्रिवः) अद्रिवन् प्राणवन् (वज्रिन्) ज्ञानवज्रवन् (इन्द्र) आत्मा रूप यजमान (त्यत्) (अनुत्तं) शत्रुभिरतिरस्कृतं (वीर्यम्) योगबलं (तुभ्यम्) (इत्) एव (यद्ध) यस्मादेव (वृत्रम्) पापं (मायया) संसारस्य मिथ्यात्व बुद्ध्या (अवधीः) हतवानसि (तव)

२४ २५ २६
(त्यत्) तत् (स्वराज्यम्) आत्मराज्यं (अन्वर्चन्) विद्वांसः ॥ ४

भाषार्थः – १ हे प्राणवान २ ज्ञानवज्रधर ३ आत्मारूप यजमान ४ वह ५ शत्रुओं से अनिरस्कृत ६ योगवल ७,८ तेरे ही लिये है ९ जिसके द्वारा ही १० पापको ११ संसार के मिथ्यात्व बुद्धि द्वार १२ नाश किया १३ तेरे १४ उस १५ आत्मराज्यको १६ विद्वानों ने स्तुत किया ॥ ४ ॥

गोतम ऋषिः पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता

प्रेह्यभीहि धृष्णुहि न ते वज्रो नि यंसते । इन्द्र नृम्णं हि ते शवो हनो वृत्रं जया अपोर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ ५ ॥ — १८१

हे (इन्द्र) आत्मा रूप यजमान (प्रेहि) प्रकर्षेण गच्छ (अभीहि) कामादीन् शत्रून् अभिमुख्येन प्राप्नुहि (धृष्णुहि) तानभिभव (ते) तव (वज्रः) ज्ञान वज्रः (न) (नियंसते) कामादिभिः न नियम्यते अप्रतिहत गति रित्यर्थः (ते) तव (शवः) योगवलं (नृम्णम्) नृणां नेतृणामिन्द्रियाणां नामकं । अभिभावकं (हि) यस्मादेवं तस्मात् (वृत्रम्) पापं (हनः) जहि (अपः) कमलान्तरिक्षाणि (जयाः) जय तव (स्वराज्यम्) आत्मराज्यं (अन्वर्चन्) विद्वांसः ॥ ५ ॥

भाषार्थः

१ हे आत्मारूप यजमान २ चलो ३ कामादि शत्रुके सन्मुख हो ४ उनको नीतो ५ तेरा ६ ज्ञान वज्र ७,८ नहीं रुकता है ९ तेरा १० योगवल ११ इन्द्रियों को वश में करने वाला है १२ उसी कारण १३ पापको २४ मारो २५ कमलान्तरिक्षों को २६ जीतो २७ तेरे आत्मराज्यको २८ विद्वानों ने स्तुत किया ॥ ५ ॥

द्वितीयोर्थः

हे (इन्द्र) (प्रेहि) प्रकर्षेण गच्छ (अभीहि) हन्तव्यान् शत्रून् आभि मुख्येन प्राप्नुहि प्राप्यच्च (धृष्णुहि) अभिभव (ते) तव (वज्रः) (न) (नियंसते) शत्रुभिः ननियम्यते (ते) तव (शवः) बलं (नृम्णम्) नृणां पुरुषाणां नामकं अभिभावकं (हि) यस्मादेवं तस्मात् (वृत्रम्) मेघम् (हनः) जहि (अपः) उदकानि (जया) जयतव (स्वराज्यं) (अन्वर्चन्) विद्वांसः ॥ ५॥

भाषार्थः – १ हे इन्द्र २ चलो ३ मारणयोग्य शत्रुओं को सन्मुख प्राप्त करो ४ उनको जीतो ५ तेरा ६ वज्र ७,८ शत्रुओं से नहीं रोका जाता है ९ तेरा १० बल ११ प्राणियों को जय करने वाला है १२ उसी कारण १३ मेघको १४ वर्षा के लिये ताडन करो १५ जलों को १६ बरसाओ १७ आपके निज राज्यको १८ विद्वानों ने स्तुत किया ॥ ५॥

गोतमऋषि· पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता·

यदुदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धनम्। युङ्क्ष्वा मदच्युता हरी कं हनः कं वसौ दधोऽस्मां इन्द्र वसौ दधः ॥ ६॥ २८२

(यद्) यदा (आजयः) काम सङ्ग्रामाः (उदीरते) उद्गच्छन्ति उत्पद्यन्ते तदानीं (धनम्) योगधनं योगैश्वर्यं (धृष्णवे) कामजेत्रे (धीयते) निधीयते हे (इन्द्र) आत्मा रूप यजमान (मदच्युता) कामादीनां गर्वस्य च्यावयितारौ (हरी) जीवेशौ (आयुङ्क्ष्व) योजय (कम्) कामं (हनः) हन्याः (कम्) स्वात्मानं (वसौ) योगधने (दधः) स्थापय (अस्मान्) आगाध्यात्विजः (वसौ) योगधने (दधः) स्थापय ॥ ६॥

भाषार्थः — १जब २ कामसंग्राम ३ प्राप्तहोता हैतभी ४ योगैश्वर्य ५ कामजयी के लिये ६ नियत किया जाता है ७ हेआत्मा रूपयजमान ८ काम का मादि गर्वदूर करने वाले ९ जीवईश्वर का १० संयोग करो ११ कामको १२ मारो १३ अपने आत्मा को १४ योगधनमें १५ स्थापन करो १६ हमवाक् आदि ऋत्विजों को १७ योगधनमें १८ स्थापन करो—॥ ६॥

गोतमऋषिः पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता·

अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी ॥७॥२८३

हे(इन्द्र) परमेश्वर(हि) यस्मात् (स्वभानवः) आत्मप्रभुरूपाः (विप्राः) वागाद्यृत्विजः (अक्षन्) भुक्तवन्तः (अमी मदन्त) तृप्ता आसन् (प्रियाः) (तनूः) अङ्गानि (अवाधूषत) त्वत्प्रिहर्षेण कम्पयन् (नविष्ठया) अतिशयेन संस्कृतया (मती) मत्यास्तुत्या (अस्तोषत) अस्तुवन्तस्मात् (ते) त्वदीयौ (हरी) किरणौजीवेशौ (नु) क्षिप्रं (योज) स्वात्मनि योजय॥७॥

भाषार्थः — १ हे परमेश्वर २ जिस कारण ३ आत्मप्रभुरूप ४ मेधावी वाक् आदि ऋत्विजों ने ५ भगवत्प्रसाद रूप भोगों को भोगा ६ तृप्त हुए ७ ८ प्रिय अंगों को ९ त्वत्प्रिहर्ष से कंपित किया १० अतिशय संस्कृत ११ स्तुति से १२ स्तुत किया उसकारण १३ अपनी १४ किरण जीव ईश्वर को १५ शीघ्र १६ अपने आत्मा में संयुक्त करो ॥ ७ ॥

गोतमऋषिः पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता

उपोषु शृणुही गिरो मघवन्मातथाइव। कदा·

नुः सूनृतावतः करइदर्थयासइद्यो जान्विंद्र तेहरी॥ ८॥ १८४

हे (मघवन्) धनवन् (इन्द्र) परमेश्वर (गिरः) स्तुतीः (उपो) उपैव (सुश्रृणुहि) उपगम्य सम्यक् शृणु (कदा) आत्मदातृत्वं (सूनृतावतः) सत्यवाचा युक्तान् (नः) अस्मान् (करइत्) राज ग्राह्य करवत् (तथाइत्) तथैव (अर्थयास इत्) अर्थमयत्न हेतुवत् (मा) माजानीहि (ते) त्वदीयौ (हरी) किरणौ जीवेशौ (नु) क्षिप्रं (योज) सात्मानि योजय॥ ८॥

भावार्थः – १ हे धनवन् २ परमेश्वर ३ स्तुतिओं को ४ समीपसेही ५ सुनो ६ आत्मदाता तुम ७,८ हम सत्य वक्ताओं को ९ राज ग्राह्य करवत् १० तैसेही ११ अर्थ मयत्न हेतुवत् १२ मत जानो १३ अपने १४ किरण रूप जीव ईश्वर का १५ शीघ्र १६ संयोग करो॥ ८॥

त्रित ऋषिः पंक्तिश्छन्दो द्यावापृथिवी देवते-

चन्द्रमा अप्स्वा३न्तरा सुपर्णो धावते दिवि। नवो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी॥ ९॥ १८५

(दिवि) (अप्सु) कमलान्तरिक्षेपु (अन्तः) मध्ये (वः) निवृत्तात्मा (सुपर्णः) जीवरूपः पक्षी (चन्द्रमाः) मनश्च। मनो चन्द्रमा श॰ १४।४।२।१७ (आधावते) आङ्मर्यादायां। एकेनैव प्रकारेण धावते (हिरण्यनेमयः) ज्योतिः पर्यन्ताः (विद्युतः) विद्युद्रूपाणीन्द्रियाणि (मे) (अस्य) आत्मनः (पदम्) प्राप्यं ब्रह्म (न) (विन्दन्ति) विदलाभे हे (रोदसी) द्यावापृथिव्यौ (वित्तमे) जानीतम्॥ ९॥

भाषार्थः —१,२ कमलान्तरिक्षों के ३ मध्य ४ निश्चलात्मा ५ जीवात्मा रूप पक्षी ६ और मन ७ एक प्रकार से ही दौड़ते हैं ८ ज्योतिः पर्यन्त ९ विजली रूप इन्द्रियां १० मुक्त ११ आत्मा के १२ माप्य ब्रह्म को १३ नहीं १४ पाती है १५ हे पृथिवी स्वर्ग तुम १६ इसको जानो॥ ९॥

अवस्यु ऋषिः पङ्क्तिश्छन्दोऽश्विनौ देवते-

प्रतिप्रियतमᳪं रथं वृषणं वसुवाहनम्। स्तोता वामश्विनावृषि स्तोमेभिर्भूषति प्रति माध्वी मम श्रुतᳪं हवम्॥ १०॥ २८६

हे (अश्विनौ) जीवेशौ (स्तोता) (ऋषिः) मन्त्रः (वाम्) युवयोः (वृषणं) अमृतस्य वर्षितारं (वसुवाहनम्) योग धनानां वाहकं (प्रियतमं) (रथम्) योगरथं (प्रतिभूषति) अलङ्करोति हे (माध्वी) मधुविद्यावेदितारौ नरनारायणौ (मम) (हवम्) आह्वानं (प्रतिश्रुतम्) शृणुतम्॥ १०॥

भाषार्थः —१ हे जीव ईश्वरौ २ स्तुति करने वाला ३ मंत्र ४ तुम दोनों के ५ अमृत वर्षक ६ योगधनों के वाहक ७ प्रियतम ८ योग रथको ९ अलंकृत करता है १० हे मधु विद्या के ज्ञाता नरनारायणौ ११ मेरे १२ आह्वान को १३ सुनो—॥ १०॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य सप्तमः खण्डः ७

अथाष्टमः खण्डः॥

वसुश्रुत ऋषिः पङ्क्तिश्छन्दोऽग्निर्देवता-

अग्ने अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम्। यद्धस्या

नेपनीयसीसमिद्दीदयति द्यवीष १५ स्तोतृभ्य
आभर ॥१॥ १८७

हे (देव) माया क्रीडनकैः क्रीडनशील (अग्ने) आत्मा-
ग्ने (ते) तव (द्युमन्तम्) दीप्तिमन्तं (अजरं) जरा रहितस्वरूपं
(आ) सर्वतः (इधीमहि) दीपयामः (यद्ध) यत् खलु (ते) त्वदी
या (पनीयसी) स्तुत्यर्हा (समिद्) प्राणरूपा। प्राणावै समि-
धः श॰ १।५।४।१ (स्या) सा। यकारो योगवाचकः (द्यवि) हृदये
(दीदयति) दीप्यते (स्तोतृभ्यः) (इषम्) विराड्रूपान्नं (आभर)
आहर देहि ॥ १॥ १८७

भावार्थः – १ हे माया के खिलोनों से क्रीडनशील २ आत्माग्ने ३ ते-
रे ४ दीप्यमान ५ निर्जरामररूपको ६ सब ओर से ७ हम दीप्त करते हैं ८
निश्चय जो ९ तेरी १० स्तुति योग्य ११ वह १२ प्राणरूप समिध १३ हृदय
में १४ प्रज्वलित है आप १५ स्तोताओं के लिये १६ विराट् रूप अन्न को
१७ दीजिये ॥ १॥ १८७ विमदऋषिः पंक्तिश्छन्दोऽग्निर्देवता-

अग्निं न स्ववृक्तिभिर्होतारं त्वा वृणीमहे। शीरं
पावकशोचिषं वि वो मदे यज्ञेषु स्तीर्णबर्हिषं
विवक्षसे ॥ २॥ १८८

(होतारम्) महापुरुषपुरुषाणामाह्वातारं (शीरम्) इन्द्रियेषु अनु-
शायिनं (पावकशोचिषम्) शोधकदीप्तिं (न) च (यज्ञेषु) योग
यज्ञेषु (स्तीर्णबर्हिषं) आसादितसुषुम्नं (अग्निम्) आत्माग्निं (त्वा)
त्वां (स्ववृक्तिभिः) आत्मप्रकाशकाभिः स्तुतिभिः (वृणीमहे) संभ
जामहे (विमदे) विगतमदे सति (वक्षसे) वक्षस्थलाय (विवः)

प्रादुर्भव॥—२॥ **भाषार्थः**
१ महापुरुष पुरुषों के आह्वाता २ इन्द्रियों में अनुशायी ३ शोधक दीप्तिवाले ४ और ५ योग यज्ञों में ६ सुषुम्ना को प्राप्त करने वाले ७,८ तुझ आत्माग्नि को ९ आत्मप्रकाशक स्तुतियों के द्वारा १० हम भजते हैं ११ हे आत्माग्ने मद के विगत होने पर १२ वक्षस्थल के लिये १३ प्रकट हूजिये॥२॥

सत्यश्रवा ऋषिः पंक्तिश्छन्द उषा देवता-

महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती। यथा चिन्नो अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ३-१९

हे सुजाते) (अश्वसूनृते) आदित्य भार्ये (उषः) उषो देवि (यथा चित) यथैव (वाय्ये) गतिशीले। वय गतौ (सत्यश्रवसि) सत्य कीर्त्तिवति देहे (नः) अस्मान् (अबोधयः) तथैव (अद्य) (दिवित्मती) दीप्तिमती त्वं (नः) अस्मान् (महे) महापुरुषोत्सवाय (राये) योगधनाय (बोधय) ॥३॥

भाषार्थः –१ हे सुजन्मा २ आदित्यभार्या ३ उषा देवि ४ जैसे ५ गतिशील ६ सत्य कीर्त्ति मान देह में ७ हम को ८ जगाया ९ उसी प्रकार अब १० दीप्ति मती तुम ११ हम को १२ महापुरुषोत्सव १३ और योग धन के लिये १४ जगाओ—॥३॥ विमद ऋषिः पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता-

भद्रन्नो अपि वातय मनो दक्षमुत क्रतुम्। अथा ते सख्ये अन्धसो वि वो मदे रणा गावो न यवसे विवक्षसे ४-१९०

(अ) हे परमेश्वर (भद्रम्) कल्याण रूपं (मनः) (दक्षम्) जीवात्मानं (उत) अपि च (क्रतुम्) ज्ञानं (अपि) (नः) अस्मभ्यं वागाद्यृत्विग्भ्यः (वातय) प्रापय (अथ) अनन्तरं वागाद्यृत्विजः

(अन्धसः) आत्मप्रतिबिंब रूप सोमात् (ते) (मदे) सति (ते) तव (मख्ये) (विराणोः) विशेषप्रीति युक्ता भवन्तु (न) यथा (गावः) (यवसे) घासेत्वञ्च (वक्षसे) वक्षः स्थलाय (विवः) प्रादुर्भव॥४

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २,३ कल्याणरूपमन ४ जीवात्मा ५ और ६ ज्ञानको ७ भी ८ हमवाक् आदि ऋत्विजों के लिये ९ प्राप्त करो सो १० तदनन्तर वाक् आदि ऋत्विज ११ आत्मप्रति बिंबरूप सोमसे १२ आपका १३ मद होने पर १४ तेरी १५ भक्ति में १६ विशेष प्रीति युक्त हों १७ जैसे १८ गौ १९ घासके लिये और आप २० वक्षस्थल के लिये २१ प्रकट हूजिये॥ ४॥

गोतम ऋषिः पंक्तिश्छन्दः इन्द्रो देवता॥

क्रत्वा महाँ अनुष्वधं भीम आवावृते शवः। श्रिय ऋष्व उपाकयोर्नि शिप्री हरिवां दधे हस्तयोर्वज्रमायसम्॥ ५॥ २९२॥

(क्रत्वा) अवतारसम्बधिकर्मणा (भीमः) असुराणां भयंकरः (महान्) महापुरुषः (अनुष्वधं) आत्मप्रति बिंवलक्षणस्यान्नस्यपाने सति (शवः) योगवलं (आवावृते) आभिमुख्येन प्रावर्त्तयत (ऋष्वः) महान् (शिप्री) साकारः (हरिवान्) विष्णुस्वरूपो भूत्वा (उपाकयोः) समीपवर्त्तिनोः नि० २।१६ (हस्तयोः) आत्मारूप यजमानस्य बाह्वोः (आयसम्) अचलं। अयः गमने। (वज्रम्) ज्ञान वज्रं (श्रिये) योगलक्ष्म्यर्थं (निदधे) निदधाति स्थापयति॥ ५॥

भाषार्थः – १ अवतार सम्बंधी कर्म से २ असुरों का भयंकर ३ महापुरुष ४ आत्मप्रति बिंबरूप अन्न का पान होने पर ५ योगवल को ६ देता है ७

स्वरूप महासाकार ९ विष्णु स्वरूप होकर १० समीपवर्ती ११ आत्मा रूप यजमानकी भुजाओं में १२ अचल १३ ज्ञान वज्र को १४ योग लक्ष्मी के लिये १५ स्थापन करता है॥ ५॥ गोतमऋषिः पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता-

सघा तं वृषणं रथमधितिष्ठाति गोविदम्। यः पात्रं हारियोजनम्पूर्णमिन्द्राचिकेतति योजान्विन्द्र ते हरी॥ ६॥ २९२

(सः) यजमानः (घ) मेधया (तम्) (वृषणं) ज्ञानाभिवर्षकं (गोविदं) महावाक्यांलम्भयितारं (रथम्) वेदरूपं रथं (अधितिष्ठाति) अधितिष्ठति। अकारो ध्यात्मज्ञापकः (यः) रथः (हारियोजनम्) छन्दोमयं। छन्दांसिवैहारियोजनः श० ४।४।३।३। (पूर्णं) (पात्रम्) (आचिकेतति) ज्ञापयति हे (इन्द्र) परमेश्वर (ते) त्वदीयौ (हरी) किरणौ जीवेशौ (नु) क्षिप्रं (योज) योजय॥ ६॥

भाषार्थः

१ वह यजमान २ बुद्धिद्वारा ३ उस ४ ज्ञान दृष्टि कर्त्ता ५ महावाक्यों के प्रापक ६ वेदरूप रथमें ७ सवार होता है ८ जो वेद रूप रथ ९ छन्दोमय १०, ११ पूर्ण पात्रको १२ जतलाता है १३ हे परमेश्वर १४ अपने १५ किरण रूप जीव ईश्वर को १६ शीघ्र १७ संयुक्त करो॥ ६॥

वसुश्रुतऋषिः पंक्तिश्छन्दोऽग्निर्देवता-

अग्निं तं मन्ये यो वसुरस्तं यं यन्ति धेनवः। अस्तमर्वन्त आशवोऽस्तं नित्यासो वाजिन इषं स्तोतृभ्य आभर॥ ७॥ —३९३

(तम्) (अग्निम्) आत्माग्निं (मन्ये) स्तौमि (यः) (वसुः) वासर-

श्मिरूपः ६(यमे) ७(अंस्तम्) गृहरूपं ८(धेनवः) इन्द्रियाणि ९(यन्ति) गच्छन्ति १०(आशवः) शीघ्र गामिनः ११(अर्वन्तः) प्राणाः यं १२(अस्तं) गृहरूपं गच्छन्ति १३(नित्यासः) १४(वाजिनः) मानस सूर्याः यं १५(अस्तं) गृहरूपं गच्छन्ति हे आत्माग्ने १६(इषम्) विराड् रूपान्नं १७(स्तोतृ-भ्यः) अस्मभ्यम् १८(आभर) आहर देहि ॥७॥

भाषार्थः – १ उस २ आत्माग्नि को ३ स्तुत करताहूं ४ जो ५ ब्राह्मर श्मिरूपहै ६ जिस ७ गृह रूप आत्माग्नि को ८ इन्द्रियां ९ प्राप्त करती हैं १० शीघ्र गामी ११ प्राण १२ जिस गृह रूपको प्राप्त करते हैं १३ नित्य १४ मानस सूर्य १५ जिस गृह रूपको प्राप्त करते हैं हे आत्माग्ने १६ विराट् रूप अन्न को १७ हम स्तोताओं के लिये १८ दीजिये ॥७॥

अंहोमुग्वामदेव्य ऋषिरुपरि विराड् बृहती छन्दो मित्रादयो देवताः

नैतमंहो न दुरितं देवासो अष्ट मर्त्यम्। सजोषसो यमर्यमा मित्रो नयति वरुणो अति द्विषः ॥८॥१९४

हे १(देवासः) विद्वांसः २(तम्) ३(मर्त्यम्) मनुष्यं ४(अंहः) पापं ५(न) च ६(दुरितं) तत्फलरूपं ७(न) ८(आष्ट) नव्याप्नोति नि० २।१८ ९(यम्) १०(सजोषसः) सङ्गताः ११(अर्यमा) मनः १२(मित्रः) प्राणः १३(वरुणः) अपानः १४(द्विषः) द्वेष्टॄन् कामादीन् १५(अति) अतिक्रम्य १६(नयन्ति) आत्मनि प्रापयन्ति ॥८॥

भाषार्थः –१ हे विद्वानो २ उस ३ मनुष्य को ४ पाप ५ और ६ पाप फल ७ नहीं ८ व्याप्त करते हैं ९ जिसको १० मिले हुए ११ मन १२ प्राण १३ अपान १४ द्वेष्टा काम आदि को १५ अतिक्रमण कर १६ आत्मा में प्राप्त करते हैं ८।

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सा

मवेदीयब्रह्मभाष्येछन्दोव्याख्यानेचतुर्थस्याध्यायस्याष्टमः खण्डः॥८॥

अथनवमः खण्डः

आद्यानांषण्णांऋणा-त्रसदस्यू सहिता त्र्यीद्विपदापंक्तिश्छन्दः सोमोदे वता- पवमानोदेवतातत्रादिद्विपदा-

पॅरिप्रधन्वेन्द्रायसोमुस्वादुर्मित्रायपूष्णेभगाय १-२६५

हे(सोम) आत्मप्रतिविंव(स्वादुः) स्वादुरसस्त्वं(इन्द्राय) महापुरुषाय(पूष्णे) विष्णवे(भगाय) सूर्याय(परिप्रधन्व) परितः कमलरूपपात्रेपुप्रसर॥१॥

भाषार्थः -१हेआत्मप्रतिविंब२स्वादुरसरूपतुम३महापुरुष४विष्णु५औरसूर्यकेलिये६सबओरसेकमलरूपपात्रोंमेंगिरो॥१॥

त्रिपदाअनुष्टुप्पिपीलिकमध्यासोमोदेवता-

पर्युषुप्रधन्ववाजसातयेपरिवृत्राणिसक्षणिः
द्विषस्तरेध्याऋणयानईरसे॥२॥२६६

हे(सोम) आत्मप्रतिविंव(सुवाजसातये) सुष्टुप्राणेन्द्रियरूपान्नानांदानाय(परिप्रधन्व) परितःप्रगच्छ(सक्षणिः) सहनशीलस्त्वं(वृत्राणि) पापानि(उ) एव(परि) परिगच्छ(नः) अस्माकं वागाद्यृत्विजां(ऋणया) ऋणानांयापयिताविनाशयितात्वं(द्विषः) द्वेष्टृन्कामादीन्(तरध्यै)तरीतुंहन्तुं(ईरसे) परिगच्छसि॥२॥

भाषार्थः -१हेआत्मप्रतिविंब२प्राणइन्द्रियरूपअन्नोंकेदानार्थ३सबओरसेचलो४सहनशीलतुम५पापोंपर६ही७धावाकरो८हमवाक्आदिऋत्विजोंके९ऋणनाशकतुम१०द्वेषाकामआदिके११मारने

को १२ धावा करते हैं ॥ २ ॥ द्विपदा पंक्तिश्छन्दः सोमो देवता-

पवस्व सोम महान्त्समुद्रः पिता देवानां विश्वा
भि धाम ॥ ३ ॥ ९९७

हे (सोम) आत्मप्रतिविंब (महान्) समष्टिभावापन्नः (देवानाम्) इन्द्रियाणां (पिता) (समुद्रः) मनोरूपस्त्वं (विश्वा) विश्वानि सर्वाणि (धाम) धामानि कमलानि (अभिपवस्व) अभिगच्छ ॥ ३ ॥

भाषार्थः — १ हे आत्मप्रतिविंब २ समष्टिभावापन्न ३ इन्द्रियों के ४ पिता ५ मनरूप तुम ६ सब ७ कमलों को ८ सन्मुख प्राप्त करो ॥ ३ ॥

विनियोगः पूर्ववत्-

पवस्व सोम महे दक्षायाश्वो न निक्तो वाजी ध
नाय ॥ ४ ॥ — ९९८

हे (सोम) आत्मप्रतिविंब (नक्तः) देहाभिमानेन लज्जितः (अश्वः) (न) इव (वाजी) वेगवान् त्वं (महे) महापुरुषस्योत्सवाय (दक्षाय) योगबलाय (धनाय) (योगधनाय (पवस्व) गच्छ ॥ ४

भाषार्थः — १ हे आत्मप्रतिविंब २ देहाभिमान से लज्जित ३,४,५ घोड़े की तुल्य वेगवान तुम ६ महापुरुषोत्सव ७ योगबल ८ और योगधन के लिये ९ ऊपर को चलो — ॥ ४ ॥ विनियोगः पूर्ववत्-

इन्दुः पविष्ट चारुर्मदायापामुपस्थे कविर्भगाय ॥ ५ ॥ ९९९

(चारुः) कल्याणरूपः (कविः) मेधावी (इन्दुः) आत्मप्रतिविंबः (अपाम्) कमलान्तरिक्षाणां (उपस्थे) (मदाय) अहं ब्रह्मास्मीति मदार्थं (भगाय) योगैश्वर्याय (पविष्ट) पवने गच्छति ॥ ५ ॥

भाषार्थः — १ कल्याणरूप २ मेधावी ३ आत्मप्रतिविंब ४ कमलान्त

रिस्रोंके ५ मध्य ६ मेंब्रह्महूं ड्समद ७ और योगैश्वर्य केलिये ८ जाता है-५।

त्रिपदा अनुष्टुप्। पिपीलिक मध्या ऋषिदेवते पूर्ववत्-

अनुहित्वा सुतं सोम मदामसि महे समर्य

राज्ये। वाजाँ अभि पवमान प्रगाहसे॥ ६-२००

हे (सोम) आत्मप्रतिबिंब (सुतम्) अभिषुतं (त्वा) त्वां (अनुमदामसि) वयमनुक्रमेणाभिष्टुमः (हि) यस्मात् हे (पवमान) आत्मप्रति बिंबत्वं (महे) योगोत्सवे (अर्य्यराज्ये) स्वेश राज्ये समाधौ (वाजान्) योगबलानि (सम्) सम्यक् (प्रगाहसे) प्राप्नोषि ॥ ६॥

भाषार्थः

१ हे आत्मप्रतिबिंब २,३ तुम अभिषुत को ४ विधिपूर्वक स्तुत करते हैं ५ जिसकारण ६ हे आत्मप्रतिबिंबतुम ७ योगोत्सव के लिये ८ स्वेश राज्य समाधिमें ९ योगबलों को १० भलेप्रकार ११ प्राप्त करते हो ॥ ६-॥२००

वासिष्ठी द्विपदा मारुती-

कई व्यक्ता नरः सनीडा रुद्रस्य मर्या अथा स्वश्वाः॥७॥ २०१

(व्यक्ताः) विशेषगतिमन्तः। अन् जगतौ (सनीडाः) भूतात्मसहिताः (स्वश्वाः) शोभनाश्वरूपाः (रुद्रस्य) प्राणस्य श० १४।६।९।५ (मर्याः) प्रजारूपाः पञ्च प्राणाः (ईमे) शिवरूपं योगिनं (कं) प्रजापतौ परमेश्वरे श० ७।५।२।२३ (नरः) नेतारः। भवन्ति ॥७॥

भाषार्थः - १ विशेषगतिमान् २ भूतात्मा सहित ३ शोभन अश्व रूप ४,५ प्राण के प्रजारूप पंचप्राण ६ शिव रूपयोगी को ७ परमेश्वर में ८ प्रा

म करने वाले होते हैं ॥७॥ पदपंक्ति राग्नेयी वामदेवऋषिः

अभेतमद्याश्वं नस्तोमैः क्रतुन्न भद्रं हृदिस्पृशम्। ऋध्यामा तऽओहैः ॥ ८ ॥ २०२

(अतः) हे (अग्ने) आत्माग्ने (अद्य) (तम्) (अश्वं) (न) सूर्यरूपं (क्रतुं) (न) भूतात्मरूपं (भद्रम्) अन्तर्यामी रूपं (हृदिस्पृशम्) हृदये वर्त्तमानं त्वां (ओहैः) ऊहगानीयैः (स्तोमैः) स्तोत्र समूहैः (ऋध्याम) समर्द्धयामः ॥ ८ ॥

भाषार्थः – १ इसकारण २ हे आत्माग्ने ३ अब ४ उस ५,६ सूर्यरूप ७,८ भूतात्मारूप ९ अन्तर्यामी रूप १० हृदयमें वर्तमान तुझको ११ ऊह गानों १२ औरस्तोत्र समूहों से १३ हमबढाते हैं—॥ ८ ॥

पुरउष्णिक्छन्दोऽर्वन्तोदेवताः

आविर्मर्या आवाजं वाजिनो अग्मन्देवस्य सवितुः सवम् स्वर्गं अर्वन्तो जयत ॥ ९ ॥ २०३

(मर्या) मरणधर्मा माया (आविः) प्रकटीभूता (वाजम्) विराड्रूपान्नं (आ) प्रकटीभूतं (वाजिनः) इन्द्रियात्म प्रतिबिंबाः (सवितुः) (देवस्य) प्रेरकस्य परमेश्वरस्य (सवम्) योग यज्ञं (अग्मन्) अगमन् हे (अर्वन्तः) प्राणाः (स्वर्गम्) भृकुटिचक्रं (जयत) ९

भाषार्थः – १ मरणधर्मामाया २ प्रकट हुई ३ विराट् रूप अन्न ४ प्रकट हुआ ५ आत्मप्रतिबिंब सहित इन्द्रियों ने ६ प्रेरक ७ ज्योतिस्वरूप परमेश्वर के ८ योगयज्ञ को ९ प्राप्त किया १० हे प्राणो ११ भृकुटिचक्र को १२ जय करो—॥ ९ ॥ ऐश्वर योधिष्याया ऋषयः। द्विपदा छन्दः सोमो देवता–

पवस्व सोम द्युम्नी सुधारो महां अवीनामनु

पूर्व्यः॥२०॥२०४

हे(सोम) आत्मप्रतिविंब (द्युम्नी) यशस्वी (सुधारः) अमृतस्य दाता (पूर्व्यः) पुरातनः (महान्) समष्टिभावं प्राप्तस्त्वं (अवीनो म) कमलस्थ सूर्याणां (अनु) समीपे (पवस्व) गच्छ॥२०॥

भाषार्थः – १ हे आत्मप्रतिविंब २ यशस्वी ३ अमृत का दाता ४ पुरातन ५ समष्टिभावापन्न तुम ६ कमलस्थ सूर्यों के ७ समीप ८ चलो–२०॥

इतिश्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य नवमः खण्डः ९

इतिपञ्चमस्यार्द्धः प्रपाठकः

अथदशमः खण्डः

द्विपदा छन्द इन्द्रो देवता-

विश्वतोदावन्विश्वतोन आभरयंत्वाशविष्ठं मीमहे॥१॥२०५

हे (विश्वतोदावन्) सर्वतोदानवन् परमेश्वर (विश्वतः) सर्वतः (नः) अस्मभ्यं (आभर) आहर देहि (यम्) (शविष्ठम्) अतिशये नवलवन्तं (त्वा) त्वांप्रति (ईमहे) अभीष्टं याचामहे॥१॥

भाषार्थः – १ हे सब ओर से दाता परमेश्वर २ सब ओर से ३ हमको ४ दो ५ जिस ६ महाबली ७ तुमसे ८ हम अभीष्ट को मांगते हैं –॥२॥

विनियोगः पूर्ववत्

एषब्रह्मायऋत्वियइन्द्रोनामश्रुतोगृणे॥२–२०६

(ऋत्वियः) सृष्टिसमये प्रादुर्भूतः (यः) (इन्द्रः) परमेश्वरः (नाम श्रुतः) नाम्ना विश्रुतः (एषः) (ब्रह्मा) नमहं (गृणे) स्तौमि।२

भाषार्थः – १ सृष्टिसमयमेंप्रादुर्भूत २ जो ३ परमेश्वर ४ नामसेविख्यात हुआ ५ यह ६ ब्रह्मा है में उसकी ७ स्तुति करता हूं ॥ २ ॥

त्रसदस्युऋषिर्द्विपदाछन्दइन्द्रोदेवता-

ब्रह्माणइन्द्रम्महयन्तोअर्कैरवर्द्धयन्नहयेहन्तवाउ ॥ ३ ॥ २०७

(अहये) (हन्तवै) पापस्यनाशाय (अर्कैः) मानससूर्यैः (महयन्तः) पूजयन्तः (ब्रह्माणः) योगिनः (इन्द्रम्) परमेश्वरं (अवर्द्धयन्) ॥ ३ ॥

भाषार्थः – १, २ पापनाशकके लिये ३ मानससूर्योसे ४ पूजने ५ योगियोंने ६ परमेश्वरको ७ बढ़ाया — ॥ ३ ॥ विनियोगः पूर्ववत्

अनवस्तेरथमश्वायतक्षुस्त्वष्टावज्रम्पुरुहूतद्युमन्तम् ॥ ४ ॥ २०८

हे (पुरुहूत) बहुभिराहूतपरमेश्वर (ऋभवः) मानससूर्यरश्मिरूपाः नि० ११।१६ (अनवः) वागाद्यृत्विजः (ते) त्वदीयाय (अश्वाय) मानससूर्याय श० (रथम्) योगरथं (ततक्षुः) कृतवन्तः नक्षतनूः करणे (त्वष्टा) अन्तर्यामीत्वं (द्युमन्तम्) दीप्तिमन्तं (वज्रम्) ज्ञानवज्रं दत्तवानसि ॥ ४ ॥

भाषार्थः – १ हे बहुतसे आहूत परमेश्वर २ मानससूर्यकी किरणरूप ३ वाक् आदि ऋत्विजोंने ४ तुझ ५ मानससूर्यके लिये ६ योगरथको ७ बनाया ८ अन्तर्यामी तुमने ९ दीप्तिमान १० ज्ञानवज्रको दिया ॥ ४ ॥

द्विपदापंक्तिश्छन्दो ब्रह्मोदेवता-

शम्पदम्मघंरयीषिणेनकाममव्रतोहिनोति

नेस्पृशद्रयिम् ॥ ५ ॥ — २०९

(रयीषिणः) रयिंधनंहविर्लक्षणंप्रेषयन्तोजनाः (शर्मे) सुखं (मघमे) धनंयोगधनम्वा (पदम्) परंपदंलभन्ते इति शेषः (अव्रतः) उभयव्रतरहितः पुरुषः (न) (हिनोति) नप्राप्नोति (कामम्) अभीष्टं (रयिम्) धनं (न) (स्पृशत्) नस्पृशति ॥ ५ ॥ २०९

भावार्थः १हविअर्पणकरनेवालेभक्त २सुख ३धनवा योगधन ४और परंपद कोप्राप्त करते हैं ५दोनोंव्रतसेरहितपुरुष ६नहीं ७ पाता है ८अभीष्ट ९धनको १० नहीं ११पाना है — ॥ ५ ॥ २०९

द्विपदापंक्तिश्छन्दो विश्वेदेवादेवता.

सदागावः शुचयो विश्वधायसः सदादेवा अरेपसः ॥ ६ ॥ २१० ॥

(गावः) वेदवाचः नि० १।११।४ (सदा) (शुचयः) पवित्राः (विश्वधायसः) विश्वधारकान्न वत्यः (देवाः) तासांदेवाः (सदा) (अरेपसः) निष्पापाः शुद्धाः ॥ ६ ॥ २१० ॥

भावार्थः — १वेदवाणी २सदा ३पवित्र ४ और विश्व धारक अन्नवती हैं ५उनकेदेवता ६सदा ७निष्पाप शुद्ध है — ॥ ६ ॥ २१०

सम्पातऋषिर्द्विपदापंक्तिश्छन्दोइन्द्रोदेवता.

आयाहि वनसासह गावः सचन्त वर्त्तिनं यदूधभिः —

हे परमेश्वर (वनसा) रश्मिना तेजसा (सह) (आयाहि) आगच्छ (यत्) यस्मात् (गावः) गोरूपावेदवाचः (ऊधभिः) स्वधास्वाहादिभिः (वर्त्तिनं) यज्ञमार्गं (सचन्त) षचपेचने। यथां श्रुतिः वाचंधेनुमुपासीततस्याश्चत्वारस्तनाः स्वाहाकारोवषट्कारोहन्त

कारः स्वधाकारस्तस्यैद्वौस्तनौदेवाउपजीवन्ति स्वाहाकारंचव
षट्कारंचहन्तकारंमनुष्याः स्वधाकारंपितरस्तस्याः प्राणऋषभो
मनोवत्सः श० १४।८।९।१—॥७॥

भाषार्थः — हेपरमेश्वर १, २ तेजस्वीतुम ३ आओ ४ जिस कारण ५ गौरूपवेद वचनोंने ६ स्वधास्वाहा आदि स्तनोंकेद्वारा ७ यज्ञमार्गको ८ सींचा॥७॥

सम्पातऋषिर्द्विपदापंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता·

उपप्रक्षे मधुमतिक्षियन्तः पुष्येमरयिन्धीमहे
तंइन्द्र॥८॥२१२

हे(इन्द्र) परमेश्वर(ते) त्वदीये(मधुमति) ज्ञानान्विते श० १४।५।५।१६(क्षे) योगक्षेत्रे(उपक्षियन्तः) उपवसन्तोवयं(रयिम्) योगधनं(मपुष्येम) मपोषयेम किन्त्वत्वां(धीमहे) अनुध्यायेम ८

भाषार्थः — १ हेपरमेश्वर २ आपके ३ ज्ञानान्वित ४ योग क्षेत्रमें ५ वासकरते हम ६ योगधनको ७ पुष्टकरें और तुमको ८ ध्यानकरें॥८॥

विनियोगः पूर्ववत्·

अर्चन्त्यर्कं मरुतः स्वर्का आस्तोभति श्रुतो यु
वासुइन्द्रः॥९॥—२१३

यदा(स्वर्काः) शोभनान्नाः नि० ५।४(मरुतः) प्राणाः(अर्कम्) अर्चनीयंपरमेश्वरं(अर्चन्ति) आत्मप्रतिविंवहविषा पूजयन्ति· तदा(सः)(युवा) अजरामरः(श्रुतः) विख्यातः(इन्द्रः) परमेश्वरः(आस्तोभति) तेषांशत्रून् कामादीन् समन्तात्हिनस्ति॥९॥

भाषार्थः — जव १ शोभन अन्नरूप २ प्राण ३ पूजनीय परमेश्वरको ४ आत्मप्रतिविंवहविसे पूजते हैंतव ५ वह ६ अजरामर ७ विख्यात ८ परमेश्व

र९ उनके शत्रु काम आदि को सब ओर से मारता है ॥ ९ ॥

विनियोगः पूर्ववत्-

प्रवइन्द्राय वृत्रहन्तमाय विप्राय गाथं गायतयं जुजोषते ॥ १० ॥ २१४

(विप्राय) मेधाविने (वः) युष्माकं (वृत्रहन्तमाय) अतिशयेन पापस्यहन्तमाय (इन्द्राय) परमेश्वराय (गाथम्) स्तोत्रं (प्रगायत) प्रकर्षेणपठत (यम्) स्तोत्रं (जुजोषते) सेवते ॥ १० ॥

भावार्थः - १ मेधावी २ और तुम्हारे ३ अतिशय पापनाशक ४ परमेश्वरके लिये ५ स्तोत्रको ६ पढ़ो ७ जिस स्तोत्र को ८ वह सेवन करता है ॥ १० ॥

इतिश्री भृगुवंशावतंसश्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीयब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य दशमः खण्डः १०

अथैकादशः खण्डः ११

सम्पात ऋषिर्द्विपदा पंक्तिश्छन्दोऽग्निर्देवता-

अचेत्यग्निश्चिकितिर्हव्यवाड् नसुमद्रथः ॥ १ ॥ २१५

(हव्यवाट्) हविषांवोढ़ा (चिकितिः) विशिष्ट प्रज्ञः (न) च (सुमद्रथः) सम्यगुद्यतयोगरथः (अग्निः) आत्माग्निः (अचेति) सर्वं जानाति व्यत्ययेन कर्त्तरि प्रत्ययः (३।१।८५) — ॥ १ ॥

भावार्थः - १ हविषोंका धारक २ विशिष्ट प्रज्ञावान ३ और ४ उद्यतयोगरथवाला ५ आत्माग्नि ६ सबको जानता है — ॥ १ ॥

बन्धुर्ऋषिर्द्विपदा पंक्तिश्छन्दोऽग्निर्देवता-

अग्ने त्वन्नो अन्तम उत त्राता शिवो भुवो वरूथ्यः ॥ २ ॥ २१५

हे (अग्ने) आत्माग्ने (वरूथ्यः) निवासयोग्य गृह रूपः (उत) अपि च

(त्राता) रक्षकः (शिवः) सुखरूपः (त्वम्) (नः) अस्माकं (अन्नम्) (भुवः) भव ॥ २ ॥

भाषार्थः

१ हे आत्माग्ने २ निवासयोग्य गृहरूप ३ और ४ रक्षक ५ आनन्दस्वरूप तुम ६ हमारे ७, ८ अन्नमय ९ हूजिये ॥ २ ॥

वन्धुऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता

भर्गो न चित्रो अग्निर्महोनां दधाति रत्नम् ॥ ३ ॥ २९७

(भर्गः) (न) सूर्य इव (चित्रः) अद्भुतः (अग्निः) आत्माग्निः (रत्नम्) रमणीयमात्मप्रतिबिंबं (दधाति) स्वात्मनि धारयति ॥ ३ ॥

भाषार्थः — १, २ सूर्यकी समान ३ अद्भुत ४ आत्माग्नि ५ रमणीय आत्मप्रतिबिंबको ६ अपने आत्मामें धारण करता है — ॥ ३ ॥

वन्धुऋषिर्गायत्रीछन्द इन्द्रो देवता

विश्वस्य प्र स्तोभ पुरो वा सन्यदि वेह नूनम् ॥ ४ ॥ २९८

हे परमेश्वर (इह) अर्चाकाले (विश्वस्य) सर्वस्य भक्तसमूहस्य (यत्) (पुरो) वहु (वा) (नूनम्) नस्तुति स्तेनो नमल्पं (इव) (असेत्) भवेत्तत् (प्रस्तोभ) प्रशंस गृह्णीष्व नि० ३। १४ यथा गीतायाम् पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः अ० ९ श्लोक २६ — ॥ ४ ॥

भाषार्थः — हे परमेश्वर १ यहां पूजनकालपर २ सब भक्तसमूहका ३ जो ४ बहुत ५ अथवा ६ अल्प ७ ही ८ होवै ९ उसको ग्रहण करो — ॥ ४ ॥

सम्वर्तऋषिः द्विपदा पंक्तिश्छन्द उषा देवता

उषा अप स्वसुष्टमः सं वर्त्तयति वर्त्तनिं सुजातता ॥ ५ ॥ — २९९

यदा (उषाः) समाधिकालः (स्वसुः) भगिन्याः रात्रेः (तमः) अन्धकारं (अपसंवर्त्तयति) आत्मीयेन तेजसा अपगमयति तदा (सुजा) योगेन संस्कृता जीवात्मा रूपा परा (वर्त्तनिं) योगमार्गमति (तता) व्याप्ता भवति॥ ५॥

भाषार्थः – जब १ समाधिकाल रूप उषा २ भगिनी रात्रि के ३ अन्धकार को ४ अपने तेज से दूर करती है तब ५ योग से संस्कृत जीवात्मा रूप परा ६ योग मार्ग में ७ व्याप्त होती है—॥ ५॥

भौवन आत्य ऋषिः द्विपदा पंक्तिश्छन्दः इन्द्रो देवता-

इमानुकम्भुवना सीषधेमेन्द्रश्च विश्वेच देवाः॥ ६–२२०

(इन्द्रः) आत्मा (च) (विश्वेदेवाः) प्राणाः श० १४।२।२। ३७ (इमा) इमानि (भुवना) भुवनानि कमलानि (वयम्) योगाद्यार्त्विजः (च) अपि (कम्) परमेश्वरं। कं वै प्रजापतिः श० २। ५। २। १३ (नु) क्षिप्रं (सीषधेम) साधयामः वशी कुर्मः॥ ६॥

भाषार्थः – १ आत्मा २ और ३ प्राण ४ इन ५ कमलों को ६ और हम याज्ञवादि ऋत्विज ७ भी ८ परमेश्वर को ९ शीघ्र १० साधन करें—॥ ६॥

कवप ऐलूष ऋषिः द्विपदा पंक्तिश्छन्दः इन्द्रो देवता-

विस्नुतयो यथापथा इन्द्रत्वन्नु रातयः॥ ७॥ २२१॥

हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वत्) त्वत्समीपे (रातयः) हविर्लक्षणानि दानानि (यन्तु) गच्छन्तु (यथा) (विस्नुतयः) विविधा मार्गाः (पथा) राजमार्गेण सह संयोगं प्राप्नुवन्ति॥ ७॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ आपके समीप ३ हविरूप दान ४ प्राप्त हों ५ जैसे ६ नाना प्रकार के मार्ग ७ राजमार्ग के साथ संयोग को पाते हैं॥ ७॥

भरद्वाज ऋषिर्द्विपदा पंक्तिश्छन्दः प्रार्थना देवता

अयावाजन्देवहितꣳ सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः ॥८॥ २२२

(अया) विधिना (देवहितम्) ईश्वरेणदत्तं (वाजम्) अन्नं (सनेम) सम्भजेम (सुवीराः) कामयुद्धे सुवीरा वयम् (शतहिमाः) पूर्णायुपर्यन्तं हिमा रात्रिः सा दिव्यत्वात् वर्षमितेत्यर्थः (मदेम) हृष्याम ॥

भावार्थः — १ इस विधि से २ ईश्वर के दिये हुए ३ अन्न को ४ हम विभाग करें ५ काम युद्ध में अएवीर हम ६ पूर्णायु पर्यन्त ७ सुखी रहें ॥ ८ ॥

आत्रेय ऋषि द्विपदा पंक्तिश्छन्द इन्द्रादयो देवताः

ऊर्जा मित्रो वरुणः पिन्वतेडाः पीवरीमिषङ्कृणुही न इन्द्र ॥ ९ ॥ २२३

हे (इन्द्र) आत्मन् (मित्रः) प्राणः (वरुणः) अपानः त्वञ्च सर्वे यूयं (ऊर्जा) अमृतरसेन (इडाः) इन्द्रियात्म प्रतिबिंब रूपान्नानि (पिन्वते) सिञ्चत पिन्व सेचने किञ्च (पीवरीं) प्रवृद्धां (इषम्) अमृत वर्षां (नः) अस्मभ्यं (कृणुहि) कुरु ॥ ९ ॥

भावार्थः — १ हे आत्मन् २ प्राण ३ अपान और तुम भी ४ अमृतरस से ५ इन्द्रिय आत्म प्रतिबिंब रूप अन्नों को ६ सींचो और ७ बहुत बड़ी ८ अमृत वर्षा को ९ हमारे लिये १० करो — ॥ ९ ॥

एकपदाष्टाक्षरा गायत्री वसिष्ठ ऋषिरिन्द्रो देवता

इन्द्रो विश्वस्य राजति ॥ १० ॥ २२४

यतः कारणात् (इन्द्रः) परमेश्वरः (विश्वस्य) सर्वस्य ब्रह्माण्डस्योपरि (राजति) दीप्यते तस्यान्या भावात् ॥ १० ॥

भावार्थः — जिस कारण १ परमेश्वर २ सब ब्रह्माण्ड के ऊपर ३ प्रका

शकरता है॥१०॥ इति श्रीभृगुवंशावतंस श्री नाथूरामसूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्मविरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्यैकादशः खण्डः ११ ॥ इतिद्वैपदमैन्द्रं समाप्तम् ॥

अथ द्वादशः खण्डः

गृत्समदऋषिरष्टिश्छन्दो जीवेशौ देवते-

त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरन्तुविशुष्मे स्तृम्पत्सोमम पिबद्विष्णुना सुतं यथावशम् । सेई ममाद महि कर्म कर्त्तवे महा मुरुꣳ सैꣳनꣳ सश्चद्देवो देवꣳ सत्यइन्दुः सत्यमिन्द्रम् ॥१॥ २२५

(महिषः) महान् नि० ३।३ (तुविशुष्मः) बहुबलः परमेश्वरः नि० २।१ तथा २।९ (तृम्पत्) तृप्तवान् कथं (त्रिकद्रुकेषु) स्थूल सूक्ष्म कारणाख्य कामवृक्षरूपदेहेषु (सुतम्) अभिषुतं (यवाशिरम्) प्राणैः मिश्रितं । अन्नं हि प्राणः श० (सोमम्) (आत्मप्रतिबिंबं) (विष्णुना) अन्तर्यामिना सह (यथावशं) यथोत्साहं (अपिवत्) (सः) आत्मप्रतिबिंबः (महाम्) महान्तं (उरुम्) विस्तीर्णं (ईम्) पराशक्तिं (इन्द्रम्) परमेश्वरञ्च (महि) महत् (कर्म) (कर्त्तवे) कर्तुम् मोक्षदानाय (ममाद) अमादयत् (सः) (सत्यः) (देवः) (इन्दुः) जीवात्मा (सत्यम्) (देवम्) (एनम्) (इन्द्रम्) परमेश्वरं (सश्चत्) व्याप्नोतु सश्चति गतिकर्मा नि० २।१४—॥१॥

भाषार्थः – १ महान २ बहुबली परमेश्वर ३ तृप्त हुआ ४ जिस कारण स्थूल सूक्ष्म कारण नाम कामवृक्षरूप देहों में ५ अभिषुत ६ प्राणों से मिश्रित ७ आत्मप्रतिबिंब को ८ अन्तर्यामी के साथ ९ उत्साहपूर्वक १० पान किया ११

आत्मप्रति विवने १२ महान्न १३ विस्तीर्ण १४ पराशक्ति १५ और परमेश्वर को १६,१७,१८ महान् कर्म करने अर्थात् मोक्ष दान के लिये १९ तृप्त किया २० वह २१ सत्य २२ विद्वान् २३ जीवात्मा २४ सत्य २५ देव २६ इस २७ परमेश्वर को २८ व्याप्त करो॥१॥

गौराङ्गिरसऋषिर्जगती छन्दः सूर्यो देवता-

अयं सहस्रमानवो दृशः कवीनाम्मतिर्ज्योतिर्विधर्म। ब्रध्नः समीचीरुषसः समैरयदरेपसः सचेतसः स्वसरे मन्युमन्तश्चिता गोः॥२॥ २२६

यदा (सहस्रमानवः) अनन्ताभक्ता यस्य सः (दृशः) द्रष्टा (कवीनाम्) मेधाविनां (मतिः) मेधा (विधर्म) विधाता (ज्योतिः) तेजः (अयम्) (ब्रध्नः) सूर्यरूपः परमेश्वरः (समीचीः) शुद्धाः निर्म्मलाः (अरेपसः) पापरहिताः (सचेतसः) समानचित्ताः (उषसः) (समैरयत्) सम्यक् प्रेरयति तदा (गोः) मानस सूर्यस्य नि० २।६। (मन्युमन्तः) मन्युः प्रकाशस्तद्वन्तः नि० २।६ वागाद्यृत्विजः (स्वसरे) आत्मनद्यां (चिताः) भवन्तीति शेषः॥२॥

भावार्थः – जब १ अनन्तभक्त रखनेवाला २ द्रष्टा ३ मेधावियों का ४ मेधारूप ५ विधाता ६ तेजस्वी ७ यह ८ सूर्यरूप परमेश्वर ९ शुद्ध निर्मल १० पापरहित ११ समान चित्तवाली १२ उषाओं को १३ भले प्रकार प्रेरणा करता है तब १४ मानस सूर्य के १५ प्रकाशमान् वाक् आदि ऋत्विज १६ आत्मा रूप नदी में १७ प्रवेश करते हैं॥२॥

परुच्छेप ऋषिरत्यष्टिश्छन्द इन्द्रो देवता-

इन्द्र याहि पुनः परावतो नाय मच्छा विदथानी

वसंत्पतिरस्ता राजेव सत्पतिः । हवामहे त्वा प्रयस्वन्तः सुतेष्वा पुत्रासो न पितरं वाजसातये मंᳲ हिष्ठं वाजसातये ॥३॥२२७

हे (इन्द्र) परमेश्वर (परावतः) ब्रह्मणः प्रादुर्भूत्वा (नः) अस्मान् (उपायाहि) अस्मत्समीपंगत्या गच्छ (न) यथा (अयम्) (सत्पतिः) सताम् ऋत्विजां पालको यजमानः (विदथानीव) यज्ञानीव (अच्छा) अभिप्राप्तुं यज्ञगृह मागच्छति (इव) यथा (सत्पतिः) (राजा) (अस्ता) गृहाणि यस्मात् (प्रयस्वन्त) हविर्लक्षणान्नवन्तो वयं (त्वा) त्वां (सुतेषु) अभिषुतेषु प्राणेन्द्रियात्मप्रतिबिंबेषु (वाजसातये) विराड् रूपान्न लाभाय (आहवामहे) आभिमुख्येनाह्वयामहे (न) यथा (पुत्रासः) पुत्राः (मंहिष्ठम्) पूज्यतमं (पितरं) (वाजसातये) अन्नस्य सम्भजनाय ॥३॥२२७

भाषार्थः — १ हे परमेश्वर २ ब्रह्म से प्रकट होकर ३ हमारे ४ समीप आओ ५ जैसे ६ यह ७ ऋत्विजों का पालक यजमान ८ यज्ञों को ही ९ प्राप्त करने को यज्ञशाला में आता है १० अथवा जैसे ११ सत्पुरुषों का पालक १२ राजा १३ राजभवनों में प्रवेश करता है जिस कारण १४ हविरूप अन्नवान् हम १५ तुमको १६ प्राण इन्द्रिय आत्म प्रतिबिंब के अभिषुत होने पर १७ विराट रूप अन्न के लाभार्थ १८ आह्वान करते हैं १९ जैसे २० पुत्र २१ पूज्यतम २२ पिताको २३ अन्न संभजन के लिये —॥३॥

रेभाऋषिरतिजगतीछन्द इन्द्रोदेवता·

तमिन्द्रं जोहवीमि मघवानमुग्रᳲ सत्रा दधानमप्रतिष्कुतᳲ श्रवाᳲसि भूरि । मंᳲ हिष्ठो गी

भिराचूयुन्तियो ववर्त्त रायेनो विश्वा सुपथा कृणोतुवज्री ॥४॥—२२८

(तम्) (मघवानम्) इन्द्ररूपं (उग्रम्) शिवरूपं (सत्रा) सत्येनसत्यमतिज्ञया (भूरि) भूरीणि (अवांसि) बलानि रामकृष्णादि रूपस्थानि (दधानम्) तेष्ववतारेषु (अप्रतिष्कुतम्) शत्रुभिरप्रतिरोधनीयं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (जोहवीमि) पुनःपुनराह्वयामि (मंहिष्ठः) पूज्यतमः (यज्ञियः) यज्ञार्हः (वज्री) ज्ञानवज्रवान् परमेश्वरः (गीर्भिः) स्मदीयाभिः स्तुतिभिः (आववर्त्त) यज्ञेष्वाभिमुख्येन वर्त्तमानो भवन् (राये) योग धनाय (विश्वा) सर्वाणि (सुपथा) सुमार्गाणि (कृणोतु) करोतु॥४॥

भावार्थः—१ उस २ इन्द्ररूप ३ शिवरूप ४ सत्यप्रतिज्ञासे ५ बहुत ६ बलराम कृष्ण आदि रूपस्थों को ७ धारण करने वाले ८ शत्रुओं से अप्रतिरोधनीय ९ परमेश्वर को १० बारम्बार आव्हान करता हूं ११ बहपूज्यतम १२ यज्ञ योग्य १३ ज्ञानवज्र धारी परमेश्वर १४ हमारी स्तुति द्वारा १५ यज्ञों में सन्मुख वर्त्तमान हुआ १६ योगधन के लिये १७ सब १८ सुमार्गों को १९ शोधन करो॥४॥

पुरुच्छेप ऋषिरत्यष्टिश्छन्दोऽग्नीन्द्रवायवो देवताः

अस्तु श्रौषट् पुरो अग्निं धिया दध आनुत्यच्छर्धो दिव्यं वृणीमह इन्द्रवायू वृणीमहे। यद्ध क्राणा विवस्वते नाभा सन्दाय नव्यसे। अध प्र सू न उप यन्ति धीतयो देवाँ अच्छा यन धीतयः॥५॥ २२९

(पुरः) प्रचुरः समष्टिभावापन्नोऽहं(अग्निमे) आत्माग्निम्(धिया) योगबुद्ध्या(दधे) धारितवानस्मि(त्यत्) तत्। यकारो योग ज्ञापकः (दिव्यमे)(शार्द्धः) योगवलं(नु) क्षिप्रं(आवृणीमहे) वागाद्यृत्विजो वयमाभिमुख्येन सम्भजामहे किञ्च(इन्द्रवायू) मनःप्राणौ। मन एवेन्द्रः श० १२।९।१।१३(वृणीमहे)(यद्ध) यस्मादेतौ(नव्यसे) नवतराय संस्कृताय(विवस्वते) मानस सूर्याय(नाभौ) नाभौ योग यज्ञे(सन्दाय) संयुज्य(कारणा) योग क्रियायाः कुर्वाणौ भवतः(श्रोषट्) अस्याः स्तुतेः श्रवणं(अस्तु)(अध) अथ अनन्तरं(नः)(धीतयः) अस्माकं वागाद्यृत्विजां योग सम्बधीनि कर्माणि(प्रसूतमे) जातं संस्कृतं जीवात्मानं(उपयन्ति) उपगच्छन्ति(न) यथा(अयन धीतयः) उत्तरायण सम्बंधीनि कर्माणि(देवान्)(अच्छ) आभिमुख्येन प्राप्तुं गच्छन्ति ॥५॥

भाषार्थः –१ समष्टि भावापन्न मैंने २ आत्माग्नि को ३ योग बुद्धि द्वारा ४ धारण किया है ५ उस ६ दिव्य ७ योगवल को ८ शीघ्र ९ हम वाक् आदि ऋत्विज सेवन करते हैं १० और मन प्राणों को ११ प्रार्थना करते हैं १२ जिस कारण वे दोनों १३ संस्कृत १४ मानस सूर्य के लिये १५ योग यज्ञ में १६ संयोग करके १६ योग क्रिया के कर्त्ता होते हैं १७ इस स्तुति का श्रवण १८ हो १९ तदनन्तर २० हम वाक् आदि ऋत्विजों के २१ योग सम्बंधी कर्म २२ संस्कृत जीवात्मा को २३ प्राप्त होते हैं २४ जैसे २५ उत्तरायण-सम्बंधी कर्म २६ देवताओं को २७ सन्मुख प्राप्त करने के लिये जाते हैं–।५।

एवयामरुदापि रतिजगती छन्द इन्द्रो देवता-

प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णवे मरुत्वते गिरिजा एवयामरुत्। प्र शर्द्धाय प्रयज्यवे सुखादये तवसे भन्ददिष्टये धुनिव्रताय शवसे॥६॥ २३०

(मतयः) स्तुतयः (वः) युष्माकं (महे) महते (मरुत्वते) प्राणवते (विष्णवे) अन्तर्यामिने (प्रयन्तु) प्रगच्छन्तु (याः) (मरु) द्गिरिजाः) समष्टि प्राणस्य वाचि संभूताः स्तुतयः (प्रशर्द्धाय) महा बल रूपाय (प्रयज्यवे) प्रकर्षेण यष्टव्याय (सुखादये) सुख प्रदाय (तवसे) योग बलवते (भन्ददिष्टये) स्तुति रूप यत्नवते (धुनिव्रताय) अमृत मेघस्य चालनं कर्म यस्य तादृशाय (शवसे) धनवते परमेश्वराय (एव) तस्यान्याभावात्॥३॥

भाषार्थः – १ स्तुतियां २ हमारे ३ महान् ४ प्राणवान् ५ अन्तर्यामी के लिये ६ जावें ७ जो ८ समष्टि प्राण की वाणी में प्रकट स्तुतियां ९ महा बल रूप १० पूजनीय ११ सुखदाता १२ योगबल वान् १३ स्तुति रूप यत्नवान् १४ अमृत मेघके प्रेरक १५ धनवान् परमेश्वर के लिये १६ ही है उसके अद्वैत होने से॥३॥

अनानतः पारुच्छेपिर्ऋषिरत्यष्टिश्छन्दः सोमो देवता।

अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषांसि तरति सयुग्वभिः सूरो न सयुग्वभिः। धारा पृष्ठस्य रोचते पुनानो अरुषो हरिः। विश्वा यद्रूपा परियात्यृक्वभिः सप्तास्येभिर्ऋक्वभिः॥७॥ २३१

(सयुग्वभिः) सह युक्ते र्योगाङ्गान्विभिः सहितः (पुनानः) पूयमानः। अहं ममत्वादि दोषै रहितः संस्कृत आत्म प्रति बिंबः (अ-

या) चैतन्यया आश्रयगतो (हारिण्या) वैष्णव्या (रुचा) परारूय दीप्त्या (विश्वो) सर्वाणि कामादीनि (द्वेषांसि) दूषणानि रक्षांसि (तरति) विनाशयति (न) यथा (सूरः) सूर्यः (सयुग्वभिः) सह युक्तै रश्मिभिर्नभांसि हि नास्ति (यद्) यदा (पुनानः) (अरुषः) आरोचमानः (हरिः) मानससूर्यः (सप्तास्येभिः) सप्तमुखतुल्यैः (ऋक्वभिः) वागाद्यृत्विग्रूप स्वकीयतेजोभिः (विश्वा) सर्वाणि (रूपाणि) कमलस्थानां देवानां रूपाणि (परियाति) परितःप्राप्नोति तदा (प्रष्ठस्य) गगनमण्डलपृष्ठस्य (धारा) अमृतधारा (ऋक्वभिः) तेजोभिः (रोचते) दीप्यते ॥७॥

भाषार्थः — १ सह योगी वाक् आदि ऋत्विज सहित २ अहं ममत्व दोषों से रहित संस्कृत आत्म मति विंव ३ चैतन्य ४ वैष्णवी ५ परानाम दीप्ति के द्वारा ६ सब ७ द्वेष राक्षस वा काम आदि को ८ विनाश करता है ९ जैसे १० सूर्य ११ सहवर्त्ती किरणों से १२ जब १३ शुद्ध १४ आरोचमान १५ मानस सूर्य १६ सप्त मुख तुल्य १७ वाक् आदि ऋत्विज रूप अपने तेजों से १८ सब १९ कमलस्थ देवताओं के रूपों को २० सब ओर से प्राप्त करता है २१ तब गगन मंडल पृष्ठ की २२ अमृत धारा २३ तेजों से २४ प्रकाश करती है ॥७॥

नकुल ऋषि रतिशक्करी छन्दः परमेश्वरो देवता

अभित्यन्देवँ सवितारमोण्योः कविक्रतुम्
र्चामि सत्यसवँ रत्नधामभि प्रियम्मतिम् । ऊ
र्ध्वायस्यामतिर्भा अदिद्युतत् सवीमनि हिरण्य
पाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः ॥८॥

(त्यम्) तं (कविक्रतुम्) मेधाविनां यज्ञपुरुषं (सत्यसवम्)

सत्यप्रेरणं (रत्नधां) रमणीयानां धनानां दातारं (अभिप्रिय-
म्) सर्वतः प्रियं सर्वेश्वरत्वात् (मतिम्) मननीयं स्तुत्यं (स
वितारं) सर्वस्य प्रेरकं सर्वात्मत्वात् (देवम्) मायाक्रीडनकैः
क्रीडणशीलं परमेश्वरं वाग्व्यापारेण (अभ्यर्चामि) सर्वतः
पूजयामि (यस्य) (सवीमनि) प्रसवे सति (ऊर्ध्वा) उन्नता
(भा) दीप्तिरूपा पराशक्तिः (अमतिः) जडात्मिका अपराप्र-
कृतिश्च (ओरायोः) द्यावापृथिव्योः रूपे (अदिद्युतत्) प्रका-
शितवान् (हिरण्यपाणिः) ज्योतिर्हस्तः (सुक्रतुः) दिव्य-
यज्ञवान् विष्णुः (कृपा) स्तुत्या भक्तानां स्तुतिनिमित्तेन (
स्वः) सूर्यं (अमिमीत) निर्मितवान् द्यावापृथिव्यौ मायांशे
सूर्यस्तु पुरुषांशः पुरुषावतार इत्यर्थः॥ ८॥

भाषार्थः – १ उस २ मेधावियों के यज्ञपुरुष ३ सत्यप्रेरण ४ रमणी
य धनों के दाता ५ सब ओर से प्रिय ६ स्तुति योग्य ७ सबके प्रेरक ८ माया
के खिलोनों से क्रीडणशील परमेश्वर को वाक्व्यापार से ९ पूजन कर
ता हूं १० जिसकी ११ आज्ञा होनेपर १२ उन्नत १३ दीप्तिरूपा पराशक्ति
१४ और जडात्मिका अपराप्रकृति ने १५ पृथिवी स्वर्ग के रूपों को १६ प्र
कट किया १७ ज्योतिरूपहस्त वाले १८ दिव्ययज्ञवान् विष्णु ने १९ भक्तों
की स्तुति निमित्त २० सूर्य को २१ निर्माण किया —॥ ८॥

परुच्छेप ऋषिरत्यष्टिश्छन्दोग्निर्देवता-

अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसोः सूनुं
सहसो जातवेदसं विप्रं न जातवेदसम्। य ऊ
र्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा घृतस्य विभ्रा-

ष्टिमनु भुक्तशोचिषमाजुह्वानस्य सर्पिषः ॥ ९—२३३ (होतारम्) देवानामाह्वातारं (वसोः) धनस्य योगधनस्यवा (दास्वन्तम्) अतिशयेनदानवन्तं। दासतिर्दानकर्म्मा नि० ३।२०।३ (सहसः) ब्राह्मज्योतिषः (सूनम्) पुत्रं (जातवेदसम्) सर्वज्ञं (विप्रम्) मेधाविनं (न) च (जातवेदसम्) जातधनं धनवन्तं (अग्निम्) अग्निमात्माग्निम्वा (मन्ये) स्तौमि (यः) (स्वध्वरः) शोभन यज्ञवान् (देवः) (ऊर्ध्वया) उन्नतयाउत्कृष्टया (देवाच्या) देवान्पूजयन्त्या (कृपा) सामर्थ्यलक्षणया कृपया युक्तः सन् (भुक्तशोचिषः) दीप्ततेजस्कस्य मानस सूर्य्यतेजोरूपस्यवा अ० ५।३।१।२६ (आजुह्वानस्य) आसमन्ताद्हूयमानस्य (सर्पिषः) सरणशीलस्य घृतस्येन्द्रिय शक्तेर्वी प्राणः पयः शीर्षस्तन्वाणां अ० ६।५।४।१५ (विभ्राष्टिम्) विशेषदीप्तिं (अनुवष्टि) कामयतेस्वी करोतीत्यर्थः ॥ ९ ॥

भाषार्थः — १ देवताओंके आह्वाता २ धनवा योगधनके ३ दाता ४ ब्राह्मज्योतिके ५ पुत्र ६ सर्वज्ञ ७ मेधावी ८ और ९ धनवान १० अग्निवा आत्माग्निको ११ स्तुत करताहूं जो १२,१३ शोभन यज्ञवाला १४ देवता १५ उत्कृष्ट १६ देवपूजक १७ सामर्थ्यरूप कृपासे युक्त होता १८ दीप्ततेजस्कवा मानस सूर्यके तेजरूप १९ होमेहुए २० घृतवा इन्द्रियशक्तिकी २१ विशेष दीप्तिको २२ स्वीकार करताहै—॥ ९॥

गृत्समद ऋषि एति शक्करी छन्दोजीवेश्वरौ देवते·

तवत्यन्नर्यं न्नृपोतइन्द्रप्रथमम्पूर्व्यन्दिवि प्रवाच्यङ्कृतम्। योदेवस्यशवसाप्रारिणा अ·

सूरिणन्नपः। भुवो विश्व मभ्यदेव मोजसा वि
देदूर्जं शतक्रतु विंदे दिषम् ॥ १० ॥ २३४

हे (नृतः) वागाद्यृत्विजांनर्तयितः (इन्द्र) यजमान (तव) (त्यन्) तत् यकारो योगज्ञापकः (कृतम्) (अपः) कर्म (नर्यम्) नराणांपुत्रादीनां हितकरं (प्रथमम्) मुख्यम् (पूर्व्यम्) सनातनं (दिवि) स्वर्गलोके (प्रवाच्यम्) श्लाघनीयंप्रकर्षेण वक्तव्यं (यः) त्वं (देवस्य) इष्टदेवस्य (शवसा) बलेन (असुरिणाम्) असुंमाणं रिणान् प्रेरयन् (अपः) अमृतोदकानि (अरिणाः) गगन मंडलात्प्रैरय (शतक्रतुः) बहु कर्मा परमेश्वरः (विश्वम्) सर्वं (अदेवम्) क्रोधादि समूहं (ओजसा) बलेन (अभिभुवत्) अभिभवतु परमेश्वर एव (ऊर्जम्) योगबलं (इषम्) विराड् रूपान्नं (विदेत्) लम्भयेन्नान्य इत्यर्थः॥ १०॥

भाषार्थः — १ हे वाक् आदि ऋत्विजों के नचाने वाले २ यजमान ३ तेरा ४ वह ५ किया हुआ ६ कर्म ७ पुत्र आदि का हित कारी ८ मुख्य ९ सनातन १० स्वर्ग में ११ श्लाघा योग्य है १२ जो तुमने १३ इष्टदेव के १४ बलसे १५ प्राण को प्रेरणा करते हुए १६ अमृत जलों को १७ गगन मंडल से प्रेरणा किया १८ बहु कर्मा परमेश्वर १९ सब २० क्रोध आदि समूह को २१ बल से २२ निरस्कार करो परमेश्वर ही २३ योग बल २४ और विराट् रूप अन्न को २५ प्राप्त करावे न दूसरा यह अभिप्राय है ॥ १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य द्वादशः खण्डः

समाप्तश्चतुर्थोऽध्यायः ४

समाप्तम् ऐन्द्रं पर्व ऐन्द्रं काण्डं वा
इति द्वितीयं पर्व्व

ॐ नमः सामवेदाय

अथ पञ्चमाध्यायः

गतमाग्नेयं पर्व गतश्चैन्द्रमिदानीमिदं तृतीयं सम्प्रवर्त्तते अत्र पर्वणि सोमस्य संस्तुतिः ब्रह्मणो यस्मादुद्भवति तत्सर्वं सोम एव यथा श्रुतयः सोमो वै राजा यज्ञः प्रजापतिः। तस्यैतास्तन्वो या एता देवताः श० १२।६।२।१ सोमा हुतयो हवा एता देवानाम् यत्सामानि ११।५।६।६ प्राणः सोमः श० ७।२।४।२ प्राणो वै सोमः श० ७।३।१।४५ ज्योतिः सोमः श० ५।१।५।२८ सोमो वै भ्राट् ३।२।४।१९ इत्यादयः एवं सति यत्र योऽर्थः संभविष्यति तं कथयिष्यामः॥ अमहीयुर्ऋषिः गायत्री छन्दः सोमो देवता

उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे। उग्रꣳ शर्म महि श्रवः॥१॥

आत्मा रूप यजमानः कथयति हे आत्म प्रतिबिंब (ते) तव (अन्धसः) अन्नरूपस्य (जातम्) जन्म (उच्चा) उत्कृष्टचैतन्य शक्त्या परयाऽस्ति (उग्रम्) उत्कृष्टं (शर्म) सुखं (महि) महत् नि० ३।४।१९ (श्रवः) विराड् रूपान्नं नि० २।७ (दिवि) महापुरुषलोके (सत्) विद्यमानं (भूम्या) योगभूम्या (आददे) गृह्णामि॥१॥

भाषार्थः — आत्मा रूप यजमान कहता है हे आत्म प्रति बिंब १ तुम्हा २ अन्नरूप का ३ जन्म ४ उत्कृष्ट चैतन्य शक्ति परा से है ५ उत्कृष्ट ६ सुख

७, ८ और विराट् रूप महा अन्न को ९ जोकि महा पुरुष लोक मे १० विद्यमान है उसे ११ योग भूमि द्वारा १२ ग्रहण करता हूं॥ २॥

मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः सोमो देवता

स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया। इन्द्राय पातवे सुतः॥२॥२

हे (सोम) (इन्द्राय) (पातवे) पातुं (सुतः) अभिषुतस्त्वं (स्वादिष्ठया) स्वादुतमया (मदिष्ठया) अतिशयेन मादयित्र्या (धारया) (पवस्व) क्षर॥२॥२

भाषार्थः – १ हे सोम २ इन्द्र के ३ पानार्थ ४ अभिषुत तुम ५ बड़ी स्वादु ६ बड़ी मादक ७ धारा के साथ ८ पात्र में गिरो—॥२॥

अथाध्यात्मम् हे (सोम) आत्ममति विंब (इन्द्राय) (पातवे) परमेश्वरस्य पानाय (सुतः) अभिषुतस्त्व (स्वादिष्ठया) स्वादुतमया (मदिष्ठया) अतिशयेन मादयित्र्या (धारया) (पवस्व) सुषुम्णा मार्गेण गच्छ॥२॥

भाषार्थः – १ हे आत्म मति विंब २,३ परमेश्वर के पानार्थ ४ अभिषुत तुम ५ स्वादिष्ठ ६ बड़ी मादक ७ धारा के साथ ८ सुषुम्णा मार्ग से चलो॥२

भृगुर्वारुणिर्ऋषिर्गायत्री छन्दः सोमो देवता

वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः। विश्वा दधान ओजसा॥३॥

हे आत्ममति विंब (मत्सरः) पातुरात्मनः मदकरः मदि धातो रौणादिके सरप्रत्यये रूपम् (च) (वृषा) मानस सूर्य्य रूपस्त्वं (ओजसा) योग बलेन (विश्वा) विश्वानि सर्वाणि योगैश्वर्या

णि (दधानः) धारयन् (मरुद्वते) वागाद्यृत्विग्भिः संयुक्ता यात्मारूप यजमानाय नि० ३।१९ (धारया) ज्योतिर्धारया (पवस्व) सुषुम्णा मर्गेण गच्छ॥३॥

भाषार्थः – हे आत्म प्रतिविंव १ आत्माके मद कारक २ और ३ मानस सूर्य्य रूप तुम ४ योगवल से ५ सब योगैश्वर्यों को ६ धारण करते ७ वाक आदि ऋत्विज संयुक्त आत्मा रूप यजमान के लिये ८ ज्योती रूप धारा के साथ ९ सुषुम्णा मार्ग से चलो॥३॥

ऋमही पुत्रऋषि. शेषं पूर्ववत्

यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पवस्वान्धसा। देवावी रघशꣳसहा॥४॥४

हे आत्म प्रति विंव (ते) तव (यः) (देवावीः) देव कामः वीकान्तौ कान्तिरिहेच्छा (अघशंसहा) अघं पापं यः शंसति तस्य कामस्य हन्ता (वरेण्यः) सर्वै वरणीयः (मदः) अहं ब्रह्मास्मीति मदः (तेन) (अन्धसा) अन्न रूपेण (आपवस्व) आत्मन्या गच्छ ४

भाषार्थः – हे आत्म प्रतिविंव १ तेरा २ जो ३ देवकामा ४ कामनाशक ५ सबसे वरण योग्य ६ अहं ब्रह्मास्मि नाम मद है ७ उस ८ अन्न रूप के साथ ९ आत्मा में प्राप्त हो॥४॥ त्रितऋषिः शेषं पूर्ववत्-

तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः। हरिरेति कनिक्रदत्॥५॥५

(तिस्रः) (वाचः) ऋग्यजुः सामलक्षणा (उदीरते) ऋत्विजउच्चारयन्ति (धेनवः) (गावः) (मिमन्ति) दोहार्थं शब्दायन्ति तस्मिन्काले (हरिः) मानस सूर्यः (कनिक्रदत्) अहं ब्रह्मास्मीति शब्दं

कुर्वन् (एति) गगन मंडलं गच्छति॥५॥

भाषार्थः –१,२ ऋग् यजु साम रूप तीन प्रकार के वचनों को ३ ऋत्विज उच्चारण करते हैं ४ दुग्धदाता ५ गौ ६ दोह के लिये शब्द करती हैं उस समय पर ७ मानस सूर्य ८ अहं ब्रह्मास्मि यह शब्द करता ९ गगन मंडल को जाता है॥५॥ कश्यप ऋषिः शेषं पूर्ववत्‌

इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः अर्कस्य योनिमासदम्॥६॥६

हे (इन्दो) सोम (मधुमत्तमः) अतिशयेन मधुमान्‌ त्वं (अर्कस्य) अर्चनीयस्य यज्ञस्य (योनिम्) स्थानं (आसदम्) उपवेष्टुं (मरुत्वते) (इन्द्राय) इन्द्रार्थं (पवस्व) क्षर॥६॥

भाषार्थः – १ हे सोम २ अत्यन्त मधुमान तुम ३ पूजनीय यज्ञ के ४ स्थान में ५ स्थित होने को ६ मरुद्गण युक्त ७ इन्द्र के लिये ८ पात्र में गिरो॥६॥

अथाध्यात्मम् – हे (इन्दो) आत्मप्रतिबिंब (मधुमत्तमः) विज्ञानवान्‌ त्वं (सदम्) सदैव (मरुत्वते) वागाद्यृत्विग्वते (इन्द्राय) आत्मारूप यजमानाय (अर्कस्य) अर्चनीयस्य महापुरुषस्य (योनिम्) स्थानं गगनमण्डलं (आपवस्व) सुषुम्णा मार्गेण गच्छ॥६॥

भाषार्थः – १ हे आत्मप्रतिबिंब २ विज्ञानी तुम ३ सदैव ४ वागादि ऋत्विजवान्‌ ५ आत्मा रूप यजमान के लिये ६ पूजनीय महापुरुष के ७ स्थान गगन मंडल को ८ सुषुम्णा मार्ग से जाओ॥६॥

जमदग्निर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्‌-

असाव्यंशुर्मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः श्ये

२३ ३ २ २
नोन योनिमासदत् ॥७॥७

(गिरिष्ठाः) देहे स्थितः (अंशुः) आत्मप्रतिविंबः (मदाये) अहंब्रह्मास्मीति मदाय (असावि) अभिषुतः (अप्सु) कमलान्तरिक्षेषु (श्येनः) (न) इव शीघ्र गमनः (अयम्) आत्मप्रति विंवः (योनिम्) स्थानं गगन मण्डलं (आसदत्) प्राप्तवान् ॥७॥७

भावार्थः — १ देहनेस्थित २ आत्म प्रति विंव ३ अहंब्रह्मास्मि मदके लिये ४ अभिषुत हुआ ५ कमलान्तरिक्षों में ६,७ श्येनकी तुल्य शीघ्रगामी ८ इस आत्म प्रति विंवने ९ गगन मंडल नाम स्थान को १० प्राप्त किया —॥७॥—७

दृढच्युत आगस्त्य ऋषिः शेष पूर्ववत्

२ ३ १ २ ३ २ २ ३ २ २ ३ १
पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे। मरुद्भ्यो वायवे मदः॥ ८॥ ८

हे (हरे) हरितवर्णा सोम (दक्षसाधनः) वलस्य साधकः (मदः) मदरूपस्त्वं (देवेभ्यः) (मरुद्भ्यः) (वायवे) (पीतये) पानाय (पवस्व) स्वर ॥८॥८

भावार्थः

१ हे हरितवर्णा सोम २ वलसाधक ३ मदरूपतुम ४ देवताओं ५ मरुद्गणों ६ और वायुके ७ पानार्थ ८ पात्रमे गिरो—॥८॥

अथाध्यात्मम् — हे (हरे) मानस सूर्य (दक्ष साधनः) योगवलस्य साधकः (मदः) मदरूपस्त्वं (मरुद्भ्यः) प्राणेभ्यः (वायवे) समष्टिप्राणाय (देवेभ्यः) महापुरुष पुरुषेभ्यः (पीतये) पानाय (पवस्व) सुषुम्णा मार्गेण गच्छ ॥८॥

भावार्थः — १ हे मानस सूर्य २ योगवलके साधक ३ मदरूपतुम ४ प्राणों ५ समष्टिप्राण ६ और महापुरुष पुरुषोंके ७ पानार्थ ८ सुषुम्णा

मार्गसे चलो—॥ ८॥ अस्याः परस्याश्च कश्यपो ऽसित ऋषिः शेषं पूर्ववत्

पुरिस्वानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षरत्। मदेषु सर्वधा असि॥ ९॥ ९

(स्वानः) सुवानः अभिषूयमाणः (गिरिष्ठाः) गिरौ वर्त्तमानः (सोमः) (पवित्रे) ऊर्णमये दशा पवित्रे (पर्य्यक्षरत्) परिक्षरति सत्वं (मदेषु) (सर्वधा) सर्वेषां देवानां धारकः (असि)—॥ ९॥

भाषार्थः— १ अभिषूयमान २ पहाड़ी ३ सोम ४ ऊर्ण मय दशा पवित्रपर ५ गिरताहै वह तुम ६ मदोंमें ७ सब देवताओंके धारक ८ हो—॥ ९॥

अथाध्यात्मम्—(स्वानः) आत्मैवानो यस्य सः (गिरिष्ठाः) महा वाचि स्थितः (सोमः) आत्म प्रतिबिंबः (पवित्रे) प्राणे। पवित्रं वै प्राणोऽपानो व्यानश्च श० १।१।३।१ (पर्य्यक्षरत्) सत्वं (मदेषु) अहं ब्रह्मास्मीति मदेषु (सर्वधा) सर्वस्य ब्रह्माण्डस्य धारकः (असि)॥ ९॥

भाषार्थः

१ आत्मरथस्थ २ महावाक्‌में स्थित ३ आत्म प्रतिबिंब ४ प्राणमें ५ स्थित हुआ वह तुम ६ अहं ब्रह्मास्मि मदोंमें ७ सब ब्रह्माण्ड के धारक ८ हो॥ ९॥

विनियोगः पूर्ववत्

परिप्रिया दिवः कविर्वयांसि नप्त्योर्हितः स्वानैर्याति कविक्रतुः॥ २०॥

(कविः) मेधावी (कविक्रतुः) योग यज्ञानुष्ठाता (नप्त्योः) मनो हृदयंयोर्मध्ये (हितः) निहित आत्मप्रति बिंबः (स्वानैः) स्वकीय वागाद्यृत्विग्भिः सह (दिवः) कमल समूह रूप स्वर्गस्य (प्रिया) प्रियाणि (वयांसि) ईश रूपाणि यथा—द्वासुपर्णा सयुजा सखा

या समानं वृक्षं परिषस्वजाने तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्न न्यो भिचाकशीति म॰ १ अ॰ २२ सू॰ १६४ (परियाति) गच्छति १॰

भावार्थः — १ मेधावी २ योग यज्ञ का अनुष्ठाता ३ मन हृदय में ४ स्थापित आत्म मति बिंब ५ अपने वाक् आदि ऋत्विजों के साथ ६ कमल समूह रूप स्वर्ग के ७ प्रिय ८ ईश रूप देवताओं को ९ प्राप्त करता है—॥ १०॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने पंचमाध्यायस्य प्रथमः खण्डः ५

अथ द्वितीयः खंडः

श्यावाश्व ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनाम्। सुता विदथे अक्रमुः॥ १॥ ११

(सुताः) अभिषुताः (मदच्युतः) अहं ब्रह्मास्मीति मदस्राविणः (सोमासः) प्राणाः (मघोनाम्) योगधनवतां योगिनां (विदथे) यज्ञेनि॰ (श्रवसे) विराड्रूपान्नाय यथा श्रुतिः यदिदं किंचा शुभ्य आक्रिमिभ्य आकीटपतङ्गेभ्यस्तत्प्राणस्यान्नं २४। ६।२ १४ (अक्रमुः) प्रगच्छन्ति॥ १॥

भावार्थः — १ अभिषुत २ और अहं ब्रह्मास्मि मद के उत्पादक ३ प्राण ४ योगधनी योगियों के ५ यज्ञ में ६ विराट् रूप अन्न के लिये ७ जाते हैं॥ १॥

नित ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

प्र सोमासो विपश्चितोऽपो न यन्त ऊर्मयः। वनानि महिषा इव॥ २॥ १२

(विपश्चितः) मेधाविनः (सोमासः) प्राणाः (अनयन्त) कमले

षु गच्छन्ति (इव) यथा (ऊर्मयः) (अपः) चा (महिषाः) महान्तो मृगाः (वनानि) गच्छन्ति ॥२॥

भाषार्थः – १ मेधावी २ प्राण ३ कमलों में जाते हैं ४ जैसे ५ लहरें ६ जलों को और ७ बड़े मृग ८ वनों को प्राप्त करते हैं ॥२॥

अमहीयुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने। विश्वा अप द्विषो जहि ॥३॥१३

हे (वृषा) मानस सूर्यरूप (इन्दो) आत्मप्रतिबिंब (सुतः) अभिषुतस्त्वं (पवस्व) सुषुम्णा मार्गेण गच्छ (जने) योगिषु (नः) अस्मान् (यशसः) यशस्विनः (कृधि) कुरु (विश्वा) सर्वान् (द्विषः) द्वेष्टॄन् कामादीन् (अपजहि) मारय ॥३॥

भाषार्थः – १ हे मानस सूर्यरूप २ आत्मप्रतिबिंब ३ अभिषुत तुम ४ सुषुम्णा मार्ग से चलो ५ योगियों के मध्य ६ हमको ७ यशस्वी ८ करो ९ सब १० द्वेषी काम आदि को ११ मारो — ॥३॥१३

भृगुऋषिः शेषं पूर्ववत्

वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे। पवमान स्वर्दृशम् ॥४॥१४

हे (पवमान) शोध्यमानात्मप्रतिबिंब त्वं (वृषा) मानस सूर्यरूपः (असि) (स्वर्दृशं) सर्वस्य द्रष्टारं (भानुना) तेजसा (द्युमन्तं) दीप्तिमन्तं अतिशयेन तेजस्विनं (त्वा) त्वां (हि) (हवामहे) आह्वयामहे ॥४॥

भाषार्थः १ हे शोध्यमान आत्मप्रतिबिंब तुम २ मानस सूर्यरूप ३

हो४ सबके द्रष्टा ५ तेजसे ६ दीप्तिमान ७ तुमको ८ ही ९ हम आह्वान करते हैं—॥४॥ अस्याउत्तरस्याश्च कश्यपऋषिः शेषं पूर्ववत्-

इन्दुः प्रविष्टश्चेतनः प्रियः कवीनाम्मतिः। सृजं दश्वं रथीरिव ॥५॥२५

(चेतनः) चैतन्यः (प्रियः) इन्द्रियाणां प्रियः (कवीनाम्) मेधाविना मात्मारूप योगिनां (मतिः) मन्तारूपः (इन्दुः) आत्ममनि विंवः (प्रविष्टः) सुषुम्णा मार्गेण गच्छत् (सृजत्) स्वकीयात्मानं ब्रह्मणि सृजत् (इव) यथा (रथी) (अश्वम्)

भावार्थः—१ चैतन्य २ इन्द्रियों का प्रिय ३ मेधावी आत्मारूप योगियों का ४ मन्तारूप ५ आत्म मनिविंव ६ सुषुम्णा मार्गसे चला ७ अपने आत्माको ब्रह्ममें छोड़ा ८ जैसे ९ रथी १० घोड़े को—॥५॥

विनियोगः पूर्ववत्-

असृक्षत प्रवाजिनो गव्यासोमासो अश्वया। शुक्रासो वीरयाशवः॥६॥२६

(वाजिनः) वलवन्तः (आशवः) वेगवन्तः (शुक्रासः) शुद्ध वीर्यरूपाः (सोमासः) सोमाः (गव्या) इन्द्रिय शक्ति रूपेण (वीरया) प्राणशक्ति रूपेण प्राणावैदशवीराः श० १२।८।१।२२ (अश्वया) मानस सूर्य शक्तिरूपेण असौवा आदित्य एषोऽश्व श० ६।३।१।२९ (प्रासृक्षत) प्रकर्षेण सृज्यन्ते॥६॥२६

भावार्थः—१ वली २ वेगवान ३ शुद्धवीर्य्यरूप ४ सोम ५ इन्द्रियशक्ति रूप ६ तथा प्राणशक्ति रूप ७ और मानस सूर्य्य शक्तिरूपसे ८ अभिपुत किये जाते हैं ॥६॥ १७ विधुर्विः काश्यपऋषिः शेषं पूर्ववत्

१ २ ३१ २ ३१२ २२ ३१२ ३ १२
पवस्व देव आयुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः। वायुमा रोह धर्मणा ॥७॥ १७

हे (आयुषक्) प्राणसम्बद्ध जीवात्मन् श० ४।२।३।१ (देवः) विद्वान् त्वं (पवस्व) सुषुम्णा मार्गेण गच्छ (ते) तव (मदः) अहं ममेति मदः (इन्द्रम्) परमेश्वरं (गच्छतु) त्वञ्च (धर्मणा) योगधारणया (वायुम्) प्राणं (आरोह) ॥७॥

भाषार्थः—१ हे प्राण सम्बद्ध जीवात्मन् २ विद्वान् तुम ३ सुषुम्णा मार्ग से चलो ४ तेरा ५ मैं मेरा यह मद ६ परमेश्वर को ७ प्राप्त करो और तुम ८ योगधारणा के द्वारा ९ प्राण पर १० चढ़ो—॥७॥

महीयुत्त्रर्षिः शेषं पूर्ववत्

२ २ ३२ ३१२ २२ ३२
पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रन्न तन्यतुम्। ज्योतिर्वैश्वानरम्बृहत् ॥८॥ १८

(पवमानः) संस्कृतः शुद्ध आत्मप्रतिबिंबः (बृहत्) महत् (वैश्वानरम्) (ज्योतिः) ब्राह्मज्योतिः (अजीजनत्) प्रादुष्कारयत् (दिवः) द्युलोकस्य (चित्रम्) विचित्रं (तन्यतुं) (न) अशनिमिवास्ति। विद्युद् ब्रह्मेत्याहुः। विदानाद्विद्युद्विद्यत्येनं सर्वस्मात्पाप्मनो य एवं वेद विद्युद् ब्रह्मेति विद्युद्ध्येव ब्रह्म। श० १४।८।७।१ ॥८

भाषार्थः—१ संस्कृत शुद्ध आत्म प्रतिबिंब ने २ महान् ३ वैश्वानर ४ ब्राह्मज्योति को ५ अनुभव किया जो कि ६ स्वर्गलोक की ७ विचित्र ८ विजली के ९ समान है ॥८॥ द्वयोः काश्यपो सितत्त्रर्षिः शेषं पूर्ववत्

१ २ ३ २ ३१ २ ३ १२ ३१ २ ३ २ २
परिस्वानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा। मधो अर्षन्ति धारया ॥९॥ १९

हे (मधो) माण। माणो वै मधु श० १४।१।३।३० (त्वनासः) आत्मैवानो येषांते (इन्दवः) इन्द्रियात्म प्रति विंबाः (वहीणा) महत्या (गिरा) महावाचा (धारया) (पर्यर्षन्ति) समन्ताद्गच्छन्तितस्मा त्त्वमपि गच्छेत्यर्थः॥ ९॥

भाषार्थः – १ हेमाण २ आत्मारथस्य ३ इन्द्रिय आत्म प्रतिविंब ४. ५, ६ महावाक् रूप धारा के साथ ७ सब ओर जाते हैं उस कारण तुम भी चलो॥ ९॥ विनियोगः पूर्ववत्-

परि प्रासिष्यदत्कविः सिन्धो रूर्मा वधिश्रितः। कारुम्बिभ्रत्पुरुस्पृहम्॥ १०॥ २०

(सिन्धोः) मनसः मनोवैसमुद्रः श० ७।५।२।५२ (ऊर्मौ) (अधिश्रितः) आश्रितः (कविः) मेधावी। आत्म प्रति विंबः (पुरुस्पृहं) वहुभिः स्पृहणीयं (कारुं) कर्त्तार मन्तर्यामिन मात्मानं (विभ्रत्) धारयन् (परिप्रासिष्यदत्) परिस्यन्दते॥ १०॥

भाषार्थः – १ मनकी २ लहरमें ३ आश्रित ४ मेधावी आत्मप्रतिविंब ५ बहुत के स्पृहणीय ६ कर्त्ता अन्तर्यामी आत्मा को ७ धारण करता ८ ऊपर को जाता है॥ १०॥ इतिश्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने पञ्चमस्याध्यायस्य द्वितीयः खण्डः २॥ इति पंचम प्रपाठकः

अथ षष्ठ प्रपाठकः

अथ तृतीयः खण्डः

अमहीयुर्ऋषिः शेषपूर्ववत्

उपोषु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम्। इन्दु

न्देवा अयासिषुः ॥१॥ २१

(सुजातम्) सुसंस्कृतं (अध्वरे) कामलान्तरिक्षेषु वेगवन्तं (भोङ्गम्) देहेनप्रथमभूतं (गोभिः) इन्द्रियैः (परिष्कृतम्) अलङ्कृतं (इन्दुम्) आत्मप्रतिविंबं (देवाः) (उपायासिषुः) उपगच्छंति ॥१॥

भाषार्थः — १ अच्छे संस्कृत २ कमलान्तरिक्षोंमें वेगवान् ३ देहाभिमानसे पृथक् ४ इन्द्रियों से ५ अलंकृत ६ आत्मप्रतिविंबको ७ देवता ८ दर्शन देते हैं—॥१॥ वृहन्मति आङ्गिरसऋषिः शेषंपूर्ववत्

पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः।
शुम्भन्ति विप्रन्धीतिभिः ॥२॥ २२

(विचर्षणिः) द्रष्टा (पुनानः) संस्कृत आत्मप्रतिविंबः (विश्वाः) सर्वाः (मृधः) कामसेनाः (अभ्यक्रमीत्) आभिक्रामतितं (विप्रं) मेधाविनं देवाः (धीतिभिः) प्रज्ञाभिः (शुम्भन्ति) अलंकुर्वन्ति॥२॥२२॥ **भाषार्थः** — १ द्रष्टा २ संस्कृत आत्मप्रतिविंब ३ सब ४ कामसेनाओंके ५ सन्मुख होता है उस ६ मेधावी को देवता ७ प्रज्ञाओं से ८ अलंकृत करते हैं—॥२॥२२ असितः काश्यपऋषिः शेषंपूर्ववत्

आविशन्कलशꣳ सुतो विश्वा अर्षन्नभि श्रियः। इन्दुरिन्द्राय धीयते ॥३॥ २३

(सुतः) अभिषुतः (इन्दुः) सोमः (विश्वाः) सर्वाः (श्रियः) सम्पदः (अभ्यर्षन्) अभितो गमयन् (कलशम्) द्रोणं (आविशन्) (इन्द्राय) (धीयते) दशापवित्रे अध्वर्युभिर्निधीयते ॥३॥

भाषार्थः — १ अभिषुत २ सोम ३ सब ४ सम्पदाओंको ५ सब ओरसे प्राप्त कराता ६ द्रोणकलशमें प्रवेश करता ७,८ इन्द्रके पानार्थ दशापवि

त्र परस्थापन किया जाता है॥ ३॥

अथाध्यात्मम् -(सुतः) अभिषुतः (इन्दुः) आत्मप्रतिविंवः (विश्वाः) सर्वाः (श्रियः) योगसम्पदः (अभ्यर्षन्) अभितोगमयन् (कलशम्) अन्तर्यामिनं। प्रजापतिर्वै द्रोणकलशः श० ४।३।१।६ (आविशन्) (इन्द्राय) परमेश्वराय (धीयते) प्राणे निधीयते॥ ३॥

भावार्थः - १ अभिषुत २ आत्मप्रतिविंव ३ सब ४ योगसम्पदाओं को ५ सब ओरसे प्राप्त कराता ६ अन्तर्यामी में ७ प्रवेश करता ८,९ परमेश्वरके पानार्थ प्राणपर स्थापन किया जाता है॥ ३॥

प्रभूवसुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्।

असर्जि रथ्यो यथा पवित्रे चम्वोः सुतः। कार्ष्मन्वाजी न्यक्रमीत्॥ ४॥ २५

(चम्वोः) अधिपवणफलकयोः (सुतः) अभिषुतः सोमः (पवित्रे) (असर्जि) सृष्टोऽभूत् (रथ्यः) (यथा) अश्वइव (वाजी) वेगवान्सोमः (कार्ष्मन्) देवानामाकर्षणवति यज्ञे (न्यक्रमीत्) नितरां क्रामति॥ ४॥

भावार्थः - १ अधिपवणफलकोंपर २ अभिषुत सोम ३ पवित्रपर ४ गिरा ५,६ रथ घोड़े की तुल्य ७ वेगवान सोम ८ यज्ञमें ९ प्राप्त होता है॥ ४

अथाध्यात्मम् -(चम्वोः) प्राणापानयोः। चम्व गतौ (सुतः) अभिषुत आत्मप्रतिविंवः (पवित्रे) प्राणे पवित्रं वै प्राणो दानोव्यानश्च श० १।१।३।१ (असर्जि) सृष्टोऽभूत्तदा (रथ्यः) (यथा) अश्व इव (वाजी) वेगवान् (कार्ष्मन्) कार्ष्मनि देवानामाकर्षण

स्थाने कमल समूहे (न्यक्रमीत्) नितरां क्रामति ॥ ४ ॥

भावार्थः – १ प्राण अपान के मध्य २ अभिषुत आत्म मति विंब ३ प्राण में ४ प्रवेश हुआ तब ५,६ घोड़े की तुल्य ७ वेगवान वह ८ कमल समूह में ९ प्राप्त होता है – ॥ ४ ॥

मेध्यातिथिर्ऋषिः गायत्री छन्दो गावो देवताः

प्रथक्प्रावोनभूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः ।
घ्नन्तः कृष्णामपत्वचम् ॥ ५ ॥ २५

(यत्) यस्मात् (भूर्णयः) भ्रमण शीलाः (त्वेषाः) दीप्ताः त्विषदी प्तौ (न) च (अयासः) गमन कुशलाः । अयगतौ (गावः) इन्द्रियाणि वागाद्यृत्विजोवा (अपत्वचम्) सतं पीडितं (कृष्णां) कामं (अपघ्नतः) निरस्यन्तः (प्राक्रमुः) योग यज्ञं प्रवर्त्त यन्तिस्म ॥ ५

भावार्थः – १ जिस कारण २ भ्रमणशील ३ दीप्ति ४ और ५ गमन कुशल ६ इन्द्रियों वा वाक् आदि ऋत्विजों ने ७ पीडित ८ काम को ९ भगाते हुए १० योग यज्ञ को प्रवृत्त किया – ॥ ५ ॥

अस्याः परस्याश्च निध्रुविर्ऋषिः गायत्रीछन्दः सोमोदेवता

अपघ्नन्पवसे मृधः क्रतुवित्सोम मत्सरः । नुदस्वादेवयुंजनम् ॥ ६ ॥ २६

परमेश्वरोपदेशः हे (सोम) आत्म मति विंब (मत्सरः) मयि गति शीलः (क्रतुवित्) योग यज्ञस्य ज्ञाता त्वं (मृधः) हिंसकान्कामादीन् शत्रून् (अपघ्नन्) मारयन् (पवसे) गच्छसि तस्मात् (अदेवयुम्) अदेव कामं मनः (नुदस्व) योग कर्माणि प्रेरय ॥ ६ ॥

भावार्थः – परमेश्वर का उपदेश १ हे आत्म मति विंब २ मुझ में गति

शील ३ योग यज्ञ के स्नाता तुम ४ हिंसक शत्रु काम आदि को ५ मारते ६ चलते हो उस कारण ७ अदेव कामा मन को ८ योग कर्म में प्रेरण करो—॥ ६॥

विनियोगः पूर्ववत्

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३
अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः हिन्वानो मानुषीरपः ॥ ७ ॥ २७

हे आत्म मति बिंब (मानुषीः) नर सम्बन्धीनि (अपः) कमलान्तरिक्षाणि (हिन्वानः) सेवमानस्त्वं । हिवि प्रीणने (स्वा० प०) (त्वया) आत्मरूपया (धारया) (पवस्व) ब्रह्माणि गच्छ (यया) आत्मारूपधारया (सूर्यम्) (अरोचयः) प्रकाशयः ॥ ७॥

भावार्थः—हे आत्ममति बिंब १ नर सम्बंधी २ कमलान्तरिक्षों को ३ सेवन करते तुम ४ आत्मारूप ५ धारा के साथ ६ ब्रह्म में जाओ ७ जिस आत्मारूप धारा के द्वारा ८ सूर्य्य को तुमने प्रकाशित किया है—॥ ७॥

अमहीयुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

२ ३ २३ ३ १ २ ३ २ ३ २ २ २
स पवस्व य आविथेन्द्रं वृत्राय हन्तवे । ववृवांसं महीरपः ॥ ८ ॥ २८

(यः) त्वं (वृत्राय) पापस्य (हन्तवे) हन्तुं (महीः) महान्ति (अपः) कमलान्तरिक्षाणि (ववृवांसम्) नानादेवरूपैः निरुन्धानं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (आविथ) तर्पयसि । अव तर्पणे (स) त्वं (पवस्व) ब्रह्मणि गच्छ ॥ ८॥ २८

भावार्थः—१ जो तुम २,३ पापनाश के लिये ४ महान ५ कमलान्तरिक्षों को ६ नानादेव रूप से व्याप्त करने वाले ७ परमेश्वर को ८ तृप्त करते हो ९ वह तुम १० ब्रह्म में जाओ ॥ ८॥ अमहीयुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा। अवाहन्नवतीर्नव ॥ ९ ॥ २९

हे (इन्दो) आत्मप्रतिबिंब (अया) आत्मरूपेण (वीती+आ) वीत्यायोगमार्गेण (परिस्रव) परिगच्छ (यः) (ते) नव योगमार्गः (मदेषु) अहंब्रह्मास्मीति मदेषु (नवतीर्नव) नवनवति संख्याकारुपाधीः (अवाहन्) जघान ॥ ९ ॥

भावार्थः — १ हे आत्मप्रतिबिंब २ आत्मा रूप ३ योगमार्ग से ४ चलो ५ जिस ६ तेरे योगमार्ग ने ७ अहंब्रह्मास्मि मदों में ८ नवनवति संख्यावाली उपाधियों को ९ नष्ट किया — ॥ ९ ॥ उवष्य ऋषिः शेषं पूर्ववत्

परि द्युक्षं सनद्रयिम्भरद्वाजन्नो अन्धसा। स्वानो अर्ष पवित्र आ ॥ १० ॥ ३०

हे आत्मप्रतिबिंब (स्वानः) आत्मैवानो यस्य सत्वं (नः) अस्माकं वागाद्यात्विजां (द्युक्षम्) द्युतौ क्षियन्तं दीप्तं (सनद्रयिम्) सनातनधनवन्तं (भरद्वाजम्) मनः। मनो वै भरद्वाज ऋषिः श० ८।१।१।९ (अन्धसा) भूतात्मा रूपान्नेन सह गृहीत्वा (पवित्रे) प्राणे (आ अर्ष) पर्य्यर्षपरिगच्छ ॥ १० ॥ ३०

भावार्थः — हे आत्मप्रतिबिंब १ आत्मरथस्य नुम २ हम वाक् आदि ऋत्विजों के ३ दीप्त ४ सनातन धनवान ५ मनको ६ भूतात्मा रूप अन्न सहित लेकर ७ प्राणमें ८ प्रवेश करो — ॥ १० ॥ ३०

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने पञ्चमस्याध्यायस्य तृतीयः खण्डः ३

अथ चतुर्थः खण्डः

मेध्यातिथिर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

अचिक्रदद्वृषा हरिर्महान्मित्रो न दर्शतः । सं सूर्येण दिद्युते ॥१॥ ३१

यदा (मित्रः) (न) सूर्य इव (दर्शतः) दर्शनीयः (महान्) वागाद्यृत्विग्भिः पूज्यः (वृषा) धर्मात्मा (हरिः) मानससूर्यः (अचिक्रदत्) महावाचमुच्चारयति तदा (सूर्येण) समष्टिसूर्यरूपेण (दिद्युते) दिवि प्रकाशते ॥१॥

भाषार्थः – जब १,२ सूर्य की समान ३ दर्शनीय ४ वाक् आदि ऋत्विजों से पूज्य ५ धर्मात्मा ६ मानस सूर्य ७ महावाक् को उच्चारण करता है तब ८ समष्टि सूर्य के साथ ९ स्वर्ग में प्रकाश करता है ॥१॥

भृगुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

आ ते दक्षम्मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे । पान्तमा पुरुस्पृहम् ॥२॥ ३२

वागाद्यृत्विजः कथयन्ति हे आत्ममति बिंब (अद्य) (मयोभुवम्) जीवन्मुक्ति सुखस्य भावयितारं (ते) तव (दक्षम्) बलं (आवृणीमहे) सम्भजामहे (वह्निम्) मोक्षप्रापकं बलं (आ) आवृणीमहे (पुरुस्पृहम्) बहुभिः स्पृहणीयं (पान्तम्) संसाराद्रक्षकं बलं (आ) आवृणीमहे ॥२॥

भाषार्थः – वाक् आदि ऋत्विज कहते हैं हे आत्ममति बिंब १ अब २ जीवन मुक्ति सुख के दाता ३ तेरे ४ बल को ५ हम सेवन करते हैं ५ मोक्षप्रापक बल को ६ सेवन करते हैं ७ बहुतों के स्पृहणीय ८ संसार से रक्षक बल को ९ सेवन करते हैं ॥२॥

उचथ्य ऋषिर्गायत्री छन्दो ऽध्वर्युर्देवता-

अध्वर्यो अद्रिभिः सुतꣳ सोमम्पवित्र आनय।
पुनाहीन्द्राय पातवे॥३॥३३

हे (अध्वर्यो) (अद्रिभिः) ग्रावभिः (सुतम्) अभिषुतं (सोमं) (पवित्रे) (आनय) प्रापय (इन्द्राय) (पातवे) इन्द्रस्य पानाय (पुना हि) पूतं कुरु॥३॥

भावार्थः –१ हे अध्वर्यु २ ग्रावाओं से ३ अभिषुत ४ सोम को ५ पवित्र पर ६ धारण करो ७,८ इन्द्र के पानार्थ ९ पवित्र करो–॥३॥

अथाध्यात्मम् – हे (अध्वर्यो) ज्ञानचक्षुः। चक्षुर्वै यज्ञस्याध्वर्युः श० १४।६।१।६ (अद्रिभिः) प्राणैः। प्राणा वै ग्रावाणः श० १४।२।२।३३ (सुतम्) अभिषुतं (सोमम्) आत्म प्रति बिंबं (पवित्रे) प्राणे (आनय) (इन्द्राय) (पातवे) परमेश्वरस्य पानाय (पुनाहि) पूतं कुरु॥३॥

भावार्थः

१ हे ज्ञानचक्षु २ प्राणों से ३ अभिषुत ४ आत्म प्रतिबिंब को ५ प्राण पर ही ६ धारण करो ७,८ परमेश्वर के पानार्थ ९ पवित्र करो–॥३॥

अवत्सार ऋषिर्गायत्री छन्दः सोमो देवता-

तरत्स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः। तरत्स मन्दी धावति॥४॥३४

(सः) (मन्दी) अहं ब्रह्मास्मीति मदरतः प्रतिबिंबस्थ आत्मा (सुतस्य) अभिषुतस्य (अन्धसः) अन्नरूप प्रतिबिंबस्य (धाराः) इन्द्रियरूपा धाराः (तरत्) तरन् सन् (धावति) ब्रह्माणि गच्छति (सः) (मन्दी) आत्मा (तरत्) मायोपाधिं तरन् (धावति) ब्रह्म

णि गच्छति ॥ ४ ॥ **भाषार्थः**

१ वह २ अहंब्रह्मास्मि मदमें मीतिमान मतिविंवस्थ आत्मा ३ अभिषुत ४ अन्नरूप मतिविंवकी ५ इन्द्रियरूप धाराओंको ६ तरता ७ ब्रह्ममें जाता है ८ वह ९ आत्मा १० मायोपाधिको तरता ११ ब्रह्ममें माप्त होता है ॥ ४

द्वयोर्निध्रुविर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

आपवस्व सहस्रिणं रयिं सोम सुवीर्य्यम्। अस्मे श्रवांसि धारय ॥ ५ ॥ ३५

वागाद्यृत्विजः मार्थयन्ति हे (सोम) आत्ममतिविंवत्वं (सहस्रिणम्) सहस्रः मकाशको महानारायणस्तत्सम्बंधिनं (सुवीर्यम्) सुष्ठुवल सम्पन्नं (रयिम्) योगधनं (आपवस्व) आभिमुख्येन स्रर आपिच (अस्मे) अस्मासु (श्रवांसि) योगार्हान्नानि (धारय) स्थापय ॥ ५ ॥ ३५

भाषार्थः - वाक आदि ऋत्विज मार्थना करते हैं १ हे आत्म मतिविंव तुम २ महानारायण सम्बंधी ३ सुवल सम्पन्न ४ योगधन को ५ माप्त करो सो ६ और हमारे पास ७ योग योग्य अन्नोंको ८ स्थापन करो - ॥ ५ ॥

विनियोगः पूर्ववत्-

अनु प्रत्नास आयवः पदं नवीयो अक्रमुः।
रुचे जनन्त सूर्य्यम् ॥ ६ ॥ ३६

(प्रत्नासः) पुराणाः (आयवः) माणाः (नवीयः) नवतरं (पदम्) स्थानं ब्रह्माण्डं (अन्वक्रमुः) व्याप्तवन्तः (सूर्य्यम्) मानस सूर्यं (रुचे) ब्राह्मज्योतिषि (जनन्त) जनयन्त। जीव एव ब्रह्माण्डोपाधेः कारणस्तस्मात्तस्यसायुज्य एवोपाधेर्नाश इत्यर्थः ॥ ६

भावार्थः –१ पुराण २ प्राणोंने ३,४ नवतर स्थान ब्रह्माण्ड को ५ व्याप्त किया ६ मानस सूर्य्य को ७ ब्राह्मज्योति सूर्यमें ८ स्थापन किया ॥ ६॥

भृगु ऋषिः शेषं पूर्ववत्

अर्षा सोम द्युमत्तमो भि द्रोणानि रोरुवत्।
सीदन्यो नौ वनेष्वा ॥७॥ ३७

हे (सोम) आत्म प्रतिविंब (द्युमत्तमः) अतिशयेन दीप्तिमान् त्वं (रोरुवत्) अहं ब्रह्मास्मीति शब्दं कुर्वन् (वनेषु) अन्तरिक्षेषु (द्रोणानि) कमलानि (आसीदन्) (योनौ) ब्रह्माणि (अर्ष) गच्छ॥७॥

भावार्थः

१ हे आत्म प्रतिविंब २ महादीप्तिमान तुम ३ अहं ब्रह्मास्मि शब्द को उच्चारण करते ४ अन्तरिक्षों में ५ कमलों को ६ प्राप्त करते ७ ब्रह्ममें ८ प्रवेश करो ॥७॥

कश्यप ऋषिः शेष पूर्ववत्-

वृषा सोम द्युमाँ असि वृषा देव वृषव्रतः।
वृषा धर्माणि दधिषे ॥ ८ ॥ ३८

हे (देव) विद्वन् (सोम) आत्मप्रतिविंब (वृषा) धर्म रूपः (वृषा) मानस सूर्य स्त्वं (द्युमान्) दीप्तिमान् (वृषव्रतः) धर्मव्रतः (असि) (वृषा) समष्टि सूर्य्य रूपस्त्वं (धर्माणि) धारण योग्यानि लोकानि (दधिषे) दधिषे धारयसि ॥ ८ ॥

भावार्थः – १ हे विद्वन् २ आत्मप्रतिविंब ३ धर्मरूप ४ मानस सूर्य तुम ५ दीप्तिमान ६ धर्मव्रत ७ हो ८ समष्टि सूर्यरूप तुम ९ धारण योग्य लोकों को १० धारण करते हो ॥ ८॥ कश्यप ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

वृषे पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः।

इन्दो रुचाभिगा इहि ॥ ९ ॥ ३९

हे (इन्दो) आत्मप्रतिबिंब (मनीषिभिः) मेधाविभिर्वागाद्यृत्विग्भिः (मृज्यमानः) शोध्यमानस्त्वं (इषे) अमृतवृष्ट्यै (धारया) (पवस्व) ऊर्ध्वंगच्छ पुनः (रुचा) दीप्त्या (गाः) इन्द्रियाणि (अभीहि) उत्थाने प्राप्नुहि ॥ ९॥

भाषार्थः

१ हे आत्मप्रतिबिंब २ मेधावी वाक् आदि ऋत्विजों से ३ शोध्यमान तुम ४ अमृत वर्षा के लिये ५ धारा द्वारा ६ ऊंचे को चलो फिर उत्थान में ७ दीप्ति द्वारा ८ इन्द्रियों को ९ प्राप्त करो ॥ ९ ॥ असित ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

मन्द्रयासोम धारया वृषा पवस्व देवयुः। अव्यो वारेभिरस्मयुः ॥१०॥४०

हे (सोम) आत्मप्रतिबिंब (अस्मयुः) उत्थाने अस्मत्कामः (देवयुः) समाधौ देवकामः (वृषा) मानससूर्यस्त्वं (अव्या वारेभिः) सूर्येण त्वया आच्छादितैर्वागाद्यृत्विग्भिः सहितः सन् (मन्द्रया) अहं ब्रह्मास्मीति गम्भीरध्वनिवत्या (धारया) (पवस्व) ऊर्ध्वं गच्छ ॥१०

भाषार्थः — १ हे आत्मप्रतिबिंब २ उत्थान में हमको चाहने वाले ३ समाधि में देव कामा ४ मानस सूर्य तुम ५ वाक् आदि ऋत्विज सहित ६ अहं ब्रह्मास्मि नाम गंभीरध्वनि वाली ७ धारा के साथ ८ ऊपर को चलो — ॥ १० ॥

कविः ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

अया सोम सुकृत्यया महान्त्सन्नभ्यवर्द्धथाः। मन्दान इद्वृषायसे ॥ ११॥ ४१

हे (सोम) आत्मप्रतिबिंब त्वं (सुकृत्यया) (अया) शोभन कृत्यारूपया शक्त्या (महान्) (सन्) (अभ्यवर्द्धथाः) वृद्धिं प्राप्नोसि (

(मन्दानः) ब्रह्मानन्द युक्तः (इत्) एव (वृषायसे) वृषवदाचरसि॥११॥

भाषार्थः

१ हे आत्म प्रतिविंब तुम २,३ शोभन कृत्या रूप पराशक्ति द्वारा ४ महान् ५ होने ६ वृद्धि को पाओ ७ ब्रह्मानंद युक्त ८ ही ९ वृषभकी समान आचरण करते हो॥११॥

जमदग्निऋषिः शेषं पूर्ववत्-

अयं विचर्षणिर्हितः पवमानः। स चेतति। हिन्वान आप्यं बृहत्॥१२॥ ४२

(अयम्) (विचर्षणिः) विद्रष्टा (हितः) योग मार्गे निहितः (हिन्वानः) प्रेरितः (पवमानः) संस्कृत आत्म प्रतिबिंबः (आप्यम्) गगनान्तरिक्षस्थं (बृहत्) ब्रह्म (सचेतति) सम्यगान यति प्राप यति॥१२॥

भाषार्थः - १ यह २ विशेषद्रष्टा ३ योग मार्ग में स्थापित ४ प्रेरित ५ संस्कृत आत्मप्रति विंब ६ गगनान्तरिक्षस्थ ७ ब्रह्मको ८ प्राप्त कराता है॥१२॥

अयास्यऋषिः शेषं पूर्ववत्-

प्र न इन्दो महे तुन ऊर्मिं न बिभ्रदर्षसि। अभि देवाँ अयास्यः॥१३॥ ४३

हे (इन्दो) आत्मप्रति विंबत्वं (नः) अस्माकं वागाद्यृत्विजां (महे) (तुने) महाधनाय योग धनाय (प्रार्षसि) प्रगच्छसि (न) च (अः) अमृतरूपस्त्वं (ऊर्मिम्) योगोर्मिं (बिभ्रत्) धारयन् (देवान्) महापुरुष पुरुषान् (अभ्ययासि) प्रापयासि। अयगतौ॥१३॥

भाषार्थः - १ हे आत्म प्रति विंब तुम २ हम वाक् आदि ऋत्विजों के ३,४ महाधन योगधनके लिये ५ योग मार्ग में चलते हो ६ और ७ अमृत रूप तुम ८ योग ऊर्मि को ९ धारण करते १० महा पुरुष पुरुषों को ११

प्राप्त कराते हैं—॥१३॥ अमहीयुऋर्षिः शेषं पूर्ववत्

अपघ्नन्पवते मृधोऽप सोमो अराव्णः। गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम्॥१४॥ ४४

(सोमः) आत्मप्रतिबिंबः (अराव्णः) अदानशीलान् (मृधः) हिंसकान्कामादीन् (अपघ्नन्) ताडयन् (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य (निष्कृतम्) संस्कृतं लोकं (गच्छन्) (पवते) संस्कृतो भवति १४

भाषार्थः—१ आत्मप्रतिबिंब २ अदानशील ३ हिंसक काम आदि को ४ ताडन करता ५ परमेश्वर के ६ संस्कृत लोक को ७ प्राप्त करता ८ संस्कृत होता है—॥१४॥

इतिश्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने पञ्चमस्याध्यायस्य चतुर्थ खंडः

अथ पञ्चमः खण्डः ५

भरद्वाजादयः सप्तऋषयः बृहती छन्दः सोमो देवता

पुनानः सोम धारयापो वसानो अर्षसि। आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदस्युत्सो देवो हिरण्ययः॥१॥—४५

हे (सोम) जीवात्मन् (देवः) विद्वान् (हिरण्ययः) (उत्सः) ज्योतिर्मय जलप्रवाह रूपः (पुनानः) अस्माकं वागाद्यृत्विजां शोधकस्त्वं (अपः) कमलान्तरिक्षाणि (धारया) (वसानः) आच्छादयन् (अर्षसि) गच्छसि तया (रत्नधा) योगधनानां धारकस्त्वं (ऋतस्य) ब्रह्मणः (योनिम्) लोकं (आसीदसि)॥१॥

भाषार्थः—१ हे जीवात्मन् २ विद्वान् ३,४ ज्योतिर्मय जलप्रवाह

रूप ५ हम पाक आदि ऋत्विजों के शोधक तुम ६ कमलांतरिक्षों को ७ धारा से ८ आच्छादन करते ९ चलते हो तथा १० योग धनों के धारक तुम ११ ब्रह्म के १२ लोक को १३ प्राप्त करते हो ॥१॥ ऋषिश्छन्दश्च पूर्ववत्

परीतो षिञ्चता सुत ँ सोमो य उत्तम ँ हविः। दधन्वाँ यो नर्यो अप्स्वा ३ न्तरा सुषाव सोममद्रिभिः २।४६

हे (अः) आत्मारूपयजमानाः (सुतम्) अभिषुतमात्मप्रतिविंबं (इतः) मानसकमलादूर्ध्वं (परिषिञ्चत) (अः) ज्ञानचक्षुः (सोमम्) यमात्मप्रतिविंबं (अद्रिभिः) प्राणैः (आसुषाव) अभिषुतञ्चकार (यः) (सोमः) आत्मप्रतिविंबः (उत्तमम्) (हविः) (यः) (नर्यः) नरयोग्यः (अप्सु) कमलान्तरिक्षेषु (अन्तः) मध्ये (दधन्वान्) प्राप्तो भवति ॥२॥

भावार्थः – १ हे आत्मारूप यजमानो २ अभिषुत आत्मप्रतिविंब को ३ इस मानस कमल से ऊपर ४ सींचो ५ ज्ञानचक्षु ने ६ जिस आत्मप्रतिविंब को ७ प्राणों से ८ अभिषुत किया ९ जो १० आत्मप्रतिविंब ११,१२ उत्तम हवि है १३ जो १४ नरयोग्य १५ कमलान्तरिक्षों के १६ मध्य १७ प्राप्त होता है ॥२॥

ऋषिश्छन्दश्च पूर्ववत्सोमो देवता

आ सोम स्वानो अद्रिभिस्तिरो वाराण्यव्यया। जनो न पुरि चम्वोर्विशद्धरिः सदो वनेषु दधिषे ३-४७

हे (सोम) आत्मप्रतिविंब (अद्रिभिः) प्राणैः (स्वानः) अभिषूयमाणस्त्वं (अव्यया वाराणि) अव्ययेन सूर्येणाच्छादितान् लोकान् (तिरः) तिरस्कुर्वन् (आपवसे) सुषुम्णामार्गेण गच्छसि तथा (हरिः) मानससूर्यस्त्वं (चम्वोः) प्राणापानयोर्मध्ये। चम्वगतो

(विशन्) प्रविष्टः सन् (वनेषु) कमलान्तरिक्षेषु (सदः) स्थानं (दधिषे) दधिषे (न) यथा (जनाः) (पुरि) ॥ ३ ॥

भावार्थः – १ हे आत्मप्रति बिंब २ प्राणों से ३ अभिषूयमाण तुम ४ सूर्य्य से आच्छादित लोकों को ५ तिरस्कार करते ६ सुषुम्णा मार्ग से जाते हैं तथा ७ मानस सूर्य तुम ८ प्राण अपान के मध्य ९ प्रविष्ट होते १० कमलान्तरिक्षों में ११ स्थान को १२ करते हो १३ जैसे १४ मनुष्य १५ पुरी में—॥ ३ ॥

विनियोगः पूर्ववत्

प्रसोमदेववीतये सिन्धुर्न्नपिप्ये अर्णसा। अंशोः पयसा मदिरोनजागृविरच्छाकोशं मधुश्चुतम् ॥ ३ ॥ ४८

हे (सोम) आत्मप्रति बिंब (मदिरः) मयात्मना प्रेरितः (न) च (जागृविः) जागरण शील स्त्वं (देववीतये) देवस्य तर्पणाय (अंशोः) ब्रह्मांशु रूपस्य स्वकीयात्मनः (पयसा) प्राणेन श० ६।५।४।१५ (अर्णसा) नदी रूपेन्द्रिय समूहेन। अर्णीः नद्यः नि० (मधुश्चुतं) ब्रह्म ज्ञानस्य क्षारयितारं श० १४।५।५।१६ (कोशम्) गगन मण्डलं (अच्छ) आप्तुं (प्रपिप्ये) प्रवर्द्धसे ॥ ३ ॥

भावार्थः – १ हे आत्मप्रति बिंब २ मुझ आत्मा से प्रेरित ३ और ४ जागरणशील तुम ५ देवता के तर्पणार्थ ६ ब्रह्मांशु रूप अपने आत्मा ७ प्राण ८ और नदी रूप इन्द्रिय समूह के साथ ९ ब्रह्मज्ञानदाता १० गगन मंडल के ११ प्राप्त करने को १२ बड़ी वृद्धि पाते हो ॥ ४ ॥ विनियोगः पूर्ववत्

सोमउष्वाणः सोतृभिरधिष्णुभिरवीनाम्। अश्वयेव हरितायाति धारयामन्द्रयायाति धारया ॥

(सोत्रेभिः) घृणवद्भिर्वाग्गद्यृत्विग्भिः (ष्वानः) सुवानोऽभिषूयमाणः (उ) आत्मप्रतिबिंबः (अवीनाम्) अन्नवतां प्राणानां। अवः अन्नं नि० (षणुभिः) नाडीभिः सुषुम्णादिभिः (आधियाति) अधिकं गच्छति - तथा (अभ्वया) मानस सूर्य रूपया (मन्द्रया) अहं ब्रह्मास्मीति गम्भीरध्वनि वत्या (धारया) (याति) (इव) यथा (हरिता) हरित वर्ण वत्या (धारया) (सोमः) ॥ ५॥

भावार्थः – १ अभिषवण कर्त्ता वाक् आदि ऋत्विजों से २ अभिषूयमान ३ आत्मप्रति बिंब ४ अन्नवान प्राणोंकी ५ नाड़ी सुषुम्णा आदि के द्वारा ६ अधिक चलता है ७ तथा मानस सूर्य रूप ८ अहं ब्रह्मास्मि गम्भीरध्वनिवाली ९ धाराके साथ १० जाता है ११ जैसे १२ हरित वर्ण वती १३ धाराके साथ १४ सोम—॥५॥ विनियोगः पूर्ववत्

तुवाहं सोम रारण सख्य इन्दो दिवे दिवे।
पुरूणि बभ्रो निचरन्ति मामव परिधी रति
तां इहि ॥६॥ ५०

हे (बभ्रो) अभिरूप (सोम) ईश्वर (अहम्) (दिवे दिवे) अन्वहं (तव) (सख्ये) सखि कर्माणि (रारण) रमे (रणोर्लिटउत्तमेण-लिरूपम्) (पुरूणि) स्थूल सूक्ष्म कारण शरीराणि (न्यवचरन्ति) नीचीनं चरन्ति बाधन्ते (तान्) (परिधीन्) देहान् (अतीहि) आगच्छ (माम्) (अव) रक्ष ॥६॥

भावार्थः – १ हे अग्नि रूप २ ईश्वर ३ में ४ प्रतिदिन ५ आपकी ६ भक्ति में ७ रमण करता हूं परन्तु ८ स्थूलसूक्ष्मकारण शरीर ९ बाधा करते हैं १० उन ११ शरीरोंको १२ प्राप्त करो १३ और मुझ को १४ रक्षा करो ॥६॥

विनियोगः पूर्ववत्

मृज्यमानः सुहस्त्या समुद्रे वाचमिन्वसि। रयिं पिशंगम्बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि ।७।५१

हे (पवमान) मायातीत परमेश्वर पूशोधे (सुहस्त्या) शोभन कर्म वृद्धा (मृज्यमानः) शोध्यमानो ज्ञातस्त्वं (समुद्रे) मनसि (वाचम्) महावाचं (इन्वसि) प्रेरयसि (पिशङ्गं) पिशः पापनिर्मुक्त आत्मानन्त्र वर्त्तमानं (वहुलं) प्रभूतं (पुरुस्पृहं) वहुभिः स्पृहणीयं (रयिम्) योगधनं (अभ्यर्षसि) प्रयच्छसि ॥७॥

भावार्थः – १ मायातीतपरमेश्वर २ शोभन कर्म वाली बुद्धिसे ३ शोध्यमान तुम ४ मनमें ५ महा वाक् को ६ प्रेरणा करते हो ७ निष्पाप आत्मा में वर्त्तमान ८ महान् ९ बहुत के स्पृहणीय १० योग धनको ११ देते हो ॥७॥

विनियोग पूर्ववत्

अभिसोमास आयवः पवन्ते मद्यम्मदम्। समुद्रस्याधि विष्टपे मनीषिणो मत्सरासो मदच्युतः ॥८।५२

(मनीषिणः) मेधाविनः (मत्सरासः) मया ऽन्तर्यामिना प्रेरिताः स्वगतौ (मदच्युतः) मया ऽभिन्नाः (आयवः) गमन शीलाः अयगतौ (सोमासः) प्राणाः (समुद्रस्य) मनसः (अधिविष्टपे) अधिके स्वर्गे भृकुटि मंडले (मद्यं) अहं ब्रह्मास्मीति मदकरं (मदं) आत्म प्रतिविंबं (अभि पवन्ते) अभितो निर्गमयन्ति ॥८॥

भावार्थः – १ मेधावी २ मुझ अन्तर्यामी से प्रेरित ३ मुझसे अभिन्न ४ गमन शील ५ प्राण ६ मनके ७ स्वर्ग भृकुटि मंडल में ८ अहंब्रह्मास्मि मद के कर्त्ता ९ आत्म प्रतिविंब को १० चारों ओर से प्राप्त होते हैं ॥८॥

विनियोगः पूर्ववत्-

पुनानः सोम जागृविरव्या वारैः परि प्रियः। त्वं वि
प्रो अभवोङ्गिरस्तम मध्वा यज्ञं मिमिक्ष णः ९॥ ५३

हे (सोम) आत्मप्रतिबिंब (जागृविः) जागरणशील (प्रियः) वागाद्यृत्विजां प्रियः (पुनानः) शोध्यमानस्त्वं (अव्या वारैः) त्वया मानससूर्येण आच्छादितैः वागाद्यृत्विग्भिः सह (परि) परिगच्छसि हे (अङ्गिरस्तम) समष्टिप्राण। प्राणो वा अङ्गिरा श० ६।१।२।८ (त्वम्) (विप्रः) मेधावी (अभवः) भवसि (नः) अस्मदीयं (यज्ञम्) यज्ञपुरुषं (मध्वा) प्राणेन श० १४।१।३।३ (मिमिक्ष) सिञ्च॥ ९॥

भाषार्थः

१ हे आत्मप्रतिबिंब २ जागरणशील ३ वाक् आदि ऋत्विजों का प्रिय ४ शोध्यमान तुम ५ तुम्हारे मानससूर्य से आच्छादित वाक् आदि ऋत्विजों के साथ ६ चलते हो ७ हे समष्टि प्राण ८ तुम ९ मेधावी १० हो ११ हमारे १२ यज्ञपुरुष को १३ प्राण से १४ सींचो॥ ९॥

विनियोगः पूर्ववत्-

इन्द्राय पवते मदः सोमो मरुत्वते सुतः। सहस्र
धारो अत्यव्यमर्षति तमी मृजन्त्यायवः १०॥ ५४

(सुतः) अभिषुतः (मदः) मदरूपः (सोमः) आत्मप्रतिबिंबः (मरुत्वते) वागाद्यृत्विग्वते (इन्द्राय) आत्मारूपयजमानाय (पवते) गच्छति कथं (सहस्रधारः) प्रकाशकधारारूपः (अव्यम्) मानसंसूर्यस्थानं मानसकमलं (अति) अतिक्रम्य (अर्षति) गच्छति (तम्) (आयवः) प्राणाः (मृजन्ति) शोधयन्ति॥ १०॥

भाषार्थः — १ अभिषुत २ मदरूप ३ आत्मप्रतिबिंब ४ वाक् आदि ऋ

त्विज वाले ५ आत्मा रूप यजमान के लिये ६ जाता है ७ प्रकाशक धारा रूप ८ मानस सूर्य के स्थान मानस कमल को ९ अतिक्रमण कर १० जाता है ११ उसको १२ प्राण १३ शोधन करते हैं—॥ १० ॥

विनियोगः पूर्ववत्

पवस्व वाजसातमोऽभि विश्वानि वार्य्या । त्वꣳ समुद्रः प्रथमे विधर्मन्देवेभ्यः सोम मत्सरः ॥ ११ ॥ ५५

हे (सोम) आत्म प्रतिबिंब (वाजसातमः) प्राणेन्द्रिय रूपान्नों दाता (देवेभ्यः) (मत्सरः) मयान्तर्यामिना प्रेरित (समुद्रः) मनोरूपः (त्वं) (विश्वानि) सर्वाणि (वार्या) वरणीयानि देवस्थान कमलानि (अभि) अभिलक्ष्य (प्रथमे) मुख्ये (विधर्मन्) विशेषेण धारके गगन मण्डले (पवस्व) गच्छ ॥ ११ ॥

भावार्थः— १ हे आत्म प्रतिबिंब २ प्राण इन्द्रिय रूप अन्नों के दाता ३ देवताओं के लिये ४ मुझ अन्तर्यामी से प्रेरित ५ मनरूप ६ तुम ७ सब ८ वरणीय देवस्थान कमलों को ९ देखकर १० मुख्य ११ विशेष धारक गगन मंडल में १२ जाओ ॥ ११ ॥ विनियोगः पूर्ववत्

पवमाना असृक्षत पवित्रमति धारया । मरुत्वन्तो मत्सरा इन्द्रिया हया मेधामभि प्रयाꣳसि च ॥ १२ ॥ ५६

(मरुत्वन्तः) प्राणैर्युक्ताः (मत्सराः) मयान्तर्यामिना प्रेरिताः (इन्द्रियाः) इन्द्रिय रूपाः (हयाः) अश्वाः (मेधाम्) योगलक्षणां प्रज्ञां (च) (प्रियांसि) देवस्थान कमलानि (अभि) अभिलक्ष्य (पवमानाः) शोध्यमानाः सन्तः (धारया) (पवित्रम्)

माणं (अति) अतीत्य (असृक्षत) आत्मनि स्टज्यन्ते ॥ १२॥

भाषार्थः – १ माणोंसे युक्त २ मुक्त अन्तर्यामी से मेरित ३ इन्द्रिय रूप ४ घोड़े ५ योगलक्ष्य मज्ञाको ६,७ और देवस्थान कमलों को ८ देखकर ९ शोध्यामान होते १० धारासे ११ माणको १२ अति क्रमण कर १३ आत्मा में गिरते हैं ॥ १२॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूरामसूनुज्वालामसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने पञ्चमस्याध्यायस्य पंचमः खण्डः ५

अथ षष्ठः खण्डः

उशना ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता

प्रनुद्रव परि कोशं निषीद नृभिः पुनानो अभि वाजमर्ष। अश्वंनत्वा वाजिनं मर्जयन्तोच्छा बर्ही रशनाभिर्नयन्ति ॥ १॥ ५७

हे आत्ममति विंब (नु) क्षिमं (मद्रव) मगच्छ (कोशम्) गगनमण्ड (परिनिषीद) निषण्णो भव (न) च (नृभिः) नेतृभिः माणैः (पुनानः) शोध्यमानः (वाजम्) विराड् रूपान्न मात्मा रूप यजमानार्थ मुद्दिश्य (अभ्यर्ष) अभिगच्छ यस्मात् (वाजिनम्) वलवन्तं (अश्वम्) मानससूर्य (त्वाम्) (मर्जयन्तः) शोधयन्तः माणाः (रशनाभिः) नाडीभिः (बर्हिः) सुषुम्णां मति (अच्छ) आभिमुख्येन (नयन्ति) मापयन्ति ॥ १॥

भाषार्थः – हे आत्म मति विंब १ शीघ्र २ दौड़ो ३ गगन मंडल में ४ पहुंचो ५ और ६ नेता माणोंसे ७ शोध्यमान ८ विराड् रूप अन्न को आत्मा रूप यजमान के लिये उद्देश करके ९ माप्त करो जिस कारण १० वलवान ११ मा

नससूर्य १२ तुमको १३ शोधन करतेभाण १४ नाड़ीद्वारा १५ सुषुम्णा के १६ सन्मुख १७ प्राप्त करते हैं ॥१॥

वृषगणो वासिष्ठ ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः श्री वाराहो देवता·

प्रकाव्यमुशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति। महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्येति रेभन् ॥२॥ ५८॥

(उशना) शुक्रः (इव) (काव्यं) स्तोत्रं (ब्रुवानः) उच्चारयन् (देवः) वेदाभिमानी देवः (देवानाम्) अवताराणां (जनिमा) जन्मानि (प्रविवक्ति) प्रकर्षेण वदति (महिव्रतः) पृथिव्या धारकः दृढव्रतौ (शुचिबन्धुः) दीप्ततेजस्कः (पावकः) पापानां शोधकः (वराहः) श्रीवाराहावतारः (रेभन्) शब्दं कुर्वन् (पदा) पादेन (अभ्येति) देवानां समीपे गच्छति ॥२॥

भाषार्थः – १,२ शुक्र जी की समान ३ स्तोत्र को ४ उच्चारण करता ५ वेदाभिमानी देवता ६ अवताररूपदेवताओं के ७ जन्मों को ८ कहता है ९ भूमि को धारण करने वाले १० महातेजस्वी ११ पापनाशक १२ श्री वाराह जी १३ शब्द करते १४ पदाति १५ देवताओं के समीप जाते हैं ॥२॥

पराशर ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर्ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम्। गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यन्ति मतयो वावशानाः ॥३॥ ५९॥

(वह्निः) भूमेर्वोढा श्री वाराहावतारः (तिस्रः) (वाचः) ऋग्यजुः सामात्मिकाः तथा (ऋतस्य) विष्णोः (धीतिम्) पाल-

नकर्म (ब्रह्मणः) (मनीषाम्) सृष्टि कर्त्री बुद्धिं (प्रेरयति) तस्मि न्काले (गावः) इन्द्रिय रूपात्मांशवः (एच्छमानाः) गुरुं पृच्छ न्तः सन्तः (गोपतिम्) आत्मानं (यन्ति) गच्छन्ति (वावशानाः) कामयमानाः (मतयः) बुद्धयः (सोमम्) आत्म प्रतिबिंबं (यन्ति) गच्छन्ति ॥३॥

भाषार्थः – १ भूमि के धारक श्रीवाराहजी २,३ ऋग्यजुसामरूप वचनों को तथा ४ विष्णु के ५ पालन कर्म ६ और ब्रह्माजी की ७ सृष्टि कर्त्री बुद्धि को ८ प्रेरणा करते हैं उस समय ९ इन्द्रिय रूप आत्मांश १० गुरु को पूछ ते ११ आत्मा को १२ प्राप्त करते हैं १३ काम यमान १४ बुद्धियां १५ आत्म प्रति बिंब को १६ प्राप्त करती हैं —॥३॥ वसिष्ठ ऋषिः शेषं पूर्ववत्

अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः समपृ क्त रसम्। सुतः पवित्रम्पर्येति रेभन्मितेव सद्म प शुमन्ति होता ४॥ ६०

(अस्य) महापुरुषावतारवराहस्य (प्रेषा) प्रकृष्टेच्छया (देवः) सूर्यः (हेमना) हिमजलेन (देवेभिः) मेघैश्च (रसम्) (समपृक्त) भूमौ समयोजयत् तदा (पूयमानः) शोध्यमानः (सुतः) आभिषु त आत्म प्रतिबिंबः (रेभन्) अहं ब्रह्मास्मीति शब्दं कुर्वन् (पवि त्रम्) प्राणं (पर्येति) परिगच्छति (इव) यथा (मिता) मनुष्यः (होता) देवानामाह्वाताऋत्विक् (पशुमन्ति) (सद्म) सद्मा नि यस्य गृहान् ॥४॥ **भाषार्थः**

१ महापुरुषावतार वराहजी की २ इच्छा से ३ सूर्य देवता ४ हिमजल ५ और मेघों के द्वारा ६ रस को ७ भूमि पर प्राप्त करता है ८ तब शोध्यमान ९ अभिषु

त आत्मप्रतिबिंब १० अहंब्रह्मास्मि शब्द करता ११ मांए को १२ प्राप्त करता है १३ जैसे १४,१५ देवताओं का आह्वाता मनुष्य ऋत्विज १६ पशुमान १७ यज्ञशालाओं को—॥४॥ प्रतर्दन ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो महापुरुषो देवता·

सोमः पवते जनिता मतीनाञ्जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः। जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः ५—३६१

(मतीनाम्) विद्यानां (जनिता) जनयिता (दिवः) द्युलोकस्य (जनिता) (पृथिव्याः) (जनिता) (अग्नेः) (जनिता) (सूर्यस्य) (जनिता) (इन्द्रस्य) (जनिता) (उत) (अपिच) विष्णोः (जनिता) (सोमः) महापुरुषो महानारायणः (पवते) भक्तानां हृदये प्राप्तो भवति॥ ५॥

भाषार्थः

१ विद्याओं का २ उत्पादक ३ स्वर्गलोक का ४ जनिता ५ पृथिवी का ६ उत्पन्न करनेवाला ७ अग्नि का ८ स्वष्टा ९ सूर्य का १० जनक ११ इन्द्र का १२ रचनेवाला १३ और १४ विष्णु का १५ प्रकट करनेवाला १६ महापुरुष महानारायण १७ भक्तों के हृदय में प्राप्त होता है॥ ५॥

वसिष्ठ ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो विराट्पुरुषो देवता·

अभि त्रिपृष्ठं वृषणं वयोधामङ्गोषिणमवावशन्त वाणीः। वना वसानो वरुणो न सिन्धुर्वि रत्नधा दयते वार्याणि॥ ६॥ ६२

(त्रिपृष्ठं) भूम्यन्तरिक्षस्वर्गाख्यानि पृष्ठानि यस्य तं (वृषणम्) वर्षकं (वयोधाम्) अन्नस्य धारकं (अङ्गोषिणं) अंगे विराट्रूपः देहे उषिणं वसन्तं पुरुषं (वाणीः) वेदवाचः (अभ्यवावशन्त)

काम यन्ते सु (रत्नधाः) रत्नानां धारकः (वार्याणि) वननीयानि धनानि (दयते) स्तोतृभ्यः प्रयच्छति (न) यथा (वरुणः) (सिन्धुः) च (वना) वनानि उदकानि (वसानः) धारयन् रत्नानि प्रयच्छति ॥ ६॥

भाषार्थः

१ भूमि अन्तरिक्ष स्वर्ग नाम पृष्ठवाले २ वृष्टि कर्त्ता ३ अन्नधारक ४ विराट् देहमें वसने वाले पुरुष को ५ वेदवाणी ६ चाहती हैं ७ वह रत्न धारक पुरुष ८ काम्यधनों को ९ स्तोताओं के लिये देता है १० जैसे ११ वरुण १२ और समुद्र १३ जलों को १४ धारण करते रत्नों को देते है ॥ ६॥

पराशर ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो महापुरुष पुरुषो देवते

अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्मञ्जनयन्प्रजा भुवनस्य गोपाः। वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत्सोमो वावृधे स्वानो अद्रिः ॥७॥ ६३

यदा (समुद्रः) यस्मात्सन्द्रवन्ति देवादयः स (गोपाः) गोलोकपति र्महा पुरुषः (भुवनस्य) ब्रह्माण्डस्य (प्रथमे) मुख्ये (विधर्मन्) विधर्मनि विधारके गोलोके (प्रजाः) (जनयन्) उत्पादयन् (अक्रान्) सर्वं व्याप्नोति तदा (वृषा) वर्षिता (स्वानः) आत्मरथः (बृहत्सोमः) बृहत्सोमरूपः (अद्रिः) सूर्यः (अव्ये) सूर्ययोग्ये (पवित्रे) समष्टिमाणे (अधिसानः) अभिषिच्यमानः (वावृधे) वर्द्धते ॥७॥

भाषार्थः

१ जब सबके प्रादुर्भाव का स्थान २ गोलोकपति महापुरुष ३ ब्रह्माण्ड के ४ मुख्य ५ विधारक गोलोक में ६ प्रजाको ७ उत्पन्न करता ८ सब को व्याप्त करता है तब ९ वृष्टिकर्त्ता १० आत्मरथस्थ ११ बृहत्सोम रूप १२ सूर्य १३ सूर्य संब

न्धी १४ समाप्तिप्राप्तमें १५ अवसिच्यमान १६ दृष्टिपाता है॥७॥

मस्कएव ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दो विष्णुर्देवता।

कनिक्रन्ति हरिरासृज्यमानः सीदन्वनस्य जठरे पुनानः। नृभिर्यतः कृणुते निर्णिजं गामतो मतिं जनयत स्वधाभिः॥ ८॥ ६४

(वनस्य) जलस्य क्षीरसमुद्रस्य (जठरे) (सीदन्) (पुनानः) पवनत्रयो देवा देहरूपा यथा यस्य स क्षीरशायी (आसृज्यमानः) संस्तूयमानः (हरिः) विष्णुः (कनिक्रन्ति) उपदिशति (यतः) (गाम्) पृथिवीं (नृभिः) (निर्णिजं) रूपवतीं (कृणुते) करोति (अतः) (मतिम्) स्तुतिं (स्वधाभिः) हविर्भिः सह (जनयत) उत्पादयत कुरुत ॥

भावार्थः—१ जल क्षीरसमुद्र के २ जठर में ३ विराजमान ४ त्रिदेवरूपवाला क्षीरसमुद्रशायी ५ भलेप्रकार स्तूयमान ६ विष्णु ७ उपदेश करता है ८ जिस कारण ९ पृथिवी को १० मनुष्यों सहित ११ रूपवती १२ करता है १३ उसकारण १४ तुम स्तुति को १५ हविषों सहित १६ प्रकट करो॥ ८॥

उशना ऋषिः त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता।

एष स्य ते मधुमाँ इन्द्र सोमो वृषा वृष्णः परि पवित्रे अक्षाः। सहस्रदाः शतदा भूरिदावा शश्वत्तमं बर्हिरा वाज्यस्थात्॥ ९॥ ६५

हे (इन्द्र) परमेश्वर (वृष्णः) धर्मार्थकाममोक्षाणां वर्षकस्य (ते) तव (एषः) (मधुमान्) ब्रह्मज्ञानी (वृषा) वर्षकः (स्यः) समष्टिसूर्यः (पवित्रे) वायौ। अयं वै पवित्रं योऽयं पवते श० १।१।३।२ (पर्यक्षाः) पर्यस्रवत् (यः) (सहस्रदाः) सहस्रसङ्ख्याकस्य धनस्य

दाता (शतदाः) (वा) (भूरिदाः) (वाजी) सूर्यः श० ६।३।१।२९) (शश्वत्तमम्) अतिशयेन पुराणं (बर्हिः) लोकं। अयंलोको बर्हिः श० १।४।१।२४ (आस्थात्) आधितिष्ठति॥ ९॥

भावार्थः – १ हे परमेश्वर २ चारों पदार्थ के दाता ३ आप का ४ यह ५ ब्रह्मज्ञानी ६ दृष्टि कर्त्ता ७ समष्टि सूर्य ८ वायु में ९ स्थित हुआ १० जो ११ सहस्र संख्यावाले धन का दाता १२ शत संख्या वाले धन का दाता १३ वा १४ बहुदाता १५ सूर्य १६ अतिशय पुराण १७ लोक में १८ स्थित होता है-॥ ९॥

गतदेव ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता-

पवस्व सोम मधुमाꣳ ऋतावापो वसानो अधि सानो अव्ये। अव द्रोणानि घृतवन्ति रोह मदिन्तमो मत्सर इन्द्रपानः ॥१०॥ ६६

हे सोम) आत्म प्रतिविंब (अपः) इन्द्रियान्तरिक्षाणि (वसानः) आच्छादयन् (अव्ये) मानस कमले (अधि सानः) अभिषिच्यमानस्त्वं (मधुमान्) ब्रह्मज्ञानी सन् (पवस्व) ऊर्ध्वं गच्छ पुनः (मदिन्तमः) अतिशयेन मदकरः (इन्द्रपानः) परमेश्वरेण पातव्यः (मत्सरः) मयान्तर्यामिना प्रेरितस्त्वं (घृतवन्ति) रसवन्ति (द्रोणानि) कमलानि (अवरोह)॥१०॥

भावार्थः – १ हे आत्म प्रतिविंब २ इन्द्रियान्तरिक्षों को ३ आच्छादन करते ४ मानस कमल में ५ अभिषिच्यमान तुम ६ ब्रह्मज्ञानी होते ७ ऊपर को चलो फिर ८ अतिशय मदकर्त्ता ९ परमेश्वर के पान योग्य १० मुझ अन्तर्यामी से प्रेरित तुम ११ रसवान् १२ कमलों में १३ उतरो॥ १०॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनुज्वाला प्रसाद शर्म विरचिते सामवे-

दीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने पञ्चमस्याध्यायस्य षष्ठः खण्डः ६

अथ सप्तमः खण्डः

प्रतर्दन ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः श्रीकृष्णो देवता

प्रसेनानीः शूरो अग्रे रथानाङ्गव्यन्नेति हर्षते अस्य
सेना। भद्रान् कृण्वन्निन्द्रहवान्त्सखिभ्य आसो
मो वस्त्रा रभसानि दत्ते॥१॥ ६७

(सेनानी) भक्तसेनानामग्रनेता (शूरः) असुराणां बाधकः कामजयी वा (सोमः) श्रीकृष्णरूपः परमेश्वरः (गव्यन्) इच्छन् (रथानां) वृक्षाणां (अग्रे) (एति) प्रकर्षेण गच्छति (अस्य) (सेना) गोपीसेना (हर्षते) हृष्यति (सखिभ्यः) गोपीभ्यः (इन्द्रहवान्) ताभिः कृतानि परमेश्वरस्य व्रतादीनि (भद्रान्) कल्याणानि यथार्थानि (कृण्वन्) (रभसा) वेगेन (वस्त्राणि) (आदत्ते) गृह्णाति॥१

भाषार्थः – १ भक्तसेनाओंका नेता २ असुरोंका बाधक वा कामजयी ३ श्रीकृष्णरूप परमेश्वर ४ चाहना ५ वृक्षोंके ६ अग्रपर ७ चढता है ८ इसकी ९ गोपकन्यारूप सेना १० हर्षित होती है ११ गोपकन्याओं के लिये १२ उन व्रतों को १३ कल्याणरूप सफल १४ करता १५ वेगसे १६ वस्त्रों को १७ ग्रहण करता है॥१॥ पराशर ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता

प्रते धारा मधुमतीरसृग्रन्वारं यत्पूतो अत्येष्यव्यम्। पवमान पवसे धाम गोनां जज्ञानः सूर्यमपिन्वो अर्कैः॥२॥ ६८

हे (पवमान) शोध्यमानात्मप्रतिबिंब (यत्) यदा (पूतः) पवित्रभूतस्त्वं (अव्यम्) नवमानसमूर्यस्य योग्यं (वारम्) सुषुम्णां (अ

न्यपि) प्राप्नोषि नद्यः (गोनाम्) रश्मीनां (धाम) ब्रह्म (पवसे) गच्छसि (सूर्यम्) (जनयन्) उत्पादयन् (अर्कैः) अर्चनीयैः स्वतेजोभिः (अपिन्वः) पूरयसि ॥ २॥

भावार्थः – १ हे शोध्यमान आत्म प्रति बिंब २ जब ३ पवित्र तुम ४ तुम्हमानस सूर्य के योग्य ५ सुषुम्णा को ६ प्राप्त करते हो ७ नव किरणों के धाम ब्रह्म को ९ प्राप्त करते हो १० सूर्य को ११ प्रकट करते १२ अपने तेजों से १३ पूर्ण करते हो ॥२॥ इन्द्रप्रमतिर्वासिष्ठ ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता-

प्रगायताभ्यर्चाम देवान्त्सोमꣳ हिनोत महते धनाय । स्वादुः पवता अति वारमव्यमा सीदतु कलशं देव इन्दुः ॥ ३॥ ६९

हे वागाद्यृत्विजः (सोमम्) आत्मप्रतिबिंबं (प्रगायत) प्रकर्षेणाभिष्टुत वेदा वयं (देवान्) महापुरुषपुरुषान् (अभ्यर्चामः) अभिष्टुमः (महते) (धनाय) योगैश्वर्याय (हिनोत) आत्मप्रतिबिंबं (स्वादुः) मधुर आत्मप्रतिबिंबः (अव्यम्) मानस सूर्ययोग्यं (वारम्) सुषुम्णां (अतिपवताम्) आभिमुख्येन गच्छतु (देवः) विद्वान् (इन्दुः) आत्मप्रतिबिंबः (कलशम्) प्रजापतिं परमेश्वरं । प्रजापतिर्वै द्रोणकलशः ४।३।१।६ (आसीदतु) आभिमुख्येन तिष्ठतु ॥ ३॥

भावार्थः – हे वाक् आदि ऋत्विजो १ आत्म प्रति बिंब को २ स्तुत करो हम वेद भी ३ महापुरुष पुरुषों को ४ स्तुत करते हैं ५, ६ योगैश्वर्य के लिये ७ आत्म प्रति बिंब को प्रेरित करो ८ मधुर आत्म प्रति बिंब ९ मानस सूर्य सम्बंधी १० सुषुम्णा को ११ सन्मुख प्राप्त करो १२ विद्वान १३ आत्म प्रति बिंब १४ प्रजापति परमेश्वर की १५ सायुज्य को पाओ ॥ ३॥

वासिष्ठ ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता

महिन्वानो जनिता रोदस्यो रथो न वाजं सनिषन्नयासीत्। इन्द्रं गच्छन्नायुधा संशिशानो विश्वा वसु हस्तयोरादधानः॥४॥७०

(रोदस्योः) स्थूलसूक्ष्मदेहयोः (जनिता) (महिन्वानः) वागादृत्विग्भिः प्रेर्यमाण आत्म प्रति विंबः (वाजम्) देहरूपान्नं देवेभ्यः (सनिषन्) सम्भजमानः (इन्द्रम्) परमेश्वरं (गच्छन्) (आयुधा) आयुधानि ज्ञानानि (संशिशानः) सम्यक् तीक्ष्णी कुर्वन् (विश्वा) (वसु) योगैश्वर्याणि (हस्तयोः) (आदधानः) धारयन् (अयासीत्) प्रगच्छति (न) यथा (रथः)॥४॥

भावार्थः — १ स्थूल सूक्ष्म देह का २ उत्पादक ३ वाक् आदि ऋत्विजों से प्रेरित आत्म प्रति विंब ४ देहरूप अन्न को ५ देवताओं के लिये विभाग करता ६ परमेश्वर को ७ प्राप्त करता ८ ज्ञानायुधों को ९ तीक्ष्ण करता १० सब ११ योगैश्वर्यों को १२,१३ प्राप्त करता १४ जाता है १५ जैसे १६ रथ॥४॥

भृङ्गी को वासिष्ठ ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता

तक्षद्यदी मनसो वेनतो वाग् ज्येष्ठस्य धर्मन्द्युक्षोरनीके। आदीमायन्वरमावावशाना जुष्टम्पतिं कलशे गाव इन्दुम्॥५॥७१

(यदी) यदा (वाक्) (धर्मन्) धारके योगयज्ञे (ज्येष्ठस्य) (द्युक्षोः) मानसस्वर्गस्यात्मनः (अनीके) प्रमुखे (वेनतः) कामयमानस्य (मनसः) (तक्षत्) संस्कारं करोति (आत्) अनन्तरमेव (गावः) इन्द्रियाणि (वरम्) वरणीयं (जुष्टम्) मनसा सेवितं (पतिम्) (ईम्) परा

रूपं (इन्दुमे) आत्म प्रति विंवं (वावशाना:) काम यमाना: (कलशे) मनांसि (आयन्) आगच्छन्ति ॥ ५ ॥

भावार्थ: – १ जव २ वाक् ३ धारक योगयज्ञमें ४.५ मानसी स्वर्गस्थ आत्माके ६ मुखमें ७ कामयमान ८ मनका ९ संस्कार करता है १० तदनंतरही ११ इन्द्रियां १२ वरणीय १३ मनसेसेवित १४ पति १५ परारूप १६ आत्म प्रति विंव को १७ चाहती १८ मनमें १९ प्रवेश करती हैं ॥ ५ ॥

नोधाऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सोमो देवता

साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारो दश धीरस्य धीतयो धनुत्रीः। हरिः पर्य्यद्रवज्जाः सूर्यस्य द्रोणं ननक्षे अत्यो न वाजी ॥ ६ ॥ ७२

(साकमुक्ष:) सह सेचन शीला: उक्ष सेचने (स्वसार:) परमेश्वरे गतिशीला: (धीरस्य) प्राज्ञस्य (धनुत्री:) रक्षक: (दश धीतय:) दश महा विद्या: । धीबुद्धिस्तां तनोतीति धीतिः धीतयो महा विद्याः (मर्जयन्ते) आत्म प्रति विंवं शोध यान्ति ततः (हरि:) मानस सूर्य: (सूर्यस्य) सर्वप्रेरक परमेश्वरस्य (जा:) अपत्य रूपान्कमलस्थान्देवान् नि० २।२ (पर्य्यद्रवत्) परितो गच्छति (अत्य:) अतन शीलः (अश्व:) सूर्य: (न) इव (द्रोणं) गगन मण्डलं (ननक्षे) प्राप्नोति नक्षति व्याप्तिकर्मा नि० २।१८।२—॥ ६ ॥

भावार्थ: – १ साथसींचनीवाली २ परमेश्वर में गतिशील ३ ज्ञानी की रक्षक ४ दश महा विद्या ६ आत्म प्रति विंव का शोधन करती हैं तदनन्तर ७ मानससूर्य ८ सर्वप्रेरक परमेश्वरके ९ सन्तान रूप कमलस्थ देवताओं को १० प्राप्त करता है ११ गतिशील १२,१३ सूर्यकी समान १४ गगन मंडलको

२५ व्याप्त करता है॥६॥ कण्वऋषिः शेषं पूर्ववत्

अधि यदस्मिन्वाजिनी व शुभे स्पर्धन्ते धियः सूरे न विशः। अपो वृणानः पवते कवीयान्व्रजन्न पशुवर्द्धनाय मन्म॥७॥७३

(यद्) यदा (अस्मिन्) (वाजिनि) मानससूर्ये (इव) आत्मप्रतिबिंबे (शुभधियः) महाविद्याः (अधिस्पर्द्धन्ते) अहं पुरस्ताच्छोधयाम्यहं पुरतः शोधयामीत्यहमिकया उपतिष्ठते (न) यथा (विशः) प्रजाः (सूरे) सूर्ये तदा (कवीयान्) कविरिवाचरन्नात्मप्रतिबिंबः (अपः) कमलान्तरिक्षाणि (वृणानः) आच्छादयन् (पवते) गच्छति (न) यथा (मन्म) मननीयं वोद्धव्यं रक्षितव्यं (व्रजम्) गवां गोष्ठं (पशुवर्द्धनाय) गोपालः परिगच्छतीति शेषः॥७॥

भाषार्थः – १ जब २ इस ३,४ मानससूर्यरूप आत्मप्रतिबिंब के निकट ५ महाविद्या ६ मैं पहिले शोधन करूं इस स्पर्धा के साथ स्थित होती हैं ७ जैसे ८ प्रजा ९ सूर्य के सन्मुख १० नवमेधावी आत्मप्रतिबिंब ११ कमलान्तरिक्षों को १२ आच्छादन करता १३ चलता है १४ जैसे १५ रक्षा योग्य १६ गोष्ठ को १७ पशुवृद्धि के लिये गोपाल॥७॥

मन्युर्वासिष्ठऋषिः शेषं पूर्ववत्

इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सह इन्वन्मदाय। हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातिं वरिवस्कृण्वन्वृजनस्य राजा॥८॥७४

(वृजनस्य) योगबलस्य (राजा) ईश्वरः (इन्दुः) क्षरणशीलः (गोन्योघाः) गोइन्द्रियाणि (अन्य) बुद्धिर्मनश्चतेषा मोघा यः

स्मिन्.स (वाजी) मानंससूर्यरूपः (सोमः) आत्मप्रतिबिंबः (मदाय) अहंब्रह्मास्मीतिमदाय (सहः) स्वात्मज्योतिः (इन्द्रे) परमेश्वरे (इन्वन्) प्रेरयन् (पवते) ऊर्ध्वं गच्छति (वरिवः) योगधनं (कृण्वन्) कुर्वन् (रक्षः) रक्षः कुलं क्रोधादिसमूहं (हन्ति) हिनस्ति (अरातीः) शत्रून् कामादीन् (परिबाधते) परितः संहरति ॥ ८॥

भाषार्थः – १ योगबल का २ स्वामी ३ सरणशील ४ इन्द्रिय मनबुद्धि से युक्त ५ मानस सूर्यरूप ६ आत्म प्रतिबिंब ७ अहंब्रह्मास्मि मद के लिये ८ अपनी आत्मज्योति को ९ परमेश्वर में १० प्रेरण करता ११ ऊपर को चलता है १२ योगधन को १३ प्राप्त करता १४ राक्षस कुल क्रोध आदि को १५ मारता है १६ शत्रु काम आदि को १७ सब ओर से संहार करता है ॥ ८ ॥

कुत्सऋषिः शेषं पूर्ववत्

अयापवा पवस्वैना वसूनि मांश्चत्व इन्दो सरसि प्रधन्व ब्रध्नश्चिद्यस्य वातो न जूतिं पुरुमेधाश्चित्तकवे नरन्धात् ॥ ९ ॥ ७५

हे (इन्दो) आत्मप्रतिबिंब (अया) अ आत्मा य योगः आत्म योगरूपया (पवा) शुद्ध्या पूशोधे (एना) एनानि (वसूनि) योगधनानि (पवस्व) क्षर (मांश्चत्वे) सूर्यरूप शिवसम्बंधिने नि० (सरसि) कमलस्थाने भृकुटि मण्डले (वातः) प्राणः (न) इव (प्रधन्व) प्रगच्छ (यस्य) (तकवे) गच्छतः। [तकति गतिकर्मसु पठितः। अस्मादौणादिक उन् प्रत्ययः युस्येति (२.३.३७)] (जूतिम्) वेगं (ब्रध्नः) (चित्) सूर्योपि (पुरुमेधाः) (चित्) महापुरुषोपि (न) (रन्धात्) नहिं स्यात् न दूषयेत् ॥ ९ ॥

भाषार्थः – १ हे आत्म प्रतिविंब २ आत्म योगरूप ३ शुद्धि द्वारा ४ इन ५ योगधनों को ६ प्रगट करो ७ सूर्यरूप शिव सम्बंधी ८ कमलस्थान भृकुटि मंडल में ९,१० प्राण की समान ११ चलो १२ जिस १३ चलते के १४ वेग को १५,१६ सूर्य भी १७,१८ और महापुरुष भी १९,२० नही रोके ॥९॥

पराशरऋषिः शेषं पूर्ववत्

महत्तत्सोमो महिषश्चकारापां यद्गर्भोऽवृणीत देवान्। अदधादिन्द्रे पवमान ओजोऽजनयत्सूर्ये ज्योतिरिन्दुः ॥१०॥७६

(महिषः) योग भूमेः सूर्यः (अपाङ्गर्भः) कमलान्तरिक्षाणां गर्भभूतः (पवमानः) योगेन शुद्धः संस्कृतः (इन्दुः) क्षरणशीलः (सोमः) आत्म प्रतिविंबः (तत्) (महत्) कर्म (चकार) (यत्) (देवान्) कमलस्थान् (अवृणीत) समभजत (ओजः) सामर्थ्यं शक्तिं (इन्द्रे) परमेश्वरे (अदधात्) न्यधात् ततः (सूर्ये) (ज्योतिः) तेजः (अजनयत्) ॥१०॥

भाषार्थः

१ योगभूमि के सूर्य २ कमलान्तरिक्षों के गर्भरूप ३ योग से शुद्ध संस्कृत ४ क्षरण शील ५ आत्म प्रतिविंबो ६ उस ७ महत्कर्म को ८ किया ९ जो १० कमलस्थ देवताओं को ११ सेवन किया १२ सामर्थ्य शक्ति को १३ परमेश्वर में १४ स्थापन किया फिर १५ सूर्य में १६ तेज को १७ प्रकट किया ॥१०॥

कश्यपऋषिः शेषं पूर्ववत्

असर्जि वक्वा रथ्ये यथाजौ धिया मनोता प्रथमा मनीषा। दश स्वसारो अधि सानो अव्ये मृजन्ति वह्निं सदनेष्वच्छ ॥११॥७७

(वक्रा) अहं ब्रह्मास्मीति शब्दायमाना (मनोता) यस्य मनो ब्रह्म-
णि प्रोतं सा (प्रथमा) आद्या (मनीषा) ज्ञान स्वरूपा जीव रूपापरा
(यथा) (रथ्ये) योगरथार्हे (आजौ) अजन्ति कर्मार्थं मृत्विज इति
आजिर्यज्ञः तस्मिन्योग यज्ञे (धिया) योग क्रियया (असर्जि) सृ-
ज्यते तथा (दश स्वसारः) आत्मनि सरण शीला महा विद्या (सदनेषु)
कमलेषु मध्ये (अव्ये) मानस सूर्य सम्बन्धिनि (सानौ) शिखरे
मानस कमले (वह्निम्) देहस्य वोढारमात्म प्रतिविंबं (अच्छ) आ-
भिमुख्येन (आधिमृजन्ति) आधिकं शोधयन्ति ॥११॥

भाषार्थः - १ अहं ब्रह्मास्मि शब्द को करती २ मनको ब्रह्म में धारण कर-
नेवाली ३ आद्या ४ ज्ञान स्वरूपा जीव रूपा परा ५ जिसप्रकार ६ योगरथ योग्य ७
योग यज्ञ में ८ योग क्रिया द्वारा ९ कमलों में जाती है उसी प्रकार १० आत्मा में
गतिशील महा विद्या ११ कमलों के मध्य १२ मानस सूर्य सम्बंधी १३ शिखर
मानस कमल में १४ देहधारक आत्म प्रतिविंब को १५ सन्मुख होकर १६ अ-
धिक शोधन करती हैं ॥११॥

प्रस्कण्व ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो महा विद्या देवताः

अपामिवेदूर्मयस्तर्तुराणाः प्रमनीषा ईरते सो
ममच्छ। नमस्यन्तीरुपच यन्ति सञ्चाच विश
न्त्युशतीरुशन्तम् ॥१२॥७८

(अपाम्) (ऊर्मयः) (इव) (तर्तुराणाः) त्वरमाणाः (मनीषाः) म-
हा विद्याः (सोमम्) आत्म प्रतिविंबं (इत्) एव (अच्छ) आभिमु-
ख्येन (प्रेरयन्ति) (च) (नमस्यन्तीः) नमस्यन्त्यः ब्रह्माणि योज-
यन्त्यः सत्यः तं (उपयन्ति) समीपे गच्छन्ति (च) (संयन्ति) सङ्ग-

च्छन्ते (च) (उशतीः) कामयमानाः महाविद्याः (उशन्तं) काम यमान मात्म प्रति विंबं (आविशन्ति) प्रवशन्ति ॥१२॥

भाषार्थः – १ जलोंकी २ लहरोंके ३ समान ४ शीघ्र गामी ५ महाविद्या ६ आत्म प्रतिविंबको ७ ही ८ सन्मुख ९ प्रेरणा करती हैं १० और ११ ब्रह्ममें संयोजित करती १२ समीपजाती हैं १३ और १४ प्राप्त होती हैं १५ और १६ कामयमान महाविद्या १७ कामयमान आत्म प्रतिविंबमें १८ प्रवेश करती हैं – ॥१२॥ इतिश्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म्म विरचिते साम वेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने पंचमस्या ध्यायस्य सप्तमः खण्डः॥७॥

अथाष्टमः खण्डः

श्यावाश्व ऋषिरनुष्टुप् छन्दः सोमो देवता

पुरोजितीवो अन्धसः सुताय मादयित्नवे। अप श्वानथं श्नथिष्टन सखायो दीर्घजिह्यम्॥१॥ ७६

हे (सखायः) वागाद्यृत्विजः (ऊं) परारूपः (वः) निवृत्तात्मा (अन्धसः) भूतात्मनः (पुरोजिते) पुरां स्थूल सूक्ष्म कारण देहानां जेता तस्मात् (सुताय) अभिपुताय (मादयित्नवे) अत्यन्तं मदकराया त्मप्रति विंबाय (दीर्घजिह्यम्) (श्वानम्) कामं (अपश्नथिष्टन) अपश्न थयत अपवाधध्वम्॥१॥

भाषार्थः – १ हे वाक् आदि ऋत्विजरूप सखाओ २ परारूप ३ निवृत्तात्मा ४ भूतात्माके ५ स्थूल सूक्ष्म कारण देहोंका जेता है उस कारण ६ अभिपुत ७ अत्यन्त मदकर आत्म प्रतिविंबके लिये ८ दीर्घ जिह्वावाले ९ कामको १० ताडनाकरो – ॥१॥ ययातिर्नाहुष ऋषिरनुष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता

अयम्पूषारयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति। पति

विश्वस्य भूमनो व्यख्यद्रोदसी उभे ॥२॥८०

(अयम्) (भगः) परमेश्वरस्यैश्वर्यरूपः (रयिः) परमेश्वरस्य धनरूपः (पूषा) सूर्यः (पुनानः) वायौ संस्कृतः सन् (अर्षति) गच्छति (विश्वस्य) सर्वस्य (भूमनः) भूतजातस्य (पतिः) पालयिता (सोमः) सूर्यः (उभे) (रोदसी) द्यावापृथिव्यौ (व्यख्यत्) स्वतेजसा प्रकाशयति हे आत्मप्रति विंवतथैव त्वमपि गच्छेत्यर्थः ॥२॥

भाषार्थः – १ यह २ परमेश्वर का ऐश्वर्यरूप ३ परमेश्वर का धनरूप ४ सूर्य ५ समस्ति प्राण में संस्कृत होता ६ चलता है ७ सब ८ प्राणि समूह का ९ स्वामी १० सूर्य ११ दोनों १२ पृथिवी स्वर्ग को अपने तेज से प्रकाशित करता है हे आत्मप्रतिबिंब उसी प्रकार तुम भी गगन मंडल को चलो यह अभिप्राय है ॥२॥

ययातिर्नाहुषऋषिरनुष्टुप्छन्दः सोमो देवता

सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः।
पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः ॥३॥८१

(मधुमत्तमाः) अतिशयेन विज्ञानोपेताः (मन्दिनः) परमेश्वरस्य स्तोतारः नि॰ (सुतासः) अभिषुताः (पवित्रवन्तः) प्राणवन्त आत्मप्रतिविंवाः (इन्द्राय) परमेश्वराय (क्षरन्) कमलेषु क्षरन्ति हे आत्मप्रतिविंवाः (वः) युष्माकं (मदाः) (देवान्) (गच्छन्तु) ॥३॥

भाषार्थः – १ अत्यन्त विज्ञान युक्त २ परमेश्वर के स्तोता ३ अभिषुत ४ प्राणवान् आत्मप्रतिविंब ५ परमेश्वर के लिये ६ कमलों में जाते हैं आत्मप्रतिविंबो ७ तुम्हारे ८ मद ९ देवताओं को १० प्राप्त हों ॥३॥

मनुः सांवरणऋषिः शेषं पूर्ववत्

सोमाः पवन्त इन्दवोऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः । मित्राः

३ १ २ ३ १ २ ३ क २ र ३ १ २
स्वानो अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः ॥ ४ ॥ ८२ ॥

महापुरुष पुरुषाणामुपदेशः (मित्राः) भक्ताः यद्वा हिंसा शून्यत्वेन सर्वेषां मित्राः (स्वानो) आत्मरथाः (अरेपसः) निष्पापाः (स्वाध्यः) आत्म ध्यान तत्पराः (स्वर्विदः) सर्वज्ञाः (गातुवित्तमः) योग मार्गज्ञाः (इन्दवः) दीप्ताः (सोमाः) आत्मप्रतिबिंबाः (अस्मभ्यम्) (पवन्ते) सुषुम्णा मार्गे गच्छन्ति ॥ ४ ॥

भाषार्थः — महापुरुष पुरुषोंका उपदेश—१ भक्त वा हिंसा न करनेवाले सबके मित्र २ आत्मरथस्थ ३ निष्पाप ४ आत्मध्यानमें तत्पर ५ सर्वज्ञ ६ योग मार्गज्ञ ७ दीप्त ८ आत्मप्रतिबिंब ९ हमारे लिये १० सुषुम्णा मार्गसे जाते हैं ॥ ४ ॥

अम्बरीषऋजिश्वानौ ऋषी अनुष्टुप्छन्दः सोमो देवता

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अभीनो वाजसातमꣳ रयिमर्ष शतस्पृहम्। इ
३ २ ३ १ २
न्दो सहस्रभर्णसन्तुविद्युम्नं विभ्वासहम् ॥ ५ ॥ ८३

हे (इन्दो) दीप्यमान परमेश्वर (वाजसातमम्) अन्नस्य विराड् रूपान्नस्यातिशयेन दातारं (शतस्पृहम्) बहुभिः स्पृहणीयं (सहस्रभर्णसं) बहुविधभरणं। अनेक पोषण युक्तं (तुविद्युम्नम्) बहुयशो युक्तं (विभ्वासहं) महतः प्रकाशस्याभिभवितारं (रयिम्) धनं योगधनम्वा (नः) अस्मभ्यं (अभ्यर्ष) अभिगमय ॥ ५ ॥

भाषार्थः — १ हे दीप्यमान परमेश्वर २ अन्न वा विराट्रूप अन्न के दाता ३ बहुतोंसे स्पृहणीय ४ अनेक पोषण युक्त ५ बहु यश युक्त ६ महा प्रकाश के अभिभवित ७ धन वा योगधनको ८ हमें ९ प्राप्त कराओ ॥ ५ ॥

ऋषभसूनू काश्यपौ ऋषी अनुष्टुप्छन्दः सोमो देवता

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३
अभी नवन्ते अद्रुहः प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। व

त्सन्न पूर्व आयुनि जातᳪं रिहन्ति मातरः ॥६॥ ८४

(अद्रुहः) अद्रोहाः महावाचः (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य (काम्यम्) (प्रियम्) (जातम्) संस्कृतमात्मप्रतिविंवं (अभिनवते) अभिगच्छन्ति नवति गतिकर्मानि० २।१४ (न) यथा (मातरः) गावः (वत्सम्) (पूर्वे) (आयुनि) प्रथमे वयसि (रिहन्ति) लिहन्ति ॥६॥

भाषार्थः – १ द्रोहशून्य महावाक् २ परमेश्वर के ३ काम्य ४ प्रिय ५ संस्कृत आत्मप्रतिविंव को ६ प्राप्त करते हैं ७ जैसे ८ गौ ९ वछड़े को १० वाल्य ११ अवस्था में १२ चाटती हैं ॥६॥

सोमो गुरवश्च देवताः शेषं पूर्ववत्-

आहर्यताय धृष्णवे धनुष्टन्वन्ति पौᳪंस्यम्।
शुक्रा वयन्त्यसुराय निर्णिजे विपामग्रे मही
युवः ॥७॥ ८५

(विपाम्) मेधाविनां (महीयुवः) योगभूमौ योजका गुरवः (अग्रे) आदौ) निर्णिजे) स्वरूपशोधनार्थं (हर्यताय) परमेश्वरेण स्पृहणीयाय (धृष्णवे) कामादीनां धर्षणशीलाय (असुराय) योगवलवते शिष्याय (पौंस्यम्) पुरुषार्थसाधकं (धनुः) प्रणवाख्यं (आतन्वंति) धनुषि ज्यां कुर्वन्ति तथा (शुक्रौ) शुक्लानि वस्त्राणि (वयन्ति) आच्छादयन्ति ॥७॥

भाषार्थः – १ मेधावी पुरुषों के २ योगभूमि में योजक गुरुजन ३ आदि में ४ स्वरूपशोधनार्थ ५ परमेश्वर के स्पृहणीय ६ काम आदि के धर्षणशील ७ योगवलवान् शिष्य के लिये ८ पुरुषार्थ साधक ९ प्रणव नाम धनुष को १० ज्यायुक्त करते हैं ११ तथा शुक्ल वस्त्रों को १२ धारण कराते हैं ॥७॥

ऋजिश्वाम्बरीषा ऋषी बृहती छन्दः सोमो देवता

२ ३ १ २ ३ १ २र २र ३ १ २ ३ २ २ २
परीत्य थं हर्यतं थं हरिम्बभ्रुम्पुनन्ति वारेण। यो
३ २ ३ ३ २ ३ ३ १ २ २ ३ १ २र २र
देवान्विश्वां थं इत्परि मदेन सह गच्छति॥ ८॥ ८६

(त्यम्) तं (हर्यतम्) सर्वैः स्पृहणीयं (हरिम्) हरित वर्णं (बभ्रुम्) बभ्रुवर्ण सोमम् (वारेण) वालेन पवित्रेण (परि पुनन्ति) परिशोधयन्ति (यः) (विश्वान्) सर्वान् (देवान्) (इत्) एव (मदेन) मदकरेण रसेन (सह) (परिगच्छति)॥ ८॥

भाषार्थः – १ उस २ सबसे स्पृहणीय ३ हरितवर्ण ४ बभ्रुवर्ण सोम को ५ वाल पवित्र से ६ शोधन करते हैं ७ जो सोम ८ सब ९ देवताओं को १० ही ११ मदकर रस के १२ साथ १३ प्राप्त होता है॥ ८॥

अथाध्यात्मम् (त्यम्) तं। यकारो योग द्योतकः (हर्यतम्) परमेश्वरेण स्पृहणीयं (बभ्रुम्) योगे गति शीलं। बभ्रगतौ (हरिम्) मानस सूर्यं (वारेण) सुषुम्णया (परि पुनन्ति) परिशोधयन्ति (यः) मानस सूर्यः (विश्वान्) सर्वान् (देवान्) (इत्) एव (मदेन) मदकरेणेन्द्रिय रूपरसेन (सह) (परिगच्छति)॥ ८॥

भाषार्थः – १ उस २ परमेश्वर से स्पृहणीय ३ योग में गति शील ४ मानस सूर्य को ५ सुषुम्णा से ६ शोधन करते हैं ७ जो मानस सूर्य ८ सब ९ देवताओं को १० ही ११ मदकर इन्द्रिय रूप रस के १२ साथ १३ प्राप्त होता है॥ ८॥

प्रजापतिर्नरषिरनुष्टुप् छन्दः सोमो देवता

१ २ ३ १र २र ३ २ ३ १ २ ३ १र २र ३
प्रसुन्वानायान्धसो मर्त्तो नवष्ट तद्वचः। अप
२ ३ १ २ ३ १र २र
श्वानं मराधसं थं हता मखं न भृगवः॥ ९॥ ८७

(मर्त्तः) देहाभिमानी मनः (अन्धसः) देह रूपान्नात् (सुन्वानाय)

अभिपूयमाणायात्ममतिविंबाय (तत्) (वचः) भक्तियोग सम्बंधिनं वचनं (न) (अवष्ट) नाकामयत् तस्मात् (अराधसम्) निर्धनं (अमरवम्) ईशार्चाविहितं (श्वानम्) कामं (भृगवः) (न) भार्गवाइव (अपहत) ॥ ९ ॥

भावार्थः - १ देहाभिमानी मनने २ देहरूप अन्नसे ३ अभिपूयमाण आत्ममतिविंव के लिये ४ उस ५ भक्तियोगसम्बंधी वचनको ६,७ नहीं चाहा ८ उसकारण निर्धन ९ ईशार्चाहीन १० कामको ११,१२ भृगु वंशियों की समान १३ मारो-॥ ९ ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनुज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने पंचमाध्यायस्याष्टमः खण्डः ॥ ८ ॥

अथनवमः खण्डः

कविर्भार्गवऋषिर्जगतीछन्द सोमो देवता

अभिप्रियाणि पवते चनो हितो नामानि यह्वो अधियेषु वर्द्धते। आसूर्यस्य बृहतो बृहन्नधि रथं विष्वञ्चमरुहद्विचक्षणः ॥ १ ॥ ८८

(चनः) अन्नरूपः (हितः) निहितः योगमार्गे स्थापितः (विचक्षणः) सर्वस्य द्रष्टा (यह्वः) समाधिभावापन्नः (बृहन्) महानात्ममतिविंवः (प्रियाणि) भक्तानां प्रियाणि (नामानि) नमनशीलानि कमलानि (अभिपवते) अभितो गच्छति (येषु) कमलेषु (अधिवर्द्धते) अधिकं प्रवृद्धो भवति (बृहतः) महतः (सूर्यस्य) महापुरुषस्य (विष्वञ्चम्) सर्वगां (रथम्) लोकं (अधि) उपरि (आरुहत्) आरोहति ॥ १ ॥

भावार्थः–१ अन्नरूप २ योगमार्गमें स्थापित ३ सबका द्रष्टा ४ समष्टिभावापन्न ५ महान् आत्म प्रतिबिंब ६ भक्तोंके प्रिय ७ कमलों को ८ प्राप्त करता है ९ जिन कमलों में १० अधिक वृद्धि पाता है ११-१२ महासूर्य रूप महा पुरुष के १३ सर्वगत १४ लोक के १५ ऊपर १६ चढ़ता है॥१॥

विनियोगः पूर्ववत्

प्रचोदसोनो धन्वन्त्विन्दवः प्रस्वाना सो बृहद्देवेषुहरयः। विचिदश्नो नाइषयो अरातयोऽर्यो नः सन्तु संनिषन्तुनोधियः॥२॥८९

(नः) अस्माकं (स्वनासः) सूयमानाः (इन्दवः) आत्मांशवः (प्रचोदसः) अनन्यप्रेरिताः (हरयः) प्राणाः (बृहद्देवेषु) महापुरुष पुरुषेषु (प्रधन्वन्तु) प्रगच्छन्तु धन्वति गतिकर्मा नि० २।१४।६४ किञ्च (नः) अस्माकं (अरातयः) दानरहिताः (अर्यः) स्वामिनः कामादयः (इषयः) विषयनिच्छन्तः (चित्) अपि (व्यश्नोनाः) (विगतविषयाः) (सन्तु) (नः) अस्मान् (धियः) प्रज्ञाः (सनिषन्तु) सम्भजन्तु॥२॥

भावार्थः

१ हमारे २ अभिषूयमाण ३ आत्मांशु रूप ४ अनन्य प्रेरित ५ प्राण ६ महापुरुषपुरुषों में ७ जाओ और ८ हमारे ९ अदाता १० विषयेच्छु ११ स्वामी रूप काम आदि १२ भी १३ विषयशून्य १४ होओ १५ तुमको १६ बुद्धियां १७ सेवन करो॥२॥

विनियोगः पूर्ववत्

एषप्रकोशेमधुमाꣳ अचिक्रददिन्द्रस्यवज्रोवपुषोवपुष्टमः। अभ्यृतस्यसुदुघा घृतश्चुतोवाश्रा अर्षन्तिपयसाचधेनवः॥३॥९०

(राये:)(मधुमान्) विज्ञानी (इन्द्रस्य) यजमानस्य (वज्रः) कामना शाय वज्र रूपः (वपुषः) देहात् (वपुष्टमः) श्रेष्ठ देहरूपआत्मप्रति विंबः (क्रोशे) मनसि भृकुट्यांवा (मान्विक्रदत्) प्रकर्षेण शब्दं चकार यत्र शब्दे (ऋतस्य) सत्यभूतस्य वेदस्य (सुदुघः) फलानां सुष्ठु दोग्ध्र्यः (घृतश्चुतः) रसस्य क्षारयित्र्यः (वाश्राः) कामयमानाः (धेनवः) महावाचः। वाग्वाएका वाग्दश वागनन्तो वाक्पराधींवाचमेवतद्देवा धेनुमकुर्वन श०।९।१।२।१७ (अभ्यर्षन्ति) अभिगच्छन्ति ॥३॥

भावार्थः – १ इस २ विज्ञानी ३ यजमानको ४ कामना शार्थ आयुधरूप ५ देहसे ६ श्रेष्ठदेह रूप आत्म प्रति विंबने ७ मनवा भृकुटिमे ८ महान्शब्द किया जिस शब्द में ९ सत्यरूप वेदके १० फलोंको दोहने वाली ११ रसदाता १२ कानयमान १३ महावाक् १५ सन्मुख प्राप्त होती हैं॥३॥

ऋषि गण ऋषिः शेष पूर्ववत्

प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतं सखा सख्युर्न प्र मिनाति सङ्गिरम्। मर्य इव युवतिभिः समर्षति सोमः कलशे शतयामना पथा॥४॥ ९२

(इन्दुः) दीप्त आत्मप्रति विंबः (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य (निष्कृतम्) संस्कृतं परमं धाम (प्रो) प्रकर्षेणैव (अयासीत्) गच्छति (सखा) (सख्युः) परमेश्वरस्य (सङ्गिरं) संस्कृत वाचं (न) (प्रमिनाति) नहिंस्ति (सः) (शतयामना) बहु साधनवता (पथा) योगमार्गेण (कलशे) प्रजापतौ परमेश्वरे श०४।३।१।६ (समर्षति) सङ्गच्छते (इव) यथा (मर्यः) मनुष्यः नि०२।३ (युवतिभिः)॥४॥

भाषार्थः – १ दीप्तआत्मप्रतिबिंब २ परमेश्वरके ३ संस्कृत परमधाम को ४ प्रकर्षताके साथ ५ प्राप्तकरताहै ६ सखाभक्त ७ सखापरमेश्वरकी ८ सत्कृतवाणीको ९,१० हिंसितनहीं करताहै ११ वह १२ बहुसाधनवाले १३ योगमार्गद्वारा १४ परमेश्वरमें १५ संयोगको पाताहै १६ जैसे १७ मनुष्य १८ युवतीस्त्रियोंके साथ॥ ४॥ कविऋषिः शेषंपूर्ववत्

धर्त्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो दक्षो देवानामनुमाद्यो नृभिः। हरिः सृजानो अत्यो न सत्वभिर्वृथा पाजांसि कृणुषे नदीष्वा॥ ५॥ ९२

(धर्त्ता) देहस्यधारकः (कृत्व्यः) योगयज्ञार्हः (रसः) सारभूतः (देवानाम्) इन्द्रियाणां (दक्षः) वलरूपः (नृभिः) नेतृभिर्वागाद्यृत्विग्भिः (अनुमाद्यः) अनुमादनीयः स्तुत्योवा (हरिः) मानससूर्यः (सत्वभिः) सत्वगुणैः (सृजानः) सृज्यमानः (दिवः) मानसकमलात् (अत्यः) समष्टिसूर्यः (न) इव (पवते) ऊर्ध्वंगच्छति (पाजांसि) अन्नानि (नदीषु) इन्द्रियेषु (वृथा) निष्फलानि (कृणुते) कुरुते॥ ५॥ **भाषार्थः**

१ देहकाधारक २ योगयज्ञयोग्य ३ सारभूत ४ इन्द्रियोंका ५ वलरूप ६ नेतावाक् आदिऋत्विजोंसे ७ अनुमादनीय वा स्तुतियोग्य ८ मानससूर्य्य ९ सत्वगुणोंसे १० युक्त होता ११ मानसकमलसे १२, १३ समष्टिसूर्यकी समान १४ ऊपरकोजाताहै १५ औरविषयोंको १६ इन्द्रियोंमें १७ निष्फल १८ करताहै ॥ ५॥ रिभगणऋषिः शेषंपूर्ववत्

वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अह्नांप्रतरीतोषसान्दिवः। प्राणा सिन्धूनां कलशाँ अचि

१ क्रदे॑दि॒न्द्र॑स्य॒ हार्द्या॑वि॒शन्म॑नी॒षिभि॑ः ॥६॥ ६३

(मनीनाम्) मन्त्राणां (वृषा) वर्षकः (विचक्षणः) विद्रष्टा (अह्नां) पितृदेवयानसम्बन्धिदिवसां (उषसां) (दिवः) स्वर्गस्यच (प्रतरीता) प्रतरिता (सिन्धूनाम्) इन्द्रियाणां (प्राणः) प्रकर्षेणचेष्टयिता (सोमः) आत्मप्रतिबिंबः (पवते) ऊर्ध्वंगच्छति (मनीषिभिः) मेधाविभिर्वाग्गाद्यत्विग्भिः सह (इन्द्राय) परमेश्वराय (हार्दि) स्नेहे (आविशन्) प्रविशन् (कलशान्) कमलरूपगृहान् (अभि) अभिलक्ष्य (अचिक्रदत्) स्तुतिशब्दं करोति ॥ ६॥

भावार्थः – १ मन्त्रोंकी २ दृष्टिकरनेवाला ३ विशेषद्रष्टा ४ पितृयान देवयानसम्बंधी दिनों ५ उषाकालों ६ और स्वर्गका ७ प्रतरिता ८ इन्द्रियोंको ९ चेष्टा देनेवाला १० आत्मप्रतिबिंब ११ ऊपाको जाता है १२ मेधावी वाक् आदि ऋत्विजोंके साथ १३ परमेश्वरके १४ स्नेहमें १५ प्रवेश करता १६ कमलरूपगृहोंको १७ देखकर १८ स्तुतिशब्दको करता है ॥६॥

रेणुऋषिर्जगती छन्दः सोमो देवता

नि॒रस्मै॑ स॒मधे॒नवो॑ दुदुह्रे स॒त्यामा॒शिरं॒ पर॒मे व्यो॑मनि। च॒त्वार्य॒न्या भुव॑नानि नि॒र्णिजे॒ चारू॑णि च॒क्रे यदृ॒तैरव॑र्धत ॥७॥ ६४

(यद्) यदा (सः) आत्मारूपयजमानः (ऋतैः) योगयज्ञैः (अवर्द्धत) तदा (निः) प्रातः मध्यान्ह सायं सवनानि (सप्त) योगभूमयः (अस्मै) आत्मारूपयजमानाय (शिरम्) मानससूर्यश० १४।२।१।१० (परमे) (व्योमनि) भृकुट्यन्तरिक्षे (दुदुह्रे) दुहन्ति (अन्याः) (सत्याः) (माः) पराशक्तिः (निर्णिजे) मानससूर्यस्य परिशोधना

य(चत्वारि)(भुवनानि) जागृत्स्वप्नसुषुप्तितुरीयाख्यानि(चारूणि) कल्याणानि(चक्रे) करोति॥७॥

भाषार्थः – १ जब २ आत्मारूपयजमानने ३ योगयज्ञोंसे ४ वृद्धिपाईतब ५ प्रातःमध्यान्हसायंकालकेसवन ६ औरसमयोगभूमि ७ इसआत्मारूपयजमानके लिये ८ मानससूर्यको ९,१० भृकुटिके अन्तरिक्षमें ११ दोहतिहैं १२ दूसरी १३ सत्यरूपा १४ पराशक्ति १५ मानससूर्यकेशोधनार्थ १६,१७ जागृत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यानामभुवनोंको १८ कल्याणरूप १९ करती है ॥७॥

वेनोभार्गवऋषिर्जगतीछन्दः सोमोदेवता

इन्द्रायसोमसुषुतः परिस्रवापामीवाभवतुर
क्षसासह । मातेरसस्यमत्सतद्वयाविनोद्रवि
णस्वन्तइहसन्त्विन्दवः ॥८॥ ९५

हे(सोम) आत्मप्रतिबिंबत्वं(सुषुतः) सन्(इन्द्राय) परमेश्वराय(परिस्रव) परिगच्छ(अमीवा) संसाररोगः(रक्षसा) कामेन(सह)(अपभवतु) अपगतो वियुक्तो भवतु(द्वयाविनः) द्वैतावलम्बिनो देहादयः(ते) तव(रसस्य)(मा)(मत्सत) त्वदीयेन रसेन मा मद्यन्तु(इन्दवः) इन्द्रियरूपा रसाः(इह) योगयज्ञे(द्रविणस्वन्तः) योगधनवन्तः(सन्तु) भवन्तु ॥८॥

भाषार्थः – १ हे आत्मप्रतिबिंबतुम २ अभिषुत होते ३ परमेश्वरके लिये ४ ऊपरको चलो ५ संसाररोग ६ कामके ७ साथ ८ तुमसे वियोगको प्राप्तो ९ द्वैतावलम्बीदेह आदि १० तेरे ११ रससे १२,१३ मदको मतप्राप्तो अर्थात् तूउनसे असंग हो १४ इन्द्रियरूपरस १५ इसयोगयज्ञमें १६ योगधनवाले १७ हों ॥८॥

भरद्वाजोवसुऋषिः शेषंपूर्ववत्

असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत्। पुनानो वारमत्येष्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदत्॥९॥९६

(अरुषः) रूपवान् (नि० ३।७) (वृषा) धर्मरूपः (हरिः) कामहरणशीलः (सोमः) आत्म प्रतिबिंबः (असावि) अभिषुतोऽभूत् (राजा) योगिराजः (इव) (दस्मः) दर्शनीयः सन् (गाः) महावाचः (अभि) अभिलक्ष्य (अचिक्रदत्) अहंब्रह्मास्मीति शब्दं कृतवान् (श्येनः) (न) इव (घृतवन्तम्) अमृतवन्तं (योनिम्) स्थानं गगनमंडलं (आसदत्) प्राप्तवान् हे आत्म प्रतिबिंव त्वं यस्मात् (पुनानः) शोध्यमानः (अव्ययम्) मानससूर्ययोग्यं (वारम्) सुषुम्णां (अत्येषि) अतिक्रम्य गच्छसि॥९॥

भाषार्थः—१ रूपवान् २ धर्मरूप ३ कामहरणशील ४ आत्म प्रति बिंव ५ अभिषुत हुआ ६,७ योगिराजकी समान ८ दर्शनीयने ९ महावाक् को १० देख कर ११ अहंब्रह्मास्मि शब्द किया १२,१३ श्येन की तुल्य शीघ्र गामीने १४ अमृतवान् १५ स्थान गगन मंडल को १६ प्राप्त किया १७ वह शोध्यमान १८ मानससूर्ययोग्य १९ सुषुम्णाको २० अतिक्रमण कर जाता है—॥९॥

वत्सऋषिः शेषं पूर्ववत्

प्र देवमच्छा मधुमन्त इन्दवो ऽसिष्यदन्त गाव आ न धेनवः। बर्हिषदो वचनावन्त ऊधभिः परिस्रुतमुस्रिया निर्णिजं धिरे॥१०॥९७

(मधुमन्तः) प्राणवन्तः (श० १४।१।३।३०) (इन्दवः) इन्द्रियात्म प्रतिबिंवाः (देवम्) परमेश्वरं (अच्छ) आप्तुं (आसिष्यदन्त) प्रक

र्गेण गच्छन्ति (न) यूथा (धेनवः) (गावः) (बर्हिषदः) सुषुम्णामार्गेण सीदन्तः (वचनवन्तः) (उस्रियाः) गोरूपावेदाः (ऊधभिः) स्वधास्वाहादिरूपैः (परिस्रुतं) निर्णिजम्) शुद्धंतत्वमसीति महावाचं (धिरे) दधिरे यजमानार्थं धारयन्ति॥२०॥

भावार्थः—१ प्राणवान् २ इन्द्रिय आत्म प्रतिबिंब ३,४ परमेश्वरकी प्राप्तिको ५ प्रकर्षाके साथ जातेहैं ६ जैसे ७ दुग्धदाता ८ गौ ९ सुषुम्णामार्गमें विराजमान १० वचनवान् ११ गौरूपवेद १२ स्वधास्वाहा आदिस्तनोंसे १३ निकले हुए १४ शुद्धतत्वमसिमहावाक्को १५ यजमानकेलिये धारण करतेहैं॥१९

अग्निऋरषिः शेषंपूर्ववत्

अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते क्रतु ऽँ रिहन्ति मध्वाभ्यञ्जते। सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षण ऽँ हिरण्यपावाः पशुमप्सु गृभ्णते॥२१॥ ६८

आत्मप्रतिबिंबः (अञ्जते) इन्द्रियैः सह प्रयुज्यते। अनञ्जमिक्षणे (व्यञ्जते) प्राणे विशेषेण प्रयुज्यते (समञ्जते) अन्तः करणैः सम्यक् युज्यते कमलस्थादेवाः (क्रतुम्) योग कर्त्तारं (रिहन्ति) लिहन्ति आस्वादयन्ति (मध्वा) ज्ञानेन श० १४।५।५।१६ (अभ्यञ्जते) समन्तान्मिक्षयन्ति (हिरण्यपावाः) स्वकीयज्योतिषापुनन्तः कमलस्थादेवाः (सिन्धोः) मनसः। मनोवैसमुद्रः श० ७ ५।२।५२ (उच्छ्वासे) उच्छ्रितेदेशे भृकुट्यादिकमलसमूहे (पतयन्तं) गच्छन्तं (उक्षणम्) सेक्तारं (पशुम्) आत्मप्रतिबिंबं। एतावान्वै पशुर्यावान्प्राण आत्माच श० ६।६।२।७ (अप्सु) कमलान्तरिक्षेषु (गृभ्णते) गृह्णन्ति॥२१॥

भाषार्थः – आत्मप्रतिविंब १ इन्द्रियों से संयोग पाता है २ प्राणों से संयुक्त होता है ३ अन्तः करणों से संयोग करता है कमलस्थ देवता ४ योगी को ५ प्यार करते हैं ६ ज्ञानसे ७ मिश्रित करते हैं ८ अपनी ज्योति से पवित्र करते कमलस्थ देवता ९ मनके १० उच्छ्रित देश भृकुटि आदि कमल समूह में ११ जाने १२ सेव्ता १३ आत्मप्रतिविंब को १४ कमलान्तरिक्षों में ग्रहण करते हैं॥१२

पवित्रऋषिर्जगती छन्दो ब्रह्मणस्पतिर्देवता-

पवित्रन्ते विततम्ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः। अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तः सन्तदाशत ॥१२॥ ९९

हे(ब्रह्मणस्पते) महावाक्स्वामिन्नात्मप्रतिविंब(ते) तव(पवित्रम्) प्राणं(विततम्) सर्वत्रविस्तृतं(प्रभुः) समर्थस्त्वं(विश्वतः) सर्वतः(गात्राणि) परमेश्वरस्यांगानि(पर्येषि) परिगच्छसि(अतप्ततनूः) तपोहीनशरीरः(आमः) अपरिपक्वोऽसंस्कृतो जीवात्मा (न)(अश्नुते) नप्राप्नोति(शृतासः) परिपक्वाः संस्कृता भक्तायोगिनः(इत्) एव(वहन्तः) भक्तियोगम्वा धारयन्तः(तत्) सायुज्यं(समासत) सम्यक्प्राप्नुवन्ति अत्रगतो॥१२॥

भाषार्थः – १ हे महावाक्स्वामिन् आत्मप्रतिविंब २ तेरा ३ प्राण ४ सर्वत्रा विस्तृत है ५ समर्थ तुम ६ सब ओर से ७ परमेश्वर के अंगों को ८ प्राप्त करते हो ९ तपशून्य शरीर वाला १० अपरिपक्व असंस्कृत जीवात्मा ११, १२ नहीं पाता है १३ परिपक्व संस्कृत भक्त योगी १४ ही १५ भक्तियोग को धारण करते १६ उस सायुज्य को १७ प्राप्त करते हैं॥१२॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्मे विरचिते साम

वेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने पञ्चमस्याध्यायस्य नवमः खण्डः ९

इतिजागतम्

इन्द्रमच्छेति खण्डे ऽस्मिन्नस्चो द्वादश संस्थिताः

सकला उष्णिहस्तत्र वक्ष्यन्ते ऋषयः पृथक् ॥

अथ दशमः खण्डः

अभिश्वाक्षुपऋषिरुष्णिक् छन्दः सोमा देवताः

इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः । श्रुष्टे
जातास इन्दवः स्वर्विदः ॥१॥ १००

(श्रुष्टे) आत्मना व्याप्ते कारणाख्ये शरीरे । श्रुगतौ (जातासः) जा
ताः (सुताः) अभिषुताः (इन्दवः) दीप्ताः (स्वर्विदः) आत्मनो ज्ञान
रः (इमे) (हरयः) मानससूर्याः (वृषणं) धर्मकामार्थमोक्षाणां
वर्षितारं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (अच्छ) आप्तुम् (यन्तु) गच्छन्तु ।१

भाषार्थः –१ आत्मासे व्याप्त कारण शरीरमे २ उत्पन्न ३ अभिपुत ४ दी
प्त ५ आत्मज्ञाता ६ ये ७ मानस सूर्य ८ चारो पदार्थके दाता ९ परमेश्वरकी १०
प्राप्तिके लिये ११ गगनमंडलको चलो ॥१॥

चक्षुर्मानव ऋषिः शेषं पूर्ववत्

प्र धन्वा सोम जागृविरिन्द्रायेन्दो परि स्रव । द्यु
मन्तं शुष्ममा भर स्वर्विदम् ॥२॥ १०१

हे (सोम) आत्मप्रतिबिंब (जागृविः) जागरणशीलस्त्वं (प्रधन्व)
प्रकर्षेण गच्छ हे (इन्दो) प्रदीप्त (इन्द्राय) परमेश्वराय (परिस्र
व) कमलेषु गच्छ (द्युमन्तं) दीप्तियुक्तं (स्वर्विदम्) आत्मनो ल
म्भकं (शुष्मम्) योगबलं (आभर) आहर धारय ॥२॥

भाषार्थः — १ हे आत्म प्रतिबिंब २ जागरणशीलतुम ३ ऊपरको चलो ४ हे महातेजस्वी ५ परमेश्वर के लिये ६ कमलों में जाओ ७ दीप्ति युक्त ८ आत्म प्रापक ९ योग बल को १० धारण करो — ॥ २ ॥

पर्वतनारदावृष्युष्णिक् छन्दः ऋत्विजो देवताः

सखाय आनि षीदत पुनानाय प्रगायत। शिशुन्न यज्ञैः परिभूषत श्रिये ॥ ३ ॥ १०२

हे (सखायः) वागाद्यृत्विजः (आनिषीदत) स्तोतु मुपविशत (पुनानाय) पूयमानाय शोध्यमानायात्म प्रतिबिंबाय (प्रगायत) प्रकर्षेण गायत (श्रिये) योग लक्ष्म्यर्थं (यज्ञैः) (परिभूषत) परितोऽलङ्कुरुत (न) यथा (शिशुम्) बालं पितर आभरणैरलङ्कुर्वन्ति ॥ ३ ॥

भाषार्थः

१ हे वाक् आदि ऋत्विज सखाओ २ स्तुति करने को बैठो ३ शोध्यमान आत्म प्रतिबिंब के लिये ४ गाओ ५ योगलक्ष्मी के लिये ६ योग यज्ञों से ७ अलङ्कृत करो ८ जैसे ९ बालक को मा बाप आभरणों से अलंकृत करते हैं ॥ ३ ॥

पर्वतनारदावृषी शेषं पूर्ववत् —

तं वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत। शिशुन्न हव्यैः स्वदयन्त गूर्त्तिभिः ॥ ४ ॥ १०३ ॥

हे (सखायः) भक्ता योगिनः (वः) युष्माकं (मदाय) अहं ब्रह्मास्मीति मदार्थं (पुनानं) पूयमानं शोध्यमानं (तम्) आत्मप्रतिबिंबं (शिशुम्) (न) इव (अभिगायत) अभिष्टुत (हव्यैः) इन्द्रियैः (गूर्त्तिभिः) स्तुतिभिश्च (स्वन्दयन्त) स्वादू कुरुत ॥ ४ ॥

भाषार्थः — १ हे भक्त योगियो २ तुम्हारे ३ अहं ब्रह्मास्मि मद के लिये ४

शोध्यमान ५ उस आत्म मति विवको ६,७ बालक की समान ८ स्तुत करो ९ इ न्द्रियों १० और स्तुतियों से ११ स्वादिष्ट करो॥ ४॥

त्रितऋषिः उष्णिक् छन्दः सोमो देवता-

प्राणा शिशुर्महीनां हिन्वन्नृतस्य दीधितिम्। विश्वा परि प्रिया भुवदध द्विता॥ ५॥ २०४

(अध) अथ (महीनाम्) योगभूमीनां (प्राणा) चेष्टयिता (ऋ तस्य) सत्यस्य ब्रह्मणः (शिशुः) (द्विता) द्वैतावलम्वी। आत्मप्र तिविंबः (दीधितिम्) स्वकीयं ज्योतिः (हिन्वन्) ब्रह्मणि प्रेरयन् (विश्वा) विश्वानि सर्वाणि (प्रिया) प्रियाणि भौम दिव्यान्नानि (परिभुवत्) निरस्करोति॥ ५॥

भावार्थः-१ तदनन्तर २ योगभूमियों को ३ चेष्टादेने वाला ४,५ ब्रह्म पुत्र ६ द्वैतावलम्वी आत्म प्रतिविंब ७ अपनी ज्योति को ८ ब्रह्म में प्रेरणा कर ता ९ सब १० प्रिय भौम दिव्य विषयों को ११ निरस्कार करता है॥ ५॥

मनु ऋषिः शेष पूर्ववत्-

पवस्व देववीतय इन्दो धाराभिरोजसा। आ कलशं मधुमान्त्सोम नः सदः॥ ६॥ २०५

हे (इन्दो) दीप्तिमन् (सोम) आत्म प्रतिविंब (मधुमान्) ब्रह्म ज्ञानी त्वं (देववीतये) देवस्य परमेश्वरस्य भक्षणाय (ओजसा) योगवलेन (नः) अस्माकं (धाराभिः) इन्द्रिय शक्ति रूप धाराभिः सह (पवस्व) ऊर्ध्वं गच्छ (कलशं) गगन मण्डलं प्रजापतिम्वा (आसदः) आसीद॥ ६॥

भावार्थः-१ हे दीप्तिमान् २ आत्म प्रतिविंब ३ ब्रह्मज्ञानी तुम ४ परमे

श्वरकीतृप्ति के लिये ५ योगवलद्वारा ६ हमारी ७ इन्द्रिय शक्तिरूप धाराओं के साथ ८ ऊपर को चलो ९ गगन मंडल वा परमेश्वर को १० प्राप्तकरो॥ ६॥

अग्निर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

सोमः पुनान ऊर्म्मिणाव्यं वारं विधावति। अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत्॥ ७॥ १०६

(पवमानः) पूतः (पुनानः) शोध्यमानः (सोमः) आत्म प्रतिबिंबः (वाचः) तत्वमसीति महावाचः (अग्रे) (कनिक्रदत्) अहं ब्रह्मास्मीति शब्दं कुर्वन् (ऊर्मिणा) वेगेन (अव्यम्) मानससूर्य योग्यं (वारम्) वाल तुल्यां सुषुम्णां (विधावति)॥ ७॥ १०६

भाषार्थः – १ पवित्र २ शोध्यमान ३ आत्म प्रतिबिंब ४ तत्व मसि महावाक् के ५ आगे ६ अहं ब्रह्मास्मि शब्द को करता ७ वेगसे ८ मानस सूर्य योग्य ९ वाल तुल्य सुषुम्णा की १० ओर दौड़ता है॥ ७॥

द्वितऋषिः शेषं पूर्ववत्

प्र पुनानाय वेधसे सोमाय वच उच्यते। भृतिं न भरा मतिभिर्जुजोषते॥ ८॥ १०७॥

(पुनानाय) शोध्यमानाय (वेधसे) मेधाविने (मतिभिः) मन्त्राभिः) (जुजोषते) प्रीयमाणाय (सोमाय) आत्मप्रति विंवाय (वचे) तत्त्वमसीति (प्रोच्यते) (न) यथा (भराः) स्वामिनः (भृतिम्) भृतकाय सम्पादयन्ति॥ ८॥

भाषार्थः – १ शोध्यमान २ मेधावी ३, ४ मन्त्राओं से प्रीयमाण ५ आत्मप्रति विंव के लिये ६ तत्व मसि वाक् ७ उच्चारण किया जाता है ८ जैसे ९ स्वामीजन १० भृति को भृतक के लिये देता है–॥ ८॥

पर्वतनारदा ऋषी शेषं पूर्ववत्

गोमन्न इन्दो अश्ववत्सुतः सुदक्ष धनिव । शुचिञ्च वर्णमधि गोषु धारय ॥ ९ ॥ २९८

हे (सुदक्ष) सुबल (इन्दो) आत्मप्रतिबिंब (सुतः) अभिषुनस्त्वं (नः) अस्मभ्यं वागाद्यृत्विग्भ्यः (अश्ववत्) महासूर्यवन्तं श॰ (गोमत्) गोलोकं (धनिव) प्रापयनि॰श॰१४।६४ (च) (शुचिम्) दीप्यमानं (वर्णम्) (गोषु) इन्द्रियेषु (अधिधारय) अधिकं प्रापय ॥ ९ ॥

भाषार्थः

१ हे सुबल २ आत्मप्रतिबिंब ३ अभिषुत तुम ४ हम वाक् आदि ऋत्विजों के लिये ५ महासूर्यवान ६ गोलोक को ७ प्राप्त कराओ ८ और ९ दीप्यमान १० वर्ण को ११ इन्द्रियों में १२ प्राप्त कराओ ॥ ९ ॥

पर्वतनारदा ऋषी शेषं पूर्ववत्

अस्मभ्यन्त्वा वसुविदमभि वाणीरनूषत । गोभिष्टे वर्णमभि वासयामसि ॥ १० ॥ २९९

हे आत्मप्रतिबिंब (अस्मभ्यम्) अस्माकमर्थाय (वाणीः) वेदवाचः (वसुविदं) योगधनस्य ज्ञातारं (त्वा) (अभ्यनूषत) अभिष्टुवन्ति । नूस्तवने वयमात्मा रूपयजमानाः (ते) तव (वर्णम्) (गोभिः) इन्द्रियशक्तिभिः (अभिवासयामसि) अभिवासयामः आभित आच्छादयामः ॥ १० ॥

भाषार्थः – हे आत्मप्रतिबिंब १ हमारे लिये २ वेदवचन ३, ४ तुम्ह योगधनज्ञाता को ५ स्तुत करते हैं हम आत्मारूप यजमान ६ तेरे ७ वर्ण को ८ इन्द्रियों की शक्ति से ९ सब ओर से आच्छादन करते हैं ॥ १० ॥

आग्नेयश्चाक्षुष ऋषिः शेषं पूर्ववत्

पवते हर्यतो हरिरति ह्वरांसि रंह्या। अभ्यर्ष स्तोतृभ्यो वीरवद्यशः ॥११॥ ११०

(हर्यतः) परमेश्वरेण स्पृहणीयः (हरिः) मानस सूर्यः (रंह्या) वेगेन। (ह्वरांसि) अधोमुखानि कमलानि (अतिपवते) अतीत्यगच्छति हे आत्म मति बिंब (वीरवत्) त्वं (स्तोतृभ्यः) वागादृत्विग्भ्यः (यशः) (अभ्यर्ष) अभिगमय प्रयच्छ ॥ ११॥

भाषार्थः – १ परमेश्वर का स्पृहणीय २ मानस सूर्य ३ वेग से ४ अधोमुख कमलों को ५ अतिक्रमण कर जाता है हे आत्म मति बिंब ६ वीर की समान तुम ७ हम वाक् आदि स्तोताओं के लिये ८ यश को ९ दो ॥ ११॥

द्वित ऋषिः शेषं पूर्ववत्

परि कोशं मधुश्चुतं सोमः पुनानो अर्षति। अभि वाणीर्ऋषीणां सप्ता नूषत ॥१२॥ १११

(पुनानः) शोध्यमानः (सः) मानस सूर्यः (मधुश्चुतम्) ब्रह्म ज्ञानस्य च्यावयितारं (कोशम्) गगन मंडलं (पर्यर्षति) परिगच्छति तं (ऋषीणाम्) वागाद्यृत्विजां सप्त (वाणीः) सप्त छन्दांसि (अभ्यनूषत) अभिष्टुवन्ति नूस्तवने ॥ १२ ॥

भाषार्थः – १ शोध्यमान २ मानस सूर्य ३ ब्रह्म ज्ञान के दाता ४ गगन मंडल को ५ जाता है उसको ६ वाक् आदि ऋत्विजों की ७ सप्त छन्द रूप वाणी ८ स्तुत करती हैं ॥१२॥ इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनुज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने पंचमस्याध्यायस्य दशमः खण्डः ॥१०॥ इत्यौषधाहम

अथैकादशखण्डः

गौरिवीतिऋषिः ककुप्छन्दः सोमो देवता

पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः।
महि द्युक्षतमो मदः॥१॥११२

हे (सोम) आत्मप्रतिबिंब (मधुमत्तमः) विज्ञानी (क्रतुवित्तमः) योगयज्ञस्य प्रज्ञाता (मदः) हृष्टः (द्युक्षतमः) अत्यन्त दीप्तः (महि मदः) अहं ब्रह्मास्मीति मदयुक्तस्त्वं (इन्द्राय) परमेश्वराय (पवस्व) सुषुम्णा मार्गेण गच्छ॥१॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिबिंब २ विज्ञानी ३ योगयज्ञ का ज्ञाता ४ हृष्ट ५ अत्यन्त दीप्त ६ अहं ब्रह्मास्मि मद युक्त तुम ७ परमेश्वर के लिये ८ सुषुम्णा मार्ग से चलो॥१॥ ऊर्ध्वसद्मा ऋषिः शेषपूर्ववत्

अभि द्युम्नं बृहद्यश इषस्पते दिदीहि देव देवयुम्। वि कोशं मध्यमं युव॥२॥११३

वागाद्यृत्विजां प्रार्थना हे (इषस्पते) देहरूपान्नस्य स्वामिन् (देव) विद्वन्नात्मप्रतिबिंबत्वं (देवयुम्) देवेन परमेश्वरेण मिश्रयितारं युमिश्रणे (द्युम्नम्) योगधनं (बृहत्) महत् (यशः) विराड्रूपान्नं (अभिदीदिहि) आभिमुख्येन प्रकाशय प्रयच्छेत्यर्थः किञ्च (मध्यमम्) (कोशम्) भृकुटि कमलं (वियुव) प्रापय॥२॥

भाषार्थः

वागाद्यृत्विजों की प्रार्थना — १ हे देह रूप अन्न के स्वामी २ विद्वान् आत्म प्रतिबिंब तुम ३ परमेश्वर से मिलाने वाले ४ योगधन ५,६ और विराट रूप महा अन्न को दो और ८,९ भृकुटि कमल को १० प्राप्त कराओ॥२॥

ऋजिश्वा ऋषिः ककुप्छन्दः ऋत्विजो देवताः

आसोतो परि षिञ्चताश्वन्न स्तोममप्तुरं रजस्तुरम्। वनप्रक्षमुदप्रुतम् ॥ ३ ॥ ११४

हे वागाद्यृत्विजः (अप्तुरम्) मानसान्तरिक्षे वेगवन्तं (रजस्तुरम्) हृदयान्तरिक्षे वेगवत्तरं (वनप्रक्षम्) भृकुट्यन्तरिक्षे निवासशीलं (उदप्रुतम्) गगनान्तरिक्षे गच्छन्तं (अश्वम्) मानससूर्यं श० ६।३।१।२९ (न) च (स्तोमम्) प्राणं। श० ८।४।१।४ (आसोत) अभिषुत। षुञ् अभिषवे (परिषिञ्चत) स्वकीय शक्तिभिः सिञ्चत ॥ ३॥ **भाषार्थः**

हे वाक् आदि ऋत्विजो १ मानसान्तरिक्ष में वेगवान २ हृदयान्तरिक्ष में बड़े वेगवान ३ भृकुटि अन्तरिक्ष में निवास शील ४ गगनान्तरिक्ष में जाने वाले ५ मानस सूर्य ६ और ७ प्राण को ८ अभिषवन करो ९ अपनी शक्तियों से सींचो ॥ ३॥ कृतयशा ऋषिः ककुप्छन्दः सोमो देवता

एतमु त्यम्मदच्युतं सहस्रधारं वृषभन्दिवो दुहम्। विश्वा वसूनि बिभ्रतम् ॥ ४ ॥ ११५

आत्मारूप यजमानो ऽहं (त्यम्) तं यकारो योग द्योतकः (एतम्) (मदच्युतम्) अहं ब्रह्मास्मीति मदेन देहात्पृथग्भूतं (सहस्रधारम्) बहुधारं (वृषभम्) अमृत वर्षकं (विश्वा) सर्वाणि (वसूनि) योगधनानि (बिभ्रतम्) धारयन्तमात्म प्रति बिंबं (उ) एष (दिवः) मनसः (अदुहम्) ॥ ४॥

भाषार्थः —आत्मारूप यजमान मैंने १ उस २ इस ३ अहं ब्रह्मास्मि मद द्वारा देह से असंग ४ बहुधारा वाले ५ अमृत वर्षि कर्त्ता ६, ७, ८ सब योग ध

अथैकादशखण्डः

गौरिवीतिऋषिः ककुप् छन्दः सोमोदेवता

पवस्वमधुमत्तम इन्द्राय सोमक्रतुवित्तमोमदः।
महिद्युक्षतमोमदः॥१॥११२

हे(सोम) आत्म प्रतिबिंब(मधुत्तमः) विज्ञानी (क्रतुवित्तमः) योगयज्ञस्य प्रज्ञाता (मदः) हृष्टः(द्युक्षतमः) अत्यन्त दीप्तः (महि मदः) अहं ब्रह्मास्मीति मदयुक्तस्त्वं (इन्द्राय) परमेश्वराय (पवस्व) सुपुम्णा मार्गेण गच्छ॥१॥

भावार्थः—१ हे आत्म प्रतिबिंब २ विज्ञानी ३ योगयज्ञ का ज्ञाता ४ हृष्ट ५ अत्यन्त दीप्त ६ अहंब्रह्मास्मि मद युक्त तुम ७ परमेश्वर के लिये ८ सुपुम्णा मार्ग से चलो॥१॥ ऊर्ध्वसद्मा ऋषिः शेषपूर्ववत्

अभिद्युम्नं बृहद्यश इषस्पते दिदीहि देव देवयुम्। विकोशंमध्यमं युव॥२॥११३

वागादृत्विजां प्रार्थना हे(इषस्पते) देहरूपान्नस्य स्वामिन्(देव) विद्वन्नात्म प्रतिबिंबत्वं(देवयुम्) देवेन परमेश्वरेण मिश्रयितारं युमिश्रणे(द्युम्नम्) योगधनं(बृहत्) महत्(यशः) विराड् रूपान्नं(अभिदीदिहि) आभिमुख्येन प्रकाशय प्रयच्छेत्यर्थः किञ्च(मध्यमम्)(कोशम्) भृकुटि कमलं(वियुव) प्रापय॥२॥

भावार्थः

वागादृत्विजों की प्रार्थना—१ हे देह रूप अन्न के स्वामी २ विद्वान् आत्म प्रतिबिंब तुम ३ परमेश्वर से मिलाने वाले ४ योगधन ५,६ और विराट रूप महा अन्न को दो और ८,९ भृकुटि कमल को १० प्राप्त कराओ॥२॥

ऋजिश्वा ऋषिः ककुप्छन्दः ऋत्विजो देवताः

आसोता परि षिञ्चताश्वं न स्तोममप्तुरं रजस्तुरम्। वनप्रक्षमुदप्रुतम् ॥ ३ ॥ ११४

हे वागादृत्विजः (अप्तुरम्) मानसान्तरिक्षे वेगवन्तं (रजस्तुरम्) हृदयान्तरिक्षे वेगवत्तरं (वनप्रक्षम्) भृकुट्यन्तरिक्षे निवसशीलं (उदप्रुतम्) गगनान्तरिक्षे गच्छन्तं (अश्वम्) मानससूर्य श० ६।३।१।२९ (न) च (स्तोमम्) माणं। श० ८।४।१।४ (आसोत) अभिषुत। षुञ् अभिषवे (परिषिञ्चत) स्वकीय शक्तिभिः सिञ्चत ॥ ३ ॥ भाषार्थः

हे वाक् आदि ऋत्विजो १ मानसान्तरिक्ष मे वेगवान २ हृदयान्तरिक्ष में वडे वेगवान ३ भृकुटि अन्तरिक्ष मे निवास शील ४ गगनान्तरिक्ष में जाने वाले ५ मानससूर्य ६ और ७ माणा को ८ अभिषवन करो ९ अपनी शक्तियों से सींचो ॥ ३ ॥ शतयशा ऋषिः ककुप्छन्दः सोमो देवता

एतमु त्यं मदच्युतं सहस्रधारं वृषभं दिवो दुहम्। विश्वा वसूनि बिभ्रतम् ॥ ४ ॥ ११५

आत्मारूप यजमानोऽहं (त्यम्) तंयकारो योग द्योतकः (एतम्) (मदच्युतम्) अहं ब्रह्मास्मीति मदेन देहात्पृथग्भूतं (सहस्रधारम्) बहुधारं (वृषभम्) अमृतवर्षकं (विश्वा) सर्वाणि (वसूनि) योगधनानि (बिभ्रतम्) धारयन्तमात्म प्रति बिंबं (उ) एव (दिवः) मनसः (अदुहम्) ॥ ४ ॥

भाषार्थः —आत्मारूप यजमान मेने १ उस २ इस ३ अहं ब्रह्मास्मि मद द्वारा देह से असंग ४ बहुधारावाले ५ अमृतवृष्टि कर्त्ता ६, ७, ८ सब योगध

नके धारक आत्म प्रतिविंबको ९ ही १० मनसे ११ दोहा॥ ४॥

ऋणावऋषिर्यवमध्या छन्दः सोमोदेवता

सँसुन्वेयोवसूनांयोरायामानेतायइडानाम्।
सोमोयः सुक्षितीनाम्॥ ५॥ ११६

(यः)(वसूनाम्) योगधनानां (आनेता)(यः)(रायाम्) योगैश्वर्याणामानेता (यः)(इडानाम्) योगार्हान्नानामानेता (यः)(सुक्षितीनाम्) योगभूमीनामानेता (सः)(सोमः) आत्मप्रतिविंबः (सुन्वे) आत्मारूपयजमानेनाभिषुतोबभूव॥ ५॥

भाषार्थः – १ जो २ योगधनोंका ३ मापक है ४ जो ५ योगैश्वर्योंका मापक है ६ जो ७ योगार्ह अन्नोंका मापक है ८ जो ९ योगभूमियोंका मापक है १० वह ११ आत्म प्रतिविंब १२ आत्मारूप यजमान द्वारा अभिषुत हुआ॥ ५॥

शक्ति ऋषिः ककुप्छन्दः सोमोदेवता

त्वँह्यांऽङ्गदैव्यम्पवमानजनिमानिद्युमत्तमः। अमृतत्वायघोषयन्॥ ६॥ ११७

हे (पवमान) शुद्धात्म प्रतिविंब (त्वम्)(हि)(दैव्यम्) भगवदवतार सम्बन्धीनि (जनिमानि) जन्मानि (अमृतत्वाय) मोक्षाय (अङ्ग) क्षिप्रं (घोषयन्) भक्तेषु श्रावयन् (द्युमत्तमः) अतिशयेन दीप्तिमान् भवसि॥ ६॥

भाषार्थः – १ हे शुद्ध आत्म प्रतिविंब २ तुम ३ ही ४ भगवत् अवतार संबंधी ५ जन्मोंको ६ मोक्षके लिये ७ शीघ्र ८ भक्तोंको सुनाते ९ अतिशय दीप्तिमान होते हो॥ ६॥

उरुचक्रिषिः शेषं पूर्ववत्

एषस्य धारयासुतोऽव्यावारेभिःपवतेमदिन्तमः।

२ .२ ३ २ २ २ २
२. क्रीडन्नूर्मिरपामिव ॥ ७ ॥ २२८ ॥

(स्यः) सः यकारो योगद्योतकः (एषः) (मदिन्तमः) अतिशयेनतर्पकः (सुनः) अभिषुन आत्म प्रति विंवः (अव्यावारेभिः) अविमानिस सूर्यस्तस्याच्छादकैर्वाग ग्रन्थिभिः सह (क्रीडन्) (पवते) ऊर्ध्वं गच्छति (इव) यथा (अपाम्) (ऊर्मिः) (धारया) ॥७॥

भापार्थः – १ वह २ यह ३ अतिशयतर्पक ४ अभिषुन आत्म प्रतिविंव ५ मानस सूर्यके आच्छादक वाक आदि न्रात्विजोंके साथ ६ क्रीडा करता ७.ऊपरको जाता है ८ जैसे ९ जलोंकी १० लहर ११ धारासे ॥७॥

अराजिरवाऋषिःशेष पूर्ववत्

२ २ २ ३ २ ३ २ २ १ २र २ १ २र ३
यं उस्त्रिया अपिया अन्तर श्मनि निर्गा अकृन्त
२ २ २ २ १ २ ३ १ २ १
दोजसा अभि व्रजन्नत्निषे गव्यमश्व्यं वर्मीव धृ
२ २ २ २ २ २ ३ २ २
षणोवारुज (ओ ३ म्) वर्मीव धृषणो वारुज ॥ ८–२२९

(यं) आत्म प्रतिविंवः (उस्त्रियाः) मानस सूर्यस्य रश्मी रूपाः निः ४ (अपियाः) इन्द्रियान्तरिक्षस्थाः (गाः) इन्द्रिय शक्तीः (ओजसा) योगवलेन (अश्मनि) (अन्तः) मानस सूर्य मध्ये। असौवाऽ आदित्यो ऽश्मा शु० ८।२।३।१४ (निरकृन्तत) निरच्छिनत् निरगमयत् सत्वं (गव्यं) इन्द्रियसम्वन्धि (अश्व्यम्) प्राणसम्वन्धि (व्रजम्) देहं (अभिनोत्निषे) अभितो व्याप्नोषि (तृ) नु विस्तारे हे (धृषणो) शत्रुधर्षण शीलत्वं (वर्मी) (इव) (आरुज) कामादीन् जहि खण्डादि समासावपि अन्त्याभ्यासो वैदिक शैली ॥ ८॥

भाषार्थः – १ जिस आत्मप्रतिविंवने २ मानस सूर्यकी किरण रूप ३ इ

न्द्रियालयों में स्थित ४ इन्द्रियों की शक्ति को ५ योग बलसे ६,७ मानस सूर्य के मध्य ८ प्राप्त किया वह तुम ९ इन्द्रिय सम्बंधी १० प्राण सम्बंधी ११ देह को १२ सब ओर से व्याप्त करते हो १३ हे शत्रु धर्षण शील तुम १४,१५ कवची के समान १६ काम आदि को मारो—॥८॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म्म विरचिते साम वेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने पञ्चमोऽध्याय समाप्तः॥५॥

इति पष्ठः प्रपाठकः समाप्तः

सौम्यं पावमानं वापर्व्व काण्डं वा समाप्तम्

इतितृतीयं पूर्व्व

अथारण्यं पर्व्व

वार्हस्पत्य भरद्वाज ऋषि र्वृहती छन्द इन्द्रो देवता·

अथ षष्ठोऽध्याय आरभ्यते

इन्द्र ज्येष्ठन्न आभर ओजिष्ठम्पुपुरि श्रवः। यद्दिधृक्षेम वज्रहस्त रोदसीउभे सुशिप्र प्राः॥१॥१

हे (वज्रहस्त) वज्रवाहो ज्ञान वज्र धरवा (सुशिप्र) शोभन हनु क साकारवा (इन्द्र) इन्द्र परमेश्वरवा (ओजिष्ठम्) अति शये न बल करं (पुपुरि) पूरकं (ज्येष्ठम्) (श्रवः) अन्नं विराड्रूपा न्नंवा (नः) अस्मभ्यं (आभर) आहर प्रयच्छ येन (उभे) (रोदसी) द्यावा पृथिव्यौ (प्राः) पूरयासि (यत्) अन्नं (दिधृक्षेम) धार यितु मिच्छेम॥१॥

भावार्थः—१ हे वज्रवाहो वा ज्ञान वज्रधर २ शोभन हनु वाले वा साकार

२३ इन्द्र वा परमेश्वर ४ महांबल कर ५ पूरक ६७ ज्येपान्न वा विराट् रूप अन्न को (८ इमें ९ दो १० जिससे १० दोनों ११ पृथिवी स्वर्ग को १२ पूर्ण करते हो १३ जो अन्न १४ हम धारण करना चाहते हैं — ॥ १ ॥

मैत्रावरुणो वसिष्ठ ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता॰

इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनामधि क्षमा विश्वरूपं यदस्य। ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोदद्राध उपस्तुतश्चिदर्वाक् ॥ २ ॥ २

(इन्द्रः) परमेश्वरः (क्षमा अधि) ब्रह्माण्ड मध्ये (जगतः) सर्वस्य जगतः (चर्षणीनाम्) कृताकृत ज्ञानवतां भक्तानाञ्च (राजा) ईश्वरः (अस्य) (यत्) (विश्वरूपम्) (ततः) रूपान् (दाशुषे) हविर्दत्त वते यजमानाय (वसूनि) धनानि (ददाति) (उपस्तुतं) सम्यक् स्तुतं (राधः) योगधनं (चित्) अपि (अर्वाक्) अस्मदभिमुखं (चोदत्) प्रेरयति ॥ २ ॥

भाषार्थः — १ परमेश्वर २ ब्रह्माण्ड के मध्य ३ सब जगत का ४ और कृत अकृत ज्ञान वाले भक्तों का ५ स्वामी है ६ इसका ७ जो ८ विश्व रूप है ९ उससे १० हविर्दाता यजमान के लिये ११ धनों को १२ देता है १३ भले प्रकार स्तुत १४ योगधन को १५ भी १६ हमारे सन्मुख १७ प्रेरण करता है ॥ २ ॥

वामदेवः (गोतमः) ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता॰

यस्येदमा रजो युजस्तुजे जने वनं स्वः। इन्द्रस्य रन्त्यं बृहत् ॥ ३ ॥ ३

(यस्य) (रजो युजः) ज्योती रूपस्य (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य (इन्द्रम्) (वनम्) जलं (स्वः) स्वर्गः (रन्त्यम्) रमण योग्य मन्नादि

सं (तुजे) दानार्रि नि॰ ३।२०।९ (जने) (बृहत्) महत् (आ) समन्ताद्भवति ॥ ३ ॥

भावार्थः – १जिस २ज्योतिस्स्वरूप ३परमेश्वर का ४ यह ५ जल ६स्वर्ग ७रमण योग्य अन्तरिक्ष ८ दानार्थ ९ मनुष्य समूह में १० महान् ११ होता है ॥ ३ ॥ शुनःशेप ऋषि स्त्रिष्टुप् छन्दो वरुणो देवता·

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथादित्य व्रते वयं तवानागसो अदितये स्याम ॥ ४ ॥ ४

हे (वरुण) (उत्तमम्) उत्कृष्टं शिरसि बद्धं (पाशम्) (अस्मद्) अस्मभ्यम् (उच्छ्रथाय) उत्कृष्टं सिथिलं कुरु (अधमम्) निकृष्टं पादे वास्थितं पाशं (अवश्रथाय) अवाधस्तात् सिथिली कुरु (मध्यमम्) नाभिदेश गतं पाशं (विश्रथाय) वियुज्याशिथिली कुरु (अथ) अनन्तरं हे (आदित्य) आदितेः पुत्र वरुण (वयम्) (तव) (अदितये) अखण्डिते (व्रते) (अनागसः) अपराधरहिताः (स्याम) भवेम ॥ ४ ॥

भावार्थः – १हेवरुण २ उत्कृष्ट अर्थात् शिर में बंधी ३ पाश को ४ हमारे लिये ५ ऊंचे से शिथिल करो ६ निकृष्टपाद में अवस्थित पाश को ७ नीचे से शिथिल करो ८ नाभिदेश में वर्तमान पाश को ९ हटाकर शिथिल करो १० तदनंतर ११ हे अदितिपुत्र १२ हम १३ तेरे १४ अखंडित १५ व्रत में १६ अपराध रहित १७ होवें ॥ ४ ॥

द्वितीयोर्थः

हे (वरुण) संसारसमुद्रस्य स्वामिन् परमेश्वर (उत्तमम्) (पाशम्) देवशरीर रूपं (अस्मद्) (उच्छ्रथाय) (अधमम्) पशुपक्षि देह·

रूपंपाशं (अवश्रथाय) (मध्यमम्) नरदेहरूपंपाशं (विश्रथाय) (अथ) अनन्तरं हे (आदित्य) पराशक्तेः पुत्रपरमेश्वर (वयम्) तवभक्ताः (तव) (आदितये) अखंडिने (व्रते) (अनागसः) निरपराधाः (स्याम) भवेम॥ ४॥

भाषार्थः — १ हे संसारसमुद्र के स्वामी परमेश्वर २, ३ देवशरीर रूप पाश को ४ हमारेलिये ५ ऊपरसे शिथिल करो ६ पशुपक्षी देह रूप पाश को ७ नीचेसे शिथिल करो ८ नरदेह रूपपाश को ९ वियुक्त कर शिथिल करो १० तदनन्तर ११ हे परा शक्ति के पुत्र ईश्वर १२ हमतेरे भक्त १३ तेरे १४ अखंडित १५ व्रतमें १६ निरपराध १७ होवें॥ ४॥

गृत्समदः (आङ्गिरसः) ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सोमादयो देवताः

त्वया वयम्पवमानेन सोम भरे कृतं वि चिनुयाम शश्वत्। तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः॥ ५॥ ५॥

हे (सोम) आत्मप्रतिबिंब (वयम्) योगिनः (त्वया) (पवमानेन) पवित्रेणसह (भरे) कामसंग्रामे (शश्वत्) बहु (कृतम्) कर्तव्यं कर्म (विचिनुयाम) विशेषेण कुर्याम (नः) अस्माकं (तत्) कर्म (मित्रः) प्राणः (वरुणः) अपानः (अदितिः) वुद्धिः (सिन्धुः) मनः (पृथिवी) योगभूमिः (उत) अपिच (द्यौः) भृकुटिश्च (मामहन्ताम्) पूजयन्तु॥ ५॥

भाषार्थः — १ हे आत्मप्रतिबिंब २ हमयोगी ३ तुझ ४ पवित्र के साथ ५ कामसंग्राममें ६ बहुत ७ कर्त्तव्य कर्मको ८ विशेष करें ९ हमारे १० उसकर्म को ११ प्राण १२ अपान १३ वुद्धि १४ मन १५ योगभूमि १६ और १७ भृकुटि

१८ स्तुतकरो॥५॥

गौतमोवामदेवऋषिरेकपाद्गायत्री छन्दोवरुणादयो देवताः

इमं वृषणं कृणुतैकमिन्माम् ॥६॥६

हेपूर्वमन्त्रोक्तादेवाः (इमम्) (वृषणम्) वर्षकमात्मप्रतिबिंवं (माम्) मामात्मानं (इत्) अपि (एकम्) अभिन्नं (कृणुत) कुरुत॥६॥

भाषार्थः – हेमंत्रोक्त देवताओ १ इस २ वृष्टिकर्त्ता आत्म प्रतिबिंबको ३ और मुझ आत्मा को ४ भी ५ अभिन्न ६ करो॥६॥

आमहीयुः (आङ्गिरसः) ऋषिर्गायत्री छन्दः सोमोदेवता

स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः। वरिवो वित्परिस्रव॥७॥७॥

हे आत्मप्रतिबिंव (वरिवोवित्) योगधनस्यलम्भकः (सः) मानससूर्यस्त्वं (नः) अस्माकं (यज्यवे) पूज्याय (इन्द्राय) परमेश्वराय (वरुणाय) अन्तर्यामिने (मरुद्भ्यः) प्राणेभ्यः (परिस्रव) परिगच्छ॥७॥ विनियोगः पूर्ववत्

एना विश्वान्यर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम्। सिषासन्तो वनामहे॥८॥८

(एना) एनेनात्मप्रतिबिंवेन (मनुष्याणां) सनकादीनां (विश्वानि) सर्वाणि (द्युम्नानि) योगधनानि (अर्यः) अभिगच्छतः। ऋगतो (आसिषसन्तः) सम्भक्तुमिच्छन्तो वाग्मा ऋत्विजो वयं (वनामहे) भजामहे॥८॥

भाषार्थः – १ इस आत्म प्रतिबिंब के द्वारा २ सनकादि महर्षियों के ३

सव ४ योग धनोंको ५ प्राप्त करते ६ और विभाग करना चाहनेवाले आदिऋ- त्विजहम ७ सेवन करते हैं ॥ ८ ॥

आत्मा ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो ऽन्नं देवतम्

अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य पूर्वं देवेभ्यो अमृतस्य नाम। यो मा ददाति स इदेवमावदहमन्नमन्नमदन्तमाद्मि ॥ ९ ॥ ९

(अहम्) (अन्नम्) आत्मप्रतिबिंबरूपान्नं (देवेभ्यः) इन्द्रियेभ्यः (पूर्वम्) आस्मि (अमृतस्य) विनाशरहितस्य (ऋतस्य) सत्यस्य परब्रह्मणः (प्रथमजा) पराशक्तिः (नाम) (अस्मि) (यः) आत्मारूप यजमानः (मा) मां (ददाति) ब्रह्मणे ददाति (सः) (इत्) एव (एवम्) परिदृश्यमान प्रकारेण (आवत्) अवति प्राणेन्द्रियादीनि रक्षति (अन्नम्) अन्नरूपः (अहम्) आत्मप्रतिबिंबः (अन्नम्) विषयं (अदन्तं) भक्षयन्तं प्राणेन्द्रियसमूहं (अद्मि) भक्षयामि संसारबंधनेन विनाशयामि ॥ ९

भाषार्थः –१ मैं २ आत्मप्रतिबिंबरूप अन्न ३ इन्द्रियों के लिये ४ आद्यहूं ५ अविनाशी ६ परब्रह्म की ७ पराशक्ति ८ नाम ९ हूं १० जो आत्मारूप यजमान ११ मुझको १२ ब्रह्मार्पण करता है १३,१४ वही १५ परिदृश्यमान प्रकार से १६ प्राण इन्द्रिय आदि को रक्षा करता है १७ अन्नरूप १८ मे आत्म प्रतिबिंब १९ विषय २० भक्षक प्राणइन्द्रियसमूह को २१ भक्षण करता हूं अर्थात् संसार बंधन से विनाश करता हूं ॥ ९ ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय मन्त्र भाष्ये छन्दो व्याख्याने षष्ठाध्यायस्य प्रथमः खण्डः ॥ १ ॥

अथ द्वितीयः खण्डः २

सुतकक्षऋषिः गायत्री छन्दः इन्द्रो देवता।

त्वमेतदधारयः कृष्णासु रोहिणीषु च। परुष्णीषु रुशत्पयः ॥१॥१०॥

हे परमेश्वर (त्वम्) (कृष्णासु) कृष्णवर्णासु (च) (परुष्णीषु) पर्ववतीषु नानावर्णासु (रोहिणीषु) गोषु। इन्द्रियेषु वा (रुशत्) दीप्यमानं (पयः) क्षीरं प्राणम्वा। प्राणः पयः श० १२८। १। २० (अधारयः) धारयसि ॥१॥

भावार्थः – हे परमेश्वर १ तुम २ कृष्णवर्णा ३ और ४ नाना वर्णवती ५ गौवा इन्द्रियों में ६ दीप्यमान क्षीर वा प्राण को ८ धारण करते हो ॥१॥

पवित्रऋषिः जगती छन्दः सूर्यो देवता।

अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय उक्षा मिमेति भुवनेषु वाजयुः। मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भमादधुः ॥२॥११॥

तदा (उषसः) सम्बन्धी (पृश्निः) मानससूर्यः नि० २। १४ (अग्रियः) अग्र्यो मुख्यः सन् (अरूरुचत्) देहं प्रकाशयति (उक्षा) स्वां शुभिः सेक्ता मानससूर्यः (वाजयुः) अन्नमिच्छन् (मिमेति) शब्दं करोति (मायाविनः) इन्द्रियाणि (अस्य) मानससूर्यस्य (मायया) प्रज्ञया (ममिरे) विषयान्निर्मितवन्तः (नृचक्षसः) नृणां द्रष्टारः (पितरः) मनो वृत्तयः मनः पितरः श० १४। ४। ३। १३ (गर्भम्) कामं (आदधुः) धारयन्ति ॥२॥

भाषार्थः – तब १ उषासम्बंधी २ मानससूर्य ३ मुख्य होना ४ देह को प्रका

शकरता है ७ अपनी किरणों से सींचनेवाला मानस सूर्य ६ अन्नको चाहता ७ शब्द को करता है ८ इन्द्रियोंने ९ इस मानस सूर्य की १० प्रजा शक्ति से ११ विशेषों का निर्म्माण किया १२ द्रष्टा १३ मनो वृत्तियां १४ काम रूप गर्भ को १५ धारण करती हैं —॥२॥

इयोर्मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्र इद्धर्योः सचा सम्मिश्ल आवचो युजा। इन्द्रो वज्री हिरण्ययः॥ ३॥ १२

(इन्द्रः)(इत्) परमेश्वर एव (वचो युजा) महा वाचा युज्यमानयोः(हर्योः) जीवेश योः(सचा) सह युगपत् (आसम्मिश्लः) सर्वतः सम्यङ्मिश्र आयिता (इन्द्रः) परमेश्वरः (वज्री) ज्ञानवज्र युक्तः (हिरण्ययः) ब्राह्म ज्योती रूपः। ज्योतिर्वै हिरण्यं श० ६।७।१।२—॥ ३॥

भाषार्थः – १,२ परमेश्वर ही ३ महावाक् द्वारा युज्यमान ४ जीव ईश्वर का ५ साथ ६ संयोग करने वाला है ७ परमेश्वर ८ ज्ञानवज्र युक्त ९ ब्राह्म ज्योती रूप है॥३॥ विनियोगः पूर्ववत्

इन्द्र वाजेषु नो व सहस्त्र प्रधनेषु च। उग्र उग्राभिरूतिभिः॥ ४॥ १३

हे (इन्द्र) परमेश्वर (उग्रः) शिवरूपस्त्वं (उग्राभिः) अप्रधृष्याभिः (ऊतिभिः) रक्षाभिः (सहस्त्रधनेषु) योगैश्वर्येषु (च) (वाजेषु) काम युद्धेषु (नः) अस्मान् (प्राव) प्रकर्षेण रक्ष॥ ४॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ शिवरूप तुम ३ अप्रधृष्य ४ रक्षाओं से ५ योगैश्वर्यों ६ और ७ काम युद्धों में ८ हमको ९ रक्षा करो —॥ ४॥

अथ ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द विश्वेदेवा देवताः

प्रथश्च यस्य सप्रथश्च नामानुष्टुभस्य हविषो
हविर्यत्। धातुर्द्युतानात्सवितुश्च विष्णो रथन्त
रमाजभारा वसिष्ठः॥ ५॥ २४

(यस्य) (हविषः) स्वात्मनि हवनीयस्य (अनुष्टुभस्य) वेदस्य वागनुष्टुप् श० १०।३।१।१ (यत्) (हविः) महावाक् (च) (प्रथः) विख्यातः (प्रथः) (नाम) (च) अस्ति (सः) (वसिष्ठः) वाग्देवता। वाग्वै वसिष्ठः श० १४।९।२।२ (धातुः) ब्रह्मणः (सवितुः) शिवस्य (च) (विष्णोः) (द्युतानात्) द्योतमानात् नामतः (रथन्तरं) (साम) (आजहार) आहृतवान्॥ ५॥ २४

भावार्थः — १ जिस २ अपनी आत्मा में हवन योग्य ३ वेद का ४ जो ५ महावाक् है ६ और ७ विख्यात ८ प्रथ ९ नामवाला १० है ११ उस १२ वाग्देवता ने १३ ब्रह्मा १४ शिव १५ और १६ विष्णु के १७ प्रकाशमान नाम से १८ रथन्तर १९ साम को २० आहरण किया —॥ ५॥

गृत्समद ऋषि र्गायत्री छन्दो वायुर्देवता

नियुत्वान्वायवागह्ययं शुक्रो अयामिते।
गन्तासि सुन्वतो गृहम्॥ ६॥ २५

हे (वायो) (नियुत्वान्) नियुतवाहनैर्युक्तस्त्वं (आगहि) आगच्छ (अयम्) (शुक्रः) दीप्यमानः सोमः (ते) तुभ्यं (अयामि) गृह्णामि। अयुगतौ त्वं (सुन्वतः) सोमाभिषवं कुर्वतो यजमानस्य (गृहम्) (गन्ता) (असि)॥ ६॥

भावार्थः — १ हे वायु देवता २ नियुत नाम वाहनों से युक्त तुम ३ आओ

सो ४ ग्रह ५ दीप्यमान सोम ६ तेरेलिये ७ ग्रहण करता हूं तुम ८ सोमाभिषव कर्त्ता यजमान के ९ गृह में १० जाने वाले ११ हो—॥ ६॥

अथाध्यात्मम् हे (वायो) प्राण श० ७।१।२।७ (नियुत्वान्) नियोजितेन्द्रिय युक्तस्त्वं (आगहि) हृदयं प्राप्नुहि (अयम्) (शुक्रः) मानस सूर्यः श० ४।३।१।२६ (ते) तुभ्यं (अयामि) गृह्णामि यस्त्वं (सुन्वतः) अभिषवं कुर्वतोमम आत्मनः (गृहम्) हृदयं (गन्ता) (असि)॥ ६॥

भाषार्थः – १ हे प्राण २ नियोजित इन्द्रियों से युक्त तुम ३ हृदय को प्राप्त करो ४ इस ५ मानस सूर्य को ६ तेरे लिये ७ ग्रहण करता हूं ८ तुम अभिषव कर्त्ता मुझ आत्मा के ९ गृह हृदय में १० जाने वाले ११ हो —॥ ६॥

नृमेधपुरुमेधौ द्वावृष्यनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

युज्जायथा अपूर्व्य मघवन् वृत्रहत्याय। तत् पृथिवीमप्रथयस्तदस्तभ्ना उतो दिवम्॥ ७॥ २६

हे (अपूर्व्य) त्वत्तो व्यतिरिक्तेन पूर्वेण वर्जित (मघवन्) धनवन् परमेश्वर त्वं (वृत्रहत्याय) भक्तानां पाप नाशाय मोक्ष दानाय। पाप्मा वै वृत्रः श० ६।४।२३ (यत्) यदा (जायथाः) प्रादुर्भूतः (तत्) तदा (पृथिवीम्) (अप्रथयः) दृढाम करोः (उत) अपि च (दिवम्) द्युलोकं (अस्तभ्नाः) निरुद्धाम कार्षीः॥ ७॥

भाषार्थः – १ अपने पूर्व से रहित २ धनवन् हे परमेश्वर तुम ३ भक्तों के पाप नाश और मोक्ष दान के लिये ४ जब ५ प्रकट हुए ६ तब ७ तुमने पृथिवी को ८ दृढ किया ९ और १० स्वर्ग को ११ निरुद्ध किया॥ ७॥

इतिश्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनुज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते-

सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने पञ्चस्याध्यायस्य द्वितीयः खण्डः २

अथ तृतीयः खण्डः

वामदेव ऋषिरनुष्टुप् छन्दः प्रजापतिर्देवता

मयि वर्चो अथो यशो थो यज्ञस्य यत्पयः। परमेष्ठी प्रजापतिर्दिवि द्यामिव दृंहतु॥१॥२७

(परमेष्ठी) परमे लोके स्थितः (प्रजापतिः) परमेश्वरः (मयि) (वर्चः) ब्राह्मतेजः (दृंहतु) वर्द्धयतु (अथे) (यशः) (उ) अपि (अथ) (यज्ञस्य) (यत्) (पयः) रसोऽमृतं फलं (उ) तदपि मयि दृंहतु (इव) यथा (दिवि) द्योतमाने स्वर्गे (द्याम्) द्योतमानां कान्तिं॥१॥

भाषार्थः – १ परमलोक में स्थित २ परमेश्वर ३ मुझ में ४ ब्राह्मतेज को ५ बढ़ावो ६ तदनंतर ७ यश को ८ भी बढ़ावो ९ तदनन्तर १० यज्ञ का ११ जो १२ रस अमृत फल है १३ उनको भी दृढ़ करो १४ जैसे १५ द्योतमान स्वर्ग में १६ द्योतमान कान्ति को॥१॥

गोतम ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता

सन्ते पयांसि समु यन्तु वाजाः सं वृष्ण्यान्यभिमातिषाहः। आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानि धिष्व॥२॥२८

हे (सोम) आत्मप्रतिबिंब (ते) तव (पयांसि) प्राणाः श० १२।८।१।२० (संयन्तु) सङ्गच्छन्ताम् (वाजाः) अन्नानीन्द्रियाणि (सम्) संयन्तु (वृष्ण्यानि) अन्तःकरणानि (उ) अपि (सम्) संयन्तु (अभिमातिषाहः) शत्रूणां कामादीनां हन्ता (अमृता

य) मोक्षाय (आप्यायमानः) समन्ताद्वर्द्धमानस्त्वं (उत्तमानि) (श्रवांसि) अन्नानि प्राणेन्द्रियाणि श० १२।८।१।२०
(दिवि) भृकुटिमण्डले (धिष्व) धारय ॥२॥

भाषार्थः – १ हे आत्मप्रतिबिंब २ तेरे ३ प्राण ४ समाधि में चलो ५ अन्नरूप इन्द्रियां ६ समाधि में चलो ७ अन्तःकरण ७ भी ८ समाधि में चलो १० शत्रु काम आदि के नाशक ११ मोक्ष के लिये १२ सब ओर से वर्द्धमान तुम १३, १४ उत्तम अन्न रूप प्राण इन्द्रियों को १५ भृकुटि मंडल में १६ धारण करो ॥२॥ त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता

त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वास्त्वमपो अजनयस्त्वं गाः। त्वमाततन्थोर्वन्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ ॥३॥२९

हे (सोम) परमेश्वर (त्वम्) (इमाः) (विश्वाः) सर्वाः (ओषधीः) (अजनयः) उत्पादितवानसि (त्वम्) (अपः) उदकानि (त्वम्) (गाः) पशूनुत्पादितवान् (त्वम्) (उरुम्) विस्तीर्णं (अन्तरिक्षं) (आततनोः) विस्तारितवानसि (त्वम्) (ज्योतिषा) सूर्यज्योतिषा (तमः) अन्धकारं (विववर्थ) विगतकृतवानसि। वृञ् वरणे ॥३॥ **भाषार्थः** – १ हे परमेश्वर २ तुमने ३ इन ४ सब ५ ओषधियों को ६ उत्पन्न किया ७ तुमने ८ जलों को उत्पन्न किया ९ तुमने १० पशुओं को उत्पन्न किया ११ तुमने १२ विस्तीर्ण १३ अन्तरिक्ष को १४ विस्तारित किया १५ तुमने १६ सूर्यज्योति से १७ अंधकार को १८ दूर किया ॥३॥

मधुच्छन्दा ऋषि गायत्री छन्दो अग्निर्देवता

अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। हो

नारं रत्नं धातमम् ॥ ४ ॥ २०

(पुरोहितं) देवानां पुरोहितं (यज्ञस्य) देवानां यज्ञस्य (ऋत्विजम्) (होतारम्) (रत्न धातमम्) अतिशयेन स्वज्योतिषा रत्नानां पोषयितारं सर्वव्यापित्वात् (देवम्) (अग्निम्) (ईडे) स्तौमि ॥ ४ ॥

भाषार्थः

१ देवताओं के पुरोहित २ देवयज्ञ के ३ ऋत्विज ४ और होता ५ अपने ज्योतिसे रत्नों के पोषक ६, ७ अग्नि देवता को ८ स्तुत करता हूं ॥ ४ ॥

अथाध्यात्मम् – (पुरोहितम्) पुरां व्यष्टि समष्टि देहानां हितकरं (यज्ञस्य) योग यज्ञस्य (ऋत्विजम्) (होतारम्) (रत्न धातमं) योगैश्वर्याणां धारकं (देवम्) माया क्रीडनकैः क्रीडन शीलं (अग्निम्) आत्माग्निं (ईडे) स्तौमि ॥ ४ ॥

भाषार्थः – १ व्यष्टि समष्टि देहों के हितकारी २ योग यज्ञ के ३ ऋत्विज ४ और होता ५ योगैश्वर्यों के धारक ६ माया के खिलौनो से क्रीडणशील ७ आत्माग्नि को ८ स्तुत करता हूं ॥ ४ ॥

वामदेव ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दो ब्रह्माग्निर्देवता –

तेमन्वत प्रथमन्नाम गोनान्त्रिः सप्त परमन्नाम जानन्। ता जानती रभ्यनूषत क्षा आविर्भुवन्नरुणीर्यशसा गावः ॥ ५ ॥ २१

(ते) सनकादयो महर्षयः (गोनाम्) वेदवाचां (प्रथमम्) मुख्यं (नाम) प्रणवं (अमन्वत) अजानन् पुनः (त्रिः) त्रिपदां गायत्रीं (सप्त) व्याहृतीः (परमम्) (नाम) (जानन्) अजानन् (ताः) वाचः (जानतीः) सर्वं जानत्यः (क्षाः) योगभूमीः

(अभ्यनूषत) अस्तुवन्ततः (यशसा) विष्णुना। आदित्यो यशः श० १४।१।१।३२ सूर्यो वै सर्वे देवाः श० १३।७।१।१५ (अरुणीः) तेजोमय्यः (गावः) वेदवाचः (आविर्भुवन्) प्रादुरभूवन् ॥ ५॥

भावार्थः — १ उन सनकादि महर्षिने २ वेदवचनों के ३ मुख्य ४ नाम प्रणव को ५ जाना फिर ६ त्रिपदा गायत्री ७ तमव्याहृती को ८.९ परम नाम १० जाना ११ उनवचनोंने १२ सर्वज्ञ १३ योगभूमियों को १४ स्तुत किया १५ फिर विष्णुजी से १६ तेजोमय १७ वेदमंत्र १८ प्रकट हुए॥ ५॥

गृत्समद ऋषि स्त्रिष्टुप छन्दो ब्रह्माग्निर्देवता

समन्या यन्त्युपयन्त्यन्याः समानमूर्वं नद्यः पृणन्ति। तमूं शुचिं शुचयो दीदिवांसमपान्नपातमुपयन्त्यापः ॥ ६॥ २२॥

(अन्याः) (आपः) आत्मप्रति विंव रूपरसाः (सम्) महापुरुषम् (यन्ति) वासुदेवः सर्वमिति ज्ञान योगेन प्राप्नुवन्ति (अन्याः) आत्मप्रति विंवाः (उपयन्ति) भक्ति योगेन समीपे गच्छन्ति साकारस्य सामिप्यं प्राप्नुवन्ति (नद्यः) इन्द्रियाणि (समानम्) सर्वत्र तुल्यं (ऊर्वम्) महान्तं विस्तृतमात्माग्निं (प्रणन्ति) प्रीणयन्ति। पृण प्रीणने (तम्) (उ) एव (अपाम्) आपोज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोमिति मंत्रं कथितानां (नपातम्) पौत्रं (शुचिम्) निर्मलं (दीदिवांसम्) दीप्यमानमात्माग्निं (शुचयः) शुद्धाः (आपः) आत्मप्रति विंव रूपरसाः (उपयन्ति) योगेन प्राप्नुवन्ति ॥ ६॥

भाषार्थः १.२ कोई आत्म मति विंव रूप रस ३ महा पुरुष को ४ प्राप्त करते हैं ५ दूसरे आत्म मति विंव ६ भक्ति योग से सामिप्य को पाते हैं ७ इन्द्रियां ८ सर्वज्ञ तुल्य ९ महान् आत्माग्नि को १० तृप्त करती हैं ११.१२ उसी १३ ब्रह्मज्योतिरूप जलों के १४ पौत्र १५ निर्म्मल १६ दीप्यमान आत्माग्नि को १७ शुद्ध १८ आत्म मति विंव रूप रस १९ योग से प्राप्त करते हैं॥ ६॥

तृतीयोर्थः

(अन्याः) वृष्टिभवाः (आपः) (संयन्ति) भूम्यां सङ्गच्छन्ते (अन्याः) पूर्वमत्रावस्थिताः (उपयन्ति) उपगच्छन्ति ताः सर्वा आपः (समानम्) सह (नद्यः) नदी भूत्वा (ऊर्वम्) समुद्र मध्ये वर्त्तमानं वडवानलं (पृणन्ति) प्रीणयन्ति (तम्) (उ) एव (अपान्न पातम्) (शुचिं) निर्म्मलं (दीदिवांसम्) दीप्यमानं वड़वानलं (शुचयः) शुद्धाः (आपः) (उपयन्ति) समीपे गच्छन्ति॥ ६॥

भाषार्थः

१ दूसरे वर्षा जनित २ जल ३ भूमि में संयोग को पाते हैं ४ दूसरे वहां ही पूर्वस्थ ५ वर्षा जल में मिलते हैं वे सब जल ६ साथ ७ नदी होकर ८ समुद्र मध्य वर्त्तमान वड़वानल को ९ तृप्त करते हैं १०.११ उसी १२ जलो के पुत्र १३ निर्मल १४ दीप्यमान वड़वानल को १५ शुद्ध १६ जल १७ समीप प्राप्त करते हैं॥ ६॥

वामदेव ऋषिरनुष्टुप् छन्दो रात्रिर्देवता।

आप्रा गाऽइद्रा युवतिरन्हः केतून्त्समीर्त्सति।
अभूद्भद्रा निवेशनी विश्वस्य जगतो रात्रिः॥ ७॥ २३

(भद्रा) सांसारिक सुखकरी (युवतिः) नमसा ज्ञानेन वा मिश्रयित्री। युमिश्रणे (रात्रिः) रात्रि रुत्थाना नस्था वा (आप्रा गात्)

साभिमुख्येन प्रगच्छति (अन्हः) दिवसस्य समाधे र्वा (केतून्) रश्मीन् प्रज्ञाः वा (समीर्त्सति) सम्यक् क्षेप्तुमिच्छति ईर क्षेपे. चु० (भद्रा) कल्याणी (रात्रिः) रात्रिरुत्थानावस्था वा (विश्वस्य) सर्वस्य (जगतः) (निवेशनी) निवेश कारिणी (अभूत्) भवति ॥ ७ ॥

भाषार्थः – १ संसारी सुख की दाता २ अज्ञान में युक्त करनी वाली ३ रात्रि वा उत्थान अवस्था ४ सन्मुख प्राप्त होती है ५ दिवस वा समाधि की ६ किरण वा प्रज्ञा को ७ भले प्रकार फेंकना चाहती है ८ कल्याणी ९ रात्रि वा उत्थान अवस्था १० तक ११ जगत की १२ निवेश कारिणी १३ होती है ॥ ७

वार्हस्पत्यो भरद्वाज ऋषिर्जगती छन्दोऽग्निर्देवता·

प्रक्षस्य वृष्णो अरुषस्य नू महः प्र नो वचो विदथा जातवेदसे। वैश्वानराय मतिर्नव्यसे शुचिः सोम इव पवते चारुरग्नये ॥ ८ ॥ २४

(नः) अस्माकं (प्रक्षस्य) सम्प्रक्तस्य व्याप्तस्य (वृष्णः) सेक्तुः (अरुषस्य) आरोचमानस्यात्म प्रतिविंवस्य (महः) पूजा युक्तं (शुचिः) निर्मलं (मतिः) मननीयं (वचः) वचनं (नु) क्षिप्रं (विदथा) योग यज्ञेन (जातवेदसे) सर्वज्ञाय (नव्यसे) संस्तुताय (वैश्वानराय) ईशाग्नये (प्रपवते) प्रकर्षेण गच्छति (इव) यथा (चारुः) कल्याण रूपः (सोमः) आत्म प्रतिविंवः (अग्नये) आत्माग्नये गच्छति ॥ ८ ॥

भाषार्थः – १ हमारे २ व्याप्त ३ सेक्ता ४ आरोचमान आत्म प्रतिविंव का ५ पूजा युक्त ६ निर्मल ७ मननीय ८ वचन ९ शीघ्र १० योग यज्ञ-

द्वारा ११ सर्वत्र १२ संस्कृत १३ ईशाग्नि के लिये १४ जाता है १५ जैसे १६ कल्याण रूप १७ आत्म प्रतिबिंब १८ आत्माग्नि के लिये जाता है ॥ ८ ॥

भरद्वाज ऋषि स्त्रिष्टुप् छन्दो विश्वे देवा देवता:

विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यज्ञ मुभे रोदसी अपा न्नपाच्च मन्म। मा वो वचा ᳇सि परिचक्ष्याणि वोच ᳇ सुम्नेष्विद्वो अन्तमा मदेम ॥ ९ ॥ २५

(विश्वे) सर्वे (देवाः) (अपान्नपात्) मध्यस्थानोऽग्निः (च) (उभे) (रोदसी) द्यावापृथिव्यौ (मम) मदीयं (मन्म) मननीयं (यज्ञम्) जपयज्ञं (शृण्वन्तु) हे (देवाः) (वः) युष्माकं (परिचक्ष्याणि) परिवर्जनीयानि यानि (वचांसि) स्तोत्राणि (मा) (वोचम्) (वः) युष्माकं (अन्तमाः) भक्ता वयं (सुम्नेषु) सुखेषु (इत्) इव (मदेम) मोदेम ॥ ९ ॥

भाषार्थः – १ सब २ देवता ३ मध्यस्थानवाला अग्नि ४ और ५ दोनों ६ पृथिवी स्वर्ग ७ मेरे ८ मननीय ९ जपयज्ञ को १० सुनें ११ हे देवताओ १२ तुम्हारे १३ जिन परिवर्जनीय १४ स्तोत्रों को १५,१६ उच्चारण नहीं करूं १५ तुम्हारे १६ अन्तम भक्त हम १७ सुखों में १८ ही १९ मोद को पावें ॥ ९ ॥

वामदेव ऋषि महापंक्तिश्छन्दो देवा देवता:

यशो मा द्यावा पृथिवी यशो मेन्द्र बृहस्पती।
यशो भगस्य विन्दतु यशो मा प्रति मुच्यताम्।
यशस्व्य ३: स्याः स ᳇ सदोऽहम्प्रवदिता स्याम् ॥ १० ॥ २६

हे (द्यावापृथिवी) (यशः) (मा) मां स्तोतारं (विन्दतु) लभतां प्राप्नोतु हे (इन्द्र बृहस्पती) इन्द्र बृहस्पती नरनारायणौ वा-

(यशः) (मा) मां (विन्दन्तु) किंच (भगस्य) योगैश्वर्यस्य (यशः) (मा) मां (विन्दतु) (मा) न (प्रति मुच्यताम्) प्रमुच्यतां (यशस्वी) (अहम्) (अस्याः) (संसदः) योग भूमेः (प्रवदिता) प्रवक्ता (स्याम्) भूयासम् ॥२०॥

भाषार्थः – १ हे पृथिवी स्वर्ग २ यश ३ मुझ स्तोता को ४ प्राप्त करो ५ इन्द्र बृहस्पति वा नर नारायण ६ मुझको यश ७ प्राप्त करो और ८ योगैश्वर्य का ९ यश १० मुझे प्राप्त करो ११ मुझे मत १२ त्यागो १३ यशस्वी १४ मैं १५ इस १६ योगभूमि का १७ प्रवक्ता १८ होऊं ॥२०॥

हिरण्य स्तूप ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः इन्द्रो देवता-

इन्द्रस्यनु वीर्य्याणि प्रवोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री। अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्रवक्षणा अभिनत् पर्वतानाम् ॥२१॥ २७

(इन्द्रस्य) (प्रथमानि) मुख्यानि (वीर्य्याणि) पराक्रम युक्तानि कर्माणि (नु) क्षिप्रं (प्रवोचम्) प्रब्रवीमि (यानि) (वज्री) वज्रधरः (चकार) (अहिम्) मेघंनि० २।१० (अहन्) वृष्टयर्थं हनवान् (अनु) पश्चात् (अपः) (ततर्द) भूमौ पातितवान् (पर्वतानाम्) सम्बंधिनीः (वक्षणाः) नदी नि० २।१३ (प्राभिनत्) कूलद्वय कर्षणेन प्रवाहितवान् ॥२१॥

भाषार्थः – १ इन्द्र के २ मुख्य ३ पराक्रम युक्त कर्मों को ४ शीघ्र ५ कहता हूं ६ जिसको ७ वज्रधारी ने ८ किया ९ मेघको १० वर्षा के लिये ताडण किया ११ पश्चात् १२ जलों को १३ भूमि पर गिराया १४ पर्वत सम्बंधी १५ नदियों को १६ कूलद्वय कर्षण से प्रवाहित किया ॥२१॥

अथाध्यात्मम् – (इन्द्रस्य) आत्मारूपयजमानस्य (प्रथमानि) मुख्यानि (वीर्याणि) बलानि (नु) क्षिप्रं (प्रवोचम्) प्रब्रवीमि (यानि) (वज्री) ज्ञान वज्रधरः (चकार) (अहिम्) कामं पापम्वा (अहन्) हतवान् (अनु) पश्चात् (अपः) कमलान्तरिक्षाणि (ततर्द) स्वकीय प्रवेशेन हिंसितु वान्। तर्द्दहिंसायां (पर्वतानाम्) इन्द्रिय गोल कानां (वक्षणाः) इन्द्रियाणि (प्राभिनत्) मनसि प्रवेशाय प्रवाहित वान्। मनो वै समुद्रः श० ७।५।२।५२—॥ ११॥

भावार्थः – १ आत्मा रूप यजमान के २ मुख्य ३ बलों को ४ शीघ्र ५ कथन करता हूं ६ जिनको ७ ज्ञानवज्र धारी ने ८ किया ९ कामवापाप को १० मारा ११ पीछे १२ कमलान्तरिक्षों को १३ अपने प्रवेश से व्याप्त किया १४ इन्द्रिय गोलकों की १५ इन्द्रियों को १६ मनमें प्रवेश के लिये पहुंचाया।११

विश्वामित्र ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द आत्माग्निर्देवता।

अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा घृतम्मे चक्षुरमृतम्म आसन्। त्रिधातुरर्को रजसो विमानो जस्रज्ज्योतिर्हविरस्मि सर्वम्॥१२॥२८

योगारूढः ब्रूते (जन्मना) योग संस्कारेण (जातवेदाः) सर्वज्ञः (अग्निः) आत्माग्निः (अस्मि) (मे) मम (चक्षुः) (घृतम्) (मे) मम (आसन्) आस्येमुखे (अमृतम्) वायुरूपम मृतम् (त्रिधातुः) ब्रह्मविष्णु महेश रूपोग्नि वायु सूर्य रूपो वा (अर्कः) अर्चनीयः (रजसः) ब्रह्माण्डस्य (विमानः) आधार भूतो महापुरुषः (अजस्रम्) नित्यं (ज्योतिः) ब्रह्म (हविः) भोग्यं (सर्वम्)

(अस्मि) अहमस्मि यथा भगवद्वाक्यं ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्म कर्म समाधिनेति ॥१२॥

भाषार्थः

योगारूढ़ कहता है १ मैं योग संस्कार से २ सर्वज्ञ ३ आत्माग्नि ४ हूं ५ मेरा ६ चक्षु ७ घृत है ८ मेरे ९ मुख में १० वाक् रूप अमृत है ११ ब्रह्मा विष्णु महेश रूप वा अग्नि वायु सूर्य रूप ५ पूजनीय १३,१४ ब्रह्मांड का आधार रूप महा पुरुष १५,१६ नित्य ब्रह्म है १७,१८ सब भोग्य १९ मैं ही हूं ॥ १२ ॥

विश्वामित्र ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता

पात्यग्निर्विपो अग्रम्पदं वेः पाति यह्वश्चरणं सूर्यस्य। पाति नाभा सप्तशीर्षाणमग्निः पाति देवानामुपमादमृष्वः १३—३॥२९॥

(विपः) मेधावी नि० (अग्निः) आत्माग्निः (वेः) जीवात्मा रूप सुपर्णस्य। वेतेर्गति कर्मणो रूपं नै० २।१४।१८ (अग्रम्) मुख्यं (पदम्) स्थानं भृकुटि मण्डलं (पाति) रक्षति (यह्वः) महानात्माग्निः (सूर्यस्य) अन्तर्यामिनः (चरणम्) हार्दान्तरिक्षं चरत्यनेनेति चरणमन्तरिक्षं (पाति) (नाभा) नाभौ (सप्तशीर्षाणं) पंचेन्द्रिय मनो बुद्ध्याख्य सप्त तेजोभिर्युक्तं जीवात्मानं। प्राणा वै शिरः श० १।४।२।५ (पाति) (ऋष्वः) सर्वदर्शी नि० १।२०-१०,२६-१२।३७-१४।१३ (अग्निः) आत्माग्निः (देवानाम्) इन्द्रियाणां (उपमादम्) उपमादकं विषय ग्रहण शक्तिं (पाति) ॥२३॥

भाषार्थः - १ मेधावी २ आत्माग्नि ३ जीवात्मा रूप पक्षी के ४ मुख्य

५ स्थान भृकुटि मंडल को ६ रक्षा करता है ७ महान् आत्माग्नि ८ अन्तर्यामी के ९ हार्दान्तरिक्ष को १० रक्षा करता है ११ नाभि में १२ पंच इन्द्रिय मन बुद्धि नाम सात तेज से युक्त जीवात्मा को १३ रक्षा करता है १४ सर्वदर्शी १५ आत्माग्नि १६ इन्द्रियों की १७ उपमादक विषय ग्रहण शक्ति को १८ रक्षा करता है ॥१३॥

द्वितीयोर्थः

(विपः) मेधावी (अग्निः) (वेः) सर्वत्र व्याप्ता या भूम्याः (अग्रम्) उपरिभागं (पदं) स्थानं (पाति) रक्षति (यह्वः) महानग्निः (सूर्यस्य) (चरणम्) मार्गं स्वर्गं (पाति) (नाभा) नाभौ मध्ये ऽन्तरिक्षे (सप्तशीर्षाणं) सप्तगणं मरुद्गणं (पाति) (ऋष्वः) दर्शनीयो यं (अग्निः) (देवानाम्) (उपमादम्) उपमादकं यज्ञं पाति ॥२३॥

भाषार्थः

१ मेधावी २ अग्नि ३ सर्वत्र व्याप्त भूमि के ४ उपरिभाग ५ स्थान को ६ रक्षा करता है ७ महान् अग्नि ८ सूर्य के ९ मार्ग स्वर्ग को १० रक्षा करता है ११ अन्तरिक्ष में १२ सप्त गण मरुद्गण को १३ रक्षा करता है १४ यह दर्शनीय १५ अग्नि १६ देवताओं के १७ उपमादक यज्ञ को १८ रक्षा करता है ॥२३॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने षष्ठस्याध्यायस्य तृतीयः खंडः ३

अथ चतुर्थः खण्डः

द्रूपोर्वामदेव ऋषिः पंक्तिश्छन्दोऽग्निर्देवता

भ्राजन्त्यग्ने समिधान दीदिवो जिह्वा चरत्यन्तरासनि। स त्वन्नो अग्ने पयसा वसुविद्रयिं

वर्चो दृशोदाः २॥ ३०

हे (सामिधान) वागाद्यृत्विग्भिः सामिध्यमान (दीदिवः) दीप्त (अग्ने) आत्माग्ने (आसनि) आस्ये मुखे (अन्तः) मध्ये (भ्राजन्ती) प्रकाश माना (जिह्वा) महा वाक् नि० २। ११ (चरति) गच्छति वर्त्तते (अग्ने) हे आत्माग्ने (सः) (वसुवित्) भक्ति धनस्यलम्भकः (त्वं) (दृशे) महा पुरुष दर्शनाय (नः) अस्मभ्यं (पयसा) अमृतेन सह (रयिम्) भक्तिधनं (वर्चः) तेजश्च (अदाः) देहि ॥ २॥

भाषार्थः – १ हे वाक् आदि ऋत्विजों से भले प्रकार प्रज्वालित २ दीप्त ३ आत्माग्ने ४, ५ मुख के मध्य ६ प्रकाश मान ७ महावाक् ८ वर्त्तमान है ९ हे आत्माग्ने १० वह ११ भक्ति धनके प्रापक १२ तुम १३ महा पुरुष के दर्शनार्थ १४ हमारे लिये १५ अमृत सहित १६ भक्ति धनको १७ और तेज को १८ दीजिये ॥ २॥

द्वितीयोर्थः

(सामिधान) ऋत्विग्भिः सामिध्यमान (दीदिवः) दीप्त (अग्ने) (आसनि) तव मुखे (अन्तः) मध्ये (भ्राजन्ती) प्रकाश माना (जिह्वा) (चरति) हवींषि भक्षयति हे (अग्ने) (सः) (वसुवित्) धनलम्भकः (त्वम्) (दृशे) दर्शनाय (नः) अस्मभ्यं (पयसा) अन्नेन सह (रयिम्) रमणीयं धनं (वर्चः) तेजश्च (अदाः) देहि ॥ २॥

भाषार्थः १ हे ऋत्विज द्वारा प्रज्वालित २ दीप्त ३ अग्ने ४ तेरे मुखके ५ मध्य ६ प्रकाश मान ७ जिव्हा ८ हविओं को भक्षण करती है ९ हे अग्ने १० वह ११ धनप्रापक १२ तुम १३ दर्शन के लिये १४ हमको १५ अन्न सहित १६ र-

मणीय धनको १७ और तेजको १८ दीजिये ॥१॥

वामदेव ऋषिः पंक्तिश्छन्दः ऋतवो देवता-

वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः वर्षाण्य
नु शरदो हेमन्तः शिशिर इन्नु रन्त्यः ॥२॥ ३१

(वसन्तः) (इन्नु) एव चैत्र वैशाख रूपो वसन्त एव (रन्त्यः) (र) ईशाग्निः (अन्तं) स्वरूपं। ईशाग्नि रूपस्थः (ग्रीष्मः) (इन्नु) ज्येष्ठ आषाढ़ रूपो ग्रीष्म एव (रन्त्यः) ईशाग्नि रूपस्थः (वर्षाणि) श्रावण भाद्रपद रूपेणावयवी भूतः प्रावृट् ऋतुः (अनु) पश्चात् (शरदः) आश्विन कार्तिक रूपेणावयवी भूत ऋतुः (हेमन्तः) मार्गशीर्ष पौष रूप ऋतुः (शिशिरः) माघ फाल्गुन रूप ऋतुः (इन्नु) अपि (रन्त्यः) ईशाग्नि रूपस्थः यथा श्रुतिः सम्वत्सरो वैमज्ञा पति रग्निः १०।४।३।१—॥२॥

भाषार्थः – १.२ चैत्र वैशाख रूप वसन्त ही ३ ईशाग्नि रूपमें स्थित है ४.५ ज्येष्ठ आषाढ़ रूप ग्रीष्म ही ६ ईशाग्नि रूपमें स्थित है ७ श्रावण भाद्रपद रूप वर्षा ऋतु ८ तथा ९ आश्विन कार्तिक रूप शरद् ऋतु १०,११ तथा मार्गशीर्ष पौष रूप शिशिर ऋतु १२ भी १३ ईशाग्नि रूप में स्थित हैं अर्थात् सब उसके संग हैं ॥२॥

नारायण ऋषिरनुष्टुप् छन्दः पुरुषो देवता-

सहस्रशीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। सभू
मिं सर्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥३॥ ३२

अथ विराट् पुरुषस्य कारणं महा पुरुषं स्तौति यः (पुरुषः) सर्वलोकेषु व्याप्तो महा नारायणः (सहस्र शीर्षा) सर्वात्म रूप

त्वादनन्तानि शीर्षाणि यस्य सः (सहस्राक्षः) अनन्तान्यक्षी
णि यस्य सः (सहस्रपात्) अनन्ताः पादा यस्य (सः) (भूमिम्)
व्यष्टिसमष्टि देहरूपं स्थानं (सर्वतः) तिर्यक् ऊर्द्ध्वमधश्च (स्पृ
त्वा) व्याप्य (दशाङ्गुलम्) नाभेः सकाशाद् दशाङ्गुल परिमितं दे
शं हृदयं (अति) अतिक्रम्य (अतिष्ठत्) अन्तर्यामि रूपेणा-
वस्थितः॥१॥

भावार्थः - अब विराट् पुरुष के कारण महा पुरुष की स्तुति करते
हैं १ सब लोकों में व्याप्त महानारायण २ सर्वात्म होने से अनन्त सिर वा
ला ३ अनन्त नेत्र वाला ४ अनन्त पाद वाला है ५ वह ६ व्यष्टि समष्टि रू
पस्थान को ७ सब ओर नीचा ऊंचा तिरछा ८ व्याप्त करके ९ नाभि से दश
अंगुलि परिमित देश हृदय को १० पाकर ११ अन्तर्यामी रूप से स्थित हु
आ॥२॥ विनियोगः पूर्ववत्

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि॥३॥

(त्रिपात्) त्रिपाद्विभूति रूपः (पुरुषः) महा पुरुषः (ऊर्द्ध्वः) ब्रह्मा
ण्डादूर्ध्वं (उदैत्) उत्कर्षेण स्थितवान् (पुनः) (अस्य) महा
नारायणस्य (पादः) चतुर्थांशः (इह) ब्रह्माण्डे (अभवत्)
व्याप्तोऽभवत् (ततः) ब्रह्माण्ड प्रवेशानन्तरं (विष्वङ्) विषु स
र्वत्राञ्चतीति विष्वङ् देवतिर्यगादि रूपेण विविधः सन् (सा
शनानशने) अशनेन सह वर्त्तमानं साशनं। अशनादि व्य
वहाररहितं चेतनं प्राणिजातमशनं तद्रहितमचेतनं गिरिन-
द्यादिकं (अभि) अभिलक्ष्य (व्यक्रामत्) व्याप्तवान् यथाभ

गवद्वाक्यं विष्टभ्याहमिदं कृत्स्न मेकांशेन स्थितो जगदिति ॥४॥

भाषार्थः

१ त्रिपाद् विभूति रूप २ महापुरुष ३ ब्रह्माण्ड सेऊपर ४ प्रत्यक्ष रूपसे स्थित हुआ ५ फिर ६ इस महानारायण का ७ चतुर्थांश ८ इस ब्रह्माण्ड में ९ व्याप्त हुआ १० ब्रह्माण्ड प्रवेश के पीछे ११ देवता मनुष्य आदि रूपसे नाना प्रकार का होता १२ जड़चैतन्य को १३ देखकर १४ उन्हें व्याप्त किया ॥४

विनियोगः पूर्ववत्

पुरुष एवेद ँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् । पादो
स्यसर्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ।५।३४

(इदम्) (सर्वम्) (पुरुषः) महा नारायणः (एव) (यत्) (भूतम्) अतीतं ब्रह्म संकल्पजं जगत् (च) (यत्) (भाव्यम्) भविष्यं ब्रह्म संकल्पजं जगत् (विश्वा) विश्वानि सर्वाणि (भूतानि) ब्रह्माण्डानि (अस्य) महानारायणस्य (पादः) चतुर्थांशः (दिवि) महानारायण लोके (अस्य) (त्रिपात्) त्रिपाद्विभूति रूपं स्वरूपं (अमृतम्) विनाश रहितं यस्मादनन्तं ब्रह्मैव स्वभागे स्वकीय ज्योतिषा महा नारायण रूपम भवत् ॥ ५॥

भाषार्थः

१ यह २ सब ३ महानारायण ४ ही है ५ जो ६ अतीत ब्रह्म संकल्पज जगत है ७ और ८ जो ९ भविष्य ब्रह्म संकल्पज जगत है १० और सब ११ ब्रह्माण्ड १२ इस महानारायण का १३ चतुर्थांश है १४ महानारायण लोक में १५ इन का १६ त्रिपाद् विभूति रूप स्वरूप १७ विनाश रहित है जिस कारण ब्रह्म ही अपने भाग में अपनी ज्योति से महानारायण रूप हुआ ॥ ५॥

विनियोगः पूर्ववत्

तावानस्य महिमा ततो ज्यायाꣳश्च पूरुषः।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥६॥३४

(अस्य) महानारायणस्य (महिमा) (तावान्) तावती (च) इतिन (पुरुषः) महानारायणः (ततः) महिम्नः (ज्यायान्) अतिशयेनाधिकोऽस्तिब्रह्मनाम्नाऽनन्तत्वात् (उत) अपि चस महानारायणः (अमृतत्वस्य) अमरणधर्मस्य (ईशानः) ईश्वरः (यत्) यस्मात् (अन्ने) ब्रह्माण्डे। अन्नं वै विराट् श० १२।२।४।५ (न) (अतिरोहति) आसक्तो न भवति किन्तु स्वकीय पराशक्त्या व्याप्नोति॥६॥

भाषार्थः – १ इस महानारायण की २ महिमा ३ उतनी है ४ यह नहीं ५ महानारायण ६ उस महिमा से ७ अत्यन्त अधिक है क्योंकि ब्रह्मनाम से अनन्त है ८ और वह महानारायण ९ मोक्ष धर्म का १० स्वामी है ११ जिस कारण १२ ब्रह्माण्ड में १३, १४ आसक्त नहीं होता है किन्तु अपनी शक्तिपरा से व्याप्त करता है॥६॥ विनियोगः पूर्ववत्

ततो विराडजायत विराजो अधिपूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥७॥३६

(ततः) महानारायणात् (विराट्) विराट् देहस्तथा (विराजः) तद्देहाभिमानी (पुरुषः) (अधि) तदेव देहमधिकरणं कृत्वा (अजायत) (सः) (जातः) विराजः (अत्यरिच्यत) अतिरिक्तश्रेष्ठोऽभूत् (पश्चात्) (भूमिम्) ससर्ज (अथ) (उ) तदनन्तरमेव (पुरः) देवमनुष्यादीनां शरीराणि ससर्ज॥७॥

भावार्थः –१ उस महानारायण में २ विराट् देह ३ तथा उस देह का अभिमानी ४ पुरुष ५ उसी देह को अधिकरण करके ६ उत्पन्न हुआ ७ वह ८ उत्पन्न विराट् पुरुष ९ श्रेष्ठ हुआ १० पीछे ११ भूमि को उत्पन्न किया १२,१३ तदनंतर ही १४ देव मनुष्य आदि के शरीरों को उत्पन्न किया॥ ७ ॥

वामदेव ऋषिरुपरिष्टज्ज्योतिश्छन्दो द्यावापृथिवी देवते

मन्ये वान्द्यावा पृथिवी सुभोजसौ ये अप्रथेथा ममितमभि योजनम्। द्यावा पृथिवी भवतं स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः॥ ८॥ ३७

हे (द्यावा पृथिवी) द्यावा पृथिव्यौ (वाम्) युवां (सुभोजसौ) सुष्ठु प्रकाश वलौ (मन्ये) अहं जानामि (ये) युवां (अमितम्) अपरिमितं (योजनम्) ब्रह्माणि युज्यते पुरुषोऽनेनेति योजनं ब्रह्म ज्ञानं (अभ्यप्रथेथाम्) आभिविस्तार युतम् हे (द्यावा पृथिवी) द्यावा पृथिव्यौ युवा मस्माकं (स्योने) सुखरूपे (भवतम्) (नः) अस्मान् (अंहसः) पापात् (मुञ्चतम्) मोचयतम् ॥ ८ ॥

भावार्थः –१ हे पृथिवी स्वर्ग २ तुम दोनों को ३ अच्छे प्रकाश बल वाला ४ जानता हूं ५ जो तुम ६ अपरिमित ७ ब्रह्म ज्ञान को ८ विस्तार देते हो ९ हे पृथिवी स्वर्ग १० हमारे सुख रूप ११ हूजिये १२ हमको १३ पाप से १४ छुड़ाओ ॥ ८ ॥ वामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

हरी त इन्द्र श्मश्रूण्युतो ते हरितौ हरी। तं त्वा स्तुवन्ति कवयः पुरुषासो वनर्गवः ॥ ९ ॥ ३८

हे (इन्द्र) महानारायण (हरी) शिव विष्णू (ते) तव (श्मश्रू

णि) पुरुषज्ञापकरूपाणि (उतो) अपिच (हरितो) व्याष्टिस मष्टिसूर्यौ (ते) नव (हरी) किरणौ (वनर्गवः) वननीयाः सम्भ जनीया वेदवाचः (कवयः) मेधाविनः (पुरुषासः) पुरुषाः (तम्) (त्वा) त्वां (स्तुवन्ति) ॥ ९ ॥

भाषार्थः – १ हे महानारायण २ शिव विष्णु ३ तेरे ४ पुरुषज्ञापक रूप हैं ५ और ६ व्याष्टि समष्टि सूर्य ७ तेरी ८ किरण हैं ९ संभजनीय वेदवचन १० और मेधावी ११ पुरुष १२ उस १३ तुझको १४ स्तुत करते हैं ॥ ९ ॥

वामदेवऋषिरनुष्टुप्छन्द आत्मा देवता

यद्वर्चो हिरण्यस्य यद्वा वर्चो गवामुत। सत्य स्य ब्रह्मणो वर्चस्तेन मा संसृजामसि ॥ २० ॥ ३९

आत्मन् (हिरण्यस्य) पराज्योतिषः। ज्योतिर्वै हिरण्यं श० ६।७।१।२ (यत्) (वर्चः) तेजोऽस्ति (वा) (गवाम्) वैदिकमंत्राणां (यत्) (वर्चः) तेजोऽस्ति (उत) अपिच (सत्यस्य) (ब्रह्मणः) यत् (वर्चः) तेजोऽस्ति (तेन) तेजसा (मा) मां (संसृज) संयोजयत्वं (असि) ब्रह्म (असि) ॥ २० ॥

भाषार्थः – हे परमेश्वर १ पराज्योति का २ जो ३ तेज है ४ अथवा ५ वैदिक मंत्रों को ६ जो ७ तेज है ८ और ९ सत्य १० ब्रह्म का ११ जो तेज है १२ उस तेज से १३ मुझको १४ संयुक्त करो तुम १५ ब्रह्म १६ हो – ॥ २० ॥

वामदेवऋषिरनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता

सहस्तन्न इन्द्र दध्योज ईशे ह्यस्य महतो विर पाशिन्। क्रतुन्न नृम्णं स्थविरञ्च वाजं वृ त्रेषु शत्रून्त्सहना कृधीनः ॥ २१ ॥ ४०

हे (विरप्शिन्) विविधवेदशास्त्राणां वक्तः महापुरुष (इन्द्र) परमेश्वर (तत्) (सहः) शत्रूणामभिभवनरूपं (ओजः) वलं (नः) अस्मभ्यं (दद्धि) देहि [ददातेश्छान्दसं रूपं लोडि हेर्धिभावादिना] (अस्य) (महतः) वलस्य (ईशे) ईश्वरो भवसि (सः) त्वं (नः) अस्माकं (क्रतुम्) यज्ञं (नृमणम्) धनं (च) (वाजम्) वलं (स्थावरं) अतिशयेन प्रवृद्धं (कृधि) कुरु (वृत्रेषु) पाप पुरुषेषु वर्त्तमानान् (नः) अस्माकं (शत्रून्) (हन) नाशय ॥ ११॥

भाषार्थः – १ हे विविध वेद शास्त्रों के वक्ता महा पुरुष २ परमेश्वर ३ वह ४ शत्रुजयी ५ वल ६ हमें ७ दो ८ इस ९ महान् वल के १० स्वामी हो ११ वह तुम १२ हमारे १३ यज्ञ १४ धन १५ और १६ वल को १७ अत्यन्त प्रवृद्ध १८ करो १९ पाप पुरुषों में वर्तमान २० हमारे २१ शत्रुओं को २२ मारो ॥ ११

वामदेव ऋषिरनुष्टुप् छन्दो गावो देवता.

सहर्षभाः स्सहवत्सा उदेत विश्वा रूपाणि वि
भ्रतीर्द्व्यूध्नीः। उरुः पृथुरयं वो अस्तु लोक इमा आ
पस्सुप्रपाणा इहस्त ॥ १२ ॥ ४२ ॥

हे वैदिक वाग्रूप धेनवः (विश्वा) सर्वाणि (रूपाणि) (विभ्रतीः) विभ्रत्यः (द्व्यूध्नीः) आधिदैवाध्यात्मरूपौ स्तनौ यासां ताः। यूयं (सहर्षभाः) प्राणरूप वृषभेण सहिताः (सहवत्साः) मनोवत्सेन सहिताः (उदेत) आगच्छत (अयम्) (उरुः) महान् (पृथुः) विस्तीर्णः (लोकः) ब्रह्मपुर देहः (वः) युष्माकं (अस्तु) (इमाः) (आपः) कमलान्तरिक्षाणि (सुप्रपाणाः) सुखेन प्रकर्षेण

२७ २८
पञ्चं भार्षं योग्यानिं सन्ति (इह) (स्त्त) भवत उपविशत यथा श्रुतेः वाचं धेनुमुपासीत तस्याः प्राण ऋषभो मनो वत्सः श० १४।८।९।१—॥१२॥

भाषार्थः – हे वैदिक वाक् रूप गौओ १ सब २ रूपों को ३ धारण करती ४ आधिदैवाध्यात्म स्तन वाली तुम ५ प्राण रूप वृषभ ६ और मन रूप बछड़ा के साथ ७ आओ ८ यह ९ महान् १० विस्तीर्ण ११ ब्रह्मपुर शरीर १२ तुम्हारा १३ हो १४ ये १५ कमलान्तरिक्ष १६ सुख से प्राप्ति योग्य हैं १७ यहां १८ बैठो—॥१२॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सनु ज्वाला प्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने षष्ठस्याध्यायस्य चतुर्थः खण्डः ४॥

अथ पञ्चमः खण्डः

वैखानस ऋषयो जगती छन्दोऽग्निर्देवता

अग्न आयूंषि पवस आसुवोर्जमिषं च नः।
आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥१॥ ४२

हे (अग्ने) आत्माग्ने त्वं (आयूंषि) प्राण रूपान्नानि। अयमनिरुक्तः प्राणः सोऽस्यैष आयुरेव श० ४।२।३।१ अन्नं हि प्राणः श० ३।८।४।८ नि० २।७ (पवसे) शोधयसि। पूङ् शोधे (नः) अस्मभ्यं (ऊर्जम्) विराड् रूपान्नं (च) (इषम्) अमृत वृष्टिं (आसुव) आभिमुख्येन प्रेरय (दुच्छुनाम्) कामादीनां (आरे) प्रासौ। ऋगतौ (बाधस्व) सम्पीडय ॥१॥

भावार्थः – १ हे आत्माग्ने तुम २ प्राण रूप अन्नों को ३ शोधन करते हो ४ हमारे लिये ५ विराट् रूप अन्न ६ और ७ अमृत वर्षा को ८ सन्मुख

प्रेरण करो ९ काम आदि की १० मासिमें ११ पीडिन करो ॥ १॥

विभ्राट्ऋषिस्त्रिष्टुपछन्दः सूर्यो देवता-

विभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्यम्मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम्। वातजूतीयो अभिरक्षतित्मना प्रजाः पिपर्त्ति बहुधा विराजति ॥ २॥ ४३

(विभ्राट्) विभ्राजमानः विशेषेण दीप्यमानः सूर्य्यरूपः परमेश्वरः (यज्ञपतौ) यजमाने (अविह्रुतम्) अकुटिलं अखंडितं ह्रु कौटिल्ये (आयुः) आयुरन्नंवा (दधत्) धारयन्नन्ते (बृहत्) महत् (सोम्यम्) आत्मप्रतिबिंबं (मधु) प्राणं श० १४।१।३।३० (पिबतु) (यः) (वातजूतः) समष्टिप्राणेन सेवितः सूर्यरूपः परमेश्वरः (त्मना) आत्मन् आत्मनि (प्रजाः) (पिपर्त्ति) वृष्ट्यादिप्रदानेन पालयति (बहुधा) नाना रूपेण (विराजति) सर्वात्मकत्वात् ॥ २॥

भाषार्थः - १ विशेपदीप्यमान सूर्यरूप परमेश्वर २ यजमान में ३ अखंडित ४ आयु वा अन्न को ५ धारण करता अन्त में ६ महान् ७ आत्मप्रतिबिंब को ८ और प्राण को ९ पान करो १० जो ११ समष्टि प्राण से सेवित सूर्य १२ अपने आत्मा में १३ प्रजाओं को १४ वृष्टिप्रदान आदि से पालन करता है १५ और नाना रूप से १६ विराजमान है सर्वात्मा होने से ॥ २॥

कुत्सऋषिस्त्रिष्टुपछन्दः सूर्यो देवता-

चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्राद्यावा पृथिवी अन्तरिक्षꣳ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥ ३॥ ४४

(देवानाम्) समष्टीन्द्रियाणां (अनीकम्) जीवन साधनं। अन् जीव ने अनित्य नेन अन—ईकन् (चित्रम्) आश्चर्य कृरं (मित्रस्य) समष्टिप्राणस्य (वरुणस्य) समष्ट्यपानस्य (अग्नेः) वैश्वानराग्ने (चक्षुः) दर्शन साधनं सूर्य मण्डलं तत्रस्थ श्च (जगतः) जङ्गमस्य (च) (तस्थुषः) स्थावरस्य (आत्मा) (सूर्यः) सूर्य रूपः परमेश्वरः (उदगात्) प्रादुर्भवत् (द्यावापृथिवी) द्यावा पृथिव्यौ (अन्तरिक्षम्) (आप्राः) आपूरित वान् ॥३॥

भाषार्थः

१ समष्टि इन्द्रियोंका २ जीवन साधन ३ आश्चर्य कर्त्ता ४ समष्टि प्राणका ५ समष्टि अपानका ६ और वैश्वानर अग्निका ७ दर्शन साधन सूर्य मंडल है उसमें स्थित ८ चर ९ और १० अचरका ११ आत्मा १२ सूर्यरूप परमेश्वर प्रकट हुआ १३ और १४ पृथिवी स्वर्ग १५ अन्तरिक्ष को १६ अपने तेजसे पूर्ण किया ॥३॥

सार्पराज्ञीनाम ऋषि गायत्री छन्दः सूर्यो देवता

आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः।
पितरञ्च प्रयन्त्स्वः॥ ४ ॥ ४५

(अयम्) (गौः) विराडात्मा। विराड्वै गौः श० ७।५।२।१९ (पृश्निः) सूर्यः नि० २।१४ (पुरः) उदयाचलात् (प्रयन्) प्रकर्षेण शीघ्रं गच्छन् (मातरम्) दक्षिणायने भूलोकं (च) उत्तरायणे (पितरम्) वृष्ट्यादिद्वारा सर्वस्य पालकं (स्वः) स्वर्गं (असदत्) प्राप्नोति (आक्रमीत) सुमेरुं प्राक्रामति प्रदक्षिणं करोतीत्यर्थः॥४॥

भाषार्थः

१ यह २ विराडात्मा ३ सूर्य ४ उदयाचलसे ५ शीघ्रचलता ६ दक्षिणायन में भूलोक को ७ और उत्तरायण में ८ वृष्ट्यादि से सबके पालक ९ स्वर्ग को १० प्राप्त करता है ११ सुमेरु को प्रदक्षिण करता है ॥ ४ ॥

विनियोगः पूर्ववत्

अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती। व्य् १ ख्यन्महिषो दिवम् ॥ ५ ॥ ४६

(अस्य) सूर्यस्य (रोचना) ज्योतिः (प्राणात्) प्राणनं नाड़ीभिरूर्ध्वं वायोर्निर्गमनं तथा विधात्प्राणादनन्तरं (अपानती) अपाननं नाड़ीभिरवाङ्मुखं वायोर्नयनं तत्कुर्वन्ती (अन्तः) द्यावापृथिव्योर्मध्ये (चरति) गच्छति स (महिषः) महान् समष्टि मूर्त्तिः सूर्यः (दिवम्) स्वर्गमन्तरिक्षञ्च (व्यख्यत्) प्रकाशयति ॥ ५ ॥

भाषार्थः – १ इस सूर्य की २ ज्योति ३ पूरक के पीछे ४ रेचक को करती ५ पृथिवी स्वर्ग के मध्य ६ वर्त्तमान है वह ७ महान् समष्टि मूर्त्ति सूर्य ८ स्वर्ग और अन्तरिक्ष को ९ प्रकाशित करता है ॥ ५ ॥

विनियोगः पूर्ववत्

त्रिंशद्धाम वि राजति वाक्पतङ्गाय धीयते। प्रति वस्तोरह द्युभिः ॥ ६ ॥ ४७

(वस्तुः) वस्त याचने वस्त्यते याच्यते भक्तैर्वस्तः परमेश्वरः (रहद्युभिः) (र) अग्निः (अ) अर्कमण्डलं (ह) सोममण्डलं तेषां दीप्तिभिः (त्रिंशद्धाम) त्रिंशन्मुहूर्त्तात्मक महोरात्रं (विराजति) विविधं प्रकाश यति। राज दीप्तौ तस्मै (पतङ्गाय)

परमेश्वराय। पतङ्गोऽश्वः नि० १।२४ असौवा आदित्य एषोऽश्वः श० ६।३।१।२९ सूर्यो वैसर्वे देवाः श० १३।७।१।५ (वाक्) त्रयी रूपा (प्रतिधीयते) प्रति मुखं धार्यते ॥६॥

भाषार्थः – १ भक्तों से याच्यमान परमेश्वर २ अग्नि सूर्य चन्द्रमा की दीप्तिद्वारा ३ त्रिंशत मुहूर्त रूप दिनरात्रि को ४ बहुविधसे प्रकाशित करता है ५ उस परमेश्वर के लिये ६ त्रिवेद रूप वाक् ७ प्रत्येक मुखमें धारण कियाजाता है ॥६॥ वैखानसा ऋषयो गायत्री छन्दो नक्षत्राणि देवतानि

अप त्ये तायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभिः। सूराय विश्वचक्षसे ॥७॥ ४८

(त्ये) ते यकारो योग द्योतकः (नक्षत्राणि) देवानां गेह रूपाणि (अक्तुभिः) रात्रिभिः सह (विश्वचक्षसे) सर्व प्रकाश काय (सूराय) सूर्याय प्रजाभ्यः सूर्यदर्शनलाभाय (अपयन्ति) प्रजा दृष्टिभ्योऽदर्शनं प्राप्नुवन्ति (यथा) (तायवः) चौराः ॥७॥

भाषार्थः

१ वे २ नक्षत्र जोकि देवताओं के गृह रूप हैं ३ रातों के साथ ४ सर्व प्रकाशक ५ सूर्य के लिये ६ प्रजा दृष्टि से अदर्शन को पाते हैं ७ जैसे ८ चौर ॥७॥

सूर्यो देवता शेषं पूर्ववत्

अदृश्रन्नस्य केतवो वि रश्मयो जनाꣳ अनु। भ्राजन्तो अग्नयो यथा ॥८॥ ४९

(अस्य) सूर्यस्य (केतवः) मानस ज्योती रूपाः (रश्मयः) (जनाननु) प्राणिनां मनसि (व्यदृश्रन्) विविध रूपा दृश्यन्ते (यथा) (भ्राजन्तः) दीप्यमानाः (अग्नयः) ॥८॥

भाषार्थः – १ इस सूर्य की २ मानस ज्योती रूप ३ किरणें ४ प्राणियों के मन में ५ नाना रूप वाली दीखती हैं ६ जैसे ७ दीप्यमान ८ अग्नियां॥ ८॥

विनियोगः पूर्ववत्

तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य। विश्वमाभासि रोचनम्॥ ९॥ ५०

हे (सूर्य) त्वं (विश्वदर्शतः) सर्वैः प्राणिभिः साक्षात्कर्त्तव्यः (ज्योतिष्कृत्) वाह्यान्तः प्रकाशकः (तरणिः) संसार सागर तारणाय नौका रूपः (असि) (विश्वम्) सर्वं (रोचनम्) प्राणिनां नेत्र समूहं लस्यरत्वं (आभासि) समन्तात्प्रकाशयासि व्यष्टि समष्टि मानस सूर्य रूपेण॥ ९॥

भाषार्थः – १ हे सूर्य तुम २ सब प्राणियों से साक्षात् करने योग्य ३ वाहर भीतर प्रकाशक ४ संसार सागर से पार करने के लिये नौका रूप ५ हो ६ सब ७ प्राणियों के नेत्र समूह को ८ सब ओर से प्रकाशित करते हो व्यष्टि समष्टि मानस सूर्य रूप से॥ ९॥

विनियोगः पूर्ववत्

प्रत्यङ् देवानां विशः प्रत्यङ्ङुदेषि मानुषान्। प्रत्यङ् विश्वं स्वर्दृशे॥ १०॥ ५२

हे सूर्य रूप परमेश्वर त्वं (देवानाम्) (विशः) समष्टि प्राणान् (प्रत्यङ्) प्रति गच्छन्। इति गतौ (उदेषि) उदयं प्राप्नोषि (मानुषान्) व्यष्टि प्राणान् (प्रत्यङ्) प्रति गच्छन् (उदेषि) मानस सूर्य रूपेणोदयं प्राप्नोषि (विश्वम्) कमन्तान्तरिक्ष समूहं (स्वः) स्वर्गलोकं (प्रत्यङ्) अभिगच्छन्नुदयं प्राप्नोषि। १०

भाषार्थः — हे सूर्यरूप परमेश्वर तुम १,२ समष्टि प्राणों को ३ प्राप्त करते ४ उदय होते हो ५ व्यष्टि प्राणों को ६ प्राप्त करते ७ मानस सूर्य रूप उदय होते हो ८ कमलान्तरिक्ष समूह ९ स्वर्गलोक को १० प्राप्त करते उदय को पाते हो ॥१०॥

विनियोगः पूर्ववत्

येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ अनु त्वं वरुण पश्यसि ॥११॥ ५२

हे (पावक) सर्वस्य शोधक (वरुण) अनिष्टवारक (अ) सूर्य (त्वम्) (जनान्) प्राणिनः (तम्) (भुरण्युम्) जीवरूप सुपर्णञ्च (येन) (चक्षसा) प्रकाशेन (अनुपश्यसि) अनुक्रमेण प्रकाशयसि तं प्रकाशं स्तुम इति शेषः ॥११॥

भाषार्थः — १ हे सबके शोधक २ अनिष्टवारक ३ सूर्य्य ४ तुम ५ प्राणियों के ६ उस ७ जीवरूप पक्षी को ८ जिस ९ प्रकाश से १० अनुक्रम पूर्वक प्रकाशित करते हो उस प्रकाश की हम स्तुति करते हैं यह अभिप्राय है — ॥११॥

विनियोगः पूर्ववत्

उद्द्यामेषि रजः पृथ्वहा मिमानो अक्तुभिः। पश्यञ्जन्मानि सूर्य ॥१२॥ ५३

हे (सूर्य) त्वं (अहानि) (अक्तुभिः) रात्रिभिः सह (मिमानः) उन्मानयन् (जन्मानि) भूतानां जन्मानि (पश्यन्) (पृथु) स्थूलं (रजः) भूलोकं (द्याम्) स्वर्गलोकं (उदेषि) उदयेन प्राप्नोषि ॥१२॥

भाषार्थः

१ हे सूर्य तुम २ दिनों को ३ रातों के साथ ४ निर्माण करते ५ भूतादिकों के जन्म को ६ देखते ७,८ भूलोक ९ और स्वर्गलोक को १० उदय से प्राप्त करते हो ॥१२॥

विनियोगः पूर्ववत्

अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्र्यः। ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः ॥२३॥ ५४

(सूरः) सर्वस्य प्रेरकः सूर्यः रूपः परमेश्वरः (रथस्य) (नप्त्र्यः) न पातयित्र्यः याभिर्युक्तो रथो याति न पतति ता दश्यः (सप्त) सप्तसङ्ख्याकाः (शुन्ध्युवः) शोधकाः रश्मयः (अयुक्त) सूर्य मण्डले योजितवान् (स्वयुक्तिभिः) स्वकीय योजनेन सूर्य मण्डले सम्बद्धाभिः शक्तिभिरेव (याति) गच्छति स्व यन्त्व चल इत्यर्थः ॥२३॥

भावार्थः —१ सबके प्रेरक सूर्यरूप परमेश्वरने २ रथकी ३ धारक ४ सात संख्या वाली ५ शोधक किरणों को ६ सूर्य मंडल में संयुक्त किया ७ अपने मंडल में सम्बद्ध शक्तियों से ८ चलता है आपतो अचल है यह अभिप्राय है ॥२३॥

विनियोगः पूर्ववत्

सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य शोचिष्केशं विचक्षण ॥२४॥ ५५

हे (देव) द्योतमान (विचक्षण) सर्वस्य प्रकाशयितुः (सूर्य) (शोचिष्केशं) शोचींषि तेजांस्येव केशा यस्य तं (त्वा) त्वां (सप्त) (हरितः) रसहरणशीलाः रश्मयः शक्तयो वा (वहन्ति) द्वादशराशिषु प्रापयन्ति स्वयन्त्व चलाः सि ब्रह्मरूपत्वात् १४

भावार्थः —१ हे द्योतमान २ सर्वप्रकाशक ३ सूर्य ४ किरणरूप केश वाले ५ तुमको ६ सात ७ रसहरणशील किरणें वा शक्तियां ८ वारह राशि में प्राप्त करती हैं आपतो ब्रह्मरूप होने से अचल हो यह अभिप्राय है ॥२४॥

इतिश्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने षष्ठोऽध्यायः समाप्तः॥

समाप्तमारण्यं पर्व आरण्यकाण्डं वा इति चतुर्थम्पर्व

सामवेद संहितायां छन्द आर्चिकः समाप्तः

एताः प्रकृतिनाम्निस्तु उपसर्गैस्तु संयुताः नव संख्या इति प्राहुर्वेदाध्ययनशालिनः तासामुपसर्गैः सह शक्वरी छन्द इन्द्रो देवता अथवा प्रजापति ऋषिर्विराडी पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता-

अथ महानाम्न्यार्चिकः

विदा मघवन्विदा गातुमनुशꣳसिषो दिशः शिक्षा शचीनाम्पते पूर्वीणाम्पुरूवसो ॥१॥

हे (मघवन्) धनवन् परमेश्वर (विदाः) वेदितव्यं विद्धि (गातुम्) भक्तियोग यज्ञं (विदाः) प्रापय (दिशः) मोक्ष मार्गान् (अनुशंसिषः) उपदिश हे (पूर्वीणाम्) बह्वीनां (शचीनाम्) प्रज्ञानां (पते) स्वामिन् (पुरूवसो) प्रभूत धन (सः) परमेश्वर (शिक्ष) स्वात्मानं देहि। शिक्षतिर्दान कर्मा नि० ३।२०।८-॥१

भाषार्थः - १ हे धनवन परमेश्वर २ जानने योग्य को जानो ३ भक्ति योगयज्ञ को ४ प्राप्त कराओ ५ मोक्ष मार्गों को ६ उपदेश करो ७ हे बहुत ८ प्रज्ञाओं के ९ स्वामिन् १० बहुधनी ११ परमेश्वर १२ अपने आत्मा को १३ दो-॥१॥ प्रजापति ऋषिर्भुरिग्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

आभिष्ट्वमभिष्टिभिः स्वा३र्नाꣳशुः। प्रचेतन प्रचेतयेन्द्र द्युम्नाय न इषे ॥२॥

(त्वम्)(आभिः) इदानीं क्रियमाणाभिः(ओमिष्टिभिः)(अभ) देहस्तस्योष्टिभिः प्रकृतौ होमैः स्वात्मानं देहीति पूर्वेणान्वयः हे(प्रचेतन्) प्रशस्त ज्ञान (इन्द्र) परमेश्वर (स्वैः) सूर्यः(न) इव(संशुः) व्यापस्त्वं(द्युम्नाय) योग धन लाभाय (इषे) अमृत वृष्टैच (प्रचेतय) अस्मदीयां भक्ति मवधारय जानीहि ॥२॥

भाषार्थः

१ तुम २ अब क्रियमाण ३ प्रकृति में देह के होमों से अपने आत्मा को दो ४ हे महाज्ञानी ५ परमेश्वर ६.७ सूर्य की समान ८ व्याप्त तुम ९ योग धन के लाभार्थ १० और अमृत वर्षा के लिये ११ हमारी भक्ति को जानो ॥२॥

प्रजापति ऋषिः शर्पी वृहती छन्द इन्द्रो देवता·

एवाहि शक्रो राये वाजाय वज्रिवः। शविष्ठ वज्रिन्नृञ्जसे मंहिष्ठ वज्रिन्नृञ्जस आयाहि पिब मत्स्व ॥३॥१

(हि) यस्मात् हे(वज्रिवः) वज्र धरेन्द्र रूप(शविष्ठ) अतिशयेन बलवन विष्णु रूप(वज्रिन्) ज्ञान वज्र धर(मंहिष्ठ) अतिशयेन दान शील शिव रूप(वज्रिन) विद्या वज्र धर(ब्रह्मा रूप)(अ) परमेश्वरत्वं(एव)(शक्रः) अभीष्ट दाने समर्थः(राये) योग धनाय(ऋञ्जसे) अस्माभिः प्रसाध्यसे। ऋञ्जतिः प्रसाधन कर्मा नि० ३।५।८(वाजाय) विराड रूपान्नाय(ऋञ्जसे) प्रसाध्यसे(आयाहि) प्रादुर्भव(पिब) आत्मप्रतिबिंबं पिब(मत्स्व) हृष्टो भव ॥३॥

भाषार्थः –१ जिस कारण २ हे वज्रधारी इन्द्र रूप ३ महा बली विष्णु

रूप ४ ज्ञान वज्रधर ५ महा दानी शिवरूप ६ विद्या वज्रधर ७ ब्रह्मारूप परमेश्वर तुम ८ ही ९ सभीष्ट दान में समर्थ हो १० योगधन के लिये ११ हमसे सा धन किये जाते हो १२ विराट् रूप अन्न के लिये १३ सिद्ध किये जाते हो १४ प्रकट हूजिये १५ आत्म प्रतिबिंब को पान करो १६ हृष्ट हूजिये -॥ ३॥

प्रजापति ऋषि राज्ञी त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

विदोरायेसुवीर्यम्भुवोवाजानाम्पतिर्वशाँ२॥ अनु। मंध्ँहिष्ठवज्रिन्नृञ्जसेयःशविष्ठःशूराणाम्॥ ४॥

हे (मंहिष्ठ) अतिशयेन दान शील (वज्रिन्) ज्ञान वज्र धर परमेश्वर (यः) (शूराणाम्) (शविष्ठः) बलवत्तरः स (वाजानाम्) विराड् रूपान्नानां (पतिः) त्वं (राये) योग धनाय (ऋञ्जसे) अस्माभिः साध्यसे (सुवीर्यम्) योग बलं (विदः) लम्भय प्रापय (वशान्) वश वर्त्तिनो भक्तान् (अनुभुवः) अनुभव गतो भव॥ ४॥

भावार्थः - १ हे बड़े दान शील २ ज्ञान वज्रधर परमेश्वर ३ जो ४ शूरों में ५ महाबली है वह ६ विराट् रूप अन्नों के ७ स्वामी तुम ८ योगधन के लिये ९ हमसे सिद्ध किये जाते हो १० योगबल को ११ प्राप्त कराओ १२ वश वर्त्ती भक्तों को १३ अनुभव में प्राप्त हो॥ ४॥

प्रजापति ऋषि राज्ञी बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

योमंध्ँहिष्ठोमघोनामंध्ँशुर्नशोचिः। चिकित्वोअभिनोनयेन्द्रोविदेतमुस्तुहि॥ ५॥

(यः) (मघोनाम्) धनवतां मध्ये (मंहिष्ठः) अति शयेन दा

ता (अंशुः) सूर्यः (न) इव (शोचिः) दीप्तः (इन्द्रः) परमेश्वरः (विदे) विद्यते सर्वैर्ज्ञायते (तम्) (उ) एव (स्तुहि) स्तुतिं कुरु हे (चिकित्वः) ज्ञान स्वरूप (नः) अस्मान् (अभि) अभिलक्ष्य (नय) स्वात्मानं प्रापय ॥ ५ ॥

भावार्थः –१ जो २ धनवानों के मध्य ३ महादानी ४,५ सूर्य की समान ६ दीप्त ७ परमेश्वर ८ विद्यमान है सब से जाना जाता है ९,१० उसी की ११ स्तुति करो १२ हे ज्ञान स्वरूप १३ हमको १४ देखकर १५ अपने आत्मा को प्राप्त कराओ ॥ ५ ॥

प्रजापतिर्ऋषिः भुरिगार्षी बृहती छन्दः इन्द्रो देवता-

ईशे हि शक्रस्तमूतये हवामहे जेतारमपराजितम्। स नः स्वर्षदति द्विषः क्रतुश्छन्द ऋतं बृहत् ॥ ६ ॥ २

(हि) यस्मात् (शक्रः) सर्व शक्तिमान परमेश्वरः (ईशे) ईश्वरोऽस्ति तस्मात् (तम्) (जेतारम्) असुराणां जेतारं (अपराजितम्) (हवामहे) आह्वयामहे (सः) (क्रतुः) यज्ञ पुरुषः (छन्दः) वेदरूपः (ऋतम्) सत्य स्वरूपः (बृहत्) महान् परमेश्वरः (नः) अस्माकं (द्विषः) द्वेष्टॄन् (अति स्वर्षत्) अत्यर्थं सुपतपतु विनाशयतु। स्वृ शब्दोपतापयोः ॥ ६ ॥

भावार्थः –१ जिस कारण २ सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ३ ईश्वर है उस कारण ४ उस ५ असुरों के जेता ६ अपराजित को ७ हम आह्वान करते हैं ८ वह ९ यज्ञ पुरुष १० वेदरूप ११ सत्यस्वरूप १२ महान् परमेश्वर १३ हमारे १४ द्वेषियों को १५ अत्यन्त विनाश करो ॥ ६ ॥

प्रजापतिर्ऋषिरार्ची जगती छन्द इन्द्रो देवता-

३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रं धनस्य सातये हवामहे जेतारमपराजितम्।
सनः स्वर्षदति द्विषः सनः स्वर्षदति द्विषः ॥७॥

(जेतारम्) (अपराजितम्) (इन्द्रम्) परमेश्वरं (धनस्य) (सातये) योगधनस्य लाभाय (हवामहे) (सः) (नः) अस्माकं (द्विषः) द्वेष्टॄन् (अतिस्वर्षत्) (सः) (नः) (द्विषः) कामादीन् (अतिस्वर्षत्) ॥७॥

भापार्थः - १ जेता २ अपराजित ३ परमेश्वर को ४, ५ योग धन के लाभार्थ ६ हम आह्वान करते हैं ७ वह ८ हमारे ९ द्वेषाओं को १० विनाश करो ११ वह १२ हमारे १३ द्वेषा कांम आदि को १४ अत्यन्त विनाश करो - ७॥

प्रजापतिर्ऋषिर्भुरिगार्षी पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता-

पूर्वस्य यत्ते अद्रिवो ऽंशुर्मदाय —
सुम्न आधेहि नो वसो पूर्तिः शविष्ठ शस्यते। वशी हि
शक्रो नूनं तन्नव्यं संन्यसे ॥८॥

हे (अद्रिवः) ज्ञानवज्र वन् (वसो) वासुदेव (पूर्वस्य) पुरातनस्य (ते) तव (यत्) (अंशुः) मानस सूर्यः (मदाय) अस्तितं (नः) अस्मान् वाग्ऋत्विज श्च (सुम्ने) मोक्ष सुखे (आधेहि) स्थापयहे (शविष्ठ) वलवत्तम (पूर्तिः) जीवात्मनातव पूर्तिः (शस्यते) स्तूयते (हि) यस्मात् (नूनम्) अवश्यं (वशी) सर्वस्य नियन्ता (शक्रः) सर्व शक्तिमानसि (तत्) तस्मात् (नव्यम्) संस्कृतात्म मतिविंवं (संन्यसे) त्वयि प्रक्षिपामि। अ सुक्षेपणे ॥८॥

भापार्थः

१ हे ज्ञान वज्र धर २ वासुदेव ३, ४ तुम्ह पुरातन का ५ जो ६ मानस सूर्य ७ मद के लिये है उसको ८ और हम वाक् आदि ऋत्विजों को ९ मोक्ष सुख में १० स्थापन करो ११ हे महावली १२ जीवात्मा से जो तेरी पूर्ति है वह १३ स्तुति की जाती है १४ जिस कारण १५ अवश्य १६ सव के नियन्ता १७ सर्व शक्ति मान हो १८ उस कारण १९ संस्कृत आत्म मति विंव को २० तुम में फेंकता हूं ॥८॥

प्रजापतिर्ऋषिरार्ष्यनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

प्रभोजनस्य वृत्रहन्त्समर्येषु ब्रवावहै। शूरो यो गो
षु गच्छति सखा सुशेवो अद्वयुः ॥९॥

हे(प्रभो)(वृत्रहन्) पापनाशक परमेश्वर(जनस्य) जिज्ञासु समूहस्य(अर्य्येषु) ईश्वरेषु गुरुषु मध्ये(संव्रवामहै) यजमानो ऽहं मे पत्नी रूपा बुद्धिश्च(संव्रवावहै) सम्भाषां करवावहै कस्य(यः)(शूरः)(सखा) भक्तानां सखा(सुशेवः) आनन्द स्वरूपः(अद्वयुः) द्वन्द्व रहितः द्वैत शून्यो वा(गोषु) स्वांशु रूपेषु यजमानेषु(गच्छति) प्राप्तो भवति॥९॥

भाषार्थः

१ हे समर्थ २ पापनाशक परमेश्वर ३ जिज्ञासु समूह ४ ईश्वरों वा गुरुओं के मध्य ५ में यजमान और मेरी पत्नी बुद्धि दोनो ६ उसके विषय सम्भाषण करें ७ जो ८ शूर ९ भक्तों का सखा १० आनंद स्वरूप ११ अद्वैत १२ अपने किरण रूप यजमानों में १३ प्राप्त होता है॥९॥ पञ्च पुरीषपदानि

प्रजापति ऋषिः साम्नी त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता

एवाहोऽ ३ऽ३ऽ ३ वएवो ३ँ ह्यग्ने एवाहीन्द्र। एवा हि पूषन् एवाहि देवाः॥१०॥४

हे(एव) सर्व व्यापिन् सर्वस्य गति साधन महा पुरुष त्वं(एवाहि) एवम्प्रकार एवासि हे(अग्ने) अग्ने आत्माग्ने वा त्वं(एवाग्ने)(हि) एवम्प्रकार एवाऽसि हे(इन्द्र) इन्द्र ईश्वर वा त्वं(एवाहि) एवम्प्रकार एवासि हे(पूषन्) सोम मानस सूर्य वा त्वं(एवाहि) एवम्प्रकार एवासि(देवाः) हे देवाः विद्वांसो वा यूयं(एवाहि) एवम्प्रकारा एव स्थ यथा पूर्व मन्त्रेषु प्रशंसिताः॥१०॥४

भाषार्थः — १ हे सर्व व्यापिन् सर्व गति साधन महा पुरुष तुम २ ऐसे ही हो ३ हे अग्ने वा आत्माग्नि तुम ४,५ ऐसे ही हो ६ हे इन्द्र वा ईश्वर तुम ७ ऐसे ही हो ८ हे सोम वा मानस सूर्य तुम ९ ऐसे ही हो १० हे देवताओ वा विद्वानो तुम ११ ऐसे ही हो जिस प्रकार पूर्व मंत्रों मे प्रशंसा किये गये॥१०॥४॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने महानाम्नी व्याख्यानं समाप्तम्॥

सामवेद संहितायां महानाम्न्यार्चिकः समाप्तः

(हस्ताक्षर सालिग राम कायस्थ कापीनवीस)

लोहामंडी आगरा॥


BHARATIYA VIDYA BHAVAN
229